फॉसेट
स्कॉलर्ड
X3273*$1.75

बिल

शुल और एड पेटिट

द्वारा

लिखित द

सीक्रेट पावर ऑफ़ पिरामिड्स

पिरामिडों के बारे में हैरान करने वाली नई खोजें
और वे आपकी ज़िंदगी कैसे बदल सकते हैं।

Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट
विषयसूची
पृष्ठों
पीछे का कवर

यह पुस्तक इंटरनेट आर्काइव द्वारा उपलब्ध कराई गई है।

Read this book and you will join us in our immense admiration for the technological geniuses of the past. Perhaps you, too, will allow your imagination to take flight as you muse with fond hope that the ancients preserved for us the secret of universal energy.

—The Authors

ARE THERE FAWCETT PAPERBACKS
YOU WANT BUT CANNOT FIND IN YOUR LOCAL STORES?

You can get any title in print in Fawcett Crest, Fawcett Premier, or Fawcett Gold Medal editions. Simply send title and retail price, plus 35¢ to cover mailing and handling costs for each book wanted, to:

MAIL ORDER DEPARTMENT,
FAWCETT PUBLICATIONS,
P.O. Box 1014
GREENWICH, CONN. 06830

Books are available at discounts in quantity lots for industrial or sales-promotional use. For details write FAWCETT WORLD LIBRARY, CIRCULATION MANAGER, FAWCETT BLDG., GREENWICH, CONN. 06830

The Secret Power of Pyramids

BILL SCHUL & ED PETTIT

A FAWCETT GOLD MEDAL BOOK

Fawcett Publications, Inc., Greenwich, Connecticut

THE SECRET POWER OF PYRAMIDS

Copyright © 1975 by Fawcett Publications, Inc.

All rights reserved, including the right to reproduce this book or portions thereof in any form.

Printed in the United States of America

First printing: August 1975

3 4 5 6 7 8 9 10

Contents

Preface 7

1. The Pyramid: Ancient and New Miracle Worker 11
2. The Historical Enigma 24
3. Mysterious Energy Fields 43
4. Pyramids and Plant Power 56
5. Effects on Liquids 81
6. Effects on Solids 96
7. Healing Powers 113
8. Rejuvenation 131
9. The Voice of the Pyramid 146
10. The Pyramid and Altered States of Consciousness 161
11. Esoteric Geometry and Energy Grids 178
12. Home Experiments 192
13. The Pyramid: Window to the Universe 202

Bibliography 210

Index 215

इनेज़ और जीन को समर्पित

स्वीकृतियाँ

लेखक इस पुस्तक के संकलन में सहयोग करने वाले सभी लोगों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं।

वे बॉर्डरलैंड साइंसेज रिसर्च फाउंडेशन के विशेष रूप से आभारी हैं, जिसने शोध संबंधी जानकारी और स्रोत उपलब्ध कराए और रेखाचित्र एवं तस्वीरें उपलब्ध कराने में कृपा की। उत्कृष्ट रेखाचित्रों के लिए फ्रेड शुल और रेबेका मेयो को और विद्युत क्षेत्र सिद्धांत पर परामर्श देने के लिए कार्ल डी. नेपर को हमारा विशेष धन्यवाद।

हम देशभर के उन अनेक व्यक्तियों के आभारी हैं जिन्होंने पिरामिड अनुसंधान और संबद्ध क्षेत्रों से संबंधित जानकारी, अनुभव और अपने परिणामों का विवरण साझा किया।

अंत में, लेखक अपने-अपने सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनके प्रोत्साहन और समर्थन के बिना यह पुस्तक कभी लिखी ही नहीं जा सकती थी।

प्रस्तावना

गीज़ा के महान पिरामिड के अलावा किसी अन्य मानव निर्मित वस्तु ने मनुष्य का ध्यान और विस्मय इतना आकर्षित नहीं किया है। मानव हाथों द्वारा निर्मित यह सबसे बड़ी, सबसे भारी, सबसे पुरानी और सबसे परिपूर्ण संरचना कल्पना को चकित करती रहती है, व्याख्याओं से परे है और अपने अन्वेषकों को रहस्य में डालती है। इतनी प्राचीन कि इसकी उत्पत्ति समय के साये में खो जाती है, यह मनुष्य और उसके पर्यावरण के बारे में निरंतर नया ज्ञान प्रदान करती रहती है। आश्चर्य की बात यह है कि जैसे-जैसे मनुष्य का वैज्ञानिक ज्ञान बढ़ता है, महान पिरामिड, एक साकार और अमर भविष्यवक्ता की तरह, उत्तरों का पूर्वाभास देता प्रतीत होता है। शायद ज्ञान का यह गुप्त और प्रतीत होता है कि कभी न खत्म होने वाला भंडार, जो इसके रहस्यों को खोलने में सक्षम बुद्धिमानों के लिए निरंतर खुलता रहता है, सदियों से महान पिरामिड को मनुष्य के अस्तित्व के कारणों और संभावनाओं की खोज में एक केंद्रीय स्थान बनाए रखता है। और शायद यह कल्पना करना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि इसके इतिहास, इसकी गणितीय पूर्णता, इसके अस्तित्व के उद्देश्य में कहीं न कहीं मनुष्य के अपने स्वयं के सवालों के लंबे समय से प्रतीक्षित उत्तर छिपे हुए हैं।

8 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

नियति। तो फिर, निश्चित रूप से, महान पिरामिड ही पारस पत्थर होगा।

लेकिन जहां एक ओर ग्रेट पिरामिड प्रयोगों को चुनौती दे रहा था और शोधकर्ताओं को बेहतर तकनीक विकसित करने के लिए प्रेरित कर रहा था, वहीं दूसरी ओर इसने अपने कई रहस्यों में से एक रहस्य उजागर किया—इसकी आकृति मात्र से ही सजीव और निर्जीव वस्तुओं को प्रभावित करने वाली ज्ञात और अज्ञात ऊर्जाओं का पता चलता था। फ्रांसीसी वैज्ञानिक एम. बोविस द्वारा यह खोज किए जाने के तुरंत बाद कि ग्रेट पिरामिड के सटीक अनुपात में निर्मित और उत्तर-दक्षिण चुंबकीय अक्ष पर उसी प्रकार से रखी गई संरचनाएं मांस को ममी बना सकती हैं, भोजन को संरक्षित कर सकती हैं, रेजर ब्लेड को तेज कर सकती हैं, आदि, अनसुलझे ऊर्जा क्षेत्रों की प्रकृति के बारे में नए सिरे से प्रश्न उठने लगे—पिरामिड के बारे में नए सिरे से आश्चर्य की बात तो

अलग है।
बोविस की खोज और चेक गणराज्य के रेडियो इंजीनियर कारेल ड्रबल द्वारा किए गए अनुवर्ती कार्य के बारे में ओस्ट्रैंडर और श्रोएडर की पुस्तक "साइचिक डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टन" में बताया गया है। इस पुस्तक ने देश और विदेश में जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है और इसने शौकिया और प्रायोगिक प्रयोगों में लिप्त लोगों के साथ-साथ पेशेवर शोधकर्ताओं को भी प्रेरित किया है। इस विषय पर निष्कर्षों और विचारों को साझा करने के लिए देश भर में चर्चा समूह और प्रायोगिक अनुसंधान क्लब अस्तित्व में आए। कई समाचार पत्र प्रकाशित किए गए और व्यापक रूप से प्रसारित किए गए।
इस साहसिक कार्य की शुरुआत के बाद से तीन वर्षों में कुछ बेहद रोचक और विचारोत्तेजक परिणाम सामने आए हैं। पिरामिड संरचनाओं में बैठने, सोने और ध्यान करने वाले व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभावों का शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान और तत्वमीमांसा के क्षेत्रों में कुछ महत्व है। उपचार में लगने वाले समय में कमी, सिरदर्द से राहत, बेहतर विश्राम, अधिक वजन वाले लोगों के लिए वजन में कमी, कायाकल्प आदि चिकित्सा जगत के लिए महत्वपूर्ण हैं। पिरामिड के भीतर ध्यान करने और मानसिक संवेदनशीलता में वृद्धि से तत्वमीमांसा के विद्वानों और पारलौकिक अवस्थाओं में रुचि रखने वालों को रुचि होनी चाहिए। पौधों की वृद्धि और बीजों के अंकुरण पर पड़ने वाले प्रभावों से जिज्ञासा जागृत होनी चाहिए।

प्रस्तावना 9
बागवानी विशेषज्ञ की रुचि का विषय होना चाहिए। साथ ही, खाद्य और जल शुद्धिकरण और संरक्षण पर प्रत्येक संबंधित व्यक्ति का ध्यान जाना चाहिए।
पिरामिडों के साथ किए गए ये नए प्रयोग जीवन के हर क्षेत्र के लोगों के लिए रोमांचक संभावनाएं प्रस्तुत करते हैं—चाहे वे शोध वैज्ञानिक हों, गृहकार्य के शौकीन हों, दार्शनिक विचारक हों या कोई परियोजना खोज रहे भौतिकी के छात्र हों। हालांकि, इस अध्ययन के परिणाम स्वयं को और अपने पर्यावरण को बेहतर ढंग से समझने की हमारी निरंतर खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
मुख्यतः, यह पुस्तक शौकिया वैज्ञानिकों, सामान्य वैज्ञानिकों और जिज्ञासु लोगों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इसमें पिरामिड के बारे में कुछ पृष्ठभूमि जानकारी दी गई है ताकि पिरामिड आकृतियों के साथ उनके प्रयोग एक व्यापक परिप्रेक्ष्य को समाहित कर सकें। पिरामिडों से संबंधित विभिन्न प्रयोगों और इस क्षेत्र में हमारे व्यापक शोधों का विवरण दिया गया है। इसमें पिरामिड निर्माण की योजनाएँ भी शामिल हैं।
यदि आप अपने प्रयोगों में सफल होते हैं, तो हमें विश्वास है कि आप भी अतीत के तकनीकी प्रतिभाओं के प्रति हमारी अपार प्रशंसा में शामिल होंगे। शायद आप भी अपनी कल्पना को उड़ान भरने देंगे और इस आशा से भर उठेंगे कि पूर्वजों ने हमारे लिए सार्वभौमिक ऊर्जा का रहस्य संरक्षित रखा होगा।

1. पिरामिड:
प्राचीन और नए चमत्कार करने वाले

रहस्यवादियों के लिए यह निरंतर आनंद का विषय है, दार्शनिकों के लिए बार-बार विस्मय का कारण है और वैज्ञानिकों के लिए लगातार शर्मिंदगी का विषय है कि पृथ्वी पर सबसे पुरानी मानव निर्मित संरचना सबसे प्रतिभाशाली विश्लेषणात्मक दिमागों की समझ से परे बनी हुई है।
हम प्रोटोप्लाज्म की प्रकृति की जांच कर सकते हैं, डीएनए और आरएनए जीवन संरचनाओं की व्यावहारिक अवधारणाओं को निकाल सकते हैं, लेजर बीम के सुसंगत प्रकाश का उपयोग कर सकते हैं, परमाणु को विभाजित कर सकते हैं, अंतरिक्ष में प्रयोगशालाओं को तैरा सकते हैं, और फिर भी हमारे पूर्वजों की सबसे प्राचीन तकनीकी पेशकशें हमारी जांच से परे हैं।
हम अपने पूर्वजों के इस विश्वास को कायम रखना चाहेंगे कि हम पीढ़ी दर पीढ़ी अपने ज्ञान भंडार में निरंतर योगदान देते रहें, और अपने पर्यावरण और स्वयं के बारे में उच्च और अधिक परिष्कृत समझ की ओर प्रगति करते रहें।
हम यह कल्पना करना चाहेंगे कि हमारी राजनीतिक और धार्मिक उत्तेजना और हमारे अंधविश्वासों के बावजूद, जिन्होंने हमें पुस्तकालयों को जलाने, मंदिरों को ध्वस्त करने या मुंह मोड़ने के लिए प्रेरित किया,

12 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

ज्ञान के मामले में, वास्तव में कुछ भी मूल्यवान नहीं खोया, या यदि खोया भी तो केवल अस्थायी रूप से, और समकालीन मनुष्य सत्य की किसी भी प्राचीन सीमा से आगे बढ़ चुका है। हम कुछ समय के लिए ऐसे दावों से बच भी जाते हैं—जब तक कि कोई यह न पूछे कि प्राचीन लोगों की चेतना, मानव तंत्रिका और जैवविद्युत प्रणालियों की समझ के बारे में अब जो जानकारी सामने आ रही है, वह शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान के माध्यम से अब तक हमने जो कुछ भी सीखा है, उससे कहीं आगे क्यों है; हम अपने पूर्वजों की तरह पत्थर को काटने, छेदने या मिलाने में सक्षम क्यों नहीं हैं, जो महान पिरामिड के चूना पत्थर और ग्रेनाइट के बड़े-बड़े पत्थरों को इतनी सटीकता से जोड़ सकते थे, जिसकी बराबरी आज केवल ऑप्टिशियन ही कर सकते हैं जो बहुत छोटी इकाइयों पर अपना काम करते हैं; हमारे सभी भारी निर्माण उपकरणों के बावजूद, हम उन बड़े पत्थरों—जिनमें से कुछ का वजन सत्तर टन है—को रैंप के बिना क्यों नहीं ले जा सकते; पृथ्वी के मापन और ग्रहों की गति के मामले में हमारा गणित प्राचीन गणित के साथ समानता प्राप्त करने के लिए संघर्ष क्यों कर रहा है।
इससे मानव प्रगति में हमारे विश्वास का क्या स्थान रह जाता है? मानव जाति द्वारा उठाए गए विशाल कदमों को कोई भी अनदेखा नहीं कर सकता। कम से कम भौतिक विज्ञान में प्रगति के इतने प्रमाण मौजूद हैं कि यह मानना मात्र असंभव है कि उन्नति एक भ्रम है। फिर ऐसा क्यों है कि हमें कभी-कभी कुछ प्रागैतिहासिक कलाकृतियाँ मिलती हैं जो स्पष्ट रूप से मानव उपलब्धि के उस स्तर की ओर इशारा करती हैं जिसकी हम केवल नकल करने की आशा ही कर सकते हैं? ऐसी उन्नत सभ्यता कब अस्तित्व में आई? यह कहाँ से आई और क्यों लुप्त हो गई? आज, हम तकनीकी रूप से अपने पूर्वजों की तुलना में लगभग हर चीज को अधिक कुशलता से प्राप्त कर सकते हैं—अर्थात, वह सब कुछ जिसके बारे में हम जानते हैं। ग्रेट पिरामिड उन अपवादों में से एक है। अब तक के साक्ष्य यह संकेत देते हैं कि उल्लेखनीय अपवाद प्रागैतिहासिक काल में हमसे पहले इस पृथ्वी पर मौजूद एक अत्यंत उन्नत सभ्यता की ओर इशारा करते हैं, और यह ज्ञान किसी तरह लुप्त हो गया।
कम से कम एक और संभावित स्पष्टीकरण है। हम

हम वॉन डैनिकन और अन्य जिज्ञासु लेखकों के साथ यह सवाल उठा सकते हैं कि क्या अंतरिक्ष में किसी अन्य स्थान से उच्चतर बुद्धिमत्ताओं का कोई हस्तक्षेप तो नहीं था? ऐसे प्रश्न हमें पवित्र ग्रंथों और पौराणिक कथाओं में स्वर्ग से आए देवताओं के पृथ्वी पर आगमन के संदर्भों की फिर से खोज करने के लिए प्रेरित करते हैं। और जब भी हम कोई अखबार उठाते हैं और उसमें कथित यूएफओ देखे जाने की खबर देखते हैं, तो हम विचार करने से खुद को रोक नहीं पाते।
एक तीसरी संभावना यह भी है: उच्च बुद्धि का ज्ञान एक श्रेष्ठ मानसिक स्रोत से आता है, और विचार या अवधारणाएँ कुछ व्यक्तियों के मन में सहज ज्ञान, अर्थात् रहस्योद्घाटन के रूप में प्रकट होती हैं। धर्म और तत्वमीमांसा दोनों ने ही लंबे समय से इस प्रकार के ज्ञान की वास्तविकता का दावा किया है। ऐसा माना जाता है कि यह ज्ञान मनुष्य की तर्क क्षमता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसे लगभग पूर्ण रूप से प्राप्त होता है।
मनो-संश्लेषण के संस्थापक डॉ. रॉबर्ट असागिओली के अनुसार, "...सहज जागरूकता बौद्धिक, तार्किक और विवेकपूर्ण चेतना का स्थान ले लेती है, या बेहतर कहें तो, उसे एकीकृत और पार कर जाती है। वास्तव में अंतर्ज्ञान देखी और सोची गई चीज़ों के साथ एकात्मता की ओर ले जाता है, और वस्तु और विषय के बीच अंतर्निहित एकता की पहचान की ओर ले जाता है।"
पॉल ब्रंटन की पुस्तक "विजडम ऑफ द ओवरसेल्फ" में हमें निम्नलिखित बातें मिलती हैं:
अब हमें यह समझना होगा कि मन का एक ऐसा भाग मौजूद है जो हमें अचेतन प्रतीत होता है, लेकिन वास्तव में उसमें एक असाधारण और अद्भुत चेतना होती है। वास्तव में एक द्वितीयक चेतना है जो हमारी सामान्य और परिचित चेतना के अंतर्निहित है। इसलिए एक सुदृढ़ तत्वमीमांसा 'मन' शब्द के प्रयोग को केवल उसकी विशिष्ट चिंतन अवस्था, यानी 'चेतना' तक सीमित नहीं कर सकती। मन हमारी ज्ञात चेतना से कहीं अधिक है।
उन्नीसवीं सदी के महान रसायनज्ञ केकुले ने बताया है कि कैसे गहन चिंतन की एक श्रृंखला के दौरान ऐसे विचार भी मानव मन में प्रवेश कर सकते हैं जो कहीं और से उत्पन्न हुए प्रतीत होते हैं।

इस श्रृंखला ने उनके आणविक संरचना के सिद्धांत को जन्म दिया। स्वप्न अवस्था में उन्हें जो जानकारी प्राप्त हुई, उसे "कार्बनिक रसायन विज्ञान के संपूर्ण क्षेत्र में पाई जाने वाली सबसे शानदार भविष्यवाणी" कहा गया है।
आइंस्टीन का मानना था कि सापेक्षता के उनके विचार "सोच-समझकर" नहीं बनाए गए थे, बल्कि उन्हें स्वयं प्राप्त हुए थे। रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन की अपने मन की "कल्पनाशील शक्तियों" से कहानियाँ गढ़कर प्रकाशन योग्य कथानक तैयार करने की क्षमता सर्वविदित है। इसी प्रकार, पोइंकेयर का गणितीय विचारों के बादलों की तरह उनके सामने उठने, नाचने और बिस्तर पर लेटे-लेटे नींद का इंतजार करते हुए उनसे टकराकर पहले फुशियन फंक्शन में परिवर्तित होने का वर्णन भी प्रसिद्ध है।
फिर भी, सूचना का स्रोत चाहे जो भी हो, ग्रेट पिरामिड के निर्माण में ऐसी प्रतिभा की आवश्यकता थी जो विश्व के ज्ञात इतिहास में बेजोड़ है।
शायद मनुष्य के भीतर का रोमांटिक स्वभाव ही उसे अज्ञात के रहस्यों की ओर आकर्षित करता है, या शायद उसके हृदय में गहराई में बसा कोई दिव्य बीज उसे तब तक चैन से नहीं बैठने देता जब तक उसे सारे उत्तर न मिल जाएं। पिरामिड वहीं है, वास्तविक रूप से वहीं, जिसे मनुष्य के दादा-परदादा भी जानते थे, और उसका अस्तित्व ही उसे अपने मार्ग में शेष सब कुछ जानने की

तीव्र इच्छा से प्रेरित करता है। चंद्रमा और समुद्र तल से भी मनुष्य कभी-कभी उस पत्थर के रहस्य पर नजर डालता है जो अभी भी उसकी वैज्ञानिक या आध्यात्मिक परिपक्वता की प्रतीक्षा कर रहा है, और मनुष्य अब भी सोचता है कि वास्तव में क्या है। और उतनी ही खामोशी से खड़ा है पिरामिड का साथी, स्फिंक्स, सभ्यता की गुजरती हुई शोभायात्राओं का शांत साक्षी और गीज़ा के मैदान के रहस्यों का शाश्वत प्रहरी। वे किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं? वह कुंजी हमें अपने ब्रह्मांड में या अपने भीतर ही ढूंढनी होगी?
लेकिन अब जबकि ग्रेट पिरामिड को एक मकबरे के रूप में महत्वहीन भूमिका निभाने के लिए निर्मित मानव निर्मित पत्थर के पहाड़ के रूप में खारिज नहीं किया जा सकता है, शायद अंततः मनुष्य इसके हर संभव उद्देश्य को गंभीरता से लेकर, जब तक कि अन्यथा सिद्ध न हो जाए, इसके द्वार पर सफलतापूर्वक दस्तक देगा। कम से कम इस तरह के दृष्टिकोण के लिए यह आवश्यक होगा कि...

पिरामिड: प्राचीन और नया चमत्कार करने वाला 15
हमारे भीतर जो सर्वोत्तम है, वही हमें प्राप्त करना चाहिए। यदि परिणाम इसके लायक न भी हों, तो हमें पीछे मुड़कर देखने की कोई आवश्यकता नहीं है।
ग्रेट पिरामिड द्वारा हाल ही में प्रस्तुत एक प्रमाण, जैसा कि अपेक्षित है, सार्वभौमिक अनुप्रयोग का प्रतीत होता है। पिरामिडनुमा आकृति, ग्रेट पिरामिड के सटीक अनुपातों और सही उत्तर-दक्षिण अक्ष पर केंद्रित होने के कारण, कुछ ऊर्जा क्षेत्रों को प्रतिबिंबित, उत्पन्न, संचित या किसी प्रकार से उपलब्ध कराती प्रतीत होती है।
कुछ इंच से लेकर कई फीट तक के आकार के पिरामिड मॉडल बनाए गए हैं और इनका उपयोग मनुष्यों सहित विभिन्न सजीव और निर्जीव वस्तुओं को रखने के लिए किया गया है। वर्तमान शोध से ऐसा प्रतीत होता है कि जिन सामग्रियों से ये मॉडल बनाए गए हैं, उनका परिणामों पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। छोटे पिरामिड आमतौर पर कार्डबोर्ड और लकड़ी से बनाए गए हैं, जबकि बड़े पिरामिड लकड़ी, फाइबरग्लास, कांच और प्लास्टिक शीट से बनाए गए हैं। पिरामिड के अंदर या ऊपर धातु की उपस्थिति, धातु की स्थिति और सापेक्ष मात्रा के आधार पर, ऊर्जा स्पेक्ट्रम के विद्युत चुम्बकीय गुणों को बाधित और बढ़ा सकती है। पिरामिड के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री का महत्व सिद्ध हो चुका है या नहीं, यह अभी और शोध का विषय है। विभिन्न सामग्रियों के उपयोग से संबंधित प्राप्त परिणामों और कुछ सिद्धांतों पर आगे के अध्यायों में चर्चा की जाएगी।
पिरामिड में वस्तुओं को रखने की अवधि का निर्धारण प्रायोगिक प्रयोगों के आधार पर किया गया है। उदाहरण के लिए, खाद्य पदार्थों को कई हफ्तों तक पिरामिड में रखा गया है और व्यक्तियों को बड़े पिरामिडों के अंदर कुछ मिनटों से लेकर कई घंटों तक रखा गया है। प्राप्त परिणामों में खाद्य पदार्थों का संरक्षण, जल का शुद्धिकरण, पौधों की वृद्धि में वृद्धि, बीजों के अंकुरण की अवधि में कमी, धातुओं से मैल का हटना और मनुष्यों में अधिक विश्राम, चिंतन और ध्यान की अवस्था में सुधार, स्वास्थ्य लाभ, शांति और यहां तक कि कायाकल्प शामिल हैं।

16 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
1970 में शीला ओस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर द्वारा लिखित "साइचिक डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टन" के प्रकाशन के साथ ही घर में बने पिरामिडों को लेकर उत्साह का दौर शुरू हुआ। चेकोस्लोवाकिया में हुए शोध पर आधारित खंड में, लेखकों ने बताया कि उन्हें कई छोटे पिरामिड मिले जिनका उपयोग रेज़र ब्लेड को तेज करने के लिए किया जा रहा था। अपनी जांच के दौरान

उन्हें पता चला कि कई साल पहले एक फ्रांसीसी नागरिक, मॉन्सियर बोविस ने पाया कि ग्रेट पिरामिड के राजा के कक्ष में पाए गए मृत जानवर सड़े नहीं थे, बल्कि निर्जलीकरण और ममीकरण के कारण नष्ट हो गए थे। उन्हें लगा कि पिरामिड के आकार का कोई विशेष महत्व हो सकता है। उन्होंने लगभग ढाई फीट ऊंचा एक पिरामिड बनाया और उसके शिखर के ठीक नीचे, आधार से शिखर तक की दूरी के लगभग एक तिहाई हिस्से पर, जहां राजा का कक्ष स्थित है, एक मृत बिल्ली को रख दिया। बिल्ली का ममीकरण हो गया।
बोविस द्वारा कार्बनिक पदार्थों पर किए गए शोध की प्रकाशित रिपोर्टों ने चेकोस्लोवाकिया के रेडियो और टेलीविजन इंजीनियर कारेल ड्रबल का ध्यान आकर्षित किया। चेओप्स पिरामिड के कई छोटे मॉडलों पर प्रयोग करने के बाद, ड्रबल ने ओस्ट्रैंडर और श्रोएडर से कहा, "पिरामिड के अंदर के स्थान के आकार और उस स्थान के अंदर होने वाली भौतिक, रासायनिक और जैविक प्रक्रियाओं के बीच एक संबंध है। उपयुक्त रूपों और आकारों का उपयोग करके, हम प्रक्रियाओं को तेज या धीमा कर सकते हैं।"
धातु पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ड्रबल ने सोचा कि क्या क्रिस्टल संरचना वाले रेज़र ब्लेड की धार, जिसे इस्तेमाल के बाद कुंद हो जाती है, को पिरामिड के उच्च ऊर्जा क्षेत्र में रखने पर उसकी मूल आकृति में वापस लाया जा सकता है। एक ही ब्लेड से 50 से 200 बार शेव करने का परिणाम मिला। यह 1950 के दशक की बात है और अब चेकोस्लोवाकिया और रूस के कुछ हिस्सों में कार्डबोर्ड और स्टायरोफोम से बने पिरामिडनुमा रेज़र ब्लेड शार्पनर आम बात हैं, और आज इस देश में भी किसी को घर का बना शार्पनर इस्तेमाल करते देखना कोई असामान्य बात नहीं है। हमें अभी तक ऐसा कोई नहीं मिला है जो यह दावा करे कि सही आकार में बनाए जाने पर पिरामिडनुमा मॉडल काम नहीं करेंगे।

पिरामिड: प्राचीन $<£$ नया चमत्कार करने वाला 17
इसे सीधे दक्षिण-उत्तर अक्ष पर रखा गया है। हमारे प्रयोगों से भी, जैसा कि ओस्ट्रैंडर और श्रोएडर ने दावा किया था, यह साबित होता है कि नीले ब्लेड स्टेनलेस स्टील के ब्लेड से बेहतर काम करते हैं।
'साइकि डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टेन' के प्रकाशन के बाद से, विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा अनेक प्रयोग किए गए हैं, जिनमें हमारा स्वयं का शोध भी शामिल है, जिसमें हमने विभिन्न आकारों, सामग्रियों और शोध वस्तुओं के तीन दर्जन मॉडल शामिल किए हैं। यद्यपि इन अन्वेषणों पर बाद के अध्यायों में चर्चा की जाएगी, साथ ही पिरामिड निर्माण की योजनाओं और प्रयोगों के लिए कुछ सुझावों पर भी, फिर भी रोमांचक संभावनाओं का संक्षिप्त परिचय देने के लिए कुछ शोधों की रूपरेखा प्रस्तुत करना उपयोगी हो सकता है।
ऐसा प्रतीत होता है कि पिरामिड के भीतर काम करने वाली ऊर्जा शक्तियों द्वारा धूमिल आभूषणों और सिक्कों को पॉलिश किया जाता है।
प्रयोगशाला रिपोर्टों के अनुसार, प्रदूषित पानी को कई दिनों तक पिरामिड के अंदर रखकर शुद्ध किया गया है, और इससे यह सवाल उठता है कि क्या पवित्र जल जैसी कोई चीज भौतिक रूप से मौजूद नहीं है।
—पिरामिड के बाहर रखे उसी तरह के बर्तन में दूध कई दिनों तक ताजा रहता है और अंततः दही बन जाता है, जबकि पिरामिड के बाहर रखा दूध खट्टा हो जाता है। एक फ्रांसीसी कंपनी ने दही बनाने के लिए पिरामिड के आकार के बर्तन का पेटेंट कराया है, और एक इतालवी दूध कंपनी अपने दूध के लिए पिरामिड के आकार के डिब्बों का उपयोग करती है।
—यह मांस, अंडे आदि को ममी बनाकर सुखा देता है।

फूल सूख जाते हैं लेकिन अपना आकार और रंग बरकरार रखते हैं।
पिरामिड के अंदर बैठने से कटने, चोट लगने, जलने आदि के घाव जल्दी भर जाते हैं। दांत दर्द और माइग्रेन के सिरदर्द में भी आराम मिलने की खबरें आई हैं, और कई लोगों ने पिरामिड में कुछ देर बैठने के बाद गठिया और जोड़ों के दर्द से राहत मिलने का दावा किया है। हालांकि, अभी प्रयोग के शुरुआती चरण में कोई भी दावा करना जल्दबाजी होगी। हम यहां विभिन्न स्रोतों से मिली रिपोर्टों और अपने प्रयोगों के परिणामों के आधार पर कुछ संभावनाओं पर चर्चा कर रहे हैं।

18 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

पिरामिड के अंदर पौधे बाहर की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ते हैं।
पिरामिड के आकार में उपचारित पानी को पांच सप्ताह तक फेस लोशन के रूप में इस्तेमाल करने के बाद, श्रीमती पेटिट ने पाया कि उनकी सहेलियाँ उनकी युवा दिखने की क्षमता के बारे में पूछ रही थीं।
उपचारित पानी पाचन में सहायक प्रतीत होता है, और घाव पर लगाने से वह तेजी से ठीक हो जाता है।
मांस पकाने के लिए एल्युमिनियम फॉयल को पिरामिड के आकार में लपेटकर इस्तेमाल करने से खाना पकाने का समय काफी कम हो जाता है। इसी फॉयल को टोपी की तरह सिर पर पहनने से सिरदर्द दूर होता है और मन को शांति मिलती है।
कई अलग-अलग परीक्षण प्रतिभागियों के अनुसार, कॉफी, वाइन, फलों के रस आदि का स्वाद कुछ समय के लिए पिरामिड के आकार में रखने पर बेहतर हो जाता है।
पिरामिड के आकार के कूड़ेदान में रखे खाद्य पदार्थ बिना गंध पैदा किए सूख जाते हैं।
पिरामिड में कुछ मिनटों से लेकर कई घंटों तक बैठने वाले लोगों ने अधिक आराम और स्फूर्ति का अनुभव किया है। कई लोगों ने दावा किया है कि पिरामिड के अंदर ध्यान करना बहुत आसान हो जाता है। एक किशोरी के पिरामिड के अंदर सोने के बाद उसकी माँ ने बताया कि बच्ची कम घबराती थी और उसका कुछ अनावश्यक वजन भी कम हो गया था।
समय ही बताएगा कि इनमें से कितने प्रयोग आगे की खोज और कठोर वैज्ञानिक परीक्षणों की कसौटी पर खरे उतरेंगे। फिर भी, अब तक इतना काम हो चुका है कि यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि पिरामिड क्षेत्र के भीतर कुछ असाधारण घटना घटित हो रही है। यह कहना भी उतना ही उचित प्रतीत होता है कि ज्ञात और अज्ञात दोनों प्रकार के ऊर्जा क्षेत्र सक्रिय हैं और इन बलों की बेहतर समझ न केवल वैज्ञानिक शोधकर्ता के लिए बल्कि हम सभी के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। जैसा कि आधुनिक भौतिकी ने दिखाया है, हम ऊर्जा हैं और एक ऊर्जामय ब्रह्मांड में रहते हैं, जहाँ सभी परस्पर क्रिया करते हैं, और आज हम मन और पदार्थ के बारे में कम और ऊर्जा क्षेत्रों के स्तरों, डिग्री और प्रकारों के बारे में अधिक बात करते हैं।

पिरामिड: प्राचीन और नया चमत्कार करने वाला 19

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऊर्जा या ऊर्जाओं की प्रकृति की बेहतर समझ, स्वयं को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से तथा जिस संसार में हम रहते हैं उसे बेहतर ढंग से जानने की कुंजी होगी। यदि पिरामिड का आकार किसी प्रकार से उपयोगी ऊर्जा उत्पन्न या संचित करता है, तो इस रहस्य को सुलझाने की खोज हम सभी के लिए एक रोमांचक साहसिक यात्रा हो सकती है।
हम गुरुत्वाकर्षण और चुंबकत्व की कार्यप्रणाली को समझते हैं, लेकिन वास्तव में यह क्या है

और यह क्यों काम करता है, इसे पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं। संभवतः पिरामिड के भीतर मौजूद कुछ ऊर्जा क्षेत्रों की कार्यप्रणाली को हम उनकी प्रकृति को पूरी तरह से समझने से बहुत पहले ही खोज लेंगे। हम अभी मानसिक घटनाओं के कुछ नियमों को समझना शुरू कर रहे हैं, जैसे कि टेलीपैथी, साइकोमेट्री, डॉविंग और साइकोकाइनेसिस। आधुनिक तकनीक की बदौलत, उपकरण हमें प्रतिभाशाली व्यक्तियों की मानसिक क्षमताओं का वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन करने में सक्षम बना रहे हैं। अब तक के शोध से पता चलता है कि यह घटना ऊर्जा आवृत्तियों के माध्यम से घटित होती है, जिनमें से कुछ इतनी सूक्ष्म प्रकृति की होती हैं कि इन शक्तियों के प्रति संवेदनशील उपकरणों के विकास से पहले तक केवल मानसिक रूप से संवेदनशील व्यक्तियों द्वारा ही इनका सचेतन अनुभव किया जाता था।
इसलिए, हमारी जांच में हमें यह ध्यान रखना होगा कि पिरामिड पृथक नहीं है; यह ऊर्जा क्षेत्रों से व्याप्त वातावरण में मौजूद है। हमारा कार्य यह निर्धारित करना होगा कि ये ऊर्जा क्षेत्र पिरामिड के भीतर और बाहर किस प्रकार भिन्न रूप से कार्य करते हैं। एक कार्यशील परिकल्पना यह हो सकती है कि सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सभी प्रकार के स्थान ऊर्जा क्षेत्रों को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं, चाहे उन्हें बढ़ाएं, संशोधित करें या बाधित करें।
फ्रांसीसी इंजीनियर और रेडियो के प्रोफेसर एल. ट्यूरेन द्वारा कई साल पहले लिखी गई पुस्तक 'वेव्स फ्रॉम फॉर्म्स' में यह बताया गया था कि शंकु, पिरामिड, गोले और घन जैसे विभिन्न आकार ब्रह्मांड में ऊर्जा - ब्रह्मांडीय किरणें, सौर किरणें आदि - के लिए विभिन्न प्रकार के अनुनादकों के रूप में कार्य करते हैं। ट्यूरेन और उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर यह है कि...

20 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

कई अन्य लोगों के मन में यह सवाल उठता है कि इन विभिन्न रूपों का मनुष्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है? हम अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा विभिन्न प्रकार के स्थानों में बिताते हैं: अलग-अलग आकार के कमरे, कारें, ट्रेनें, विमान और एम्फीथिएटर।
ऑस्ट्रैंडर और श्रोएडर ने ड्रबल के हवाले से कहा कि कुछ आकृतियाँ मानव स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती हैं, और गोला और पिरामिड ऐसी ही दो आकृतियाँ हैं। उन्होंने तर्क दिया कि शोधकर्ताओं का मानना है कि यदि अस्पतालों का निर्माण गोले या पिरामिड के आकार में किया जाए तो मरीज जल्दी ठीक हो जाएँगे। यह एक विचित्र बात है कि कुछ लोगों को कुछ कमरों या तंग जगहों में घुटन महसूस होती है जबकि दूसरों को नहीं।
बकमिनस्टर फुलर लंबे समय से यह तर्क देते रहे हैं कि हमें अपनी इमारतों के आकार पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उनका जियोडेसिक बुलबुला स्पष्ट रूप से एक स्वस्थ वातावरण होगा। कनाडा के सस्केचेवान में वास्तुकारों ने एक मानसिक अस्पताल में समलम्बाकार कमरे और अनियमित गलियारे बनाए और पाया कि यह नया वातावरण रोगियों के लिए लाभकारी था।
इसलिए, असामान्य ऊर्जा क्षेत्र केवल पिरामिडों की निजी संपत्ति नहीं हैं, लेकिन अब तक पिरामिड ने ही सबसे रोमांचक संभावनाएं प्रस्तुत की हैं।
ब्रह्मांड में पाए जाने वाले सभी रूपों और आकारों में, मनुष्य ऊर्जा बलों का सबसे विविध और जटिल उपयोगकर्ता, संशोधक और निर्माता है। वह स्वयं में एक ब्रह्मांड है। और चूंकि वह प्रयोगों में हमेशा सक्रिय रूप से शामिल रहता है—योजना बनाना, डिजाइन करना, निर्माण करना, सामग्री का प्रबंधन करना, परीक्षण करना, विश्लेषण करना—इसलिए वह परिणामों से पूरी तरह अलग नहीं हो सकता। प्रश्न हमेशा यही रहता है कि प्रयोगकर्ता का प्रयोग पर क्या प्रभाव पड़ता है।

हम मनुष्य की भौतिक बल का प्रयोग किए बिना भौतिक पदार्थों को नियंत्रित करने की क्षमता से भलीभांति परिचित हो चुके हैं। नेल्या कुलागिना, आलिया विनोग्रावदा, एच. एच. रामा, उरी गेलर और अन्य जैसे व्यक्तियों द्वारा मनोगतिकी (मानसिक साधनों से वस्तुओं को गतिमान करने या परिवर्तित करने की क्षमता) के प्रदर्शन सफलतापूर्वक किए गए हैं।

पिरामिड: प्राचीन और नया चमत्कार करने वाला 21
प्रयोगशाला की सबसे कठोर परिस्थितियों में भी, टेड सेरियोस द्वारा मानसिक रूप से छवियों को फिल्म पर प्रक्षेपित करने की घटना एक और उदाहरण है, जैसा कि चिकित्सक डॉ. ओल्गा वोरल की उच्च-आवृत्ति फोटोग्राफी द्वारा प्रदर्शित पौधों से विद्युत उत्सर्जन को बदलने की क्षमता है। अन्य चिकित्सकों ने मांस को ममीकृत किया है और वस्तुओं को अपने हाथों में पकड़कर पानी के रासायनिक गुणों को बदल दिया है। ग्लीव बैक्स्टर ने विचार संदेशों के माध्यम से पौधों में विद्युत पैटर्न दर्ज किए हैं, और मार्सेल वोगेल ने विचार छवियों के माध्यम से सूक्ष्म जीवन रूपों की संरचना को बदल दिया है। ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जिनमें भूत-प्रेत अनजाने में होने वाले मानसिक उत्सर्जन के माध्यम से भौतिक वस्तुओं को हिलाते हैं। प्रयोगकर्ता की प्रयोग से अनुपस्थिति उसे एक प्रभावशाली कारक के रूप में समाप्त नहीं करती है। बैक्स्टर सैकड़ों मील दूर से अपने पौधों की प्रतिक्रिया को प्रभावित करने में सक्षम थे; डॉ. रॉबर्ट मिलर ने पौधों पर प्रार्थना के प्रभाव के प्रदर्शन के दौरान परीक्षण पौधों में गहन परिवर्तन दर्ज किए, हालांकि प्रार्थना करने वाले लगभग एक हजार मील दूर थे। डगलस डीन ने प्लेथिस्मोग्राफ की सहायता से यह प्रदर्शित किया है कि किसी व्यक्ति के रक्त की मात्रा टेलीपैथिक संदेश प्राप्त होने के क्षण ही बदल जाती है। गेलर ने टेलीविजन तरंगों के ऊपर चम्मच और कांटे मोड़ दिए।
मनोदैहिक चिकित्सा ने यह सिद्ध किया है कि हमारे विचार, दृष्टिकोण और यहाँ तक कि अवचेतन प्रेरणाएँ भी हमारे शारीरिक शरीर पर प्रभाव डालती हैं। तनाव के दौरान सिरदर्द का अनुभव करने वाला या मंच पर बोलने के भय से मतली महसूस करने वाला कोई भी व्यक्ति मन की शक्ति की वास्तविकता की पुष्टि कर सकता है। यह सिद्ध हो चुका है कि विचार और भावनाएँ, भले ही व्यक्त न की गई हों, दूसरों को प्रभावित कर सकती हैं, इसके लिए व्यक्तियों के ऊर्जा स्तरों की निगरानी की गई है। मनोचिकित्सक डॉ. जॉन पिएराकोस ने देखा कि उनके कार्यालय में पौधे अवसादग्रस्त रोगियों की उपस्थिति में मुरझा जाते थे।
ब्लाइंड स्टडीज़ में, परीक्षण विषय को उसकी प्रतिक्रियाओं के बाद ही पता चलता है कि किस वस्तु के साथ व्यवहार किया गया है।

22 पिरामिडों की गुप्त शक्ति के बारे में दर्ज किए गए अध्ययनों से मानवीय प्रभाव की मात्रा को कम करने में मदद मिलती है। और डबल ब्लाइंड अध्ययन, जिसमें न तो प्रयोगकर्ता और न ही विषय को परिणाम दर्ज होने तक यह पता होता है कि कौन सी वस्तु कौन सी है, और भी कम भ्रष्ट होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि शोध रेजर ब्लेड की तीक्ष्णता का परीक्षण है, तो ब्लाइंड अध्ययन में विषय को उपचारित और नियंत्रण दोनों ब्लेडों को बिना यह जाने कि कौन सा ब्लेड कौन सा है, आज़माने के लिए कहा जाएगा। डबल ब्लाइंड अध्ययन में दोनों ब्लेडों को इस तरह से चिह्नित किया जाएगा कि न तो विषय और न ही प्रयोगकर्ता को परिणाम दर्ज होने तक एक सेट को दूसरे से अलग पता चलेगा। यह दृष्टिकोण, उदाहरण के लिए, प्रयोगकर्ता को विषय को टेलीपैथिक संदेश भेजने से रोकेगा, भले ही वह इसे जानबूझकर न करे। हमने पिरामिड के अंदर और बाहर पौधों की वृद्धि और गति को मापने के लिए टाइम-लैप्स फोटोग्राफी का उपयोग किया

और रिकॉर्डिंग के दौरान हम उपस्थित नहीं थे। फिर भी, यह दूर से पौधों को हमारे अचेतन रूप से प्रभावित करने को पूरी तरह से समाप्त नहीं करता है।
यह तथ्य कि हम अपने प्रयोगों में मानवीय कारक के प्रभाव को कम तो कर सकते हैं, लेकिन उसे शून्य तक कम नहीं कर सकते, हमारे प्रयासों को हतोत्साहित नहीं करना चाहिए। यह सभी प्रकार के शोधों के साथ होता है, एक ऐसा तथ्य जिसे वैज्ञानिक धीरे-धीरे स्वीकार करने लगे हैं। पूर्व अंतरिक्ष यात्री एडगर मिशेल ने अंतरिक्ष कार्यक्रम से सेवानिवृत्त होकर अपना समय और ऊर्जा परामनोवैज्ञानिक अध्ययनों को समर्पित कर दी, क्योंकि उनका मानना था कि यह मानव जाति के हित के लिए उच्च प्राथमिकता रखता है। 1972 में डलास में अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में बोलते हुए, कैप्टन मिशेल ने कहा कि विज्ञान अपने विकास के उस बिंदु पर पहुँच गया है जहाँ प्रयोगकर्ता अब स्वयं को अपने प्रयोगों से अलग नहीं कर सकता। उन्होंने इस व्यक्तिगत भागीदारी को शोध के लिए बाधक नहीं माना; बल्कि उन्होंने इसे वैज्ञानिक प्रयास का एक उच्च स्तर माना जिसके माध्यम से मनुष्य के विशाल आयामों का नया ज्ञान प्रकट होगा। मनुष्य के इस बढ़े हुए ज्ञान से, फिर, समझ के लिए नए द्वार खुलेंगे।

पिरामिड: प्राचीन और नया चमत्कार करने वाला 23
मिचेल का मानना था कि ब्रह्मांड... विज्ञान में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त मिचेल ने हाल ही में इंस्टीट्यूट ऑफ नोएटिक साइंसेज (चेतना का अध्ययन) की स्थापना की है।
व्यक्तिगत भागीदारी और ज्ञानोदय की यह भावना पिरामिडों के साथ काम करते समय हमारे लिए उपयुक्त प्रतीत होती है, क्योंकि जैसे-जैसे हम महान पिरामिड के उद्देश्य के बारे में अधिक सीखते हैं, वैसे-वैसे हमारा यह संदेह और मजबूत होता जाता है कि इसका निर्माण मानव विकास के साधन के रूप में किया गया था। यह बात और भी स्पष्ट होती जा रही है कि हम महान पिरामिड के रहस्यों को केवल उसी गति से उजागर कर सकते हैं जिस गति से हम अपने स्वयं के आयामों के बारे में सीखते हैं। ऐसा लगता है कि महान निर्माताओं का यही उद्देश्य रहा होगा।

2. ऐतिहासिक पहेली
मानव निर्मित सबसे प्राचीन और सबसे विशाल संरचना। इस तथ्य पर विचार करने मात्र से ही सामान्य जिज्ञासा रखने वाले व्यक्ति के मन में अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं - क्या, क्यों और कब। पिरामिडों का इतिहास, और विशेष रूप से महान पिरामिड का इतिहास, एक अत्यंत रोचक अध्ययन है; इससे जुड़ी किंवदंतियाँ तो और भी अधिक मनमोहक हैं। यद्यपि एक अध्याय में हम कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों और घटनाओं का संक्षिप्त विवरण ही दे सकते हैं। आशा है कि यह संक्षिप्त अवलोकन हमें वर्तमान शोध के लिए पृष्ठभूमि के रूप में महत्वपूर्ण बिंदुओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में सहायक होगा।
ग्रेट पिरामिड के चारों ओर का रहस्य समय के साथ कम नहीं होता। इसके विपरीत, इसके इतिहास, निर्माण और उद्देश्य के बारे में जितना अधिक पता चलता है, रहस्य उतना ही गहराता जाता है। इस विषय को पर्याप्त रूप से कवर करने के प्रयास में कई पुस्तकें लिखी गई हैं, और इनमें से कुछ को अतिरिक्त पठन में रुचि रखने वालों के लिए संदर्भ सूची में सूचीबद्ध किया गया है। हम यहां उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे, क्योंकि ऐसी महत्वाकांक्षा

ऐतिहासिक पहेली 25
इसे पिन की नोक पर शब्दकोश उकेरने की कोशिश के समान माना जा सकता है। वास्तव में, हमारा काम अतीत से थोड़ा-बहुत संपर्क स्थापित करना होगा ताकि वर्तमान की स्थितियों के लिए आधार तैयार किया जा सके।
कुछ लोग पूछ सकते हैं कि जब अन्य कई पिरामिड मौजूद हैं, तो मुख्य रूप से गीज़ा के महान पिरामिड पर ही ध्यान क्यों केंद्रित किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अमेरिका, चीन, हिमालय पर्वतमाला, साइबेरिया, मैक्सिको, मध्य अमेरिका, कंबोडिया, फ्रांस, इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में पिरामिड खोजे गए हैं, साथ ही मिस्र में 30 प्रमुख और कई छोटे पिरामिड भी हैं। तो फिर, महान पिरामिड, जिसे कभी-कभी चेओप्स पिरामिड भी कहा जाता है, में इतनी रुचि क्यों है? मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि यह सबसे बड़ा है, गणितीय और ज्यामितीय रूप से सबसे परिपूर्ण है, और कुछ ऐसी विशेषताओं के कारण जो अन्य पिरामिडों में नहीं पाई जाती हैं।
ऐसा माना जाता है कि ग्रेट पिरामिड मिस्र के ज्ञान का प्रतीक है और अगर कोई रहस्य उजागर होना है तो वह इसके प्रवेश द्वार के अंदर या आसपास ही होगा। पारंपरिक विद्वत्ता के अनुसार, ग्रेट पिरामिड का निर्माण पिरामिड निर्माण के प्रारंभिक काल में, चौथी राजवंश के दौरान हुआ था। मिस्र के विद्वान आई. ई. एस. एडवर्ड्स, जिन्होंने 'द पिरामिड्स ऑफ इजिप्ट' पुस्तक लिखी है, के अनुसार, इससे पहले छह प्रमुख पिरामिड बनाए गए थे और इसके बाद 23 पिरामिड बनाए गए। कुछ विद्वानों का मानना है कि ग्रेट पिरामिड से पहले बने पिरामिड कम विकसित काल के सूचक हैं और इसके बाद बने पिरामिड ज्ञान और शिल्प कौशल में गिरावट या विकृति को दर्शाते हैं।
काहिरा से दस मील पश्चिम में, गीज़ा मैदान के मानव निर्मित समतल एक मील वर्गाकार पठार पर स्थित महान पिरामिड, नील घाटी के ताड़ के पेड़ों के 130 फीट ऊंचे दृश्य को देखता है। महान पिरामिड का आधार लगभग 13 एकड़ क्षेत्र में फैला है और इसे एक इंच के अंश तक समतल किया गया है। ग्रेनाइट और चूना पत्थर के 2,600,000 से अधिक ब्लॉक—जिनमें से प्रत्येक का वजन दो से 70 टन तक है—इसकी वर्तमान 450 फीट से अधिक की ऊंचाई तक पहुंचते हैं। एक इंच के सौवें हिस्से तक की सटीकता से तराशे गए ये ब्लॉक इतने सटीक हैं कि...

26 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
इसे इतनी कुशलता से जोड़ा गया है कि इसके जोड़ एक इंच के पचासवें हिस्से से अधिक चौड़े नहीं हैं। अनुमान है कि ईसा मसीह के समय से लेकर अब तक इंग्लैंड में बने सभी गिरजाघरों, गिरजाघरों और चैपलों की तुलना में इस पिरामिड में अधिक ठोस चिनाई का उपयोग किया गया है।
ग्रेट पिरामिड के साथ दो अन्य पिरामिड भी हैं, जिनमें से एक थोड़ा छोटा है और इसे चेओप्स के उत्तराधिकारी केफ्रेन द्वारा निर्मित माना जाता है, और दूसरा उससे भी छोटा है और इसे केफ्रेन के उत्तराधिकारी माइकेरिन्स द्वारा निर्मित माना जाता है। ये, चेओप्स की पत्नियों और बेटियों के लिए कथित तौर पर निर्मित छह छोटे पिरामिडों के साथ मिलकर, गीज़ा परिसर के नाम से जाना जाता है।
मूल रूप से, ग्रेट पिरामिड पॉलिश किए हुए चूना पत्थर की परत से ढका हुआ था, जिससे इसकी सतह चिकनी थी, न कि सीढ़ीदार। तेरहवीं शताब्दी ईस्वी के आरंभिक भाग के कुछ समय बाद, भूकंपों की एक श्रृंखला ने उत्तरी मिस्र के बड़े हिस्से को नष्ट कर दिया। कई पीढ़ियों के दौरान, काहिरा के पुनर्निर्माण के लिए पिरामिड के 100 इंच मोटे 22 एकड़ के पूरे आवरण को हटा

दिया गया।
पिरामिड सदियों तक बंद रहा; अफसोस की बात है कि इसके प्रवेश द्वार के बारे में कोई भी जानकारी प्राचीन काल में ही खो गई। फिर 820 ईस्वी में, युवा खलीफा अब्दुल्ला अल-मामून, जो हारून अल-रशीद के पुत्र थे और जिनके कारनामों का बखान अरेबियन नाइट्स में किया जाता था, ने पिरामिड के भीतर रखे गए विशाल खजाने और अनमोल दस्तावेजों के बारे में सुना। इंजीनियरों, वास्तुकारों, बिल्डरों और पत्थर के कारीगरों की एक बड़ी टीम के साथ, अल-मामून ने कई दिनों तक चिकनी पत्थर की सतह पर प्रवेश द्वार की खोज की। प्रवेश द्वार न मिलने पर, खलीफा ने संरचना की ठोस चट्टान में सीधे छेद करने का फैसला किया। लेकिन हथौड़े और छेनी पत्थर को खरोंच भी नहीं सके। हार न मानते हुए, अल-मामून ने पत्थर को तब तक गर्म किया जब तक वह लाल न हो जाए और फिर उस पर ठंडा सिरका डाला ताकि चट्टानें टूट जाएं। इसके बाद पत्थर को तोड़ने के लिए हथौड़ों का इस्तेमाल किया गया। 100 फीट लंबी एक छोटी सुरंग खोदने के बाद, अल-मामून परियोजना को छोड़ने के लिए तैयार था, तभी एक मजदूर ने सुना

ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई बड़ा पत्थर उनके काम करने की जगह से कुछ ही दूरी पर खिसक कर अपनी जगह पर आ गया। उन्होंने फिर से प्रयास शुरू किए, उस आवाज़ की ओर सुरंग खोदी और तीन फीट से थोड़ी अधिक ऊँची और तीन फीट चौड़ी एक सुरंग में प्रवेश किया।
मार्ग का ढलान बहुत तीव्र था, लेकिन अरबों ने किसी तरह सुरंग में चढ़कर मूल गुप्त प्रवेश द्वार का पता लगा लिया, जो पिरामिड के आधार से 49 फीट ऊपर बनाया गया था। अल-मामून और उनके साथी पठार की चट्टान में गहरी खोदी गई नीची और खतरनाक सुरंग से नीचे उतरे, लेकिन जिसे अब "गड्ढा" के नाम से जाना जाता है, उसके तल पर उन्हें धूल और मलबे के सिवा कुछ नहीं मिला। गड्ढे के दूसरी ओर उन्हें एक और भी संकरी क्षैतिज सुरंग मिली जो 50 फीट नीचे एक खाली दीवार तक जाती थी। फर्श में एक कुएँ की सुरंग जैसी संरचना दिखाई दी। यह 30 फीट की गहराई तक खोदी गई थी और कहीं नहीं जाती थी।
अवरोही मार्ग में गिरे विशाल पत्थर की ओर लौटते हुए, अल-मामून और उनके साथियों ने अनुमान लगाया कि पत्थर ने एक बड़े लाल ग्रेनाइट के अवरोध को ढक रखा था, जो पिरामिड के भीतर ऊपर की ओर जाने वाले एक अन्य मार्ग को अवरुद्ध कर रहा था। ग्रेनाइट का अवरोध अभेद्य साबित हुआ, इसलिए उन्होंने नरम चूना पत्थर को काटकर उसके चारों ओर खुदाई शुरू की। दो और ग्रेनाइट अवरोधों ने मार्ग को अवरुद्ध कर दिया और ग्रेनाइट के बाद कई चूना पत्थर के ब्लॉक थे। फिर भी मजदूर लगे रहे और अंततः एक कम छत वाले ऊपर की ओर जाने वाले मार्ग में पहुँच गए। घुटनों के बल रेंगते हुए, वे 150 फीट फिसलन भरी चट्टान पर चढ़े, फिर उतनी ही कम छत वाली एक और सुरंग में प्रवेश किया। दूसरी सुरंग के अंत में, वे लगभग 18 फीट चौकोर और ढलानदार छत वाले एक खाली कमरे में पहुँचे। चूंकि अरबों ने अपनी महिलाओं को ढलानदार छतों वाली कब्रों में रखा था, इसलिए इस कमरे को "रानी का कक्ष" के नाम से जाना जाने लगा। लेकिन यहाँ पूर्वी दीवार में एक खाली आले के अलावा कुछ भी नहीं मिला।
अरबवासी वापस आरोहण मार्ग की ओर लौटे और मशालें उठाकर उन्होंने अपने ऊपर एक खाली जगह देखी। एक-दूसरे के कंधों पर चढ़कर उन्होंने

वे इतनी ऊँचाई तक पहुँच सके कि उन्हें पता चला कि वे एक संकरी लेकिन ऊँची गैलरी के तल

पर हैं। यह गैलरी ऊपर की ओर लगभग 157 फीट तक उसी ढलान पर फैली हुई थी जिस पर आरोहण मार्ग था और इसकी ऊँचाई 28 फीट थी। चढ़ाई के अंत में उन्हें लगभग तीन फीट ऊँचा एक विशाल पत्थर मिला, जो छह गुणा आठ फीट का चबूतरा निकला। चबूतरे के आगे का फर्श समतल था लेकिन छत केवल साढ़े तीन फीट ऊँची थी। यह एक छोटे से प्रतीक्षालय का प्रवेश द्वार जैसा था। इसके बाद एक और छोटा और नीचा मार्ग आया और अल-मामून और उनके साथी एक बड़े कमरे में पहुँच गए, जिसकी दीवारें, फर्श और छत पॉलिश किए हुए लाल ग्रेनाइट से बनी थीं। यह कमरा, जो 34 फीट लंबा, 17 फीट चौड़ा और 19 फीट ऊँचा था, बाद में राजा के कक्ष के नाम से जाना जाने लगा।
अरबों ने बेतहाशा खजाने की खोज की, लेकिन उन्हें केवल अत्यधिक पॉलिश किए गए, गहरे चॉकलेट रंग के ग्रेनाइट से बना एक खाली ताबूत ही मिला।
किंवदंती के अनुसार, अल-मामून ने अपने आदमियों को रिश्वत दी और संभवतः अपनी जान भी बचाई। उसने एक कक्ष में सोना छिपा दिया और यह सुनिश्चित किया कि वे उसे खोदकर निकाल लें। खैर, इस तरह उस विशाल संरचना से उसके रहस्य उजागर करवाने का पहला प्रयास समाप्त हो गया।
इसके 450 साल बाद भूकंप आए; पिरामिड की बाहरी परत पूरी तरह से उखड़ गई, लेकिन कई सदियों तक कोई भी पिरामिड के अंदर नहीं जा सका। पिरामिड को लेकर अंधविश्वास फैल गया। कहा जाता था कि इसमें बुरी आत्माएं रहती हैं और यह कीड़े-मकोड़ों और सांपों से भरा हुआ है। बारहवीं सदी के एक साहसी यात्री, नवार्रे के रब्बी बेंजामिन बेन जोनाह ने दावा किया कि पिरामिड का निर्माण जादू-टोने से हुआ था। बेंजामिन के दौरे के कुछ समय बाद ही बगदाद में चिकित्सा और इतिहास के शिक्षक अब्द-अल-लतीफ ने हिम्मत जुटाकर पिरामिड के अंदर कदम रखा, लेकिन कहा जाता है कि वे डर के मारे बेहोश हो गए और बाद में दावा किया कि वे लगभग मृत अवस्था में बाहर आए थे।
सन् 1638 तक ग्रेट पिरामिड में कोई दूसरा आगंतुक नहीं आया था। जॉन ग्रीव्स, जो एक अंग्रेज गणित शिक्षक और खगोलशास्त्री थे, अल-मामून के खजाने से अलग तरह का खजाना खोजने की उम्मीद में पिरामिड में दाखिल हुए।

वह ऐसे आंकड़े तलाश रहे थे जिनसे इस ग्रह के आयामों का पता चल सके। काफी मशक्कत के बाद ग्रीव्स राजा के कक्ष तक पहुंचे, जहां पीटर टॉमकिन्स ने अपनी पुस्तक 'सीक्रेट्स ऑफ द ग्रेट पिरामिड' में लिखा है कि वे इस बात से हैरान थे कि पिरामिड जैसी इतनी विशाल संरचना एक ही कक्ष और उसमें मौजूद एक खाली तिजोरी के चारों ओर क्यों बनी है। उन्हें इसके द्वार (पोर्टकुलिस) या इसके अग्रकक्ष की जटिलता का कोई स्पष्ट कारण समझ नहीं आया, जहां दीवारें रहस्यमय तरीके से चूना पत्थर से ग्रेनाइट में बदल जाती थीं। लेकिन स्वभाव से वैज्ञानिक होने के कारण, ग्रीव्स ने इमारत के बारे में आंकड़े एकत्र करना और उन्हें नोट करना शुरू कर दिया।
ग्रीव्स ने पिरामिड का एक और रहस्यमय हिस्सा खोजा—एक ऐसा भाग जिसका कोई स्पष्ट उद्देश्य नहीं था। ग्रैंड गैलरी के रैंप पर चलते हुए ग्रीव्स को एक पत्थर का ब्लॉक मिला जो सीधे पिरामिड के भीतरी भाग तक जाने वाले मार्ग की ओर जाता था। सुरंग लगभग तीन फीट चौड़ी थी। हालांकि, किनारे पर खांचे खोदे गए थे, और ग्रीव्स 60 फीट नीचे उस "कुएं" में उतरे जहां शाफ्ट एक छोटे से कक्ष या "ग्रोटो" में बदल गया था, जैसा कि अब इसे कहा जाता है। शाफ्ट ग्रोटो के नीचे थोड़ी दूर तक जारी रहा और समाप्त हो गया। ग्रीव्स ने अपने शेष प्रवास को गणित

में समर्पित किया, पिरामिड के अंदर और बाहर हर चीज को सावधानीपूर्वक मापा।
ग्रीव्स द्वारा पिरामिड के किए गए मापों ने सर आइजैक न्यूटन का ध्यान आकर्षित किया, जिन्होंने बाद में "यहूदियों के पवित्र क्यूबिट और कई राष्ट्रों के क्यूबिट पर एक शोध प्रबंध: जिसमें, श्री जॉन ग्रीव्स द्वारा लिए गए महान पिरामिड के आयामों से, मेम्फिस के प्राचीन क्यूबिट का निर्धारण किया गया है" शीर्षक से एक शोध पत्र लिखा।
टॉम्पकिंस कहते हैं, "प्राचीन मिस्रवासियों के क्यूबिट (हाथ की लंबाई) को स्थापित करने में न्यूटन की रुचि कोई व्यर्थ जिज्ञासा नहीं थी, न ही केवल माप का एक सार्वभौमिक मानक खोजने की इच्छा थी; उनका गुरुत्वाकर्षण का सामान्य सिद्धांत, जिसकी उन्होंने अभी तक घोषणा नहीं की थी, पृथ्वी की परिधि के सटीक ज्ञान पर निर्भर था। उन्हें बस इतना ही करना था..."

30 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
ये एराटोस्थनीज और उनके अनुयायियों के पुराने आंकड़े थे, और उनके आंकड़ों के आधार पर उनका सिद्धांत सटीक रूप से लागू नहीं हुआ।
पिरामिड के आधार पर मलबा जमा होने के कारण ग्रीव्स द्वारा पिरामिड के बाहरी भाग का माप सटीक नहीं हो सका, और न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत कुछ वर्षों बाद फ्रांसीसी खगोलशास्त्री जीन पिकार्ड के निष्कर्षों पर आधारित था। न्यूटन, उनके अनुयायी और आलोचक इस बात से अनजान थे कि स्फिंक्स का उपयोग विषुव को इंगित करने के लिए एक भू-माप चिह्न के रूप में किया जा सकता है, और यह कि एक समय इसके पंजों के बीच एक ओबिलिस्क था जिसकी छाया का उपयोग पृथ्वी की सही परिधि और अक्षांश के अंश में भिन्नता की गणना करने के लिए किया जाता था।
नथानिएल डेविसन, जिन्होंने बाद में अल्जीरिया में ब्रिटिश महावाणिज्यदूत के रूप में कार्य किया, ग्रीव्स द्वारा खोजे गए कुएं में उतरे और गुफा के नीचे तक गए, जहां उन्हें केवल मलबा मिला। टॉम्पकिंस लिखते हैं: "डेविसन को यह अजीब लगा कि कोई व्यक्ति पिरामिड के केंद्र में लगभग 200 फीट गहरा गड्ढा खोदने के लिए इतनी मेहनत करे और उसे एक बंद गली में ही छोड़ दे। लेकिन वह और कुछ नहीं कर सकते थे। कुएं की तलहटी बेहद तंग और गंदी थी, और उनकी मोमबत्ती से जो थोड़ी बहुत हवा बची थी, वह भी जल्दी ही खत्म हो गई। साथ ही, बड़ी संख्या में विशाल चमगादड़ों के कारण डेविसन के लिए अपनी मोमबत्ती जलाए रखना मुश्किल हो रहा था; इसलिए उन्होंने बड़ी मेहनत से सतह पर वापसी की।"
डेविसन ने हालांकि पिरामिड की कुछ अन्य विशेषताओं का भी पता लगाया। उन्होंने ग्रैंड गैलरी के शीर्ष पर एक छोटा आयताकार छेद देखा। बड़ी मुश्किल से वे इस छोटे छेद से रेंगकर अंदर गए और उन्हें राजा के कक्ष जितना ही बड़ा एक कमरा मिला, लेकिन उसकी छत इतनी नीची थी कि उसके नीचे खड़ा होना असंभव था। कमरे का फर्श नौ अखंड ग्रेनाइट शिलाखंडों से बना था, जिनका वजन लगभग 70 टन प्रति शिलाखंड था। शिलाखंडों के नीचे का भाग राजा के कक्ष की छत का काम करता था। इसके अलावा, राजा के कक्ष के ऊपर वाले कमरे की छत भी इसी तरह के शिलाखंडों से बनी थी।

ऐतिहासिक पहेली 31
अन्य सभी कक्षों की तरह, इस कक्ष से भी कोई खजाना, कलाकृतियाँ या यहाँ तक कि कोई शिलालेख भी नहीं मिला। इसे डेविसन कक्ष के नाम से जाना जाने लगा और बाद में यह कैप्टन जी. बी. कैविग्लिया के निवास स्थान के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा।

नेपोलियन मिस्र को जीतने आया था, और उसके साथ फ्रांसीसी गणितज्ञों और वैज्ञानिकों का एक दल भी आया था, जिसमें एडमे-फ्रांकोइस जोमार्ड और कर्नल जीन मैरी जोसेफ कौटेल शामिल थे, जिन्होंने पिरामिड का पहले से कहीं अधिक सटीक माप लिया। उनके प्रयासों में सबसे सहायक चीज आधार पर जमा मलबे को हटाना था। उन्होंने उस मैदान का पता लगाया जिस पर महान पिरामिड का निर्माण हुआ था और आधार की चट्टान में बने बड़े-बड़े खांचे भी खोजे जहाँ आधारशिलाएँ रखी गई थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत के कुछ समय बाद, माल्टा के एक जहाज के कप्तान कैविग्लिया (जिनके कारनामों का वर्णन इस पुस्तक में अन्यत्र किया गया है) ने कुएं के शाफ्ट से मलबा हटाया और पाया कि यह अवरोही मार्ग से जुड़ा हुआ है। कर्नल हॉवर्ड-वाइस 1836 में पिरामिड की खोज में कैविग्लिया के साथ शामिल हुए और उन्होंने डेविसन के कक्ष के ऊपर लगभग समान आकार के तीन अतिरिक्त कक्षों की खोज की। ये कक्ष ग्रेनाइट की शिलाओं से अलग किए गए थे और सबसे ऊपरी कक्ष चूना पत्थर के विशाल ब्लॉकों से बना था। हॉवर्ड-वाइस ने यह सिद्धांत दिया कि पांचों एक के ऊपर एक बने कक्षों को राजा के कक्ष की सपाट छत को उसके ऊपर की 200 फीट ठोस चिनाई के दबाव से राहत देने के लिए बनाया गया था।

हावर्ड-वाइस ने राजा के कक्ष तक जाने वाली 200 फीट चट्टान से होकर गुजरने वाले दो वायु निकास छिद्रों का भी पता लगाया। जब इन छिद्रों से मलबा हटा दिया गया, तो ताजी हवा ने कमरे को पूरे वर्ष 68 डिग्री के एक समान तापमान पर बनाए रखा।

जैसे-जैसे यह स्पष्ट होता गया कि ग्रेट पिरामिड में न तो सोना, न ही रत्न, न ही कलाकृतियाँ थीं, और यह एक मकबरा कम ही प्रतीत होने लगा, विभिन्न रुचियों और पृष्ठभूमियों वाले विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति और इसके निर्माण के उद्देश्यों पर अटकलें लगाईं। जबकि पारंपरिक

32 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

आज तक के राष्ट्रीय मिस्रविज्ञानी यह दावा करते रहे हैं कि इसका निर्माण चेओप्स के मकबरे के रूप में किया गया था, लेकिन जॉन टेलर, सर जॉन हर्शल, पियाज़ी स्मिथ, विलियम पेट्री, डेविड डेविडसन, रॉबर्ट टी. बैलार्ड, मोसेस बी. कोट्सवर्थ, जोसेफ नॉर्मन लॉकियर, रिचर्ड ए. प्रॉक्टर, लिवियो स्टेचिनी और अन्य विद्वानों के शोध के बदौलत मिले सबूत एक कहीं अधिक बड़े उद्देश्य की ओर दृढ़ता से इशारा करते हैं।

आज के साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि महान पिरामिड में एक लुप्त विज्ञान समाहित है। क्या विश्व के सात अजूबों में से बचा यह अंतिम अजूबा, उन अज्ञात वास्तुकारों की रचना है, जिन्हें ब्रह्मांड का कहीं अधिक गहरा ज्ञान था, जितना कि उनके बाद आने वालों को? हाल ही तक इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं था कि पाँच हज़ार साल पहले के मिस्रवासी पिरामिड का स्थान निर्धारित करने, उसकी दिशा तय करने और उसका निर्माण करने के लिए आवश्यक सटीक खगोलीय गणनाओं और गणितीय समाधानों में सक्षम थे।

टॉम्पकिंस अपने परिचय में लिखते हैं, "यह संयोगवश ही था कि नींव लगभग पूरी तरह से सही उत्तर दिशा में उन्मुख थी, और इसकी संरचना में पाई (वह स्थिरांक जिससे वृत्त के व्यास को गुणा करने पर उसकी वास्तविक परिधि प्राप्त होती है) का मान कई दशमलव स्थानों तक सटीक था।" वे बताते हैं कि इसके मुख्य कक्ष में प्रसिद्ध पाइथागोरस प्रमेय समाहित है, जिसे प्लेटो ने अपने ग्रंथ "टिमेयस" में ब्रह्मांड का आधार बताया था। टॉम्पकिंस आगे कहते हैं, "ऐसा कहा जाता है कि पिरामिड के कोण और ढलान त्रिकोणमितीय मानों की उन्नत समझ को दर्शाते हैं, और इसकी आकृति 'स्वर्ण खंड' के मूलभूत अनुपातों को सटीक रूप से समाहित करती है, इसके लिए भी

संयोग ही जिम्मेदार था।"
आज के गणितज्ञों का दावा है कि मिस्र में पाई का पहला मोटा-मोटा उपयोग 1700 ईसा पूर्व तक नहीं हुआ था, जो कि महान पिरामिड के निर्माण के कम से कम एक हजार साल बाद की बात है। पाइथागोरस प्रमेय को संभवतः पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में तैयार किया गया था, और त्रिकोणमिति का श्रेय हिप्पारो को दिया जाता है।

ऐतिहासिक पहेली 33
ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में चूस। यही हम अपनी पाठ्यपुस्तकों में पढ़ते हैं। लेकिन अब किसने कब क्या किया, यह पूरा विषय पुनर्विचार के अधीन है।
टॉम्पकिंस बताते हैं, "प्राचीन मिस्र के चित्रलिपि और बेबीलोनियों और सुमेरियनों की कीलाकार गणितीय पट्टियों के हालिया अध्ययनों से यह स्थापित हो चुका है कि ईसा से कम से कम तीन हजार वर्ष पूर्व मध्य पूर्व में एक उन्नत विज्ञान फला-फूला था, और पाइथागोरस, एराटोस्थेनस, हिप्पार्कस और अन्य यूनानियों, जिन्हें इस ग्रह पर गणित का जनक माना जाता है, ने केवल दूरस्थ और अज्ञात पूर्वजों द्वारा विकसित एक प्राचीन विज्ञान के अंशों को ही ग्रहण किया था। ... महान पिरामिड, प्राचीन काल के अधिकांश महान मंदिरों की तरह, एक गुप्त ज्यामिति के आधार पर बनाया गया था जो केवल कुछ ही ज्ञात विद्वानों के समूह को ज्ञात थी, जिसके मात्र अंश शास्त्रीय और अलेक्जेंड्रियाई यूनानियों तक पहुंचे थे।"
इन और कई अन्य खोजों, जिनकी सूची लगातार बढ़ती जा रही है, के चलते ग्रेट पिरामिड का नए सिरे से मूल्यांकन करना, इसके इतिहास पर गहराई से नज़र डालना, और वास्तव में संदर्भ बिंदुओं का एक संपूर्ण नया ढांचा तैयार करना अनिवार्य प्रतीत होता है। अब हम गंभीरता से यह सोचने पर मजबूर हैं कि क्या ग्रेट पिरामिड के निर्माताओं ने हमारी समझ से कहीं अधिक ज्ञान और उपलब्धियां हासिल की थीं। इस ज्ञान भंडार के निहितार्थ विस्फोटक और दूरगामी हैं। यह धारणा कि ग्रेट पिरामिड का निर्माण किसी फ़राओ के अहंकार को संतुष्ट करने के लिए एक पर्वतीय मकबरे के रूप में किया गया था, अब मान्य नहीं है।
यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ग्रेट पिरामिड में कभी कोई ममी नहीं मिली। कुछ मिस्रविदों का यह दावा कि फिरौन की ममियों को चोरों और लुटेरों से बचाने के लिए ताबूतों और रास्तों को सील कर दिया गया था, शायद ही तर्कसंगत लगता है, क्योंकि तथाकथित दफन कक्ष को सील करने के बाद पहली बार खोला गया और वह खाली पाया गया।
कुछ विद्वानों का मानना है कि ग्रेट पिरामिड का निर्माण दीक्षा स्थल के रूप में किया गया था: न केवल रहस्यवादी स्कूलों द्वारा दीक्षा देने के स्थल के रूप में, बल्कि दीक्षा के एक साधन के रूप में भी।

34 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
दूसरे शब्दों में, इस अवधारणा के अंतर्गत, पिरामिड द्वारा उत्पन्न या संवर्धित ऊर्जा क्षेत्र चेतना के उत्थान में योगदान करते हैं।
मैनली पामर हॉल ने अपनी पुस्तक "द सीक्रेट टीचिंग ऑफ ऑल एजेस" में ग्रेट पिरामिड को शाश्वत ज्ञान और संसार के बीच प्रत्यक्ष समझौते के रूप में देखा है। इसके कोण मौन, गहनता, बुद्धि और सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। त्रिभुजाकार भुजाएँ त्रिविध आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। पिरामिड का दक्षिणी भाग शीत, उत्तरी भाग ताप, पश्चिमी भाग अंधकार और पूर्वी भाग प्रकाश का प्रतीक है।

हॉल ग्रेट पिरामिड को "रहस्यों का पहला मंदिर" और गुप्त सत्यों का भंडार मानते हैं। मनुष्य ग्रेट पिरामिड के द्वारों से प्रवेश करते ही प्राचीन ज्ञान से परिपूर्ण होकर बाहर आते थे। ऐसा माना जाता है कि "द्वितीय मृत्यु" की घटना राजा के कक्ष में घटित हुई थी, जहाँ दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति को प्रतीकात्मक रूप से सूली पर चढ़ाया जाता था और ताबूत में रखा जाता था। इसके बाद दीक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति भौतिक जगत से प्रकृति के दिव्य स्तरों में संक्रमण का अनुभव करता था।
अनुष्ठान के दौरान एक समय ताबूत पर प्रहार किया गया, जिससे एक असामान्य ध्वनि उत्पन्न हुई। "पिरामिड की आवाज़" नामक अध्याय में, हम ध्वनि के भौतिक वस्तुओं पर प्रभाव, पौधों की वृद्धि, चिकित्सा में इसके उपयोग और चेतना की अवस्थाओं को प्रभावित करने के एक उपकरण के रूप में इसके प्राचीन और आधुनिक उपयोग से संबंधित प्रयोगों पर चर्चा करते हैं।
गुप्त अनुष्ठानों के पूर्ण होने पर, ऐसा माना जाता है कि दीक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पुनर्जन्म हुआ, उसने दूसरा जन्म अनुभव किया और वह दो लोकों का निवासी बन गया। इसके बाद वह प्रबुद्ध या ज्ञानी हो गया और उसे संसार का ज्ञान प्राप्त हो गया।
योग दर्शन के अनुसार, मनुष्य में तीन स्तर की अनुभूतियाँ या अनुभव होते हैं: भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। मनुष्य में विकासात्मक प्रक्रियाओं के दौरान, वह स्वयं और संसार के प्रति न केवल अपनी भौतिक इंद्रियों के माध्यम से, बल्कि मानसिक इंद्रियों के माध्यम से भी प्रतिक्रिया करता है। यह ऊर्जा द्वारा शरीर के भीतर चक्रों या ऊर्जा के भंवरों को सक्रिय करने से संभव होता है।

ऐतिहासिक पहेली 35
शरीर का ईथर या विद्युत आवरण। चक्रों या केंद्रों की बढ़ी हुई सक्रियता व्यक्ति को न केवल भौतिक उत्तेजनाओं बल्कि मानसिक घटनाओं के प्रति भी प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाती है। बढ़ती जागरूकता और कार्यक्षमता का उच्च स्तर अंततः सभी चक्रों के एक साथ सक्रिय होने, शरीर में ऊर्जा के प्रवाह और चेतना को उसके उच्चतम स्तर या आध्यात्मिक जागृति तक ले जाने की ओर ले जाता है। इस अवस्था को ज्ञानोदय के रूप में देखा जाता है, जो मनुष्य के मनोशारीरिक तंत्रों के उच्चतर सामंजस्य और ऊर्जा संसाधनों के विस्तारित उपयोग से प्राप्त होता है। सभी सात चक्रों के सक्रिय होने पर, व्यक्ति अधिक मात्रा में प्रकाश या प्रभामंडल विकीर्ण करता है। ऊर्जा रीढ़ की हड्डी के आधार पर स्थित अपने स्थान से केंद्रों के माध्यम से ऊपर की ओर प्रवाहित होती है और मस्तिष्क में पिट्यूटरी ग्रंथि और पीनियल ग्रंथि के बीच परस्पर क्रिया के माध्यम से जागरूकता उच्च केंद्रों में केंद्रित हो जाती है। योग दर्शन में केंद्रों के माध्यम से प्राणिक ऊर्जा के प्रवाह को सर्प शक्ति का जागरण, कुंडलिनी का उदय या अग्नि दीक्षा के रूप में देखा जाता है।
इस प्रणाली के अनुसार, आध्यात्मिक जागृति कई विधियों द्वारा प्राप्त की जा सकती है, यद्यपि इनमें से कोई भी विधि एकाकी रूप से या अन्य विधियों से पूर्णतः पृथक होकर कार्य नहीं करती: 1. विकासवादी प्रक्रियाओं के माध्यम से कार्य करने के उच्चतर स्तरों के स्वाभाविक प्रकटीकरण द्वारा, जिसे व्यक्ति के कार्यों द्वारा धीमा या तेज किया जा सकता है; 2. एक गुरु या शिक्षक की विशेष सहायता द्वारा, जो स्वयं इस ऊर्जा को नियंत्रित करता है और इस प्रकार इसे इस प्रकार निर्देशित कर सकता है कि यह साधक पर प्रभाव डाले; और 3. चक्रों को सक्रिय करने और कुंडलिनी शक्ति को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए विशेष अभ्यासों, अनुशासनों और तकनीकों के उपयोग द्वारा।
हम इस परिकल्पना पर विचार कर रहे हैं कि ग्रेट पिरामिड को उच्च ऊर्जा स्तरों को सक्रिय करने

और चेतना को उन्नत करने के साधन के रूप में बनाया गया था। पिरामिड के भीतर समय बिताने के परिणामस्वरूप मानसिक क्षमताओं में वृद्धि के हमारे और अन्य लोगों के अनुभव इस ओर इशारा करते हैं कि यह निर्माताओं की डिजाइन योजनाओं में से एक हो सकता है।

36 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

ग्रेट पिरामिड के बारे में। चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं पर आधारित अध्याय में इस विषय पर अतिरिक्त ध्यान दिया गया है।

हालांकि अरबों ने लंबे समय से यह दावा किया था कि ग्रेट पिरामिड का निर्माण एक खगोलीय वेधशाला के रूप में किया गया था, लेकिन सदी के अंत तक इस बात का कोई तर्कसंगत समाधान सामने नहीं आया कि पॉलिश किए गए किनारों और आंतरिक मार्गों का उपयोग अवलोकन के लिए कैसे किया जाता था।

ब्रिटिश खगोलशास्त्री रिचर्ड एंथोनी प्रॉक्टर को एक प्राचीन रोमन दस्तावेज़ मिला, जिससे पता चलता है कि जब ग्रेट पिरामिड को ग्रैंड गैलरी के स्तर तक बनाया गया होता, तो यह एक वेधशाला के रूप में अच्छी तरह से काम कर सकता था। इससे एक बड़ा वर्गाकार चबूतरा मिलता जहाँ प्राचीन खगोलशास्त्री तारों की गति को रिकॉर्ड कर सकते थे। तारों, सूर्य और चंद्रमा के इस मध्याह्न रेखा से गुजरने के क्षण का पता लगाने के लिए उन्हें आकाशीय गुंबद के आर-पार एक सटीक मध्याह्न रेखा की आवश्यकता होती।

प्रॉक्टर का तर्क था कि निर्माताओं ने सबसे पहले मध्याह्न रेखा पर संरेखित एक विशाल क्रमिक खांचा बनाया था। इस खांचे के विभिन्न स्तरों से वे तारों की गति और उनके विभिन्न पारगमनों का अवलोकन कर सकते थे।

अपनी पुस्तक "द ग्रेट पिरामिड, ऑब्जर्वेटरी, टॉम्ब एंड टेम्पल" में प्रॉक्टर बताते हैं कि वास्तुकारों ने इस तरह की वेधशाला का निर्माण कैसे किया होगा। स्थलीय मध्याह्न रेखा के लिए एक सटीक उत्तर-दक्षिण अक्ष प्राप्त करने के लिए, उन्होंने कुछ स्तंभों के शीर्षों का उपयोग करके उत्तरी ध्रुव के सबसे निकट स्थित तारे पर ध्यान केंद्रित किया होगा और उसके वृत्ताकार पथ के शीर्ष और निचले बिंदुओं का पता लगाया होगा। इन दोनों बिंदुओं से होकर गुजरने वाली रेखा—जिसे साहुल रेखा से आसानी से मापा जा सकता है—सही उत्तर दिशा होती।

एक बार जब प्राचीन वास्तुकारों ने आकाश से सही मध्याह्न रेखा को ज़मीन पर स्थानांतरित कर दिया, तो वे चट्टान के माध्यम से एक अवरोही मार्ग खोदकर रेखा को स्थिर कर सकते थे, और अपने चुने हुए तारे का उपयोग करके सुरंग को ठीक उसी कोण पर नीचे की ओर निर्देशित कर सकते थे जिस कोण पर उसकी किरणें पड़ती हैं। प्रॉक्टर का तर्क था कि यह सुरंग दिशात्मक रेखा को पूर्ण स्थिरता प्रदान करती और मार्ग जितना लंबा होता, उसकी दिशा उतनी ही सटीक होती।

ऐतिहासिक पहेली 37

प्रॉक्टर का सिद्धांत अवरोही मार्ग की दीवारों की पूर्णतः सीधी रेखा की व्याख्या करता है। अवरोही मार्ग की लंबाई और उसके अवरोहण कोण को मापकर, वास्तुकार प्रारंभिक त्रिकोणमिति का उपयोग करके पिरामिड के निर्माण के केंद्र के रूप में अवरोही मार्ग के ठीक ऊपर एक केंद्रीय बिंदु का पता लगा सकते थे। एक केंद्रीय बिंदु और एक सटीक मध्याह्न रेखा होने पर, निर्माता वर्गाकार आधार के लिए छेद बना सकते थे और समतल चबूतरे पर पत्थर की परतें बिछाना शुरू कर सकते थे। प्रॉक्टर का मानना था कि वास्तुकार तारे से आने वाली प्रकाश किरणों के साथ जल कुंडों का

उपयोग करके सटीक समतलीकरण प्राप्त कर सकते थे।
निचले पत्थरों की परतों के लिए एक सटीक दिशा बनाए रखने के लिए, सुरंग को पिरामिड के बाहरी हिस्से तक पहुंचने तक नीचे की परतों से ऊपर की ओर बढ़ाया जा सकता था। शेष परतों को सटीक रूप से बिछाने के लिए, प्रॉक्टर ने तर्क दिया कि निर्माताओं ने अवरोही मार्ग के समान ही परावर्तक कोण (26 डिग्री और 17 मिनट) पर एक आरोही मार्ग बनाया। उन्होंने अवरोही मार्ग को पानी से भर दिया और इस प्रकार ध्रुव तारे को आरोही मार्ग से वापस ऊपर की ओर परावर्तित कर दिया, जिससे मार्ग सही दिशा में बना रहा और पिरामिड समतल रहा।
प्रॉक्टर का कहना है कि अवरोही मार्ग में पानी रोकने के लिए पत्थर की चिनाई कठोर चट्टान की होनी चाहिए और उसे सावधानीपूर्वक जोड़ा जाना चाहिए। दिलचस्प बात यह है कि इस विशेष स्थान पर पत्थर मार्ग के बाकी हिस्सों की तुलना में कहीं अधिक कठोर हैं और उन्हें अधिक बारीकी से जोड़ा गया है।
लेकिन फिर आरोही मार्ग अचानक 28 फीट चौड़ी एक अतिव्यापी गैलरी में बदल जाता है। पत्थर की परतों के निर्माण के लिए दिशा-निर्देश के रूप में इसकी कोई स्पष्ट भूमिका नहीं है, लेकिन प्रॉक्टर का मानना था कि वास्तुकला की उत्कृष्ट रचना और सावधानीपूर्वक निर्माण को देखते हुए इसका कोई महत्वपूर्ण उद्देश्य अवश्य रहा होगा।
प्रॉक्टर ने निर्णय लिया कि यदि कोई प्राचीन खगोलशास्त्री उत्तरी ध्रुव से गुजरने वाली मध्याह्न रेखा द्वारा ठीक दो भागों में विभाजित एक बड़े अवलोकन क्षेत्र की इच्छा रखता है ताकि वह सूर्य के पारगमन का अवलोकन कर सके, तो यह संभव है।

38 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

खगोलीय पिंडों को देखने के लिए, उन्होंने किसी वास्तुकार से ऊर्ध्वाधर दीवारों वाली एक अत्यंत ऊँची दरार बनाने का अनुरोध किया होगा—एक ऐसी गैलरी जिसका द्वार ध्रुव तारे के परावर्तन का उपयोग करते हुए, एक सटीक मध्याह्न रेखा द्वारा दो भागों में विभाजित किया गया हो। ऐसी दरार से झाँककर, प्रेक्षक राशिचक्र के सभी पिंडों के पारगमन को देख सकता था और प्रत्येक तारे के एक सटीक मध्याह्न रेखा पर पारगमन को नोट कर सकता था। आज का खगोलशास्त्री भी ठीक यही करता है जब वह अपने पारगमन वृत्त को ऊर्ध्वाधर मध्याह्न रेखाओं पर सेट करता है।
प्रॉक्टर की परिकल्पना है कि क्वीन्स चैंबर में कोई व्यक्ति ग्रैंड गैलरी में मौजूद अन्य पर्यवेक्षकों के समन्वय से रेत घड़ी या जल घड़ी की सहायता से समय का अनुमान लगा सकता था और गैलरी के दृश्य क्षेत्र में किसी तारे के पारगमन की शुरुआत या समाप्ति का संकेत दे सकता था। अवरोही मार्ग से परावर्तक जल कुंड में देखते हुए, खगोलशास्त्री किसी तारे के पारगमन के सटीक क्षण का निर्धारण कर सकता था, क्योंकि यही एकमात्र क्षण है जब उसकी किरणें परावर्तित होती हैं। टॉम्पकिंस हमें याद दिलाते हैं कि यह वही प्रणाली है जिसका उपयोग आज वाशिंगटन, डी.सी. में स्थित अमेरिकी नौसेना वेधशाला में किया जाता है, जहाँ पारे के कुंड में परावर्तन द्वारा तारों के दैनिक पारगमन को पल भर में दर्ज किया जाता है।
टॉम्पकिंस ने हार्वर्ड में विज्ञान के इतिहास के प्रोफेसर जॉर्ज सार्टन के हवाले से कहा है कि प्रारंभिक मिस्रवासियों की खगोलीय क्षमता "न केवल उनके कैलेंडर, तारामंडल के शिखरों की सारणियों और तारामंडल के उदय की सारणियों से सिद्ध होती है, बल्कि उनके कुछ उपकरणों जैसे कि चतुर सूर्यघड़ी या साहुल रेखा और कांटेदार छड़ के संयोजन से भी सिद्ध होती है, जिससे वे किसी तारे के दिगंश का निर्धारण कर पाते थे।"
सदी के मोड़ के कुछ ही समय बाद, कई पिरामिडशास्त्रियों ने यह साबित करने का प्रयास किया

कि ग्रेट पिरामिड में दुनिया का 6,000 साल का भविष्यसूचक इतिहास समाहित है, जो 4000 ईसा पूर्व से शुरू होकर 2045 ईस्वी तक चलता है। इन भविष्यवाणियों की तुलना बाइबिल से की गई। उन्होंने पत्थर में एक प्रतीकात्मक आकृति की कल्पना की जिसमें अवरोही मार्ग मानवता के अज्ञान की ओर बढ़ते मार्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

ऐतिहासिक पहेली 39
और बुराई। जहाँ अवरोही मार्ग और आरोही मार्ग मिलते थे, वहाँ दुष्ट आत्माएँ पाताल की ओर बढ़ती रहीं, जबकि शेष मानवता, ईसाई धर्म द्वारा बचाई गई, आरोही मार्ग से ऊपर की ओर भव्य दीर्घा के प्रकाश की ओर बढ़ती रही। महान चरण को पार करने के बाद, मानवता को राजा के कक्ष और द्वितीय आगमन की महिमा में प्रवेश करने से पहले अराजकता के प्रवेश कक्ष से विनम्रतापूर्वक गुजरते हुए आगे बढ़ना होगा।
टॉम्पकिंस के अनुसार, भविष्यवाणी की कालानुक्रमिक व्यवस्था को कथित तौर पर मार्गों और कक्षों के साथ चिह्नित किया गया था, जिसमें एक वर्ष एक पिरामिड इंच के अनुरूप था, जो पहले सृजित मनुष्य से शुरू होकर न्याय के दिन पर समाप्त होता था।
अपनी पुस्तक "द सोर्स ऑफ मेजर" में जे. राल्स्टन स्किनर का तर्क है कि ग्रेट पिरामिड दीक्षा का मंदिर था। उन्होंने पिरामिड को यहूदी काबाला से जोड़ा, जो प्रतीकात्मक प्रतीकों की एक प्रणाली है जिसके बारे में माना जाता है कि यह बाइबिल की गुप्त शिक्षाओं को प्रस्तुत करती है और मनुष्य की उत्पत्ति के महान ब्रह्मांडीय सिद्धांतों को प्रकट करती है।
आज के समय में मध्ययुगीन पैगंबर नोस्ट्राडेमस और एडगर केसी और जीन डिक्सन जैसे आधुनिक पैगंबरों के व्यापक अनुयायियों को देखते हुए, कई लोगों के लिए यह मानना मुश्किल नहीं है कि प्राचीन पैगंबरों ने पत्थरों पर अपने भविष्य के प्रमाण छोड़े थे। हालांकि, भविष्यवाणी की प्रकृति पर वर्तमान शोध और चेतना की परिवर्तित अवस्थाओं के अध्ययन के साथ, अधिकांश रुचि अब ग्रेट पिरामिड और विशेष रूप से इसकी छोटी प्रतिकृतियों पर केंद्रित है, जिन्हें भविष्यसूचक अंतर्दृष्टि के साथ जागरूकता की अवस्थाओं को प्रेरित करने के साधन के रूप में देखा जाता है।
यह कभी भी निश्चित नहीं हो पाया है कि ग्रेट पिरामिड का निर्माण किसने और कब करवाया था। इसके निर्माण से संबंधित कोई भी रिकॉर्ड नहीं मिला है। मिस्र के पुरातत्वविदों में पूर्ण सहमति नहीं है, लेकिन वे आम तौर पर मानते हैं कि इसका निर्माण चौथी राजवंश के दौरान, 2720 से 2560 ईसा पूर्व के बीच हुआ था। निर्माण की अवधि आमतौर पर 30 से 56 वर्ष बताई जाती है।

40 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
लेकिन कई असहमति जताने वाले भी हैं। विद्वानों को हैरान करने वाली एक बात यह है कि पिरामिडों का निर्माण, विशेष रूप से गीज़ा के महान पिरामिड का निर्माण, गणित, खगोल विज्ञान, भूगोल, नौवहन, इंजीनियरिंग, वास्तुकला आदि का पूर्ण विकसित ज्ञान दर्शाता है, जबकि इन विज्ञानों को सीखने के लिए कोई स्पष्ट अवधि उपलब्ध नहीं है।
कई लोगों ने यह प्रस्ताव दिया है कि पिरामिड के निर्माता अटलांटिस की उन्नत सभ्यता से थे, जिन्होंने सभी ज्ञात विज्ञानों को संरक्षित करने के साधन के रूप में, साथ ही दीक्षा के मंदिर के रूप में और शक्तिशाली ऊर्जा क्षेत्र उत्पन्न करने के उपकरण के रूप में पिरामिड का निर्माण किया था।

इस मत को एडगर केसी के लेखों से समर्थन मिला है। केसी के अनुसार, लगभग 12,000 ईसा पूर्व एक उन्नत सभ्यता से नौ सौ लोगों का एक समूह मिस्र में आया था। उनके साथ एक युवा पुजारी, रा-ता भी थे, जो सृजनात्मक शक्तियों के लिए एक माध्यम थे। उन्होंने मिस्र को क्यों चुना था? लेख 281-42 में कहा गया है: "उस नेता या शिक्षक (भौतिक नेता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक व्याख्याकार या मार्गदर्शक) ने इसे प्रकृति की सार्वभौमिक गतिविधियों के केंद्र के साथ-साथ आध्यात्मिक शक्तियों के केंद्र के रूप में निर्धारित किया था, और जहाँ लेमुरिया, अटलांटिस और बाद के काल में बाढ़ के विनाश के कारण पृथ्वी में उत्पन्न होने वाली उथल-पुथल से सबसे कम व्यवधान हो सकता था।"
रा-ता के प्रयासों में सर्वोपरि था महान पिरामिड का निर्माण, जो युगों-युगों तक एक आदर्श बना रहा। इसे इस प्रकार डिज़ाइन किया गया था कि इसके गलियारों और कक्षों की संरचना में, और इसके गणितीय और ज्यामितीय संबंधों में, उन लोगों द्वारा अर्जित ज्ञान के साथ-साथ आने वाली शताब्दियों की भविष्यवाणियों को भी समाहित किया जा सके। केसी रीडिंग 5748-5 के अनुसार, यह विशाल संरचना "कभी-कभी श्वेत बंधुत्व" कहे जाने वाले लोगों के दीक्षा मंदिर के रूप में भी कार्य करती थी, और इसका निर्माण विशुद्ध शारीरिक श्रम के अलावा अन्य तरीकों से किया गया था, क्योंकि अटलांटिसवासियों ने इसके निर्माण में सहायता की थी। महान पिरामिड का निर्माण कैसे हुआ?

ऐतिहासिक पहेली 41
पिरामिड का निर्माण? "प्रकृति में मौजूद उन शक्तियों के प्रयोग से, जिनके कारण लोहा तैरता है, पत्थर उसी प्रकार हवा में तैरता है।" (5748-6)
पियाज़ी स्मिथ और जोसेफ ए. सीस जैसे कुछ विद्वानों का मानना था कि महान पिरामिड का निर्माण ईश्वर के मार्गदर्शन से संभव हुआ था। एरिक वॉन डैनिकेन और अन्य का प्रस्ताव है कि महान पिरामिड, साथ ही कई अन्य प्राचीन संरचनाएं, अंतरिक्ष से आए उन बुद्धिमान प्राणियों द्वारा बनाई गई थीं, जिन्होंने हजारों साल पहले इस ग्रह का दौरा किया था। हाल के रूसी लेखकों का मानना है कि इन संरचनाओं के निर्माता लगभग दस से बारह हजार साल पहले इंडोनेशिया से आए थे, जब उनकी उन्नत सभ्यता एक प्राकृतिक आपदा में नष्ट हो गई थी। रूसियों का दावा है कि उन्हें इस सिद्धांत का समर्थन करने वाली कई वस्तुएं मिली हैं, जिनमें खगोलीय मानचित्र और ऐसे क्रिस्टल लेंस शामिल हैं जिन्हें केवल विद्युत प्रक्रिया द्वारा ही पीसा जा सकता है। जॉर्ज इवानोविच गुरजिएफ ने अपनी पुस्तक "मीटिंग्स विद रिमार्केबल मेन" में बताया है कि उन्हें एक बार पिरामिड और स्फिंक्स सहित पूर्व-रेत मिस्र का एक मानचित्र प्राप्त हुआ था।
ग्रेट पिरामिड की सबसे पुरानी तिथियों में से एक अरब लेखक अबू ज़ैद अल बल्खी द्वारा दी गई है, जो एक प्राचीन शिलालेख का हवाला देते हुए दावा करते हैं कि पिरामिड का निर्माण उस समय हुआ था जब कर्क राशि में वीणा नक्षत्र था, जिसका अर्थ "हिजरी से 36 हजार वर्ष पहले" या लगभग 73,000 वर्ष पूर्व है। यह आयु संरचना पर कार्बन-14 की कुछ रीडिंग से मेल खाती प्रतीत होती है, जो इसे लगभग 71,000 ईसा पूर्व की बताती है, हालांकि अब आयु मापने में कार्बन-14 की विश्वसनीयता पर कुछ सवाल उठ रहे हैं।
पिरामिडों के वास्तविक निर्माण को लेकर भी विवाद बना हुआ है। ऐसा माना जाता है कि ग्रेट पिरामिड के निर्माण के लिए अधिकांश चूना पत्थर नील नदी के उस पार कुछ मील दूर स्थित मोकाट्टम खदानों से लाए गए थे, हालांकि कुछ पत्थर गीज़ा की पहाड़ियों से भी आए प्रतीत होते हैं। राजा के कक्ष में प्रयुक्त 70 टन के ग्रेनाइट ब्लॉकों का निकटतम स्रोत...

42 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

असवान की पत्थर की खदान सियेन के पास स्थित है, जो नील नदी से 500 मील ऊपर की ओर है।

कुछ विद्वान इस बात से संतुष्ट प्रतीत होते हैं कि दो से 70 टन वजनी 2,600,000 पत्थर के ब्लॉकों को खदानों से निकाला गया और तांबे के उपकरणों से बारीक नक्काशी की गई, फिर उन्हें स्लेज या रोलर्स पर लादकर बजरा तक ले जाया गया, वहां से उतारकर फिर से निर्माण स्थल तक ले जाया गया और रस्सियों, पुली, स्लाइड और लकड़ी के क्रेनों द्वारा अपनी जगह पर उठाया गया।

अन्य लेखकों को यह विश्वास करना कठिन लगता है कि आदिम उपकरण उस कार्य को पूरा कर सकते थे, जबकि आज के वास्तुकार और इंजीनियर अपने सभी तकनीकी संसाधनों के बावजूद उस उपलब्धि को दोहरा नहीं सकते।

टॉथ और नीलसन ने अपनी पुस्तक 'पिरामिड पावर' में लिखा है: "मिस्रवासियों द्वारा परिवहन और अनलोडिंग में किए गए इंजीनियरिंग के कारनामे आज हमारे विशेषज्ञों द्वारा आधुनिक तकनीकों और उपकरणों के उपयोग से किए जाने वाले कारनामों के बराबर हैं। यह बात 1960 के दशक में तब स्पष्ट हुई जब असवान बांध का निर्माण पूरा होने वाला था। ■ दुनिया भर के कुछ इंजीनियरों ने अत्याधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हुए, असवान बांध के बनने से पहले यथासंभव अधिक से अधिक मंदिरों, महलों और मूर्तियों को बचाने का संयुक्त प्रयास किया, ताकि ये विशाल कृतियाँ हमेशा के लिए जलमग्न न हो जाएँ। लेकिन सभी आधुनिक उपकरण और उच्च प्रशिक्षित एवं कुशल इंजीनियरों की विशेषज्ञता भी कई विशाल शिलाखंडों को नहीं उठा सकी। वास्तव में, उन्हें स्थानांतरित करने के प्रयास को साकार करने के लिए पत्थरों को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ना पड़ा। चूंकि विशेषज्ञों को पत्थर के ब्लॉकों को काटना पड़ा, जिन्हें मिस्रवासी स्पष्ट रूप से साबुत ही संभाल सकते थे, इसलिए असवान बांध के जलमग्न जल से लक्षित इमारतों का बहुत छोटा प्रतिशत ही बचाया जा सका।"

ग्रेट पिरामिड का अध्ययन किसी भी दृष्टिकोण से, इसके किसी भी पहलू से किया जाए, तो हर स्पष्ट उत्तर के बदले कई प्रश्न उभर आते हैं। यद्यपि अनेकों ने मापने वाले टेप, स्लाइड रूल, रसायनों और हर प्रकार के उपकरणों के साथ इसके ऊपर और अंदर रेंगकर अध्ययन किया है, फिर भी ग्रेट पिरामिड एक रहस्य बना हुआ है।

3. रहस्यमय ऊर्जा क्षेत्र

पिरामिड शब्द ग्रीक शब्द पायरो से आया है, जिसका अर्थ है अग्नि, और एमिड, जिसका अर्थ है केंद्र में होना। प्राचीन ब्रह्मांड विज्ञान में अग्नि ब्रह्मांड के चार गुणों में से एक थी, अन्य तीन पृथ्वी, जल और वायु थे। प्राचीन शिक्षाओं में अग्नि को सार्वभौमिक ऊर्जा, जीवन के सभी रूपों में व्याप्त जीवन शक्ति के रूप में परिभाषित किया गया था।

"पिरामिड और इसका जैव-ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संबंध" नामक एक पुस्तिका में, डॉ. जी. पैट्रिक फ्लैनगन ने कहा, "विश्व के सातवें आश्चर्य, गीज़ा के महान पिरामिड का मुख्य रहस्य इतना स्पष्ट है कि यह पिरामिड शब्द के साथ ही छिपा हुआ है। हम यह सिद्ध करने का प्रयास करेंगे कि जैव-ब्रह्मांडीय ऊर्जा ही वह अग्नि है जो हजारों वर्षों से वैज्ञानिकों के लिए रहस्य बनी हुई है।"

ऊर्जा के इस "नए" रूप पर चल रहे शोध से मानसिक टेलीपैथी से लेकर ईएसपी और आध्यात्मिक उपचार तक, कई घटनाओं के बारे में लंबे समय से प्रतीक्षित सुराग मिल सकते हैं। इस रहस्यमय ऊर्जा का अध्ययन 43 वर्षों से चल रहा है।

44 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

प्रयोगशालाओं की संख्या। ऐसा माना जाता है कि इस शक्ति को नियंत्रित करने वाले नियमों की समझ विभिन्न मानसिक घटनाओं के व्यावहारिक स्पष्टीकरण प्रदान करेगी जो आज तक "ठोस डेटा" वैज्ञानिकों से परे रही हैं।

न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम और आइंस्टीन के सापेक्षता के सिद्धांत ने कुछ भौतिक बलों के सार्वभौमिक अनुप्रयोग को समझने के लिए स्पष्टीकरण प्रदान किए। इसी प्रकार, विशेष "X" बल के अनावरण से मनोगतिकी (PK) जैसी घटनाओं के पीछे के सामान्य कारक को समझने में मदद मिलने की उम्मीद है - यह भौतिक वस्तुओं पर विचारों का प्रभाव है - और अंतरिक्ष यात्री एडगर मिशेल द्वारा चंद्रमा से संचार करने के प्रयासों जैसी दूरियों पर टेलीपैथिक संदेशों को भेजने की क्षमता है।

"जैसे-जैसे हम इस ऊर्जा क्षेत्र के गुणों को उजागर करते जा रहे हैं और इसके नियमों को परिभाषित करने में सक्षम होते जा रहे हैं, यह कहना उचित प्रतीत होगा कि विभिन्न प्रकार की तथाकथित मानसिक घटनाएं इस बल के परिणामस्वरूप घटित होती हैं और ये अलग-थलग और असंबंधित घटनाएं नहीं हैं," ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क में माईमोनाइड्स मेडिकल सेंटर में ड्रीम लेबोरेटरी के निदेशक डॉ. स्टेनली क्रिपनर ने कहा।

ऊर्जा क्षेत्र का अध्ययन सोवियत वैज्ञानिक डॉ. गेनाडी सर्गेयेव के परीक्षणों का केंद्रबिंदु रहा है। ये परीक्षण लेनिनग्राद की गृहिणी नेल्या मिखाइलोवा पर किए गए थे, जिन्होंने अपनी मानसिक शक्ति से चाय के कप से लेकर सिगरेट तक किसी भी चीज को हिलाने की क्षमता से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सनसनी मचा दी है। देश में प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार, एक बल-क्षेत्र डिटेक्टर का उपयोग करते हुए, डॉ. सर्गेयेव ने एक इन्सुलेटेड इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफिक कक्ष में प्रदर्शन के दौरान श्रीमती मिखाइलोवा से चार गज की दूरी पर तीव्र इलेक्ट्रोस्टैटिक और इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरण को रिकॉर्ड किया। इसी तरह के उपकरण का उपयोग उरी गेलर की शक्तिशाली पीके शक्ति को मापने और पुष्टि करने के लिए किया गया है।

कनाडा के सस्केचेवान विश्वविद्यालय में डॉ. अब्राम हॉफर और डॉ. हेरोल्ड केल्म ने दो कैपेसिटर प्लेट, एक प्री-एम्पलीफायर और एक लाइन रिकॉर्डर से युक्त डिटेक्टर का उपयोग करके दूर से मानव बल क्षेत्रों के मापन पर शोध किया है, जो इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ के समान है।

रहस्यमय ऊर्जा क्षेत्र 45

डिटेक्टर दूर से ही शरीर के अदृश्य ऊर्जा क्षेत्र या विद्युत आभा का मानचित्रण करता है।

कैनसस के टोपेका में मेनिंगर फाउंडेशन की मनो-शारीरिक प्रयोगशाला के निदेशक डॉ. एल्मर ग्रीन ने कहा, "गुप्त भौतिकी की विश्व प्रणालियों में ऊर्जा की एक अवधारणा (और उससे संबंधित एक क्षेत्र सिद्धांत) है जो आधुनिक भौतिकी से उल्लेखनीय रूप से मिलती-जुलती है। अर्थात्, ऊर्जा का एक प्राथमिक रूप है जिससे बाकी सब कुछ निर्मित होता है।" उन्होंने आगे कहा, "हालाँकि गुप्त भौतिकी में यह माना जाता है कि एक मूलभूत ऊर्जा की विस्तृत संरचना में न केवल भौतिक पदार्थ, बल्कि भावनात्मक पदार्थ, मानसिक पदार्थ और अन्य अधिक सूक्ष्म पदार्थ भी शामिल हैं, और मनुष्य में ये सभी पदार्थ एक साथ समाहित होते हैं।"

कैलिफोर्निया के लॉस एंजिल्स स्थित फिलोसोफिकल रिसर्च एसोसिएशन के अध्यक्ष मैनली पामर हॉल ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा, "प्रारंभिक यूनानियों ने समझाया कि पदार्थों का यह संयोजन—जिसका प्रतीक पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु है—ही मनुष्य को सूक्ष्म जगत बनाता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य में ही ब्रह्मांड के सभी तत्व समाहित हैं।"

भारतीय दार्शनिक और शिक्षक श्री अरबिंदो ने लिखा, "ब्रह्मांड को पूर्णतः आत्मा के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें पदार्थ सबसे सघन रूप है; या ब्रह्मांड को पूर्णतः पदार्थ के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें आत्मा इसका सबसे विरल रूप है।"
जैव ऊर्जा का विचार नया नहीं है। प्राचीन चीनी मानते थे कि मनुष्य ब्रह्मांड से उस जीवन शक्ति के माध्यम से जुड़ा हुआ है जो ब्रह्मांड को भर देती है। भारत में इस शक्ति को प्राण कहा जाता है, जिसमें सब कुछ समाहित है। मेस्मर ने इसे पशु चुंबकत्व कहा। राइचेनबैक ने इसे ओडिक बल बताया। ब्लोंडोट ने इसे एन-किरणें कहा। सोवियत वैज्ञानिकों ने इसे जैव-प्लाज्मिक ऊर्जा नाम दिया; और चेक वैज्ञानिक इसे मनो-ऊर्जा कहते हैं। यद्यपि विभिन्न नामों का प्रयोग किया जाता है, इस ऊर्जा की विशेषताओं के बारे में आम सहमति प्रतीत होती है।
चेक वैज्ञानिक ज़ेडेनेक रेजडैक और कारेल ड्रबल ने किया है

46 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
लिखा गया है: "मनुष्य और सभी जीवित प्राणी एक प्रकार की ऊर्जा से भरे हुए हैं, जिसके बारे में पश्चिमी विज्ञान को हाल तक जानकारी नहीं थी। यह जैव-ऊर्जा, जिसे हम मनोविश्लेषणात्मक ऊर्जा कहते हैं, पीके के पीछे प्रतीत होती है; यह डॉविंग का आधार हो सकती है। यह सभी मानसिक घटनाओं में शामिल साबित हो सकती है।"
चेक गणराज्य के वैज्ञानिकों ने यहाँ के वैज्ञानिकों को मनो-संवर्धक जनरेटर दिखाए हैं, जिन्हें इनके आविष्कारक रॉबर्ट पाल्लिटा के नाम पर पाल्लिटा जनरेटर भी कहा जाता है। मानव मानसिक शक्ति से प्रेरित ऊर्जा से संचालित ये जनरेटर, विभिन्न आकृतियों और सामग्रियों से निर्मित हैं, और कहा जाता है कि ये धात्विक या अधात्विक दोनों प्रकार की भौतिक वस्तुओं को गतिमान कर सकते हैं। इस शोध को चेक विज्ञान अकादमी का समर्थन प्राप्त है।
इस ऊर्जा पर काम करते हुए, सोवियत वैज्ञानिकों का दावा है कि जैव-प्लाज्मिक ऊर्जा की उनकी "नई खोज" को किरलियन फोटोग्राफी की बदौलत तस्वीरों और इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप में कोई भी देख सकता है। सेम्योन किरलियन ने फोटोग्राफी की एक नई प्रक्रिया का आविष्कार किया, जिसमें लगभग चौदह पेटेंट शामिल हैं। यह प्रक्रिया उच्च आवृत्ति वाले विद्युत क्षेत्रों का उपयोग करती है, जिसमें एक जनरेटर शामिल होता है जो प्रति सेकंड 75,000 से 200,000 विद्युत दोलन उत्पन्न करता है।
किरलियन फोटोग्राफिक प्रक्रिया को अब इस देश में कई वैज्ञानिकों द्वारा विकसित किया गया है, जिनमें यू.सी.एल.ए. की डॉ. थेल्मा मॉस और न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय के हेनरी मोंटेथ शामिल हैं। चूंकि विद्युत आभा उत्पन्न करने के लिए टेस्लाकॉइल उपकरण अपेक्षाकृत सस्ता है, इसलिए हमारे सहित कई घरेलू प्रयोगकर्ताओं ने इन इकाइयों का निर्माण किया है और परिणामों का अध्ययन कर रहे हैं।
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त चिकित्सक ओल्गा वॉरल ने हाल ही में हमें यू.सी.एल.ए. में ली गई कई उच्च आवृत्ति वाली तस्वीरें दिखाईं, जिनमें उपचार ऊर्जा से उपचारित किए जाने से पहले और बाद में एक फटे हुए पत्ते के चारों ओर की आभा को दर्शाया गया था। तस्वीरों से पता चला कि ऊर्जा प्रदान करने के बाद आभा के आकार और गतिविधि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
किरलियन फोटोग्राफिक प्रक्रिया कथित तौर पर फोटो लेती है-

रहस्यमय ऊर्जा क्षेत्र 47
यह जैव-प्लाज्मिक या ईथर ऊर्जा क्षेत्र का विस्तार है जो मानव शरीर और अन्य जीवित प्राणियों

को घेरे हुए है और उनमें समाहित है। वैज्ञानिक इस क्षेत्र की तुलना मानव आभा की अवधारणा से करते हैं, जो शरीर को घेरने वाले एक विकिरणशील प्रकाशमान बादल के समान है। मिस्र, ग्रीस और भारत की कला में पवित्र आकृतियों को प्रकाशमान आभा के साथ दर्शाया गया है, इससे पहले कि ईसाई युग के कलाकारों ने संतों को प्रभामंडल के साथ चित्रित किया।

अपनी पुस्तक 'अवेयरनेस' में, दिवंगत प्रसिद्ध मानसिक चिकित्सक एलीन गैरेट, जो न्यूयॉर्क के पैरासाइकोलॉजी फाउंडेशन की पूर्व अध्यक्ष भी थीं, ने लिखा है, "मैंने हमेशा हर पौधे, जानवर और व्यक्ति को एक धुंधले घेरे से घिरा हुआ देखा है।" उन्होंने यह भी बताया है कि हाल ही में मृत व्यक्तियों के शरीर से मृत्यु के तीन दिन बाद तक इसी ऊर्जा के सर्पिल निकलते हुए दिखाई देते हैं।

अवेयरनेस में कहीं और, श्रीमती गैरेट ने कहा: "अपने पूरे जीवन में मैं इस तथ्य से अवगत रही हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति के पास एक दूसरा शरीर होता है—एक प्रतिरूप। यह प्रतिरूप पूर्वी और थियोसोफिकल शिक्षाओं में एक विशिष्ट तथ्य है और इस प्रकार इसे एक ऊर्जा शरीर, भौतिक मानव शरीर से जुड़ा एक चुंबकीय क्षेत्र कहा जाता है, एक ऐसा क्षेत्र जिसमें ब्रह्मांड, सौर मंडल, ग्रह और व्यक्ति के निकटवर्ती परिवेश की अमूर्त शक्तियाँ सामान्यतः व्यक्ति के जीवन में रूपांतरित और प्रकट होती हैं।" वह आगे कहती हैं, "यह प्रतिरूप टेलीपैथिक और दिव्य दृष्टि प्रक्षेपण का माध्यम है।"

कनाडा के मॉन्ट्रियल स्थित मैकगिल विश्वविद्यालय के डॉ. वाइल्डन पेनफील्ड ने कई ऐसे ऑपरेशन किए हैं जिनमें मरीजों के मस्तिष्क के बड़े हिस्से निकाले गए हैं। डॉ. पेनफील्ड ने बताया कि मस्तिष्क पहले की तरह ही काम करता रहा। उन्होंने अनुमान लगाया, "शायद हमें हमेशा एक आध्यात्मिक तत्व—एक आध्यात्मिक सार—की कल्पना करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा जो इस तंत्र को नियंत्रित करने में सक्षम है।"

स्वामी एच. एच. राम ने मेनिंगर फाउंडेशन की अपनी हालिया यात्रा के दौरान कहा, "ऊर्जा शरीर —जिसे कभी-कभी सूक्ष्म शरीर भी कहा जाता है—का उपयोग एक प्रशिक्षित योगी भौतिक शरीर से अलग चेतना द्वारा यात्रा करने के लिए कर सकता है। मृत्यु के समय, व्यक्ति अपना शरीर त्याग देता है।"

शरीर को त्यागकर ऊर्जा शरीर में अपना जीवन जारी रखता है।" अपने सभी मन-पर-पदार्थ प्रयोगों में, स्वामी राम ने अपने शरीर और मन को नियंत्रित करने और मानसिक अंतर्दृष्टि प्रदर्शित करने की अपनी क्षमता को प्राणिक ऊर्जा के साथ सामंजस्य स्थापित करने के रूप में संदर्भित किया।

ऊर्जा शरीर के प्रक्षेपण का अध्ययन वर्तमान में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस के डॉ. चार्ल्स टार्ट और अर्कांसस में ईएसपी रिसर्च एसोसिएट्स फाउंडेशन के निदेशक हेरोल्ड शेरमैन द्वारा किया जा रहा है। यह विषय डबल्डाय द्वारा प्रकाशित पुस्तक "जर्नीज़ आउट ऑफ द बॉडी" का भी है, जिसके लेखक वर्जीनिया के शार्लोट्सविले के व्यवसायी रॉबर्ट ए. मोनरो हैं। वे अपने भौतिक शरीर से बाहर की लगभग नौ सौ यात्राओं का वर्णन करते हैं। जब हमने काउंसिल ग्रोव, कंसास में आयोजित आंतरिक अवस्थाओं के स्वैच्छिक नियंत्रण पर अंतःविषयक सम्मेलन में उनसे मुलाकात की, जिसका प्रायोजन मेनिंगर फाउंडेशन ने किया था, तो उन्होंने हमें बताया कि जब वे अपने भौतिक शरीर को छोड़ते हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है कि वे एक ऊर्जा शरीर में प्रवेश कर रहे हैं या वही ऊर्जा शरीर बन रहे हैं।

मैकगिल विश्वविद्यालय के डॉ. बर्नार्ड ग्रेड ने इस "X" ऊर्जा के प्रक्षेपण की रिपोर्ट दी है। उन्होंने एक मानसिक उपचारक को पानी से भरी एक बोतल पकड़ने और फिर उसे जौ के बीज पर डालने के लिए कहा। डॉ. ग्रेड के अनुसार, बिना उपचारित बीज की तुलना में जौ का बीज काफी बढ़ गया। उन्होंने आगे कहा कि इस पूर्व में अनदेखी ऊर्जा का चिकित्सा विज्ञान में व्यापक प्रभाव है, उपचार से लेकर प्रयोगशाला परीक्षणों तक।
अपनी पुस्तक "साइचिक डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टेन" में लेखिकाएँ शीला ओस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर बताती हैं कि बेल्जियम सरकार में परमाणु मामलों के सलाहकार जैक एरेरा हाल ही में एक ऐसे वैद्य के संपर्क में आए, जिसने ताज़े मांस के एक टुकड़े पर अपने हाथ रखे। वैद्य द्वारा इस "उपचार" के बाद, मांस एक महीने तक सुरक्षित रहा और फ्रिज में न रखने के बावजूद उसमें कोई खराबी नहीं आई।
कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि ऊर्जा शरीर और चीनी चिकित्सा पद्धति एक्यूपंक्चर के बीच एक संबंध है, जो सुइयों के माध्यम से उपचार करने की एक प्रणाली है। एक्यूपंक्चर से जुड़े सिद्धांतों के अनुसार, जीवन शक्ति शरीर में विशिष्ट मार्गों से प्रवाहित होती है।

त्वचा पर सैकड़ों स्थानों पर एक्यूपंक्चर किया जा सकता है, और चीनी चिकित्सक ऊर्जा प्रवाह में असंतुलन को ठीक करने के लिए इन बिंदुओं पर बारीक सुइयां लगाते हैं। जॉन हर्सी ने अपनी पुस्तक 'हिरोशिमा' में बताया है कि एक्यूपंक्चर विकिरण के प्रभावों को ठीक कर सकता है। बड़ी संख्या में अमेरिकी चिकित्सक, ऑस्टियोपैथ और कायरोप्रैक्टर अब एक्यूपंक्चर का उपयोग कर रहे हैं और चिकित्सा समाजों, संघों और अकादमियों द्वारा इस पर गहन अध्ययन किया जा रहा है।
न्यू जर्सी के नेवार्क कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में डॉ. डगलस डीन द्वारा किए गए शोध के अनुसार, टेलीपैथिक संदेश से निकलने वाली ऊर्जा प्राप्तकर्ता के रक्त की मात्रा को प्रभावित करती है। यह जांच एक प्लेथिस्मोग्राफ की सहायता से की गई थी जो अंगूठे में रक्त की मात्रा को सटीक रूप से मापता है। वहीं, न्यूयॉर्क के बफ़ेलो स्थित रोज़री हिल कॉलेज में सिस्टर जस्टा स्मिथ द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि मन एंजाइमों को प्रभावित कर सकता है।
शिकागो, इलिनोइस के टेड सेरियोस की अपने विचारों की छवि को पोलरॉइड फिल्म पर प्रोजेक्ट करने की विचित्र क्षमता में भी ऊर्जा बल का प्रक्षेपण प्रकट होता है। कोलोराडो विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल में मनोचिकित्सा के एसोसिएट क्लिनिकल प्रोफेसर डॉ. जूल आइज़ेनबड द्वारा सावधानीपूर्वक नियंत्रित प्रयोगों में, सेरियोस ने अपने मन की गहन एकाग्रता से फिल्म पर सैकड़ों चित्र बनाए हैं। माना जाता है कि फिल्म की ओर निर्देशित बल वही नियंत्रित ऊर्जा है जिसका उपयोग श्रीमती मिखाइलोवा, गेलर और अन्य लोगों ने भौतिक वस्तुओं की गति में किया है।
ऊर्जा क्षेत्र की सार्वभौमिक प्रकृति, जो यह दर्शाती है कि यह सभी जीवित प्राणियों में पाई जाती है, न्यूयॉर्क में बैक्स्टर रिसर्च फाउंडेशन के संस्थापक क्लीव बैक्स्टर के असाधारण प्रयोगों से सिद्ध होती है। पॉलीग्राफ के एक मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ, बैक्स्टर ने सुनियोजित प्रयोगों की एक श्रृंखला के माध्यम से यह प्रदर्शित किया कि पौधे अपने आसपास के लोगों और जानवरों के विचारों, भावनाओं और कार्यों पर प्रतिक्रिया करते हैं। पौधों के आसपास झींगा या मछली जैसे जीवित प्राणियों की मृत्यु होने पर पॉलीग्राफ पर तीव्र प्रतिक्रिया देखी गई। "ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रत्येक जीव में किसी प्रकार की प्राथमिक अनुभूति या चेतना को इंगित करता है।"

"जीवित कोशिका," बैक्स्टर ने बताया। बैक्स्टर के प्रयोगों को अब कैलिफोर्निया के सैन जोस स्थित आईबीएम के वरिष्ठ रसायनज्ञ डॉ. मार्सेल वोगेल और हमारे सहित कई घरेलू प्रयोगकर्ताओं द्वारा दोहराया और पुष्टि की गई है। पौधों के साथ किए गए प्रयोगों का विस्तृत वर्णन अध्याय चार, "पिरामिड और पौधों की शक्ति" में किया जाएगा।
रिपोर्टों के सारांश से पता चलता है कि "नई" ऊर्जा अपवर्तित, परावर्तित, ध्रुवीकृत हो सकती है और अन्य ऊर्जाओं के साथ संयोजित हो सकती है, और बिजली, चुंबकत्व, गर्मी और प्रकाशीय विकिरणों के समान प्रभाव उत्पन्न करती है, फिर भी, यह स्वयं इनमें से कोई भी नहीं है।
आज तक पिरामिड पर हुए शोध से कुछ प्रमाण मिले हैं कि महान पिरामिड और उसकी छोटी प्रतिकृतियों के भीतर का स्थान विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम और तथाकथित सार्वभौमिक ऊर्जा के अन्य रूपों या स्तरों की ऊर्जा को बढ़ाता, तीव्र करता और/या उत्पन्न करता है। जैसा कि हम आगे के अध्यायों में वर्णन करेंगे, पिरामिड के भीतर की गतिविधि स्पष्ट रूप से कई अलौकिक घटनाओं के समानांतर है: चिकित्सकों द्वारा जल का उपचार और उपचारित पौधों पर इसके बाद के प्रभाव; ब्राउन कोशिकाओं (पृथक कोशिकाएं जिनमें प्रकाश-संवेदनशील वर्णक, क्रिस्टलीकृत प्रकाश के कण होते हैं) द्वारा उपचारित जल, जिसे पौधों और जानवरों को दिया जाता है और प्रयोगशाला परीक्षणों के अनुसार शुद्धिकरण प्रक्रिया भी दर्शाता है; ईमन स्क्रीन, वेट-और ड्राई-सेल उपकरण, मल्टीवेव ऑसिलेटर, ऑर्गेन ऊर्जा संचायक आदि के दावों के समान शारीरिक उपचार और शरीर की ऊर्जा में वृद्धि; आध्यात्मिक साहित्य में वर्णित मानसिक उपचार और पारलौकिक अवस्थाओं में वृद्धि, जो तब होती है जब कोई गुरु या शिक्षक किसी शिष्य के ऊर्जा स्तर को बढ़ाता है।
1968 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. लुइस अल्वारेज़ द्वारा ग्रेट पिरामिड के ऊर्जा क्षेत्रों पर किए गए वैज्ञानिक शोध में मानक वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग किया गया था। उनका विचार था कि पिरामिड से गुजरने वाली ब्रह्मांडीय किरणें उन कक्षों का पता लगाएंगी जो अभी तक खोजे नहीं गए हैं। एक ब्रह्मांडीय कण रिकॉर्डिंग उपकरण किसी छिपे हुए कक्ष से गुजरने पर ऊर्जा की मात्रा में कमी दिखाएगा।

यह शोध ठोस पत्थर की तुलना में अधिक जगह प्रदान करता है। इस शोध में कई संस्थान शामिल थे, साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका और मिस्र के बीच सरकारी समझौता भी हुआ था। डेटा रिकॉर्ड करने वाले चुंबकीय टेपों को विश्लेषण के लिए सबसे आधुनिक कंप्यूटर से गुज़ारा गया। डॉ. अल्वारेज़ के एक सहकर्मी के अनुसार, टेपों से पता चला कि एक ऐसा पैटर्न स्थापित नहीं किया जा सका जिससे एक स्थिर शून्य संदर्भ बिंदु निर्धारित किया जा सके, और हर बार टेपों को दोबारा चलाने पर रीडिंग का एक अलग पैटर्न प्राप्त हुआ। न केवल कण अलग थे, बल्कि कुछ डेटा टेपों से गायब हो गया था। अंतिम निष्कर्ष यह था कि जो हो रहा था वह न केवल असंभव था, बल्कि कुछ ऐसी ऊर्जा दर्ज की जा रही थी जो विज्ञान के नियमों के अनुरूप नहीं थी।
मिनिस्ट्री ऑफ यूनिवर्सल विजडम, इंक. के निदेशक जॉर्ज डब्ल्यू. वैन टैसल के अनुसार, अधिकतम ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए 28 दिन या एक चुंबकीय माह की आवश्यकता होती है। वैन टैसल का दावा है कि गीज़ा पिरामिड के शीर्ष पर, जहाँ शिखर पत्थर होना चाहिए, क्वार्ट्ज क्रिस्टल की एक चोटी लगाने से प्रभाव बढ़ जाएगा, और पिरामिड के शीर्ष पर जर्मेनियम से अलग की गई क्वार्ट्ज शीटों वाला एक स्तरित क्वार्ट्ज कंडेंसर मौजूदा वैज्ञानिक उपकरणों पर ऊर्जा रीडिंग उत्पन्न करेगा।

ग्रेट पिरामिड के पत्थरों का वजन सत्तर टन तक है। कहा जाता है कि राजा के कक्ष को ग्रेनाइट से बनाया गया था क्योंकि क्वार्ट्ज क्रिस्टल, अभ्रक और फेल्डस्पार के मिश्रण के कारण ग्रेनाइट में पीजोइलेक्ट्रिक प्रभाव उत्पन्न होता है। गीज़ा पिरामिड का अधिकांश भाग चूना पत्थर से बना है, जिसमें कोई विद्युत गुण नहीं होते। कुछ लोगों का मानना है कि राजा के कक्ष के ऊपर स्थित ग्रेनाइट के कक्ष ऊर्जा भंडारण के लिए ग्रेनाइट एयर कंडेंसर का काम करते हैं।
डॉ. विल्हेम रीच ने "ऑर्गेन ऊर्जा" नाम उस आदिम, द्रव्यमान रहित ब्रह्मांडीय जीवन ऊर्जा को दिया था जिसमें हम और हमारे ग्रह पर मौजूद हर चीज समाहित है। उनका मानना था कि इस जीवन ऊर्जा को एकत्रित और संचित करने के लिए रीच ने "ऑरिकू" का आविष्कार किया था।

52 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
वायुमंडल में मौजूद ऑर्गेन ऊर्जा को वैज्ञानिक और चिकित्सा उद्देश्यों के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। रीच का दावा था कि ऑर्गेन ऊर्जा हर चीज में प्रवेश करने में सक्षम है, लेकिन अलग-अलग गति से, और हालांकि यह हर जगह मौजूद है, इसकी सांद्रता और गुणवत्ता में काफी भिन्नता होती है।
रीच ने पाया कि कार्बनिक पदार्थ (लकड़ी, कपास, ऊन आदि) ऑर्गेन ऊर्जा को आसानी से अवशोषित कर लेते हैं, जबकि धात्विक पदार्थ पहले ऊर्जा को अवशोषित करते हैं लेकिन फिर उसे तेजी से प्रतिकर्षित कर देते हैं। इस प्रकार, ओरेक्यू उपकरणों के निर्माण को नियंत्रित करने वाला मूलभूत सिद्धांत अस्तित्व में आया।
मूल ओराकु एक साधारण छह-पक्षीय बॉक्स होता है, जिसकी सभी दीवारें बिल्कुल एक ही तरीके से बनी होती हैं। प्रत्येक दीवार की सबसे बाहरी परत लकड़ी या प्रेस्ड कंपोजिशन बोर्ड जैसी जैविक सामग्री से बनी होती है। भीतरी, धात्विक परत लोहे की चादर या लोहे के तार की जाली (स्क्रीनिंग) से बनी हो सकती है। उपयोग की जाने वाली सामग्रियों की मात्रा और प्रकार के साथ-साथ अवशोषक (जैविक) और प्रतिकारक (धात्विक) दोनों परतों पर ध्यान देना चाहिए। चिकित्सा और वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए, रीच ने लोहे को सर्वोत्तम धात्विक सामग्री के रूप में अनुशंसित किया। उन्होंने अन्य धातुओं, उदाहरण के लिए एल्यूमीनियम, को चिकित्सा उद्देश्यों के लिए हानिकारक माना। जैविक सामग्री ऊर्जा और नमी को अवशोषित करने की अपनी क्षमता में भी भिन्न होती हैं।
जैविक बाहरी दीवार और धात्विक आंतरिक दीवार की विशिष्ट परत संरचना को "एक-गुना" ओराकू कहा जाता है। कुछ प्रयोगकर्ताओं ने पौधों पर प्रयोगों के लिए दस गुना तक के ओराकू उपकरण बनाए और उनका उपयोग किया है; हालाँकि, रीच ने उचित चिकित्सा पर्यवेक्षण के बिना चिकित्सा उद्देश्यों के लिए तीन गुना से अधिक मजबूत ओराकू का उपयोग करने के खिलाफ चेतावनी दी थी।
ऐसा माना जाता है कि जैविक और धात्विक दीवारों की परतें ऑर्गेन ऊर्जा के प्रवाह की दिशा को बाहर से अंदर की ओर स्थापित करती हैं, जहाँ ऑर्गेन आसपास के वातावरण के स्तर से ऊपर केंद्रित होती है। ऑर्गेन ऊर्जा कमजोर विभव से मजबूत विभव की ओर प्रवाहित होती है (जो विद्युत प्रवाह के ठीक विपरीत है)।

रहस्यमय ऊर्जा क्षेत्र 53
(प्रवाह)। इस प्रकार, ओराक्कू के भीतर मौजूद मनुष्य अपने स्वयं के ऑर्गेनोटिक तंत्र में ऊर्जा को आकर्षित करता है, जिसकी क्षमता ओराक्कू से अधिक होती है।

विज्ञान ने सिद्ध किया है कि प्रत्येक परमाणु का नाभिक इलेक्ट्रॉनों नामक ऋणात्मक आवेशित कणों से घिरा होता है, और इलेक्ट्रॉनों की संख्या एक से लेकर 92 तक हो सकती है। ये इलेक्ट्रॉन धनात्मक आवेशित नाभिक के चारों ओर 186,300 मील प्रति सेकंड की गति से चक्कर लगाते हैं।
प्रकाश की गति से वृत्त में चक्कर लगाता हुआ आवेशित पिंड विद्युत चुम्बकीय विकिरण उत्पन्न करता है। प्रत्येक परमाणु से अत्यंत लघु तरंगदैर्ध्य का विद्युत चुम्बकीय विकिरण निकलता है, जो एक मिलीमाइक्रोमीटर से लेकर 100 मिलीमाइक्रोमीटर या उससे अधिक तक भिन्न होता है। प्रत्येक तत्व के प्रत्येक परमाणु में आवृत्तियों का अपना अनूठा संयोजन होता है जो निरंतर उत्पन्न होता रहता है।
सर विलियम रैमसे की पुस्तक 'फिजिकल केमिस्ट्री' में इस सिद्धांत का उत्कृष्ट वर्णन मिलता है: "विकिरण क्षेत्र का निर्माण निम्न प्रकार से होता है। एक विद्युतचुंबकीय तरंग या विक्षोभ एक कंपनशील विद्युत ध्रुवीय इकाई से उत्पन्न होता है—एक परमाणु या आणविक प्रणाली जिसमें विपरीत विद्युत आवेशों का विशेष पृथक्करण होता है—जिसके कंपन में उसके विद्युत आघूर्ण का आवधिक उतार-चढ़ाव शामिल होता है। उत्सर्जित विकिरण की आवृत्ति दोलक की आवृत्ति के समान होती है; साथ ही दोलक की कला, तीव्रता और ध्रुवीकरण की स्थिति भी। दूसरी ओर, यदि किसी विद्युत ध्रुवीय इकाई को ऐसे विकिरण क्षेत्र में रखा जाए जिसकी आवृत्ति ध्रुवीय इकाई के कंपन की प्राकृतिक आवृत्ति के लगभग बराबर हो, तो ध्रुवीय इकाई क्षेत्र के विद्युत सदिश के अनुरूप कंपन करने के लिए प्रेरित होगी और क्षेत्र से ऊर्जा निरंतर अवशोषित होती रहेगी।"
कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के पूर्व अध्यक्ष और इलेक्ट्रॉन के वजन पर अपने शोध कार्य के लिए भौतिकी में नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. रॉबर्ट ए. मिलिकन ने मिसौरी के कैनसस सिटी में तकनीकी समितियों की एक संयुक्त बैठक में बोलते हुए निम्नलिखित कथन दिया: "किसी दिन

हम पाएंगे कि भौतिक पदार्थ के प्रत्येक तत्व की कंपन आवृत्ति दूसरे से भिन्न होती है।"
कोलंबिया विश्वविद्यालय के डॉ. आई. आई. रबी को परमाणु अनुनाद पर उनके कार्य के लिए अमेरिकन एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ साइंस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 6 जनवरी, 1940 के साइंस न्यूज लेटर में उन्होंने कहा था, "परमाणु अतिसूक्ष्म तरंगों पर प्रसारण करने वाले छोटे रेडियो ट्रांसमीटरों की तरह कार्य कर सकते हैं।"
30 दिसंबर, 1939 को एसोसिएटेड प्रेस को दिए एक साक्षात्कार में डॉ. रबी ने कहा: "मनुष्य स्वयं और सभी प्रकार के कथित रूप से निष्क्रिय पदार्थ निरंतर किरणें उत्सर्जित करते हैं। प्रकृति में प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक अणु एक निरंतर रेडियो प्रसारण स्टेशन है। जो लोग टेलीपैथी, भविष्य देखने की क्षमता और अंतर्ज्ञान में विश्वास करते हैं, उन्हें आज की घोषणा में अदृश्य किरणों के अस्तित्व का पहला वैज्ञानिक प्रमाण मिला है जो वास्तव में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक यात्रा करती हैं।"
डॉ. फ्लैनगन ने पहले उल्लेखित पुस्तिका में कहा था: "गीज़ा का पिरामिड अपनी पाँच कोनों की वजह से मिलिमाइक्रोवेव या नैनोवेव विकिरण उत्पन्न करता है। इसमें आधार के चार कोने और शीर्ष शामिल हैं। ये कोने वास्तव में एक प्रकार के नैनोवेव रेडिएटर का काम करते हैं। पिरामिड में मौजूद अणुओं या परमाणुओं से निकलने वाला विकिरण कोनों के कोणों के संयोजन से एक किरण बनाता है जो कोनों के कोणों को दो भागों में विभाजित करती है और इस विकिरण की

किरण को पिरामिड के केंद्र की ओर भेजती है।"
डॉ. फ्लैनगन ने आगे कहा: "ये सभी ऊर्जाएं पिरामिड के केंद्र या राजा के कक्ष क्षेत्र में एकत्रित होती हैं। इस क्षेत्र में मौजूद अणु या परमाणु अनुनाद द्वारा इन ऊर्जाओं को अवशोषित करते हैं। जैसे-जैसे ऊर्जा बढ़ती है, इलेक्ट्रॉन की कक्षाएँ फैलने लगती हैं। जितनी अधिक ऊर्जा अवशोषित होती है, उतना ही अधिक विस्तार होता है। एक ऐसा बिंदु आएगा, जिस पर यदि बहुत अधिक ऊर्जा अवशोषित हो जाए, तो परमाणु विघटित हो जाएँगे और इलेक्ट्रॉन उड़ जाएँगे, लेकिन इसके लिए आवश्यक ऊर्जा पिरामिड की सहनशीलता से कहीं अधिक होगी।"

रहस्यमय ऊर्जा क्षेत्र 55
ऊर्जा के बढ़ने के साथ-साथ परिसंचरण भी बढ़ता है और अंततः लगभग दस नैनोमीटर के तरंग बैंड में अत्यधिक संतृप्त ऊर्जा वातावरण बन जाता है। ये ऊर्जाएं पिरामिड के कोनों से बाहर की ओर विकीर्ण होती हैं।
यह ऊर्जा, ज्ञात और अज्ञात, सभी जीवित प्राणियों का आधार प्रतीत होती है, जो मनुष्य को मनुष्य से और मनुष्य को ब्रह्मांड से जोड़ती है। यह सिद्ध होना अभी बाकी है कि क्या महान पिरामिड के प्राचीन निर्माताओं ने इस ऊर्जा की प्रकृति और इसके उपयोग को समझा था, लेकिन इस बात के प्रमाण लगातार बढ़ते जा रहे हैं कि महान पिरामिड (और इसके लघु रूप जो घरों और प्रयोगशालाओं में बन रहे हैं) जानबूझकर या संयोगवश—अन्य बातों के अलावा—एक बहु-बल क्षेत्र जनरेटर है।

4. पिरामिड और पौधों की शक्ति
वह एक पुराने भैंसों के कीचड़ भरे गड्ढे के किनारे घुटनों के बल बैठ गया, जहाँ कंसास फ्लिंथिल मवेशी क्षेत्र की नीली घास में छोटे-छोटे मैदानी फूल आधे छिपे हुए उग रहे थे। उसने बड़ी सावधानी से अपनी उंगलियाँ सफेद पंखुड़ियों पर फिराईं। "ये नन्हे भाई तुम्हारी आत्मा का प्रतिबिंब हो सकते हैं। वे तुम्हें गुजरते हुए देखते हैं और महान आत्मा को बताते हैं कि तुम्हारा पैर धरती पर कैसे पड़ता है।"
"क्या आप क्लीव बैक्स्टर के पौधों पर किए गए प्रयोगों और उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के मापन के बारे में जानते हैं?" शुल ने पूछा।
उसने सिर हिलाया, लेकिन कुछ क्षणों तक कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि उसकी आँखें कुछ दूरी पर स्थित सुमाक के एक झुंड को निहार रही थीं। अंत में उसने कहा, "हाँ। गोरे लोगों के अपने तौर-तरीके होते हैं और उन्हें यह समझने में बहुत समय लगा है कि भारतीय हमेशा से क्या जानते हैं—जीवन एक है और इसे अलग नहीं किया जा सकता। रूप का कोई महत्व नहीं है। मनुष्य स्वयं से और दूसरों से संवाद करना उस दिन शुरू करता है जब वह यह जान लेता है कि पौधे भी सार्वभौमिक चेतना साझा करते हैं।"

पिरामिड और पौधों की शक्ति 57
यह अवसर मेनिंगर फाउंडेशन द्वारा प्रायोजित आंतरिक जागरूकता अवस्थाओं के स्वैच्छिक नियंत्रण पर 1971 के अंतःविषयक सम्मेलन का था। हममें से कई लोग सत्रों से विराम लेकर शोशोन इंडियन नेशन के मुख्य वैद्य रोलिंग थंडर के साथ आसपास के घास के मैदान में टहलने

गए थे। उन्हें सम्मेलन में कई देशों के वैज्ञानिकों के साथ भारतीय वैद्यों की कुछ महान और प्राचीन परंपराओं को साझा करने के लिए आमंत्रित किया गया था। पौधों के साथ अपने काम के दौरान और जब भी मैं पौधों के साथ मनुष्य के नए संबंधों से जुड़ी किसी खोज के बारे में पढ़ता हूँ, तब से मैं कितनी बार उनके बारे में सोचता हूँ। मैं कल्पना करता हूँ कि रोलिंग थंडर भी उन्हीं सफलताओं के बारे में पढ़ रहे होंगे और उनके चेहरे पर एक शांत, रहस्यमयी मुस्कान होगी, जिसमें धैर्यपूर्ण आनंद की झलक होगी।

शायद रोलिंग थंडर जैसे किसी व्यक्ति से अप्रत्याशित संपर्क—अतीत की एक आवाज़ और प्राचीन ज्ञान के भंडार का रक्षक—हमें याद दिलाता है कि हम केवल वही खोज पाते हैं जो कम से कम हमसे कहीं अधिक बुद्धिमान सत्ता को पहले से ज्ञात है। यदि भारतीय वैद्य को यह ज्ञान हो सकता है, तो उनके गुरुओं के कालक्रम में इस ज्ञान का पता कितनी दूर तक लगाया जा सकता है? ये विचार विशेष रूप से तब मन में आते हैं जब हम मनुष्य द्वारा लंबे समय से ज्ञात संरचना के भीतर अंतर्दृष्टि की खोज करते हैं। अपने पौधों को उनके पिरामिडनुमा ढांचे के भीतर एक नए अनुष्ठान को करते हुए देखकर, हमने इन गतिविधियों में ऊर्जा क्षेत्रों के प्राचीन ज्ञान के सुराग खोजने का प्रयास किया।

अब काफी सबूत इस ओर इशारा कर रहे हैं कि पौधे ही इसके प्रमुख कारणों में से एक हैं। हाल के वर्षों में वैज्ञानिक जगत में पौधों पर किए गए प्रयोगों से अधिक उत्साह, विस्मय और चेतना का उत्थान शायद ही किसी और घटना ने किया हो। पिरामिडों में उगने वाले पौधों के हमारे अध्ययन ने कुछ विचारोत्तेजक घटनाओं को उजागर किया। हालांकि, हाल के वर्षों में ऊर्जा क्षेत्रों और यहां तक कि चेतना के नए अध्ययन के लिए पौधों को विषय के रूप में उपयोग करने की शुरुआत वास्तव में 2 फरवरी, 1966 की सुबह किए गए एक साधारण से शोध कार्य से हुई, जिसने पूरी तरह से रुख बदल दिया।

58 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

जीवन रूपों के बारे में हमारी अवधारणाओं के इर्द-गिर्द। उस दिन सीआईए की पूर्व पूछताछ विशेषज्ञ और पॉलीग्राफ विशेषज्ञ, सीआई ईव बैक्स्टर ने पाया कि पौधे मनुष्यों के समान भावनात्मक प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते हैं।

बैक्स्टर ने पौधे की जड़ से पत्ती तक पानी के ऊपर चढ़ने की दर को मापने के प्रयास में, एक संशोधित पॉलीग्राफ के इलेक्ट्रोड को ड्रेसेना नामक घरेलू पौधे की पत्तियों से जोड़ा। पॉलीग्राफ, जिसे झूठ पकड़ने वाली मशीन भी कहा जाता है, भावनात्मक उत्तेजनाओं के कारण लोगों की सांस लेने, रक्तचाप, नाड़ी की गतिविधि और पसीने में होने वाले परिवर्तन को मापता है। पसीने में होने वाले परिवर्तन को गैल्वेनिक त्वचा प्रतिक्रिया या साइकोगैल्वेनिक रिफ्लेक्स (पीजीआर) के रूप में जाना जाता है। परिणाम पॉलीग्राफ के स्ट्रिप चार्ट पर एक पेन द्वारा दिखाए जाते हैं जो व्यक्ति की विद्युत गतिविधि के अनुसार कागज पर रेखाएं खींचता है।

बैक्स्टर का मानना था कि जब पानी पौधे की पत्ती तक पहुँचेगा, तो प्रतिरोध कम हो जाएगा और ट्रेसिंग बढ़ जाएगी। लेकिन इसके विपरीत हुआ। चार्ट के अध्ययन से पता चला कि ट्रेसिंग किसी भावनात्मक रूप से उत्तेजित व्यक्ति की तरह थी। भला एक पौधे में भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ कैसे हो सकती हैं? उत्सुक होकर, बैक्स्टर ने पौधे की पत्ती को माचिस से जलाकर 'स्वास्थ्य के लिए खतरा' सिद्धांत को आजमाने का फैसला किया। जैसे ही उन्होंने माचिस जलाने के बारे में सोचा, पीजीआर ट्रेसिंग में नाटकीय परिवर्तन हुआ। वे पौधे से कई फीट दूर थे और उन्होंने माचिस भी नहीं जलाई थी, फिर भी पेन स्ट्रिप चार्ट पर तेज़ी से चल रहा था।

जीव-जंतुओं के स्वास्थ्य पर खतरे को भांपते हुए, बैक्स्टर ने उबलते पानी में कुछ खारे पानी के झींगे डाले। एक बार फिर पौधे में काफी हलचल दिखाई दी। उन्होंने सोचा कि क्या कोशिकाएं अन्य जीवित कोशिकाओं को किसी प्रकार के संकट संकेत भेज सकती हैं। इसके लिए एक सुनियोजित वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता थी।
बैक्स्टर ने यह निर्धारित किया कि प्रयोगों को स्वचालित करके मानवीय त्रुटि की संभावना को टाला जा सकता है। उन्होंने ऐसी मशीनरी बनाई जिसे यादृच्छिक आधार पर झींगों को मारने के लिए प्रोग्राम किया गया था, और मशीनों द्वारा समय को सटीक रूप से रिकॉर्ड किया जाता था। कोई भी मनुष्य प्रयोग स्थल पर मौजूद नहीं था।

शीर्ष वैज्ञानिकों ने इस बात पर सहमति जताई कि इस प्रणाली में कोई खामी नहीं पाई जा सकती।
अलग-अलग कमरों में, तीन अलग-अलग पौधों पर इलेक्ट्रोड लगाए गए थे, जो उस क्षेत्र से दूर थे जहाँ झींगों को उबलते पानी में डालकर स्वचालित रूप से मारा जाना था। पॉलीग्राफ रीडिंग से पता चला कि पौधों की भावनात्मक प्रतिक्रिया झींगों की मृत्यु के ठीक उसी क्षण हुई। इस प्रयोग को बैक्स्टर और अन्य लोगों द्वारा कई बार दोहराया गया है, सभी ने परिष्कृत रैंडमाइज़र, प्रोग्रामर और मशीनीकृत उपकरणों का उपयोग किया है, और परिणाम हमेशा एक जैसे रहे हैं। पौधों की प्रतिक्रियाओं की निगरानी करते हुए अन्य जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचाकर या नष्ट करके भी समान परिणाम प्राप्त किए गए हैं। हमने अनौपचारिक रूप से मेनिंगर फाउंडेशन में और बाद में अपने गैराज प्रयोगशाला में एक संशोधित पॉलीग्राफ के साथ, पौधों के कल्याण के लिए खतरे के परीक्षणों की पुष्टि की।
बैक्स्टर ने पाया कि कोशिका जीवन में अपरिभाषित संवेदी तंत्र या बोध क्षमता को फैराडे स्क्रीन (जो विद्युत प्रवेश को रोकती है) या सीसे की ढालों द्वारा अवरुद्ध नहीं किया जा सकता था। संकेत जारी रहा, जो ऐसा प्रतीत होता था कि हमारे विद्युतगतिकीय स्पेक्ट्रम से परे किसी बल द्वारा उत्पन्न हुआ था।
अर्नेस्ट होम्स रिसर्च फाउंडेशन की सलाहकार परिषद में बैक्स्टर के साथ काम करते हुए, हमें हाल ही में उनसे मिलने का अवसर मिला। उन्होंने हमें बताया कि यह शक्ति एक अप्रत्याशित जीवन संकेत प्रतीत होती है जो संभवतः समस्त सृष्टि को आपस में जोड़ती है। उनकी परिकल्पना यह है कि सभी जीव कोशिकीय स्तर पर चेतना के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं—पौधे, मनुष्य और जानवर एक दूसरे के साथ किसी भी ज्ञात टेलीपैथी से कहीं अधिक उच्च स्तर पर संवाद कर सकते हैं।
दूरी कोई बाधा नहीं है। बैक्स्टर के पास एक दोस्त का घर का पौधा था और उन्होंने पाया कि जब सिनसिनाटी में विमान की लैंडिंग के दौरान उसकी मालकिन तनाव में आ गई, तो पौधा बहुत उत्तेजित हो गया। तब से बैक्स्टर न्यूयॉर्क स्थित अपनी प्रयोगशाला से अनुपस्थित रहने पर स्टॉपवॉच से सटीक रिकॉर्ड रखते हैं। उनकी उत्तेजना, तनाव आदि के क्षण उनके अनुभव से मेल खाते हैं।

बैक्स्टर ने अपने पौधों की पॉलीग्राफ जांच की। चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो, जब भी वह अपने कार्यालय लौटने के बारे में सोचता है, पौधे उत्साह से भर उठते हैं। यह दिलचस्प बात है कि

पौधे न केवल उनकी देखभाल करने वालों के प्रति स्नेह दिखाते हैं, बल्कि अजनबियों और उन्हें नुकसान पहुंचाने वालों से डरते भी हैं। बैक्स्टर ने इस बात को कई बार परखा। उन्होंने खुद "अच्छे आदमी" की भूमिका निभाई और उनके सहायक बॉब हेंसन ने "बुरे आदमी" की भूमिका निभाई। जब भी बैक्स्टर को अपनी प्रयोगशाला में काम करते समय उंगली में चोट लगती या कोई और नुकसान होता, तो उनके पौधे उनके प्रति गहरी सहानुभूति दिखाते।
संक्षेप में, बैक्स्टर के प्रयोगों ने यह प्रमाण दिया है कि पौधे—भले ही उन्हें तंत्रिकाओं से रहित माना जाता है—भय, आशंका, राहत और आनंद जैसी भावनाओं को महसूस करते हैं। लेकिन लगभग तीन-चौथाई शताब्दी पहले भारत के अग्रणी भौतिक वैज्ञानिक सर जगदीश चंद्र बोस ने कहा था, "प्रेम, घृणा, आनंद, भय, सुख, पीड़ा, उत्तेजना, स्तब्धता और उद्दीपनों के प्रति अनगिनत अन्य उपयुक्त प्रतिक्रियाएँ पौधों में भी उतनी ही सार्वभौमिक हैं जितनी जानवरों में।"
डॉ. बोस का कथन निराधार अटकलबाजी नहीं था। भौतिकी, मनोविज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने वाले पहले भारतीय, उन्होंने अपने क्रेस्कोग्राफ (जो जानवरों में तंत्रिका आवेगों को मापने और रिकॉर्ड करने के लिए डिज़ाइन किया गया था) के उपयोग से यह सिद्ध किया कि पादप जगत संवेदनशीलता से परिपूर्ण है। इससे पता चला कि पौधे यांत्रिक उत्तेजना के प्रति अभिक्रियाशील होते हैं और उनमें जानवरों के ऊतकों के समान शारीरिक परिवर्तन होते हैं। अभिक्रियाशील प्रतिक्रिया के संचरण की गति को मापने वाले अपने रेजोनेंट रिकॉर्डर और टेलीग्राफ पौधे के स्पंदनों को रिकॉर्ड करने वाले ऑसिलेटिंग रिकॉर्डर का उपयोग करके, बोस ने पादप आवेगों और जानवरों के हृदय की धड़कन के बीच समानता प्रदर्शित की। बोस ने दिखाया कि जब किसी पौधे को पिन से चुभोया जाता है, तो उसकी वृद्धि दर तुरंत एक चौथाई तक कम हो जाती है और पौधे को ठीक होने में लगभग दो घंटे लगते हैं। उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि एक कमजोर विद्युत उत्तेजना सकारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

पिरामिड 5सी प्लांट पावर 61
उन्होंने पौधे के पल्विनस (जो जानवरों में संकुचनशील मांसपेशी की तरह व्यवहार करता है) में सकारात्मक परिवर्तन का अध्ययन किया और पाया कि एक तीव्र उत्तेजना से नकारात्मक विद्युत परिवर्तन होता है। उनका मानना था कि सकारात्मक ध्वनि पौधे के लिए सुखद होती है और नकारात्मक ध्वनि अप्रिय या कष्टदायक होती है।
परमहंस योगानंद ने अपनी आत्मकथा 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ अ योगी' में वर्णन किया है कि कैसे उन्होंने बोस को एक फर्न के एक हिस्से में तेज औजार चुभोते हुए देखा। क्रेस्कोग्राफ की स्क्रीन पर फर्न की छाया को देखते हुए, जो आवेगों को 10 मिलियन गुना तक बढ़ा सकती थी, उन्होंने देखा कि चोट लगने के क्षण फर्न ऐंठन के साथ कांप उठा और फिर बोस द्वारा तने को काटते ही वह हिंसक रूप से कांपते हुए मर गया। योगानंद के अनुसार, पौधे में होने वाली मृत्यु की ऐंठन हर मायने में जानवर में होने वाली मृत्यु की ऐंठन के समान प्रतीत हुई।
बोस के रेजोनेंट कार्डियोग्राफ ने पौधों, जानवरों और मनुष्यों में सूक्ष्म स्पंदनों को एक सेकंड के सौवें हिस्से की दर से मापा। वनस्पति विज्ञान के प्रोफेसर पैट्रिक गेडेस, जिन्होंने सर जगदीश सी. बोस के जीवन और कार्य पर पुस्तक लिखी है, के अनुसार, डॉ. बोस ने कार्डियोग्राफ का विकास इस उम्मीद में किया था कि यह उपकरण जानवरों के बजाय पौधों पर विच्छेदन का मार्ग प्रशस्त करेगा।
पौधों पर प्रार्थना का प्रभाव कई बार सिद्ध हो चुका है। संभवतः इस क्षेत्र में सबसे व्यापक शोध रेवरेंड फ्रैंकलिन लोहर ने किया है, जिन्होंने इसी उद्देश्य से अमेरिका के धार्मिक अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना की थी। उनके तीन साल के प्रयोग में, जिसमें 150 व्यक्तियों ने 700 से

अधिक प्रयोग किए और 100,000 से अधिक माप लिए, यह सिद्ध हुआ कि प्रार्थना पौधों के स्वास्थ्य और विकास को प्रभावित कर सकती है। उनके परिणाम बेस्टसेलर पुस्तक, "पौधों पर प्रार्थना की शक्ति" में प्रकाशित हुए थे।
लोहर के प्रयोगों के बारे में पढ़ने के बाद, अटलांटा के एक रासायनिक इंजीनियर और जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के पूर्व प्रोफेसर डॉ. रॉबर्ट मिलर ने पौधों पर दूर से की जाने वाली प्रार्थना के प्रभाव का अध्ययन करने का निश्चय किया।

62 "द सीक्रेट पावर ऑफ पिरामिड्स" नामक अध्ययन में पौधों की वृद्धि को मापने के लिए एक रोटरी इलेक्ट्रो-मैकेनिकल ट्रांसड्यूसर और स्ट्रिप चार्ट रिकॉर्डर का उपयोग किया गया था। जाने-माने चिकित्सक डॉ. एम्ब्रोस और ओल्गा वॉरल से लगभग छह सौ मील दूर बाल्टीमोर स्थित अपने घर से पौधों के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध किया गया था। 11 घंटे की अवधि में, पौधे 52.5 मिलीसेकंड प्रति घंटे की दर से बढ़े - जो सामान्य दर से 800 प्रतिशत से अधिक थी।
मॉन्ट्रियल स्थित मैकगिल विश्वविद्यालय में जैव रसायनज्ञ और मनोचिकित्सा के प्रोफेसर डॉ. बर्नार्ड ग्रेड, "हाथों से स्पर्श करने" की विधियों, विशेष रूप से पौधों की वृद्धि पर टेलीकाइनेटिक प्रभाव पर किए गए प्रयोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गए हैं। हंगरी की सेना के पूर्व कर्नल ऑस्कर एस्टेबानी नामक एक कुशल चिकित्सक को पाकर, ग्रेड ने सात वर्षों तक एस्टेबानी की शक्ति की प्रकृति की जांच की। प्रयोगों में, एस्टेबानी को बीज बोने से पहले कई मिनट तक अपने हाथों में बीज रखने और पानी से भरे एक पात्र को पकड़े रहने के लिए कहा गया, जिसे बाद में बीजों के प्रायोगिक समूहों पर डाला गया। प्रत्येक मामले में, "उपचारित" बीजों में अंकुरण की दर अधिक थी और वे अनुपचारित बीजों की तुलना में अधिक बढ़े।
ये प्रयोग उस पुरानी कहावत को सच साबित करते प्रतीत होते हैं कि कुछ लोगों में पौधों को उगाने की जन्मजात प्रतिभा होती है। लूथर बरबैंक ने लगभग पचास साल पहले कहा था, "...एक व्यक्ति फूल लगाएगा, उसकी अच्छी तरह देखभाल करेगा, लेकिन वह मुरझा जाएगा। लेकिन उतनी ही शारीरिक देखभाल करने पर, दूसरा व्यक्ति उसी फूल को एक स्वस्थ और फलते-फूलते पौधे में बदल सकता है। इसका रहस्य... प्रेम है।"
सवाल तुरंत उठता है कि जब तक कोई पौधा महसूस नहीं कर सकता, तब तक वह प्यार पर प्रतिक्रिया कैसे दे सकता है? क्या प्यार या देखभाल की अभिव्यक्ति किसी अज्ञात ऊर्जा बल को उत्पन्न करती है, जिस पर पौधा प्रतिक्रिया करता है? स्पष्ट रूप से, उपरोक्त प्रयोगों से पता चलता है कि कोई अज्ञात और अदृश्य शक्ति पौधों के व्यवहार को बदल सकती है, कभी-कभी तो बहुत अधिक।
महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप इन और अन्य प्रयोगों को देखते हैं, जिनका उल्लेख इस अध्याय में बाद में किया जाएगा,

पिरामिड अनुसंधान के संदर्भ में कुछ रोचक समानताएं देखी जा सकती हैं। पिरामिड के अंदर रखे बीज और पौधे, बाहर रखे बीजों और पौधों से अलग तरह से व्यवहार करते हैं।
पिरामिड मॉडल के अंदर पौधों पर किए गए हमारे शुरुआती प्रयोगों में, हमने प्रायोगिक पौधों और पिरामिड के बाहर रखे गए नियंत्रण पौधों की वृद्धि दर में महत्वपूर्ण अंतर देखा। इन प्रेक्षणों के आधार पर हमारा मानना था कि पिरामिड द्वारा ग्रहण की गई या उत्पन्न की गई कोई ऊर्जा पौधों को प्रभावित कर रही थी। हमने सोचा कि क्या समय-अंतराल फोटोग्राफी के उपयोग से इस

प्रभाव को देखा जा सकता है।
हमने जो देखा—और बाद में कई वैज्ञानिक और आम पर्यवेक्षकों को दिखाया—वह पौधों का एक सिम्फनी नृत्य में घूमना था, मानो किसी अदृश्य कंडक्टर द्वारा निर्देशित किया जा रहा हो। हमारी पहली फिल्म में लगभग छह इंच लंबा, पतला सूरजमुखी का पौधा दिखाया गया था, जिसमें दो सुविकसित पत्तियां थीं। यह पौधा कांच के पिरामिड के केंद्र में, राजा के कक्ष के स्तर पर, आधार से शिखर तक की दूरी के एक तिहाई हिस्से पर रखा गया था। पौधा पूर्व-पश्चिम दिशा में चक्रीय गति करता था। यह पूर्व की ओर झुककर लगभग आधार को छूता था, फिर दक्षिण की ओर अर्धवृत्त बनाता हुआ पश्चिम की ओर मुड़ता था और अंत में सीधा होकर फिर से गति करने लगता था। पौधे के बगल में रखे एक ब्लॉक के अनुसार यह गति हर दो घंटे में दोहराई जाती थी। इसके बाद से दो वर्षों की अवधि में कई बार टाइम-लैप्स फोटोग्राफी का उपयोग किया गया है। दो साल से अधिक समय तक पूर्व-पश्चिम दिशा में गति में कोई बदलाव नहीं आया; पैटर्न हमेशा एक जैसा ही रहा। फिर अचानक जुलाई 1974 में, पूर्व-पश्चिम दिशा में गति रुक गई और पौधे उत्तर-दक्षिण दिशा में चापाकार रूप में घूमने लगे। हमने अनुमान लगाया कि यह परिवर्तन सूर्य के धब्बों या सौर ज्वालाओं में बदलाव के कारण हो सकता है। हालांकि, मौसम विज्ञानियों और अंतरिक्ष एजेंसियों, जो इन घटनाओं का मापन करती हैं, से जाँच करने पर भी कोई सुराग नहीं मिला। नवंबर 1974 में, जब यह लेख लिखा जा रहा है, तब भी उत्तर-दक्षिण दिशा में गति जारी है। हमें पूरा विश्वास है कि इस आमूल-चूल परिवर्तन का कुछ महत्व है।

64 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

हमने यह भी अनुमान लगाया है कि पौधे हमारे पर्यावरण में हो रहे किसी बदलाव पर नज़र रख रहे हैं। हम निश्चित रूप से अपनी जांच जारी रख रहे हैं।
पिरामिड के बाहर उगने वाले पौधे अंदर उगने वाले पौधों की तरह हलचल नहीं दिखाते। टाइम-लैप्स फोटोग्राफी से पता चलता है कि ये पौधे "शांत" हैं, जो पिरामिड के अंदर मौजूद अपने उत्साही साथियों की हलचल से बच रहे हैं।
हमारे प्रयोगों से ऐसा प्रतीत होता है कि पश्चिम से कोई अलौकिक हवा बह रही है। जब पिरामिडनुमा स्थान के भीतर पौधे के पश्चिम की ओर एक एल्युमीनियम की जाली लगाई जाती है, तो पौधे अपनी घूर्णन गति में रुक जाते हैं और फिर जाली हटाए जाने तक या जाली के ऊपर बढ़ने तक पूरी तरह से हिलना बंद कर देते हैं। हालांकि, केवल जाली के ऊपर का भाग ही गति करता है, अवरुद्ध भाग अवरुद्ध प्रतीत होता है। जब तक जाली पौधे के पश्चिम की ओर लंबवत लटकी रहती है, पौधा मुरझाता नहीं है और स्वस्थ रहता है, फिर भी विचित्र रूप से अधर में लटका रहता है।
ऐसा प्रतीत होता है कि पिरामिड द्वारा ग्रहण किया गया, बढ़ाया गया या उत्पन्न ऊर्जा क्षेत्र विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के किसी भाग को समाहित करता है, क्योंकि एल्युमीनियम की जाली एक बल क्षेत्र को अवरुद्ध करती है और पौधों की गति को रोक देती है। हमारे शोध के अनुसार, एल्युमीनियम एकमात्र ऐसी धातु है जो अवरोधक के रूप में कार्य करती है। एल्युमीनियम का निर्माण विद्युत प्रक्रिया द्वारा होता है और इसे विद्युतीय पदार्थ माना जा सकता है। संभवतः एल्युमीनियम एक ऋणात्मक क्षेत्र उत्पन्न करता है या धनात्मक क्षेत्र को अवरुद्ध करता है। एल्युमीनियम पन्नी पर रखी तश्तरियों में चार दिनों तक बीज अंकुरित नहीं हुए, जबकि एल्युमीनियम पन्नी के बिना समान तश्तरियों में रखे बीज दो दिनों में अंकुरित हो गए। एक बार जब पन्नी या जाली को लगभग दो सप्ताह तक पिरामिड में छोड़ दिया जाता है, तो यह स्पष्ट रूप

से पिरामिड ऊर्जा से संतृप्त हो जाती है और अवरोधक के रूप में कार्य करना बंद कर देती है। हालांकि, किसी भी समय के लिए पिरामिड के बाहर रखे जाने पर, एल्युमीनियम अपना आवेश खो देता है और अवरोधक के रूप में अपनी भूमिका में वापस आ जाता है।
जब किसी पिरामिड के अंदर चुंबक डाला जाता है, तो छोटे

पिरामिड और पौधों की शक्ति 65
पौधे अपनी गति रोक देते हैं। छह इंच ऊंचे सूरजमुखी के पौधे के पास रखा एक चुंबक, पौधे के आधार स्तर पर उसकी घूर्णन गति को रोक देता है, हालांकि पौधे का ऊपरी भाग हिलता रहता है। चुंबक को हटाने पर, पौधे ने तने के आधार से फिर से गति करना शुरू कर दिया। रहस्यमय रूप से, जब पौधों को प्लास्टिक के गुंबदों के नीचे रखा जाता है, तो स्थायी चुंबक पिरामिड के शीर्ष के ठीक नीचे वाले भाग को छोड़कर, पिरामिड के किसी भी हिस्से में पौधे की गति को रोकते हुए प्रतीत होते हैं। दूसरे शब्दों में, ऐसा लगता है कि उस स्थान पर ऊर्जा इतनी प्रबल होती है कि वह चुंबक द्वारा निर्देशित प्रतिबल को भी पराजित कर देती है।
डॉ. बोस के अनुभव को याद करते हुए, जिसमें उन्होंने बताया था कि कम विद्युत आवेगों से पोषित पौधे स्वस्थ और खुशहाल रहते हैं, जबकि अधिक विद्युत आवेश दिए जाने पर पौधे कमजोर हो जाते हैं, हम यह परिकल्पना कर सकते हैं कि एल्युमीनियम की जाली और चुंबक पिरामिड के भीतर पहले से ही विद्युत क्षेत्र की सक्रियता से आवेशित स्थान में अत्यधिक विद्युत आवेश उत्पन्न करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अतिरेक के कारण दुरुपयोग का मामला है, क्योंकि पिरामिड के बाहर स्थित पौधों के पास चुंबक रखकर किए गए प्रयोगों में पौधों की वृद्धि देखी गई है। इसके अलावा, हम यह भी ध्यान दे सकते हैं कि विद्युत चिकित्सा के मामले में, प्राप्तकर्ताओं को चेतावनी दी जाती है कि बिजली की कम मात्रा लाभकारी हो सकती है, लेकिन अधिक मात्रा हानिकारक हो सकती है।
ज्ञात विद्युत क्षेत्रों के निर्माण के संदर्भ में, ग्रेट पिरामिड में राजा के कक्ष के ऊपर स्थित पाँच खुले स्थान या कक्ष राजा के कक्ष को संधारित्र जैसा प्रभाव और संधारित्र से जुड़े विद्युत गुण प्रदान कर सकते हैं। पिरामिड के कई हिस्सों में प्रयुक्त ग्रेनाइट असवान से लाया गया था, और इसमें क्वार्ट्ज की तरह ही पीजो-इलेक्ट्रिक गुण होते हैं।
टाइम-लैप्स फोटोग्राफी के माध्यम से देखे गए सूरजमुखी के व्यवहार में सोने के प्रति उसका आकर्षण काफी हद तक मनुष्यों जैसा प्रतीत हुआ। पिरामिड के अंदर 22 कैरेट सोने की पन्नी का एक रोल रखा गया था, और पौधा पन्नी के चारों ओर लिपट जाने के लिए काफी दूर तक फैल गया। अंत में वह हिलने लगा।

66 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
विपरीत दिशा में वापस, लेकिन उतनी दूर नहीं जितनी दूर
सामान्य रूप से और जल्दी से पन्नी को गले लगाने के लिए वापस लौट आया।
सोलहवीं शताब्दी के चिकित्सक पैरासेल्सस के लेखन से अत्यधिक प्रभावित एंटोन मेस्मर का मानना था कि पौधे और तारे एक सूक्ष्म और अदृश्य चुंबकीय द्रव उत्सर्जित करते हैं जो मनुष्य के स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करता है। उन्होंने इस बल को "पशु चुंबकत्व" कहा। 1815 में मेस्मर की मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने स्वयं को चुंबकत्व विशेषज्ञ कहना शुरू कर दिया। 1841 में एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक और चुंबकत्व विशेषज्ञ, चार्ल्स लाफोंटेन ने यह निर्धारित करने के लिए पौधों पर प्रयोगों की एक श्रृंखला शुरू की कि क्या मेस्मर द्वारा उत्पन्न और उपचार के

लिए उपयोग किए जाने वाले शारीरिक चुंबकत्व का निम्न जीव रूपों पर कोई प्रभाव पड़ सकता है।
लाफोंटेन ने एक मुरझाते हुए जेरेनियम के पौधे पर प्रयोग किए। न केवल पौधे में नई जान आ गई, बल्कि वह आसपास के अन्य जेरेनियम पौधों की तुलना में बड़ा हो गया और उसमें अधिक फूल खिले। लाफोंटेन की सफलता से उत्साहित होकर, उनके एक सहयोगी, डॉ. पिकार्ड ने एक आड़ू के पेड़ पर भी ऐसे ही परिणाम प्राप्त किए। लाफोंटेन के साथ काम करने वाले अन्य प्रयोगकर्ताओं ने भी फलों के पेड़ों में आश्चर्यजनक रूप से सुधार देखा और एक ही भूखंड में लगे नियंत्रण समूह के पेड़ों की तुलना में अधिक फल प्राप्त किए।
वर्तमान में सिस्टर जस्टा स्मिथ, जो एंजाइमोलॉजिस्ट और न्यूयॉर्क के बफ़ेलो स्थित रोज़री हिल कॉलेज के रसायन विज्ञान विभाग की अध्यक्ष हैं, उपचार करने वाले के हाथों से निकलने वाली शक्ति के एंजाइमों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने में गहराई से संलग्न हैं।
डॉ. स्मिथ ने यह प्रदर्शित किया है कि चुंबकीय क्षेत्र एंजाइम की गतिविधि को बढ़ाते हैं जबकि पराबैंगनी प्रकाश इसे नुकसान पहुंचाता है। वह अब एस्टेबानी के साथ मिलकर उनके बल क्षेत्र और उच्च चुंबकीय क्षेत्र की तुलना में इसके प्रभावों की जांच कर रही हैं। एंजाइमों के चार कंटेनरों का उपयोग करते हुए, अनुपचारित नियंत्रण शीशी एस्टेबानी के हाथों के समान तापमान पर रहती है; दूसरी शीशी को एस्टेबानी पचहत्तर मिनट तक अपने पास रखते हैं; तीसरी शीशी में पराबैंगनी प्रकाश से क्षतिग्रस्त एंजाइम होते हैं, और एस्टेबानी इस शीशी का उपचार करते हैं।

दूसरे के समान। एंजाइमों के चौथे कंटेनर को 8,000 से 13,000 गॉस के उच्च चुंबकीय क्षेत्र के संपर्क में रखा जाता है। पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र एक गॉस से कम मापा गया है।
ऐसा ही एक प्रयोग एक महीने तक प्रतिदिन किया गया, और डॉ. स्मिथ ने उपचारित शीशियों में एंजाइम गतिविधि में नियंत्रण की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि पाई। पराबैंगनी प्रकाश से क्षतिग्रस्त और फिर एस्टेबानी द्वारा उपचारित एंजाइम "ठीक" हो गए और सामान्य गतिविधि में वापस आ गए। डॉ. स्मिथ की यह खोज अत्यंत महत्वपूर्ण थी कि एस्टेबानी द्वारा उपचारित शीशी में एंजाइमों की गतिविधि 13,000 गॉस के चुंबकीय क्षेत्र के संपर्क में लाई गई शीशियों के समान थी।
सिस्टर जस्टा स्मिथ का सवाल यह है कि क्या एस्टेबानी और उनके जैसे अन्य उपचारकों द्वारा उत्सर्जित बल और चुंबकीय क्षेत्र वही बल है जो सामान्यतः उपचार को बढ़ावा देता है। वे रोज़री हिल स्थित ह्यूमन डायमेंशन्स इंस्टीट्यूट की निदेशक भी हैं, जो मनुष्य की अज्ञात क्षमताओं के वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न है। संस्थान की परियोजनाओं में से एक पौधों पर ईएसपी (आंतरिक संवेदनशीलता और सहानुभूति) के प्रभावों का मापन करना है। यह अनुसंधान डॉ. डगलस डीन द्वारा किया जा रहा है, जो नेवार्क कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से प्रतिनियुक्ति पर हैं। अध्ययन में शामिल लोगों का ध्यान जौ के बीजों को उगाने पर केंद्रित है, और डॉ. डीन ने पाया है कि जिन छात्रों का ईएसपी स्कोर सबसे अधिक होता है, वे सबसे बड़े पौधे उगाने में सक्षम होते हैं।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वृद्धि और उपचार एक ही ऊर्जा क्षेत्र द्वारा शुरू होते हैं, लेकिन पिरामिड अनुसंधान द्वारा उठाया गया प्रश्न यह है कि क्या पिरामिड के भीतर उपलब्ध ऊर्जा की प्रकृति समान है। कुछ प्रमाण बताते हैं कि इसमें समान गुण हैं: पौधों की वृद्धि, जीवाणु और एंजाइम गतिविधि, और उपचार गुणों में वृद्धि के संकेत, जिनका वर्णन इस पुस्तक में अन्यत्र किया गया है।

पिरामिडों पर लिखे गए अधिकांश साहित्य से पता चलता है कि पिरामिडों के अंदर बीज रखने पर वे तेजी से अंकुरित होते हैं और पौधे तेजी से बढ़ते हैं। मैक्स टोथ और ग्रेग नीलसन का कहना है कि

68 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: उनकी पुस्तक, पिरामिड पावर में, "बागवानी विशेषज्ञों ने पाया है कि रोपण से पहले पिरामिड के अंदर रखे गए बीज अधिक तेज़ी से अंकुरित होते हैं और उन बीजों की तुलना में कम समय में एक मजबूत, स्वस्थ पौधा पैदा करते हैं जिन्हें पिरामिड में संसाधित नहीं किया गया था।"
ओरेगन की मनोसंवेदनशील टेनी हेल का दावा है कि उन्होंने एक पौधे की कटिंग को पांच दिनों तक पानी से बाहर एक पिरामिड में रखा और वह जीवित रही। पिरामिड से निकालकर जड़ पकड़ने के लिए पानी में रखने पर, कटिंग आधे घंटे में ही मर गई।
सेवेराटी के प्रयोगकर्ताओं ने घर के पौधों को पानी देने के लिए इस्तेमाल करने से पहले एक सप्ताह या उससे अधिक समय तक पानी को पिरामिड में उपचारित करने से पौधों की वृद्धि में वृद्धि की सूचना दी है।
बाहर रोपने से पहले दो सप्ताह तक पिरामिडनुमा संरचना में टमाटर उगाकर हमने बेहतरीन परिणाम प्राप्त किए। इन खास टमाटरों ने सामान्य पौधों की तुलना में कहीं अधिक उपज दी। वास्तव में, एक पौधे पर एक समय में 100 से अधिक टमाटर लगे थे। टमाटरों के एक अन्य समूह को पिरामिडनुमा संरचना में लगाने के बाद कुछ समय तक अच्छी तरह से वृद्धि हुई। बाद में उन पर कीटों का हमला हो गया, इसलिए हमने एक धातु के खंभे के ऊपर गैल्वनाइज्ड स्क्रीन से ढका हुआ एक सपाट फ्रेम रखा और उसे एक पौधे के पास जमीन में गाड़ दिया, इस उम्मीद में कि इससे पौधे के चारों ओर एक चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न होगा। यह फ्रेम नौ फीट से अधिक लंबा हो गया और जमीन से आठ फीट ऊपर टमाटर पैदा करने लगा। इस बीच, बाकी के पौधे मर गए। लेकिन परिणाम हमेशा एक जैसे नहीं होते। अन्य प्रकार के प्रयोगों की तरह, कभी-कभी अनियमित पैटर्न विकसित होते हैं और समान प्रयोगों से, यहाँ तक कि सभी चर समान रहने पर भी, कभी-कभी विपरीत परिणाम प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, पिरामिड के अंदर बीज हमेशा अंकुरित नहीं होते और कभी-कभी वे बाहर लगे नियंत्रण पौधों की तुलना में धीमी गति से अंकुरित होते हैं।
एक प्रयोग में हमने चार ट्रे लीं और प्रत्येक पर लीमा बीन्स, पिंटो बीन्स और सूरजमुखी के दो-दो बीज मुड़े हुए कागज़ के नैपकिन पर रखे। एक ट्रे को साधारण नल के पानी से, एक को डी-सेल पानी से (डी-सेल्स पर पुस्तक में अन्यत्र चर्चा की गई है) और एक को पिरामिड पानी से नम किया गया।

एक ट्रे को नल के पानी से गीला करके एक मिनट के लिए मल्टीवेव ऑसिलेटर के क्षेत्र में रखा गया। मल्टीवेव ऑसिलेटर से उपचारित बीजों का अंकुरण और विकास दर अन्य ट्रे में रखे बीजों की तुलना में तीन गुना तेज़ था। अन्य ट्रे में रखे बीजों के अंकुरण और विकास दर में बहुत कम अंतर था।
कई लोगों ने हमसे पिरामिड के आकार में ग्रीनहाउस बनाने की सलाह के बारे में पूछा है। हमने उन्हें निवेश करने से पहले अतिरिक्त शोध करने का सुझाव दिया है। हालांकि पिरामिड के अंदर पौधे अक्सर अच्छी तरह से बढ़ते हैं, लेकिन कभी-कभी ऐसा नहीं होता। अलग-अलग समय पर

पिरामिड में लगाए गए कई वर्बिनिया के पौधे हर बार जल्दी ही मुरझा गए। हमने पाया है कि टोडस्टूल बहुत कम समय तक टिकते हैं। जिन टमाटरों को ऐसी ज़मीन में लगाया गया था जो पहले बाहरी पिरामिडों के आधार के रूप में काम करती थी, वे हमेशा मर जाते थे। कभी-कभी पिरामिड के अंदर का कोई पौधा बढ़ना बंद कर देता है और कई दिनों तक उसी स्थिति में रहता है, मानो समय रुक गया हो।

यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पिरामिड के अंदर या पिरामिड के जल से उपचारित करने पर पौधों का विकास कभी बेहतर होता है और कभी खराब, इसका कारण मौजूद या उत्पन्न लाभकारी ऊर्जा की मात्रा पर निर्भर करता है। जब पौधों का विकास रुक जाता है या वे मर जाते हैं, तो यह अत्यधिक विद्युत आवेश या संभवतः किसी प्रकार की ऋणात्मक ऊर्जा की उपस्थिति का परिणाम हो सकता है। यह सिद्ध हो चुका है कि एक कमजोर विद्युत धारा वृद्धि को बढ़ाती है और एक प्रबल आवेश वृद्धि को रोकता है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, और एमडब्ल्यूओ से उपचारित अंकुरित बीजों पर किया गया हमारा प्रयोग इसकी पुष्टि करता प्रतीत होता है।

पिरामिड के सभी स्थान समान नहीं हैं। हमने अनुमान लगाया था कि राजा के कक्ष के स्थान पर पौधे को रखने से उसकी वृद्धि अधिकतम होगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हर मामले में, पिरामिड के शीर्ष के सबसे निकट स्थित पौधे की वृद्धि दर सबसे तेज़ थी। इन अवलोकनों से उन मौजूदा सिद्धांतों को बल मिला कि ऊर्जा पिरामिड के शीर्ष से ऊपर की ओर प्रवाहित होती है।

ग्रेट पिरामिड के साहित्य में इसके संदर्भों की भरमार है।

70 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

विशाल संरचना के शिखर पर खड़े होने पर विद्युत आवेश या उच्च ऊर्जा क्षेत्र की उपस्थिति का अनुभव होने के कई संदर्भ मिलते हैं। जिन लोगों को यह अनुभव हुआ है, उन्होंने अपनी प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग तरह से दर्ज की हैं, जैसे "इतना अधिक आवेशित महसूस करना कि मैंने खुद को प्रकाश की किरण समझा," से लेकर "मैं ऊर्जा क्षेत्र में इतना समा गया था कि मुझे नीचे उतरना पड़ा वरना मैं बेहोश हो जाता।" फिर भी, कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने शिखर पर चढ़ाई की और केवल ऊपर से दिखने वाले दृश्य का ही उल्लेख किया। कभी-कभी ग्रेट पिरामिड के शिखर के चारों ओर एक आभा या शिखर पर एक प्रकाश दिखाई देने का भी उल्लेख मिलता है। कई अंतर्ज्ञानियों ने पिरामिड मॉडल के शीर्ष से ऊर्जा का प्रवाह महसूस करने की सूचना दी है। एक शाम कंपास की मदद से उत्तर-दक्षिण अक्ष पर एक पिरामिड को संरेखित करते समय, हमने पाया कि जब कंपास को शीर्ष के ऊपर रखा गया तो सुई अनियमित रूप से बेतरतीब ढंग से हिलने लगी। संरचना के शीर्ष पर कंपास को स्थिर करने से भी सुई शांत नहीं हुई। लेकिन इस व्यवहार को दोहराने के प्रयासों से सुई में केवल मामूली हलचल हुई या बिल्कुल भी हलचल नहीं हुई। पिरामिडों के ऊपर से उड़ने वाले विमानों को चेतावनी दी गई है क्योंकि शिखर से ऊपर की ओर बहने वाली किरणें इन पिरामिडों के ऊपर से निकलती हैं। इन संरचनाओं के ऊपर से उड़ान भरने वाले पायलटों ने बताया है कि उनके उपकरण खराब हो जाते हैं।

यदि ग्रेट पिरामिड का निर्माण शिखर तक और उससे आगे ऊर्जा प्रवाह उत्पन्न करने के लिए किया गया था, तो यह सवाल उठता है कि ऊर्जा किस वस्तु की ओर निर्देशित की गई थी। इस ऊर्जा की गुणवत्ता और मात्रा, राजा के कक्ष या पिरामिड के अन्य भागों में उत्पन्न ऊर्जा से किस प्रकार भिन्न है? इन और ऐसे ही कई अन्य प्रश्नों के उत्तर अभी किए जाने वाले शोधों में ही निहित हैं।

कैलिफोर्निया के रिवरसाइड निवासी स्वर्गीय वर्न एल. कैमरून ने बीस वर्ष से भी अधिक समय पहले पिरामिड के आकार पर शोध किया था। उनकी निजी नोटबुक में मौजूद चित्रों में से एक में पिरामिड के शीर्ष से ऊपर की ओर ऊर्जा का प्रवाह दर्शाया गया था।
पिरामिड के विभिन्न स्थानों पर पौधों की वृद्धि में यदि कोई अंतर है तो उसे मापने के लिए, हमने यह निर्णय लिया कि

प्रयोगों की एक श्रृंखला चलाई गई। प्रत्येक प्रयोग की शुरुआत 50 सूरजमुखी के बीजों को सोख्ता कागज पर रखकर की गई। कागज को गीला करके चौड़े मुंह वाले जारों के अंदर रखा गया। ऑक्सीजन के प्रवेश के लिए जारों के मुंह पर गीला कागज रखा गया। बीजों को अंकुरित होने और तीन-आठवें इंच तक बढ़ने दिया गया। फिर अंकुरों को सवा इंच के प्लास्टिक के गमलों में, जिनमें मिट्टी भरी हुई थी, रोपित किया गया। गमलों को लोहे के तार से बांध दिया गया ताकि उन्हें पिरामिड के अंदर लटकाया जा सके। रोपण के समय और परीक्षण के प्रत्येक दिन सुबह 8 बजे प्रत्येक अंकुर को पांच ग्राम नल का पानी दिया गया। निम्नलिखित तालिका पौधों की वृद्धि दर्शाती है और चित्र 1 पिरामिड के अंदर उनके संबंधित स्थानों को दर्शाता है।
यह दिलचस्प बात है कि शीर्ष पर लगे पौधे सबसे तेजी से बढ़े, जबकि शिखर और राजा के कक्ष के बीच में लटके हुए पौधे उनसे भी धीमी गति से बढ़े। पिरामिड के तल पर और ढलान के अनुसार किनारों के जितना संभव हो सके करीब लगाए गए पौधों में सबसे कम वृद्धि देखी गई। सभी पौधों को पिरामिड के दक्षिणी भाग के केंद्र से लेकर पूरे पिरामिड में फैली एक समतल रेखा में लगाया गया था। पिरामिड के विभिन्न स्थानों पर आर्द्रता या तापमान में परिवर्तन की संभावना को कम करने के लिए, पिरामिड के 10 फीट पश्चिम में 18 इंच का एक परासरण पंखा लगाया गया था।

 मध्य में और इसी तरह का एक और पंखा पिरामिड के दस फीट पूर्व में रखा गया था। साथ ही, पिरामिड के शीर्ष पर चार इंच का एक वेंट होल बनाया गया था।
यह संभव है कि पौधों को उगाने के लिए पिरामिड सबसे अच्छा आकार न हो। हमने दो प्रयोगकर्ताओं से बात की थी जिन्होंने शंकुओं के उपयोग से पौधों की उच्च वृद्धि दर का दावा किया था। हमने पिरामिड की तुलना दो अन्य आकृतियों से करने का निर्णय लिया। हमने एक तीन-पक्षीय पिरामिड बनाया जिसकी भुजाएँ मानक पिरामिड के समान कोण पर झुकी हुई थीं। इसका आधार नौ और तीन-आठ इंच का वर्गाकार था; भुजाएँ आठ और सात-आठ इंच की थीं और शीर्ष की ऊँचाई छह इंच से थोड़ी अधिक थी। शीर्ष से डेढ़ इंच काट दिया गया ताकि ऊपर से एक छोटा प्लास्टिक का गमला लटकाया जा सके। उसी सामग्री से एक शंकु बनाया गया जिसका आधार व्यास दस इंच और ऊँचाई दस इंच थी। गमला लटकाने के लिए इसके शीर्ष से दो इंच काट दिया गया। मानक पिरामिड के शीर्ष की ऊँचाई छह इंच थी और इसके शीर्ष से डेढ़ इंच काट दिया गया था।
पौधों की वृद्धि पर पाँच परीक्षण किए गए। उनके औसत परिणाम इस प्रकार थे:
शंकु के साथ वृद्धि सबसे अधिक थी, तीन तरफा पिरामिड के साथ दूसरे स्थान पर और मानक पिरामिड के साथ सबसे कम थी, और यह क्रम प्रत्येक परीक्षण में समान रहा।
अपनी नोटबुक में, कैमरून ने पौधों की वृद्धि पर शंकुओं के प्रभावों से संबंधित अपने अनुभवों का वर्णन किया है।

"अंततः मैंने छह एल्युमिनियम क्लोज्ड-बेस ट्वेंटी-

मेरे घर के पीछे एक बड़े पेड़ पर दो इंच के शंकु लगे हुए थे। एक तार प्रत्येक शंकु के शीर्ष से ऊर्जा को अगले शंकु के आधार से जोड़ता था। इससे ऊर्जा एक घुमावदार मार्ग में प्रवाहित होती रही, क्योंकि प्रत्येक शंकु अधिक ऊर्जा एकत्रित करके उसे परिपथ में प्रवाहित करता था। अतिरिक्त ऊर्जा को फिर एक दूसरे तार के माध्यम से तांबे की जाली वाले रसोई के स्क्रबर पैड तक पहुंचाया जाता था।
"शुरुआत में मैंने नीचे से खुले शंकुओं का इस्तेमाल किया, लेकिन बाद में मुझे पता चला कि नीचे पतली एल्युमीनियम शीट से ढका एक शंकु लगभग खुले आधार वाले तीन शंकुओं के बराबर ही शक्तिशाली था। मुझे यह भी पता चला कि शंकु को घर के बाहर रखने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसे घर के अंदर दीवार पर काफी ऊंचाई पर लटकाया जा सकता है।"
"चालक तार की लंबाई महत्वपूर्ण नहीं है (धारा इसे छोड़ने के लिए उत्सुक नहीं होती)। तार का आकार भी महत्वपूर्ण नहीं है।"
एक प्रयोग में मैंने बगीचे की बाड़ पर एक शंकु लटकाया और तार को उससे जोड़कर मूली के बीजों की एक पंक्ति के नीचे से होते हुए पंक्ति की आधी लंबाई तक ले गया। जो बीज तार के ऊपर नहीं थे, वे सामान्य रूप से अंकुरित हुए और अच्छी तरह बढ़े, लेकिन तार के ऊपर बोए गए लगभग सभी बीज खराब हो गए। जो कुछ पौधे बच भी गए, वे जल्द ही मुरझा गए या विकसित ही नहीं हुए। एक बार फिर, ऐसा लगता है कि हमारे पास ऊर्जा की अधिकता है जो पौधों की वृद्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। कैमरून ने वृद्धि दर बढ़ाने के लिए शंकुओं का अलग-अलग उपयोग किया था। यह भी ध्यान देने योग्य है कि कैमरून के शंकुओं की श्रृंखला के प्रयोगों में एल्यूमीनियम सामग्री का उपयोग किया गया था।
विल्हेम रीच, जिन्होंने विशिष्ट ऊर्जा क्षेत्रों पर काम किया, ने इस ऊर्जा को "ऑर्गेन" कहा, जो एक ब्रह्मांडीय ऊर्जा है जो यांत्रिक नियमों के बजाय कार्यात्मक नियमों का पालन करती है। उन्होंने "ऑरेकस" नामक ऑर्गेन संचायक बनाए। इन ओरेकस की सहायता से, रीच और अन्य शोधकर्ताओं ने ऑर्गेन ऊर्जा के अस्तित्व और प्रभावों को प्रदर्शित किया। यद्यपि रीच के कार्यों पर पुस्तक में अन्यत्र चर्चा की गई है, हम पौधों पर इस अध्याय में यह उल्लेख कर सकते हैं कि प्रयोगकर्ताओं ने ओरेकस में पौधों को तेजी से और मजबूती से विकसित करने की सूचना दी है। ओरेकस आम तौर पर एक छह-पक्षीय बॉक्स होता है जिसकी सभी भुजाएँ कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थों की वैकल्पिक परतों से बनी होती हैं।

अपनी पुस्तक, द कैंसर बायोपैथी में, रीच लिखते हैं कि "जब घास के अर्क को शुरुआत से ही ऑर्गेन संचायक में रखा जाता है, तो उसमें कोई प्रोटोजोआ विकसित नहीं होता है, या बहुत कम विकसित होते हैं। स्पष्ट रूप से, ऑर्गेन ऊर्जा घास के ऊतकों को ऊर्जा प्रदान करती है और उन्हें प्रोटोजोआ में विघटित होने से रोकती है।"
विद्युतचुंबकीय स्पेक्ट्रम के अंतर्गत आने वाले और उससे बाहर स्थित ऊर्जा क्षेत्रों का अध्ययन—चाहे हम उन्हें ब्रह्मांडीय, प्राणिक, ओडिक, मनो-जनित या जैविक कहें—हमें उस मुकाम तक ले आया है जहाँ हम कोशिकीय स्तर से नीचे की चेतना का सामना करते हैं। इन अज्ञात ऊर्जाओं और भावनात्मक एवं मानसिक माध्यमों से उनकी अभिव्यक्ति की खोज में पौधों के अध्ययन ने

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐसा प्रतीत होता है कि पौधों और मनुष्यों के बीच एक घनिष्ठ संबंध है, जो रासायनिक पदार्थों के आदान-प्रदान से कहीं अधिक गहरा है।
बैक्स्टर प्रयोगों के बारे में पढ़ने के बाद से ही डॉ. मार्सेल वोगेल ऊर्जा के हस्तांतरण और मनुष्यों तथा पौधों के बीच संचार का गहन अध्ययन कर रहे हैं। वोगेल इंटरनेशनल बिजनेस मशीन्स में एक वरिष्ठ शोध रसायनज्ञ हैं और उन्हें कई वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। उन्होंने स्वयं यह सिद्ध किया कि मन द्वारा निर्देशित ऊर्जा पौधों के ऊर्जा क्षेत्रों को प्रभावित कर सकती है। उन्होंने मानसिक ऊर्जा भेजकर एक तोड़े गए एल्म के पत्ते को चार सप्ताह तक हरा-भरा रखा, जबकि एक अन्य पत्ता कुछ ही दिनों में सूखकर भूरा हो गया।
वोगेल का मत है कि क्रिस्टल पूर्व-रूपों, या शुद्ध ऊर्जा की प्रेत छवियों द्वारा ठोस अवस्था में आते हैं, जो ठोस अवस्था का पूर्वाभास कराती हैं। जैसा कि सिद्ध हो चुका है कि पौधे मनुष्यों से इरादे ग्रहण करते हैं, वोगेल ने निष्कर्ष निकाला कि इरादे से किसी प्रकार का ऊर्जा क्षेत्र उत्पन्न होता है।
1971 की वसंत ऋतु में, वोगेल ने यह पता लगाने के लिए प्रयोग शुरू किए कि कोई पौधा कब किसी मानव विषय के साथ रिकॉर्ड करने योग्य संचार स्थापित करता है। उन्होंने एक गैल्वेनोमीटर, जो एक सीधी आधार रेखा उत्पन्न करता था, को एक फिलोडिड्रॉन से जोड़ा। वह पौधे के सामने खड़े हो गए, और...

वोगेल ने आराम से गहरी सांस ली और पौधे के प्रति स्नेहपूर्ण और प्रेमपूर्ण विचार भेजे, ठीक वैसे ही जैसे कोई अपने मित्र के प्रति भेजता है। हर बार जब वोगेल ने यह प्रयोग किया, तो कलम धारक द्वारा चार्ट पर आरोही दोलनों की एक श्रृंखला का वर्णन किया गया। वोगेल ने बताया कि इन दोलनों के दौरान उन्हें अपनी हथेलियों पर पौधे से ऊर्जा का प्रवाह महसूस होता था।
पिरामिड के भीतर रखे पौधों के कभी-कभार अनियमित व्यवहार और वोगेल द्वारा खोजे गए इस तथ्य के बीच समानता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण हो सकता है कि कुछ फिलोडेंड्रोन अन्य की तुलना में तेजी से प्रतिक्रिया करते हैं, कुछ अधिक स्पष्ट रूप से, और न केवल पौधे बल्कि प्रत्येक पत्ती भी अपना अनूठा व्यवहार प्रदर्शित करती है। उन्होंने पाया कि पौधे सक्रियता और निष्क्रियता के चरणों से गुजरते हैं, कभी अत्यधिक ऊर्जावान या उत्साहित दिखाई देते हैं तो कभी सुस्त या उदास।
पीटर टॉमपकिंस और क्रिस्टोफर बर्ड ने अपनी पुस्तक "द सीक्रेट लाइफ ऑफ प्लांट्स" में कहा है, "वोगेल अपने अनुभवों से जानते थे कि योग कला के उस्ताद और ज़ेन जैसी गहन ध्यान विधियों के शिक्षक, ध्यान की अवस्था में होने पर अपने आसपास के परेशान करने वाले प्रभावों से अनभिज्ञ रहते हैं।" "इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफ (इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफ) उन व्यक्तियों से मस्तिष्क तरंगों का एक बिल्कुल अलग समूह पकड़ता है, जो तब नहीं पकड़ता जब वे अपने आसपास की रोजमर्रा की दुनिया के प्रति सचेत होते हैं। वोगेल को यह स्पष्ट हो गया कि उनकी चेतना की एक विशेष केंद्रित अवस्था उनके पौधों की निगरानी के लिए आवश्यक सर्किट का एक अभिन्न और संतुलित हिस्सा बन जाती है। वोगेल अपनी सामान्य सचेत अवस्था को त्यागकर और अपने मन के एक प्रतीत होने वाले अतिचेतन भाग को इस सटीक विचार पर केंद्रित करके पौधे को सुस्ती से संवेदनशीलता में जगा सकते थे कि पौधा खुश रहे, प्यार महसूस करे, और स्वस्थ विकास का आशीर्वाद प्राप्त करे। इस तरह, मनुष्य और पौधा परस्पर क्रिया करते प्रतीत होते थे, और एक इकाई के रूप में, घटनाओं या तीसरे पक्षों से संवेदनाएं ग्रहण करते थे, जो पौधे के माध्यम से रिकॉर्ड करने योग्य हो जाती थीं। वोगेल ने पाया कि स्वयं और पौधे दोनों को संवेदनशील बनाने

की प्रक्रिया में केवल कुछ मिनट या अधिकतम आधा घंटा लग सकता है।"

जब वोगेल से इस प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन करने को कहा गया, तो उन्होंने बताया कि सबसे पहले वे अपने शरीर के अंगों की संवेदी प्रतिक्रियाओं को शांत करते हैं, फिर उन्हें पौधे और अपने बीच एक ऊर्जावान संबंध का एहसास होता है। जब पौधे और उनके जैवविद्युतीय क्षमता में संतुलन स्थापित हो जाता है, तो पौधा शोर, तापमान, आसपास के सामान्य विद्युत क्षेत्रों या अन्य पौधों के प्रति असंवेदनशील हो जाता है। यह केवल वोगेल को ही प्रतिक्रिया देता है, जिन्होंने प्रभावी रूप से खुद को इसके अनुरूप ढाल लिया है—या शायद इसे सम्मोहित कर लिया है।
अर्नेस्ट होम्स रिसर्च फाउंडेशन की सलाहकार समिति में वोगेल के साथ काम करते हुए (जिस समिति में बैक्स्टर भी हैं), मुझे (शुल को) एक शाम उनके प्रयोगों के बारे में उनसे मिलने का मौका मिला। उन्होंने मुझसे कहा, "मेरा मानना है कि हमने यह साबित कर दिया है कि मनुष्य पौधों से संवाद कर सकता है। पौधे संवेदनशील, सजीव वस्तुएं हैं। भले ही वे मनुष्य की तरह देख या सुन न सकें, लेकिन वे मनुष्य की भावनाओं को मापने के लिए संवेदनशील उपकरण हैं। पौधे ऊर्जा विकीर्ण करते हैं जो मनुष्य के लिए लाभकारी होती है, और इसका उल्टा भी सच है।"
उपरोक्त कथन रोलिंग थंडर के इस दावे से सहमत है कि भारतीय विभिन्न पौधों और पेड़ों के ऊर्जा क्षेत्रों को समझते हैं। शारीरिक या ऊर्जा की आवश्यकता होने पर, भारतीय या तो चीड़ के पेड़ को गले लगाते हैं या कुछ मिनटों के लिए पेड़ से पीठ टिकाकर अपनी शक्ति पुनः प्राप्त करते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि न्यूयॉर्क के मनोचिकित्सक जॉन सी. पिएराकोस, जिन्होंने मनुष्यों और पौधों के ऊर्जा स्पंदनों का सारणीबद्ध अध्ययन किया है, बताते हैं कि स्प्रूस और चीड़ के पेड़ों के आसपास का स्पंदनशील ऊर्जा क्षेत्र प्रति मिनट 18 से 22 बार होता है, जो औसत व्यक्ति के प्रति मिनट 15 से 25 स्पंदनों के लगभग समान है।
"मनुष्य और प्रकृति में ऊर्जा क्षेत्र" नामक एक मोनोग्राफ में स्पंदनशील गतियों की व्याख्या करते हुए, पिएराकोस ने कहा:
"...लेकिन वे आंतरिक स्पंदनशील गतियाँ क्या हैं? वे जीवन की सभी प्रक्रियाओं का सार हैं; सभी प्रक्रियाओं का।"

इस शरीर के भीतर जीवन की चयापचय ऊर्जाएँ। इस शरीर के भीतर की ये कुल ऊर्जाएँ, उसी प्रकार शरीर से बाहर भी प्रवाहित होती हैं, जैसे किसी प्रज्वलित धातु वस्तु से ऊष्मा तरंग निकलती है। ये ऊर्जाएँ शरीर के बाहरी भाग में बल रेखाओं से बना एक ऊर्जा क्षेत्र बनाती हैं। मनुष्य का शरीर इस ऊर्जा क्षेत्र के भीतर रहता है, जो आसपास के क्षेत्र में कई फीट तक फैला होता है, और कभी-कभी शरीर से कई दर्जन फीट दूर तक भी जाता हुआ देखा जा सकता है।
...जीवित जीव अपने पूरे शरीर की सतह से प्रकाश उत्सर्जित करने में सक्षम होते हैं; उन्होंने प्रकाशमान होने की अपनी क्षमता नहीं खोई है। यह घटना ऊर्जा क्षेत्र, या आभा का निर्माण करती है, जो वास्तव में जीवन प्रक्रियाओं की ऊर्जाओं का प्रतिबिंब है।
"पौधों और क्रिस्टलों का ऊर्जा क्षेत्र" नामक अनुभाग में, डॉ. पिएराकोस ने समझाया:
"इसकी प्रकृति की बात करें तो, यह अत्यंत संवेदनशील है और भावनात्मक एवं शारीरिक अवस्थाओं पर प्रतिक्रिया करती है, तथा बीमारी और स्वास्थ्य दोनों में इसके विशिष्ट लक्षण होते हैं। लोग एक-दूसरे के ऊर्जा क्षेत्र को प्रभावित करते हैं क्योंकि यह क्षेत्र निरंतर हमारे चारों ओर मौजूद रहता है और आस-पास के व्यक्ति या लोगों के समूह के क्षेत्र के संपर्क में रहता है। जब

हम एक-दूसरे के निकट होते हैं, तो हम एक-दूसरे के ऊर्जा क्षेत्र में ही रह रहे होते हैं। विश्राम की अवस्था में मनुष्य में यह क्षेत्र प्रति मिनट 15-25 बार स्पंदित होता है और शरीर की परिधि से कई फीट दूर तक फैलता है। भौतिक शरीर ऊर्जा क्षेत्र में होने वाली घटनाओं को प्रतिबिंबित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भौतिक शरीर ऊर्जा क्षेत्र की स्थिति को दर्शाता है, जो कई बार उन रोग संबंधी परिवर्तनों को प्रकट करता है जो बाद में अंगों और ऊतकों में संरचनात्मक रूप ले लेते हैं।"

बाद में उसी खंड में वे कहते हैं:

पत्तियों के ऊर्जा क्षेत्र के मेरे अवलोकन से, मैंने पाया कि भौगोलिक दिशाओं के सापेक्ष पौधे की स्थिति प्रत्येक पत्ती द्वारा उत्सर्जित स्पंदनों की संख्या से संबंधित है। उदाहरण के लिए, एक सफेद स्नोबॉल पौधे में, दक्षिण की ओर इंगित करने वाली पत्तियां एक मिनट में 28 बार स्पंदित होती हैं, उत्तर की ओर इंगित करने वाली पत्तियां एक मिनट में 32 बार स्पंदित होती हैं, और पश्चिम और पूर्व की ओर इंगित करने वाली पत्तियां भी लगभग एक मिनट में 28 बार स्पंदित होती हैं। पौधे की स्थिति बदलने से यह स्पंदन बाधित हो जाता है।

स्पंदन का एक पैटर्न। इसका सबसे पहले उल्लेख जॉर्ज और मार्जोरी डे ला वार के शोध में किया गया था। उनके शोध का अनुसरण करते हुए, मैंने पौधों को विभिन्न दिशाओं में रखकर देखा और पाया कि यह पैटर्न सही है। पौधा भौगोलिक दिशाओं की ओर उन्मुख होता है और पौधे की प्रजाति के आधार पर, उन दिशाओं में इंगित करने वाले पौधों के भागों की स्पंदन दर भिन्न होती है। कुछ समय बाद, पत्तियाँ घूमती हैं और पौधा अपनी प्रकृति और आवश्यकताओं के अनुरूप एक नया अभिविन्यास प्राप्त कर लेता है, ताकि वह वातावरण से अपनी ऊर्जा का आदान-प्रदान कर सके। ऊर्जा क्षेत्र लगभग 2 से 4 सेकंड तक आसपास की हवा में बाहर की ओर स्पंदित होता है। इसके बाद, गति उलट जाती है और आसपास की हवा की ऊर्जा पौधे में प्रवाहित होती है। मेरा मानना है कि यह प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पिएराकोस के इन प्रेक्षणों से पिरामिड में पौधों पर किए गए प्रयोगों के संबंध में कुछ रोचक प्रश्न उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पिरामिड के भीतर का ऊर्जा क्षेत्र पौधों की प्राकृतिक गति को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है, जैसा कि उनकी तीव्र घूर्णन गति से स्पष्ट होता है। यदि ऐसा है, तो यह प्रतीत होता है कि पौधे के विभिन्न भागों की स्पंदन गति भी परिवर्तित हो जाती है। प्रश्न यह उठता है कि क्या पिरामिड के भीतर पौधों की गति स्वयं को प्रमुख दिशाओं में उन्मुख करने का प्रयास है? क्या पॉलीग्राफ के माध्यम से पौधों की निगरानी करने से इस नए ऊर्जा क्षेत्र में स्वयं को "खोजने" के उनके प्रयासों में पौधों की "भ्रम" या "परेशानी" का पता चलेगा? पिएराकोस के निष्कर्ष पौधे के आभामंडल के स्पंदनों के प्रेक्षणों पर आधारित थे। क्या किरलियन फोटोग्राफी, जो पिरामिड के भीतर पौधे के आभामंडल या विद्युत क्षेत्र की तस्वीरें लेती है, एक बढ़े हुए या तीव्र ऊर्जा क्षेत्र को प्रकट करेगी? क्या सामान्य क्षेत्र और बढ़े हुए क्षेत्र के बीच का अंतर हमें पिरामिड द्वारा ग्रहण की गई या उत्पन्न ऊर्जा को मापने का एक तरीका प्रदान करेगा? इसके अलावा, पिएराकोस के इस विचार का अनुसरण करते हुए कि विभिन्न पौधों की स्पंदन दर अलग-अलग होती है, यदि उपरोक्त

यदि किसी पौधे की स्पंदनशीलता मनुष्य के समान हो, तो क्या हम यह मान सकते हैं कि मनुष्य

को भी ऊर्जा में समान वृद्धि का अनुभव होगा? यद्यपि यह प्रश्न उठ सकता है कि किसी पिरामिड के अंदर और बाहर मनुष्य के विद्युत उत्पादन को सीधे क्यों न मापा जाए, समस्या अपेक्षा, चिंता आदि जैसे कारकों को दूर करने में हो सकती है। हालांकि, पर्याप्त संख्या में मापन से प्रयोगकर्ताओं को इन कारकों से निपटने में सहायता मिलनी चाहिए। बैक्स्टर और वोगेल के शोधों को देखते हुए, शोधकर्ता पौधों में मौजूद इन भावनाओं को अनदेखा नहीं कर सकते, चाहे वे पौधे की अंतर्निहित भावनाएँ हों या मानव प्रतिक्रियाओं की निगरानी के कारण उत्पन्न हुई हों। किसी भी स्थिति में, यदि पिरामिड के अंदर कुछ ऐसा हो रहा है जो बाहर नहीं हो रहा है, तो पौधों या मनुष्यों की आभाओं के प्रत्यक्ष अवलोकन या किर्लियन फोटोग्राफिक मापन पिरामिड के ऊर्जा बल क्षेत्र की बेहतर समझ की दिशा में एक कदम हो सकते हैं। उपरोक्त प्रश्नों के अलावा, चूंकि पौधे स्पष्ट रूप से मुख्य दिशाओं के अनुसार खुद को उन्मुख करने का प्रयास करते हैं और चूंकि पिरामिडों को उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम अक्षों के साथ संरेखित करना महत्वपूर्ण है, तो क्या पौधों की गति में आमूलचूल परिवर्तन हमारे वायुमंडल तक पहुंचने वाली ब्रह्मांडीय किरणों, सूर्य के धब्बों और सौर ज्वालाओं की गतिविधियों में परिवर्तन, और संभवतः पृथ्वी के अक्ष की गति में परिवर्तन का संकेत देते हैं?

वोगेल हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मानवीय हस्तक्षेप को ध्यान में रखे बिना पौधों के व्यवहार को मापना अत्यंत कठिन होगा। टॉम्पकिंस और बर्ड वोगेल के हवाले से कहते हैं: "ऐसा लगता है कि मैं एक फ़िल्टरिंग सिस्टम की तरह काम करता हूँ जो बाहरी वातावरण के प्रति पौधे की प्रतिक्रिया को सीमित करता है। मैं इसे चालू या बंद कर सकता हूँ, जिससे मनुष्य और पौधा परस्पर प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं। अपने भीतर की कुछ ऊर्जा से पौधे को आवेशित करके, मैं पौधे में इस प्रकार के कार्य के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सकता हूँ। यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि मेरी राय में, पौधे की प्रतिक्रिया किसी बुद्धिमान पौधे की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि पौधा स्वयं का ही विस्तार बन जाता है। तब व्यक्ति जैवविद्युत क्षेत्र के साथ अंतःक्रिया कर सकता है।"

80 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

पौधे के माध्यम से, या उसके द्वारा, तीसरे व्यक्ति के विचार प्रक्रियाओं और भावनाओं के साथ। वोगेल ने निष्कर्ष निकाला कि सभी जीवित प्राणियों के चारों ओर एक जीवन शक्ति, या ब्रह्मांडीय ऊर्जा मौजूद है, जिसे पौधों, जानवरों और मनुष्यों के बीच साझा किया जा सकता है। इस साझाकरण के माध्यम से, एक व्यक्ति और एक पौधा एक हो जाते हैं। यही एकता आपसी संवेदनशीलता को संभव बनाती है, जिससे पौधे और मनुष्य न केवल आपस में संवाद कर पाते हैं, बल्कि पौधे के माध्यम से एक रिकॉर्डिंग चार्ट पर इन संवादों को रिकॉर्ड भी कर पाते हैं। पिएराकोस अपने मरीजों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों की निगरानी के लिए पौधों का उपयोग करते हैं। अपने अवलोकनों पर ध्यान आकर्षित किए बिना, मनोचिकित्सक अपने घर के पौधों की प्रतिक्रियाओं, उनकी आभाओं के स्पंदनों का अवलोकन करते हैं, ताकि वे अपने नैदानिक मूल्यांकनों को निर्धारित कर सकें। ऐसा प्रतीत होता है कि पौधे मरीजों की स्पंदनों को ग्रहण कर लेते हैं और तदनुसार अपनी स्पंदनों को बढ़ाते या घटाते हैं।

वोगेल और बैक्स्टर का तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि मनुष्य ब्रह्मांड का केंद्र है, और हम किसी भी अन्य रूप—खनिज, पौधे, पशु—में घटित होने वाली घटनाओं को मानवीय घटक को अवलोकन से बाहर रखे बिना नहीं समझ सकते। इस मॉडल के अनुसार, मनुष्य सभी प्राकृतिक घटनाओं का अभिन्न अंग है। मानवीय घटक को शामिल किए बिना किए गए अध्ययन अपूर्ण या

विकृत ही होंगे।
तो फिर, पौधे किस हद तक अपने आस-पास की दुनिया से परे की दुनिया पर नजर रख रहे हैं और इसके अलावा, इस प्रक्रिया में मनुष्य की भूमिका किस प्रकार और किस हद तक है? क्या ऐसा हो सकता है कि किसी पिरामिड के भीतर पौधे को स्थापित करने का कार्य, उस पर ध्यान देना, स्वयं पौधे से कुछ ऐसी स्थितियों को प्रतिबिंबित करने का अनुरोध हो जो मुख्य रूप से मानव निर्मित संरचना पर लागू होती हैं? क्या महान पिरामिड के निर्माताओं का यही उद्देश्य था? क्या पौधे किसी न किसी रूप में यह संदेश देने का प्रयास कर रहे हैं?

5. तरल पदार्थों पर प्रभाव
जब पोंस डी लियोन यौवन के स्रोत की खोज कर रहे थे, तो यह स्पष्ट था कि उनका मानना था कि फ्लोरिडा के उन चीड़ के जंगलों में कहीं न कहीं एक ऐसी गुणवत्ता का पानी मौजूद है जो उनके घर पर मिलने वाले पानी से अलग है।
क्या पोंस डी लियोन को उनके समकालीन सनकी या बुढ़ापे की बीमारी से ग्रस्त मानते थे? बिलकुल नहीं। हालांकि हर कोई उनकी तरह नहीं सोचता था, लेकिन 16वीं शताब्दी के यूरोपीय लोगों के लिए यह मानना असामान्य नहीं था कि प्रकृति में कुछ रहस्य छिपे हैं, जिन्हें खोजकर जीवन को बनाए रखा जा सकता है और लंबा किया जा सकता है। वे प्राचीन कथाओं में डूबे हुए थे, जिनमें बताया गया था कि अतीत में महान जातियों के पास ये रहस्य थे। उनके धर्मों—जिनमें ईसाई धर्म भी शामिल था—ने उन्हें सिखाया कि मनुष्य कभी कई सौ वर्ष तक जीवित रहता था, लेकिन भ्रष्ट और दूषित हो गया। उनमें से रसायनशास्त्रियों ने लगन से सूत्रों की खोज की और निस्संदेह अपने वित्तीय समर्थकों को लगातार यह कहते रहे कि बड़ी सफलताएँ जल्द ही मिलने वाली हैं।
और आज? किंवदंतियाँ जीवित हैं; धर्मशास्त्री अभी भी 81

82 पिरामिडों की गुप्त शक्ति उपदेश मंचों से जीवन के एक बेहतर और स्वच्छ तरीके का प्रचार करती है और देश भर में हमारी प्रयोगशालाओं में कीमियागर अभी भी तरल, गोली या कैप्सूल में उस अमृत की खोज कर रहे हैं जो हमारी जवानी को ताज़ा करेगा और हमारी शक्ति को नवीनीकृत करेगा।
एक काल्पनिक समस्या? एक खोखला, असंभव सपना? राय के अलावा इसका जवाब कौन दे सकता है? असल मुद्दा यह है कि मनुष्य मानता है कि जवाब ज़रूर मिलेंगे और वह हर बार जब सूक्ष्मदर्शी से देखता है या दूरबीन से अंतरिक्ष के किसी नए हिस्से को खोजने की कोशिश करता है, तो वह अपने इस विश्वास को व्यक्त करता है। मनुष्य आस्तिक है और शायद, अंततः, वह स्वयं ही उस दुनिया का निर्माण करता है जिसमें वह विश्वास करता है।
तो, यह सपना आज भी प्रासंगिक है। आजकल पिरामिड की प्रतिकृतियों के भीतर पानी और अन्य तरल पदार्थों से भरे पात्र रखकर और उनके परिणामों को देखकर कुछ असामान्य घटनाओं को लेकर उत्साह का माहौल बना हुआ है। हमने अपने प्रयोगों से कुछ रोचक परिणाम प्राप्त करके, उन्हें समाचार पत्रों, रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से प्रचारित करके और दूसरों को भी अपने प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करके इस उत्साह को और भी बढ़ाया है। बी-कोशिकाओं और बहुतरंग दोलक के साथ किए गए अन्य प्रयोगों ने भी उत्साह बढ़ाने में अपना योगदान दिया

है। इनका संक्षिप्त वर्णन इस अध्याय में और विस्तृत वर्णन बाद के अध्यायों में किया जाएगा। संक्षेप में, पानी और अन्य तरल पदार्थों को पिरामिडनुमा संरचनाओं में, साथ ही अन्य विधियों द्वारा भी उपचारित किया गया है, और इसके परिणाम या तो तरल पदार्थ में ही या तरल पदार्थ ग्रहण करने वाले पात्रों में देखे गए हैं। हमारे द्वारा मापे गए या दूसरों द्वारा बताए गए इन परिणामों में पानी का शुद्धिकरण, व्यक्तिपरक रूप से निगरानी किए गए और दूसरों द्वारा देखे गए शारीरिक परिवर्तन, पौधों की वृद्धि में वृद्धि, घावों का तेजी से भरना, रोगों के लक्षणों में कमी, दूध, फलों के रस आदि का रासायनिक योजकों या प्रशीतन के बिना संरक्षण और शराब का तेजी से परिपक्व होना शामिल हैं।
इस शोध, विशिष्ट प्रयोगों और परिणामों का वर्णन करने से पहले, हम पाठक का ध्यान एक महत्वपूर्ण बिंदु की ओर आकर्षित करना चाहेंगे।

तरल पदार्थों पर प्रभाव 83
रसायन विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान का यह एक कम ज्ञात क्षेत्र है। इसका उल्लेख यहाँ इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह वर्णित की जाने वाली घटनाओं के लिए आंशिक रूप से वैज्ञानिक आधार स्थापित करता प्रतीत होता है।
जैविक रूपांतरण का सिद्धांत यह दावा करता है कि कुछ रासायनिक पदार्थ अन्य पदार्थों में परिवर्तित हो सकते हैं। यह सिद्धांत रसायन विज्ञान के उन नियमों का खंडन करता है जिन्हें आज तक सर्वमान्य माना जाता है। आधुनिक रसायन विज्ञान के जनक लावोइसियर ने यह सिद्धांत स्थापित किया कि कुछ भी नष्ट नहीं होता, कुछ भी निर्मित नहीं होता, सब कुछ रूपांतरित होता है। परमाणु को पदार्थ का सबसे छोटा कण, प्रकृति का एक स्थिर तत्व माना जाता था, और यह माना जाता था कि किसी भी तत्व का निर्माण नहीं हो सकता। परमाणु लुप्त नहीं हो सकता था। यदि वह दो या दो से अधिक परमाणुओं वाले अणु से अलग हो जाता, तो वह दूसरे अणु में अपरिवर्तित रूप में पाया जाता।
लावॉइसियर सिद्धांत को न तो नकारा जा सकता था और न ही इस पर कोई बहस संभव थी। यह 19वीं शताब्दी के विज्ञान का आधार था। इस सिद्धांत को पहली बार आधिकारिक तौर पर चुनौती मिली, जब मैरी क्यूरी ने प्राकृतिक रेडियोधर्मिता की खोज की और यह दिखाया कि कुछ पदार्थों को अलग-अलग पदार्थों में रूपांतरित किया जा सकता है। इस अवधारणा के लिए मध्य युग के कीमियागरों का बाद में उपहास उड़ाया गया। रेडियम के एक परमाणु को सीसे के एक गैर-रेडियोधर्मी और स्थिर परमाणु में रूपांतरित किया गया।
1959 में एक फ्रांसीसी रसायनज्ञ, लुई सी. केर्व्रान ने अपनी पुस्तक, बायोलॉजिकल ट्रांसम्यूटेशन्स के प्रकाशन से रसायन विज्ञान के क्षेत्र को चौंका दिया। अपने उपसंहार में, केर्व्रान ने कहा: "पिछले पृष्ठों ने यह प्रदर्शित किया है कि तत्वों के जैविक रूपांतरण किसी भी तरह से रसायन विज्ञान के नियमों का विरोध नहीं करते हैं। रसायन विज्ञान परमाणुओं की परिधीय परतों में स्थित इलेक्ट्रॉनों के विस्थापन का विज्ञान है। यह अणु का विज्ञान है, परमाणुओं के नाभिक का नहीं। ... मैंने जिस घटना का अनावरण किया है, वह परमाणु के नाभिक के स्तर पर मौजूद है।"

84 पिरामिडों की गुप्त शक्ति। इस प्रकार यह एक नया विज्ञान है, जो रसायन विज्ञान से बिल्कुल अलग है, जो केवल रूपांतरण घटना का अंतिम परिणाम है और इसलिए इसकी कुछ सीमाएँ हैं। केर्व्रान की पुस्तक की प्रस्तावना में, मिशेल अबेहसेरा ने इस विषय पर कुछ ऐतिहासिक जानकारी दी है। वे बताते हैं कि 1799 में फ्रांसीसी रसायनज्ञ वाउकेलिन मुर्गियों द्वारा प्रतिदिन उत्सर्जित

चूने की मात्रा को लेकर उत्सुक हुए और उन्होंने एक मुर्गी को पिंजरे में रखकर उसे केवल जई खिलाने का निर्णय लिया। उन्होंने मुर्गी को जई खिलाने से पहले उसमें मौजूद चूने की मात्रा मापी। जई खाने के बाद, उन्होंने अंडों और मल के माध्यम से उत्सर्जित चूने की मात्रा का विश्लेषण किया और पाया कि मुर्गी ने खाए गए भोजन की तुलना में पाँच गुना अधिक चूने का उत्सर्जन किया।

अबेहसेरा के अनुसार, 1822 में प्राउट नामक एक अंग्रेज ने तत्वों के रूपांतरण की प्रकृति को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने वाले पहले व्यक्ति थे। प्राउट ने एक सेते हुए मुर्गी के अंडे के अंदर चूना पत्थर की वृद्धि का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया और यह सिद्ध किया कि चूना पत्थर अंडे के छिलके से नहीं आता है।
1831 में चेउबार्ड नामक एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने आसुत जल से भरे एक अघुलनशील बर्तन में जलकुंभी के बीजों को अंकुरित किया और यह सत्यापित किया कि युवा पौधों में ऐसे खनिज मौजूद थे जो बीजों में मौजूद नहीं थे।
ऐसा प्रतीत होता है कि यह शोध 120 से अधिक वर्षों तक किसी का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाया। हालांकि, केर्व्रान के खुलासे ने यूरोप में ध्यान आकर्षित किया है, जहां रसायनशास्त्री और अन्य वैज्ञानिक उनके निष्कर्षों को लेकर विभाजित हैं।
केर्व्रान ने अपनी पुस्तक में कई मामलों का हवाला दिया है। उनका तर्क है कि हड्डियों के कैल्शियम की कमी और मजबूती की समस्याओं पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए, और वे कार्बनिक सिलिका के माध्यम से हड्डियों के तेजी से ठीक होने की ओर इशारा करते हैं। एक अस्पताल के मुख्य सर्जन ने केर्व्रान से मदद मांगी जब उन्हें एक नाजुक मामले का सामना करना पड़ा: एक युवक की हड्डियां एक दुर्घटना में बुरी तरह टूट गई थीं। विटामिन डी और फॉस्फो-कैल्सिक नमक के पारंपरिक उपचार के बारे में भी उन्होंने बताया।

उपचार पद्धति से सुधार नहीं हुआ। केर्व्रान ने ऑर्गेनिक सिलिका दी और हड्डियां तेजी से ठीक हो गईं।
एक अन्य उदाहरण के तौर पर, केर्व्रान कहते हैं कि कुछ परिस्थितियों में रक्त में मौजूद सोडियम पोटेशियम में बदल सकता है, और मैग्नीशियम और सिलिकॉन मनुष्य के चूना पत्थर के दो प्रमुख स्रोत हैं।
"मैं पाठकों को सहारा रेगिस्तान में किए गए प्रयोगों की याद दिलाना चाहता हूँ, जहाँ छह महीनों तक पेट्रोलियम श्रमिकों ने प्रतिदिन औसतन 320 मिलीग्राम अधिक कैल्शियम उत्सर्जित किया, जितना उन्होंने ग्रहण किया था, और यह बिना कैल्शियम निष्कासन के था," केर्व्रान कहते हैं। "कैल्शियम के चयापचय पर अब तक जो कुछ भी लिखा गया है, जिसमें जैविक परिवर्तनों को ध्यान में नहीं रखा गया है, उसका फिर से अध्ययन किया जाना चाहिए, क्योंकि चिकित्सा जगत में ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिनका उपयोग शुरू करना आवश्यक है।"
केर्व्रान द्वारा अपने निष्कर्षों की प्रस्तुति के बारे में, अबेहसेरा ने प्रस्तावना में कहा: "वर्षों की प्रतीक्षा और हजारों अभिसारी विश्लेषणों को देखने के बाद, वे यह सिद्ध करने में सफल हुए कि न केवल अणु बल्कि स्वयं परमाणु भी रूपांतरित हो सकते हैं। उन्होंने सत्यापित किया कि पदार्थ का एक एकल पिंड से दूसरे एकल पिंड में, एक परमाणु से दूसरे परमाणु में रूपांतरण होता है। ..."
यदि वास्तव में, A हमेशा A ही नहीं रहता बल्कि B में परिवर्तित हो सकता है, तो हमें रासायनिक पदार्थों की प्रकृति के बारे में अधिक गहन जानकारी की आवश्यकता है। इस प्रकार, प्रतिस्थापन रासायनिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बन जाता है।
जैविक रूपांतरणों के निहितार्थ अबेहसेरा की दृष्टि से अछूते नहीं रहे। उन्होंने कहा: "वैज्ञानिक और तत्वमीमांसाविद् के बीच ये (जैविक रूपांतरण) जो स्थान ग्रहण करेंगे, वह विशेष महत्व का है। भाषा के अंतर के कारण अब तक इन दोनों के बीच प्रत्यक्ष संवाद नहीं हो पाया है। अब मेरा मानना है कि इनका मिलन संभव है, क्योंकि जैविक रूपांतरण हमें जीवन की गति के बारे में

सिखाते हैं। इस गति से वैज्ञानिक यह समझेंगे कि विज्ञान अब केवल भौतिक अध्ययन तक ही सीमित नहीं रह सकता, रूप की गति का भी इसमें समावेश है।"

86 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: आध्यात्मिक उत्थान, क्षय नहीं। इसी गति से, अदृश्य तत्वों को जीवंत करते हुए, आध्यात्मिक विद्वान यह सीखेगा कि जीवन का अध्ययन उसके सबसे विलक्षण पहलुओं में भी सार्थक है। वह पल भर में वह खोज लेगा जो वह हमेशा से जानता था, कि जीवन स्वयं और कोशिका का निरंतर नवीनीकरण है।
पानी के उपचार पर प्रयोग करने से पहले हमें अन्य तरल पदार्थों के साथ कुछ अनुभव था। दूध के परीक्षण में हमारी रुचि तब जागी जब हमें पता चला कि फ्रांस और इटली की दो अलग-अलग दूध कंपनियों ने पिरामिड के आकार के डिब्बों का उपयोग करना शुरू कर दिया था, क्योंकि उन्होंने पाया कि बिना रेफ्रिजरेट किया हुआ दूध आयताकार डिब्बों की तुलना में अधिक समय तक ताजा रहता है।
हमने पर्याप्त मात्रा में ताजा समरूप दूध प्राप्त किया और दो एक जैसे पात्रों में भर दिया। हवा में मौजूद जीवाणुओं से संक्रमण को कम करने के लिए, हमने ऊपर से कागज को हल्के से मोड़कर रख दिया। एक पात्र को पिरामिड के अंदर और दूसरे को बाहर समान प्रकाश, गर्मी और वायु संचार के साथ रखा गया।
छह दिन बाद पिरामिड में मौजूद दूध के ठोस पदार्थ अलग हो गए थे, साथ ही दही या पानी जैसे तरल पदार्थ की परतें जम गई थीं और कैल्शियम पाउडर जैसा दिखने वाला अवक्षेप भी दिखाई दे रहा था। पिरामिड के बाहरी हिस्से का दूध भी कुछ हद तक अलग हो गया था, हालांकि इतना अधिक नहीं कि आसानी से दिखाई दे, और दूध के ऊपरी भाग के चारों ओर फफूंदी जमने लगी थी।
एक दिन बाद पिरामिड के बाहरी हिस्से में दूध पर फफूंद की मात्रा काफी बढ़ गई थी, जबकि पिरामिड के अंदर के दूध में परतों का जमाव और भी स्पष्ट हो गया था। इस समय बाहरी हिस्से का दूध फेंक दिया गया, लेकिन पिरामिड के अंदर का दूध वहीं रखा रहा। छह सप्ताह बाद प्रयोग समाप्त हुआ: दूध जम कर एक ठोस, मलाईदार, चिकना पदार्थ बन गया था, जो देखने और स्वाद में दही जैसा था। फफूंद का कोई निशान नहीं था; ठोस पदार्थों की परतें आपस में मिल गई थीं और अब दिखाई नहीं दे रही थीं।
यह प्रयोग तब से कई बार किया जा चुका है।

तरल पदार्थों पर प्रभाव 87
और इसके परिणाम थोड़े भिन्न-भिन्न रहे हैं। कभी-कभी दूध दही में परिवर्तित नहीं होता, बल्कि परतदार हो जाता है, जिससे दूध के घटक अलग-अलग परतों में विभाजित हो जाते हैं। हालांकि, जब तक दूध पिरामिड के अंदर रहता है, उसमें फफूंद नहीं लगती। हम यह ठीक-ठीक निर्धारित नहीं कर पाए हैं कि दूध के दही में परिवर्तित होने और परतदार होने के समय में क्या अंतर है। हमारा मानना है कि तापमान और आर्द्रता में बदलाव का इस पर प्रभाव पड़ता है, हालांकि हमने इन्हें स्थिर रखने का प्रयास किया है। इसके अलावा, हमारा अनुमान है कि ऋतुओं, चंद्रमा की कलाओं, ब्रह्मांडीय विकिरण की बदलती मात्रा आदि का भी प्रयोगों पर प्रभाव पड़ता है। डॉ. अल्वारेज़ के ब्रह्मांडीय विकिरण के मापन के अनुभवों के आधार पर, पिरामिड के भीतर ऊर्जा क्षेत्र अज्ञात कारणों से समय-समय पर अस्थिर होते रहते हैं।
ओक्लाहोमा राज्य की एक एजेंसी में कार्यरत एक रसायनज्ञ को तरल पदार्थों पर पिरामिडनुमा

स्थान के प्रभावों में रुचि हुई। उन्होंने हमारे एक व्याख्यान में भाग लिया और दो बार हमसे मिलने के बाद दूध पर परीक्षण करने का निर्णय लिया।
उन्होंने एजेंसी की प्रयोगशाला में अपना पहला परीक्षण किया और दूध के दोनों नमूनों में कोई बदलाव नहीं पाया। हमने सुझाव दिया कि शायद इमारत की धातु की छत, उच्च आवृत्ति वाली धाराओं की उपस्थिति, 120 और 220 वोल्ट के उपकरण, फ्लोरोसेंट प्रकाश व्यवस्था आदि पिरामिड के भीतर की शक्तियों को बाधित कर सकते हैं।
इसके बाद रसायनज्ञ ने प्रयोगशाला से काफी दूर एक लकड़ी के ढांचे वाली इमारत में परीक्षण दोहराया और दस दिनों के बाद पाया कि पिरामिड के अंदर रखे दूध में बैक्टीरिया 16 प्रतिशत तक कम हो गए थे। उन्होंने कहा कि यदि परीक्षण की अवधि बढ़ाई जाती तो निस्संदेह नष्ट हुए बैक्टीरिया की संख्या और भी अधिक होती।
कैलिफोर्निया के टस्टिन निवासी इरविन ट्रेंट ने द पिरामिड गाइड के संपादकों को लिखे एक पत्र में बताया:
"एक बार श्री कैमरून ने मुझे पिरामिडनुमा आकार में किए गए अपने इकलौते पनीर प्रयोग के बारे में बताया था। यह प्रयोग 35 दिनों तक चला था। इसलिए मैंने कुछ कच्चा दूध गिलासों में रख दिया।"

88 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
बिना आधार वाले पोस्टरबोर्ड से बने दो अलग-अलग आकार के पिरामिडों के नीचे। लगभग एक सप्ताह में, ऊपर की ओर एक सोलहवें इंच मोटी हल्की भूरी सतह विकसित हो गई।
"दो सप्ताह में इसके नीचे पनीर जमा हो गया, और उसके बाद हर समय पनीर की तेज़ गंध आती रही। साठ दिनों के बाद आधा इंच अवशेष बचा था। मैंने उसकी शुद्धता की जाँच की और फिर पनीर खाया। वह स्वादिष्ट था! भूरी सतहें शायद दूध में मौजूद चीनी के कारण थीं।"
एक बार मैंने कच्चे दूध, बकरी के दूध के पाउडर का घोल और एक छोटे गिलास कच्ची मलाई को अलग-अलग पिरामिडों के नीचे रखा। दो सप्ताह तक सब कुछ पहले जैसा ही रहा। फिर मलाई को छोड़कर बाकी सतहों पर अलग-अलग रंग के धब्बे दिखाई देने लगे। जालीदार दिखने वाले भूरे मकड़ी के जाले ऊपर की ओर बढ़ने लगे। मैंने उन धब्बों को खुरच कर हटाया और नीचे के पनीर की जाँच की। वह ठीक था, इसलिए मैंने प्रक्रिया जारी रहने दी। अलग-अलग रंग के धब्बे फिर से दिखाई दिए। मैंने फिर से खुरच कर हटाया। इस समय तक, प्राकृतिक प्रक्रियाएँ बिगड़ चुकी थीं। कच्ची मलाई का गिलास एक ऐसे गिलास के बगल में रखा था जिसमें वही धब्बे थे जो सामान्य रूप से विकसित होकर स्वादिष्ट मलाई पनीर बन गए।
तरल पदार्थों के साथ प्रयोग करने वाले किसी भी व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि वे दिन-प्रतिदिन या यहां तक कि घंटे-दर-घंटे भी स्थिर नहीं रहते हैं। मिशेल गौकेलिन ने अपनी पुस्तक, कॉस्मिक क्लॉक्स में इस बात को बहुत अच्छे से समझाया है।
हाल ही में यह बात समझ में आई है कि अंतरिक्ष का प्रभाव हमारे चारों ओर और हमारे भीतर लगातार मौजूद रहता है। कुछ साल पहले तक किसी को भी यह अंदाजा नहीं था कि तमाम सावधानियों के बावजूद रासायनिक या जैविक प्रतिक्रियाएं दिन-प्रतिदिन क्यों बदल सकती हैं। दरअसल, तरल पदार्थों के मामले में कोई भी स्थिति स्थिर नहीं होती। बेशक, ठोस पदार्थों के साथ किए गए समान प्रयोगशाला प्रयोगों से समान परिणाम नहीं मिलेंगे, क्योंकि ठोस प्रणालियों की संरचना लगभग अपरिवर्तनीय होती है; कमजोर प्रभावों का इस पर कोई असर नहीं होता। लेकिन ठोस पदार्थ जीवन नहीं हैं।

"जीवन तरल तत्व का अस्थिर संतुलन है।"

तरल पदार्थों पर प्रभाव 89
कितनी भी सावधानी बरती जाए, तरल पदार्थों की अस्थिर संरचना को बाहरी शक्तियों के प्रभावों से बचाना असंभव है। यह कोई संयोग नहीं बल्कि प्रकृति का एक अटल नियम है जिसके कारण तरल पदार्थों पर किए जाने वाले प्रयोगों को एक घंटे से दूसरे घंटे तक दोहराना मुश्किल होता है। गौकेलिन हमें फ्लोरेंस में भौतिक रसायन विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रोफेसर जॉर्जी पिकार्डी द्वारा पानी के अनियमित व्यवहार पर किए गए शोध के बारे में बताते हैं।
पिकार्डी को पता था कि पानी खाना पकाने के बर्तनों और औद्योगिक बॉयलरों जैसे पात्रों के अंदर कैल्शियम के जमाव छोड़ देता है। ये रासायनिक जमाव लगभग पूर्ण कुचालक का काम करते हैं जिससे उपकरण की कार्यक्षमता काफी कम हो जाती है। इन जमावों को हटाने के लिए एक प्रक्रिया विकसित की गई है - नियमित अंतराल पर बॉयलर में विशेष रूप से उपचारित पानी मिलाना।
पिकार्डी ने एक गिलास में पारे की एक बूंद और कम दबाव वाली नियॉन गैस को मिलाकर उसे उपचारित किए जाने वाले पानी में डाला। जब गिलास को हिलाया जाता था, तो पारे के बर्तन की दीवारों से रगड़ खाने से विद्युत धारा उत्पन्न होती थी, और यह हल्का आवेश नियॉन गैस के माध्यम से लाल रंग की चमक उत्पन्न करता था। जब इस "सक्रिय" पानी को बॉयलर की नलियों में डाला गया, तो रासायनिक परत के अवशेष जादुई रूप से नरम हो गए और नलियों से गाढ़े कीचड़ के रूप में निकल गए।
हालांकि, पिकार्डी ने पाया कि यह उपचार हर बार एक जैसा असर नहीं करता था। कभी परिणाम उल्लेखनीय होते थे, तो कभी सक्रिय जल का प्रभाव सामान्य जल से अधिक नगण्य होता था। सक्रिय जल का हर संभव तरीके से परीक्षण किया गया, लेकिन साधारण नल के पानी से कोई अंतर नहीं पाया जा सका। नियॉन और पारे की गति से जल में इस प्रकार का परिवर्तन कैसे हो सकता था, जो अज्ञात था?
पिकार्डी ने कुछ समय तक अनियंत्रित जल की समस्या से जूझते हुए अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि

90 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
जल किसी ब्रह्मांडीय शक्ति से प्रभावित था। उन्होंने पाया कि सक्रिय जल की बोतलों को धातु की जाली से ढकने पर जल का प्रभाव बदल जाता है, जिससे कुछ बाहरी शक्तियां अंदर आने से रुक जाती हैं। उन्होंने यह निर्धारित किया कि सक्रिय जल का व्यवहार बोतलों के आसपास के अंतरिक्ष में घटित होने वाली किसी घटना पर निर्भर करता है।
पिकार्डी ने पानी के परीक्षण की एक विधि विकसित की, जिससे वे रासायनिक अभिक्रियाओं में पानी के असामान्य व्यवहार के कारण का वैज्ञानिक रूप से पता लगा सकें। उन्होंने परीक्षणों के रासायनिक अभिक्रिया भाग के लिए एक अकार्बनिक सेलॉइड, बिस्मथ ट्राइक्लोराइड को चुना। आसुत जल में बिस्मथ ट्राइक्लोराइड डालने पर, रसायन पानी में घुल जाता है और पात्र के तल में बैठ जाता है।
पिकार्डी ने नौ वर्षों तक प्रतिदिन 20 परीक्षण करके पुष्टि की कि रासायनिक प्रतिक्रिया का समय सूर्य के धब्बों की गतिविधि के साथ बिल्कुल मेल खाता है, सूर्य के धब्बों की गतिविधि चरम पर होने पर यह तेजी से प्रतिक्रिया करता है, और सूर्य के धब्बों की गतिविधि कम होने पर धीमी गति

से प्रतिक्रिया करता है।
हमने इंस्टेंट कॉफी का एक जार और सबसे सस्ती वाइन की एक बोतल का परीक्षण किया। 10 इंच व्यास वाली एक एल्युमिनियम प्लेट को पांच सप्ताह तक पिरामिड के आकार में रखा गया। फिर प्लेट को हटाकर उस पर कॉफी और वाइन रखी गई। वाइन को खोलने से पहले दो सप्ताह तक प्लेट पर ही रहने दिया गया।
हमने तुरंत कॉफी का इस्तेमाल शुरू कर दिया। प्लेट में जितनी देर कॉफी रखी रही, उसका स्वाद उतना ही मधुर होता गया। वाइन खोलने पर वह चिकनी, मधुर और किसी महंगी वाइन जैसी लगी। बिना उपचारित वाइन की बोतल और इस वाइन में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता था। बेशक, ये व्यक्तिपरक परीक्षण हैं और कोई आसानी से यह तर्क दे सकता है कि इसमें कल्पना का भी हाथ है। हालांकि, हमने कई लोगों पर वाइन का परीक्षण किया। उन्हें यह नहीं बताया गया कि वे एक प्रयोग में भाग ले रहे हैं, बल्कि उनसे केवल वाइन के गुणों में अंतर करने के लिए कहा गया। हर बार, उन्होंने "उपचारित" वाइन और एक अन्य वाइन को चुना।

तरल पदार्थों पर प्रभाव 91
एक युवक की टिप्पणी विशिष्ट थी: "शराब के स्वाद में अंतर बताने के लिए शराब के विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं है।"
यह बात काफी समय से ज्ञात है कि सादे पानी की बूंदें स्वतंत्र रूप से बहने वाली वस्तुओं की तरह व्यवहार कर सकती हैं। जब इन्हें साफ पानी की सतह पर गिराया जाता है, तो कुछ बूंदें पूर्ण गोले का आकार ले लेती हैं और हवा के हल्के से झोंके से भी सतह पर तैरने या लुढ़कने लगती हैं।
प्रयोग साधारण पानी और पिरामिड के बल क्षेत्र में चार सप्ताह तक रखे गए पिरामिड के पानी का उपयोग करके किए गए। पानी की बूंदें एक छोटे धातु के पात्र के तल में छेद करके प्राप्त की गईं। पात्र को पहले साधारण पानी से भरा गया और फिर उसे साफ पानी से भरे एक बर्तन के ऊपर रखा गया। बर्तन को इतना भरा गया था कि पानी ने उत्तल आकार ले लिया था और किनारे पर एक अर्धचंद्राकार आकृति बन गई थी। जब बर्तन से पानी की बूंदें बर्तन में पानी की सतह पर गिरीं, तो छोटे गोले बन गए। कुछ सतह पर ही रह गए और कुछ किनारे की ओर बहकर पानी की सतह से बाहर निकल गए।
हालांकि, जब पिरामिडनुमा पानी को डिब्बे में डाला गया, तो बूंदें छोटे गोलों का आकार लेने में कम सुसंगत थीं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि पिरामिडनुमा बल के कारण पिरामिडनुमा पानी के अणु वास्तव में कुछ हद तक फैल गए थे, जिससे पानी की बूंद का पृष्ठ तनाव कुछ हद तक कम हो गया था।
ओरेगन की रहने वाली मानसिक रूप से संवेदनशील टेनी हेल ने बताया कि उनके अनुभव में पिरामिड के अंदर रखा पानी किसी तरह अपनी ऑक्सीजन बरकरार रखता है। यदि पानी को बार-बार पिरामिड से बाहर निकाला जाता है, तो ऑक्सीजन के बुलबुले कम हो जाते हैं।
हमारे मापन के अनुसार, पिरामिड के अंदर चार सप्ताह तक उपचारित किया गया पानी सामान्य पानी की तुलना में अधिक तेज़ी से वाष्पित होता है। पिरामिड के पानी और सामान्य पानी के 250 ग्राम के साथ कई परीक्षण किए गए और प्रत्येक परीक्षण में पिरामिड के पानी ने 15 दिनों की अवधि में सामान्य पानी की तुलना में 21 ग्राम अधिक वाष्पीकरण दिखाया।

92 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

यदि जल में मौजूद हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की आणविक संरचना पिरामिड बलों के कारण किसी प्रकार से परिवर्तित हो गई है, तो ऐसा प्रतीत होता है कि जल के पृष्ठ तनाव में अंतर होगा। यही वाष्पीकरण में अंतर का कारण हो सकता है।
हमने बी-सेल जल, पिरामिड जल, मल्टीवेव ऑसिलेटर से उपचारित जल और सादे जल के साथ बीजों के अंकुरण पर कई प्रयोग किए। बी-कोशिकाओं को एक ऐसे संवर्धन से विकसित किया जाता है जिसमें कथित तौर पर बहुत उच्च आवृत्तियों की सौर ऊर्जा विकीर्ण करने की क्षमता होती है। इन कोशिकाओं को कंक्रीट के एक छोटे मैट्रिक्स में रखा जाता है। मल्टीवेव ऑसिलेटर विभिन्न आवृत्तियों की रेडियो तरंगें उत्पन्न करता है और जब कोशिका के नाभिक में विद्युत प्रवर्तक बल उत्पन्न होता है, तो यह कथित तौर पर कोशिका की चयापचय दर को बढ़ाता है।
पानी की समान मात्रा को बी-सेल्स, मल्टीवेव ऑसिलेटर और पिरामिड विधि द्वारा अलग-अलग उपचारित किया गया। लीमा बीन्स, पिंटो बीन्स और सूरजमुखी के दो-दो बीजों को धातु की ट्रे में कागज़ के नैपकिन पर रखकर विभिन्न प्रकार के पानी के नमूनों से नम किया गया। मल्टीवेव ऑसिलेटर द्वारा उपचारित पानी से उपचारित बीजों का अंकुरण और विकास अन्य ट्रे में रखे बीजों की तुलना में तीन गुना तेज़ी से हुआ।
हमारे अनुभव से पता चलता है कि पिरामिडनुमा पानी पौधे के बढ़ने के बाद तो उसकी वृद्धि में सहायक होता है, लेकिन इससे अंकुरण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। इन प्रयोगों का विस्तृत वर्णन पौधों से संबंधित अध्याय में दिया गया है।
यह ध्यान देने योग्य है कि वीज़मैन इंस्टीट्यूट के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के प्रमुख डॉ. ई. एच. फ्री द्वारा लिखित लेख "चुंबकत्व के चिकित्सा अनुप्रयोग" (बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स, अक्टूबर 1972) में एक पैराग्राफ है:
लैब्स ने सुझाव दिया है कि चुंबकीय क्षेत्र तरल क्रिस्टलों के माध्यम से जीवन प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं, जो कई कार्बनिक यौगिकों में पाए जाने वाले ठोस और तरल अवस्थाओं के बीच की मध्यवर्ती अवस्थाएं हैं। वे कुछ दिशाओं में उल्लेखनीय अभिविन्यास प्रदर्शित करते हैं, लेकिन गति की स्वतंत्रता भी रखते हैं। यह सर्वविदित है कि कई तरल क्रिस्टल लगभग 1,000 गॉस के क्षेत्र में उन्मुख होते हैं, और यह

स्वेडबर्ग ने यह दिखाया था कि इस प्रकार के उन्मुख तरल क्रिस्टल तंत्रों में चुंबकीय क्षेत्रों में विसरण और रासायनिक अभिक्रियाओं की दर में उल्लेखनीय परिवर्तन हो सकता है। तरल क्रिस्टल और तरल क्रिस्टल के निकट के पदार्थ सजीव शरीरों में पाए जाते हैं, और इन पदार्थों के माध्यम से जीवन प्रक्रियाओं की दर प्रभावित हो सकती है।
हमने सड़े हुए मांस का एक टुकड़ा लिया और उसे दो बराबर भागों में बाँटकर सादे पानी और पिरामिड जल में रख दिया। एक सप्ताह बाद, सादे पानी में रखा मांस सड़ता रहा और उसमें से बहुत दुर्गंध आने लगी, साथ ही पानी का रंग भी बदल गया। लेकिन पिरामिड जल वाले पात्र से दुर्गंध गायब हो गई, पानी में जमी तलछट नीचे बैठ गई और पानी साफ हो गया।
हमने चोट और जलने पर पिरामिड वॉटर का इस्तेमाल करके देखा है और हमारा मानना है कि इससे घाव जल्दी भरते हैं। उदाहरण के लिए, मेरे एक दोस्त की चार साल की बेटी का हाथ और अंगूठा ज़ोर से बंद हुए दरवाज़े में दब गया। वह उसे डॉक्टर के पास ले जाने लगा, तभी उसे फ्रिज में रखे पिरामिड वॉटर की याद आई। उसने बेटी का हाथ पानी में डाला और एक मिनट बाद ही बेटी ने रोना बंद कर दिया और बोली, "पापा, बहुत अच्छा लग रहा है।" हाथ को 30 मिनट तक पानी में रखा गया। अगली सुबह तक फटा हुआ मांस फिर से जुड़ने लगा था, सूजन गायब हो गई

थी और घाव का रंग भी काफी हद तक ठीक हो गया था। दो दिन बाद चोट का कोई निशान नहीं बचा था।
श्रीमती पेटिट चेहरे पर लोशन की तरह पिरामिड वॉटर का इस्तेमाल करती थीं। उन्होंने पाया कि यह चेहरे पर बूंदों के रूप में तब तक बना रहता था जब तक कि त्वचा इसे सोख न ले या यह वाष्पित न हो जाए, जबकि बिना उपचारित पानी धारियों के रूप में बह जाता था। लगभग चार से पांच सप्ताह तक इस पानी से चेहरा धोने के बाद, उनके दोस्तों ने उनकी रंगत की तारीफ करते हुए कहा, "अरे इनेज़, तुम्हारी रंगत कितनी जवां और साफ है! तुम क्या कर रही हो?"
हमने पाया है कि रोजाना एक गिलास पिरामिड वॉटर पीने से पाचन क्रिया में सहायता मिलती है। पेट की खराबी जल्दी ठीक हो जाती है और मल त्याग में सुधार होता है।
दुनिया में कई ऐसे तथाकथित चमत्कारी झरने हैं जिनके बारे में दावा किया जाता है कि उनमें उपचार करने की शक्ति है। जब आप उनके बारे में सुनते हैं

भक्त इन जल से स्नान करने और पीने से प्राप्त होने वाले लाभों का बखान करते हैं, लेकिन इन दावों की तुलना पिरामिड जल के उपयोग से प्राप्त होने वाले परिणामों के साथ-साथ बी-कोशिकाओं, बहु-तरंग दोलक आदि द्वारा उपचारित जल से प्राप्त होने वाले परिणामों से किए बिना नहीं रह सकता।
पावो ओ. ऐरोला ने अपनी पुस्तक "हेल्थ सीक्रेट्स फ्रॉम यूरोप" में उपचार में पानी के उपयोग पर चर्चा की है और जर्मनी में एक जल उपचार क्लिनिक का उल्लेख किया है।
स्नान द्वारा बीमारियों के उपचार और रोकथाम से संबंधित चिकित्सा विज्ञान (बाल्नोलॉजी) और खनिज जल के औषधीय महत्व पर आधुनिक शोध हाल ही में शुरू हुआ है और अभी तक अधूरा है। लेकिन जो जानकारी उपलब्ध है, उससे पता चलता है कि खनिज जल में वास्तव में उपचारात्मक क्षमता होती है। और होनी भी चाहिए, क्योंकि खनिज चयापचय में गड़बड़ी और जैव रासायनिक असंतुलन कई बीमारियों की जड़ हैं। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि बैड पिरमेंट में इन जल का उपयोग लगभग दो हजार वर्षों से उपचार के लिए किया जाता रहा है; और लाखों बीमार लोगों को इससे लाभ हुआ है—मरीज और डॉक्टर हर दिन इसके उदाहरण देखते हैं!
और मन में यह सवाल उठता है: "क्या पानी, जो जीवन के लिए इतना आवश्यक है, न केवल खनिजों बल्कि ज्ञात और अज्ञात ऊर्जा शक्तियों को भी कोशिकीय जीवन तक पहुँचाने का माध्यम है? क्या कुछ विशेष परिस्थितियाँ ऊर्जा के इस हस्तांतरण को बढ़ा सकती हैं?"
क्रिस्टोफर हिल्स की पुस्तक, न्यूक्लियर इवोल्यूशन में, हमें पानी की प्रकृति पर निम्नलिखित अनुच्छेद मिलता है:
"जल के अपघटन के बिना किसी भी जीवित जैविक जीवन में विद्युत ऊर्जा का प्रवाह संभव नहीं है। जीवन की उत्पत्ति जल में हुई और ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर का कार्य, आत्मा (चेतना) के वाहन के रूप में, सभी प्रोटोप्लाज्म और उसके पोषक तत्वों के आदान-प्रदान के लिए जल का निर्माण और उसे धारण करना है। प्रत्येक कोशिका में इस जल के बिना झिल्लियों का आयनीकरण और इलेक्ट्रॉन पंपों की गतिविधि संभव नहीं है, ये ऊर्जा उत्पन्न करने वाली गीली कोशिका बैटरियां हैं जिन्हें हम मिट्रोएंड्रिया कहते हैं। जैसा कि ईसा मसीह ने कहा था, 'आत्मा और जल के बिना कुछ भी पुनर्जन्म नहीं ले सकता।'"

तरल पदार्थों पर प्रभाव 95
शायद एक दिन हम यह जान लें कि पवित्र जल में वास्तव में साधारण जल से कहीं अधिक गुण होते हैं। शायद किसी असाधारण व्यक्ति द्वारा अभिमंत्रित जल में अतिरिक्त ऊर्जा का संचार होता है, जिससे उसे प्राप्त करने वाले को लाभ होता है। शायद बपतिस्मा की धार्मिक रस्म दीक्षा लेने वाले को शुद्धिकरण की स्वीकृति के प्रतीक से कहीं अधिक अर्थ प्रदान करती है। और शायद पोंस डी लियोन अपने समय से बहुत आगे थे।

6. ठोस पदार्थों पर प्रभाव
साधारण धातुओं से सोना बनाना, जो प्राचीन और मध्ययुगीन रसायनशास्त्रियों का एक जुनून भरा प्रयास था, पिरामिड की उपलब्धियों में से एक नहीं है। या शायद है?
रसायन विद्या में कुछ विचित्र आकर्षण है। इसकी कला का अधिकांश भाग जादुई स्पर्श में नहीं, बल्कि मनुष्य की तुच्छता को देवत्व में परिवर्तित करने में निहित है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि रसायनज्ञ कुशल तत्वज्ञानी थे, जिन्होंने धार्मिक कट्टरपंथियों के उत्पीड़न से बचने के लिए रासायनिक विद्याओं के पीछे मनुष्य में रूपांतरण लाने के अपने वास्तविक उद्देश्य को छिपा रखा था। कई रसायनज्ञों को धनी संरक्षकों का समर्थन प्राप्त था, जो इस प्राचीन मान्यता में दृढ़ विश्वास रखते थे कि रूपांतरण के समय उत्पन्न अमृत पीने वालों को अमरता प्रदान करता है। लेकिन चाहे जो भी लक्ष्य रहा हो, रसायन विद्या जीवन के किसी गहरे रहस्य को उजागर करती है। मनुष्य पारस पत्थर की खोज से अनभिज्ञ नहीं हो सकता।
आज का रसायनशास्त्री जानता है कि वह ऊर्जा क्षेत्रों से निपट रहा है और पदार्थ वास्तव में ऊर्जा का ही एक विन्यास है।

ठोस पदार्थों पर प्रभाव 97
कणों के बारे में। यदि वह परमाणु कणों का रहस्य उजागर कर सके, तो धातु को इच्छानुसार किसी भी रूप में पुनर्निर्मित किया जा सकता है। यद्यपि कुछ कीमियागरों को लालच ने प्रेरित किया होगा, लेकिन उनके सपने वास्तविकता से उतने दूर नहीं थे जितना कि कभी प्रतीत होता था। परमाणु संरचनाओं के अध्ययन में हाल ही में हुई वैज्ञानिक प्रगति ने हमें उस ऊर्जा मैट्रिक्स को समझने के कगार पर ला खड़ा किया है जिसमें सब कुछ विद्यमान है। शायद प्राचीन लोग इसे समझते थे और कीमियागर एक भूले हुए ज्ञान को उजागर करने का प्रयास कर रहा था।
पिरामिडों के भीतर मौजूद असामान्य ऊर्जा क्षेत्रों के प्रभावों का अन्वेषण इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। आज हम जानते हैं कि रूपांतरण होता है; एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में परिवर्तित हो सकता है।
18वीं शताब्दी के विद्वान लैवोइसियर को आधुनिक रसायन विज्ञान का जनक माना जाता है। उनका मूल सिद्धांत, जिस पर उन्होंने कार्य किया और जिससे उन्होंने अपने नए विज्ञान की नींव रखी, यह है कि कुछ भी नष्ट नहीं होता, कुछ भी निर्मित नहीं होता, सब कुछ रूपांतरित होता है। परमाणु को पदार्थ का सबसे छोटा कण और प्रकृति का एक स्थिर तत्व माना जाता था, इसलिए यह माना जाता था कि किसी भी तत्व का निर्माण नहीं हो सकता। परमाणु का लुप्त होना संभव ही नहीं था। यदि वह दो या दो से अधिक परमाणुओं वाले अणु से अलग हो जाता, तो वह किसी अन्य अणु में अपरिवर्तित रूप में पाया जा सकता था।

लावॉइसियर के इस सिद्धांत को किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता था; इस पर बहस की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। यह 19वीं सदी के विज्ञान का आधार था। इसका अध्ययन करने वालों ने इसे व्यापक रूप से विस्तारित किया और रसायन विज्ञान से संबंधित हर विज्ञान पर लागू किया। इस सदी में ही इस सिद्धांत को, जिस पर 100 वर्षों से अधिक समय तक कोई चर्चा नहीं हुई थी, पहली बार आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त खंडन का सामना करना पड़ा। यह प्राकृतिक रेडियोधर्मिता की खोज थी, जिससे यह पता चला कि कुछ पदार्थ अलग-अलग पदार्थों में परिवर्तित हो सकते हैं। मैरी क्यूरी के कार्यों और रेडियम की उनकी खोज के अध्ययन से पता चलता है कि रेडियम का एक परमाणु गैर-रेडियोधर्मी और स्थिर सीसे के परमाणु में परिवर्तित हो जाता है।
यह तर्क कि रूपांतरण केवल इसी के माध्यम से संभव है

98 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
अत्यधिक परमाणु ऊर्जा का उपयोग अब उचित नहीं ठहराया जा सकता। फ्रांसीसी जीवविज्ञानी लुईस सी. केर्व्रान के प्रयासों से पता चला है कि स्वतः रूपांतरण कार्बनिक पदार्थों में एक प्राकृतिक घटना है। अब यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि कार्बनिक पदार्थों में नाभिक और उसके इलेक्ट्रॉनों के बीच संबंध खनिज पदार्थों से भिन्न होता है। मुर्गियों पर कुछ रोचक प्रयोग किए गए हैं। मुर्गियों को अपने अंडों के छिलके बनाने के लिए कैल्शियम की आवश्यकता होती है, लेकिन इन प्रयोगों में कई मुर्गियों को कैल्शियम रहित आहार दिया गया। उनके आहार में अभ्रक, एल्यूमीनियम का सिलिकेट और पोटैशियम मिलाया गया। यह पाया गया कि मुर्गियों ने अपने अंडों के छिलके के लिए आवश्यक कैल्शियम का उत्पादन किया, जिससे यह पता चला कि पोटैशियम हाइड्रोजन के एक आयन के साथ कैल्शियम में रूपांतरित हो गया।
रूस में एक नया सिद्धांत प्रचलित है जिसे 'जादुई संख्या का सिद्धांत' कहा जाता है। यह सिद्धांत मानता है कि यूरेनियम से परे भी कुछ अतिभारी तत्व मौजूद हैं जो स्थिर हैं। अब तक यह माना जाता रहा है कि यूरेनियम से परे सभी तत्व रेडियोधर्मी और अस्थिर होते हैं। इसलिए, वर्तमान में 310 के भार और 135 के परमाणु क्रमांक वाले एक तत्व की परिकल्पना की जा रही है। इसे 'एका-लेड' या 'सुपरलेड' कहा जा रहा है और कहा जाता है कि साधारण सीसे में इसकी थोड़ी मात्रा प्राकृतिक रूप से पाई जाती है। एका-लेड के गुणों का अध्ययन, जो वर्तमान में सैद्धांतिक है, से पता चलता है कि यदि इसका रूपांतरण किया जाए, तो संभवतः इससे सोने का एक स्थिर समस्थानिक उत्पन्न होगा।
अब यह ज्ञात है कि परमाणु मूलतः विद्युतीय वातावरण से रूपांतरित होते हैं, ऐसे में पिरामिडनुमा स्थान के भीतर असामान्य विद्युत चुम्बकीय बलों की उपस्थिति यह प्रश्न उठाती है कि क्या वहाँ तत्वों का रूपांतरण संभव है। इस समय इसका उत्तर ज्ञात नहीं है। हालांकि, जो बात स्पष्ट है, वह है परिवर्तन की घटना—ऐसा परिवर्तन जो पिरामिड के बाहर या गैर-पिरामिडनुमा पात्रों में होने वाले परिवर्तन से भिन्न है।
विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के चार्ट को देखने पर पता चलता है कि स्पेक्ट्रम का वह भाग जिसमें तरंगें होती हैं

ठोस पदार्थों पर प्रभाव 99 रेडियो तरंगों से लंबी तरंगों को अज्ञात के रूप में चिह्नित किया गया है, जैसा कि स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर कॉस्मिक किरणों से छोटी तरंगों के साथ है। पिरामिड के भीतर बल का कम से कम कुछ हिस्सा संभवतः विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के छोटे छोर पर है। यह

माना जा सकता है क्योंकि यह दिखाया गया है कि पिरामिड बल हानिकारक बैक्टीरिया को नष्ट कर देगा। एक राज्य प्रयोगशाला द्वारा हमारे लिए किए गए परीक्षणों से पता चला कि पिरामिड के साथ रखे गए दूषित दूध के नमूनों में अधिकांश बैक्टीरिया मर गए थे।
मांस पर किए गए हमारे प्रयोगों में हमने पाया कि मांस सड़ता तो नहीं है, लेकिन तेजी से नमी खो देता है और जीवाणुओं के लिए निष्क्रिय हो जाता है। तीन सप्ताह तक पिरामिडनुमा आवरण में रखने के बाद मांस का वजन 66 प्रतिशत से अधिक कम हो जाता है, लेकिन वह खराब नहीं होता। इसकी तुलना मांस में हानिकारक जीवाणुओं को मारने और अन्य जीवाणुओं के पनपने से रोकने के लिए पराबैंगनी प्रकाश के सामान्य उपयोग से करें। इस प्रकार, मांस को खराब होने के खतरे के बिना उच्च तापमान पर संग्रहित किया जा सकता है।
विभिन्न खाद्य पदार्थों की तुलनात्मक जांच करने के उद्देश्य से, हमने छह परत वाले पोस्टरबोर्ड से पाँच एक समान गत्ते के पिरामिड तैयार किए। प्रत्येक पिरामिड का आधार नौ इंच और तीन-आठवें इंच का था और उसकी ऊँचाई छह इंच थी। सभी पिरामिडों के शीर्ष से चारों ओर तीन-चौथाई इंच के छेद काटकर उनमें हवा आने-जाने की व्यवस्था की गई थी।
प्रत्येक भोजन का एक भाग पाँचों पिरामिडों के राजा कक्ष क्षेत्र में रखा गया और इसी प्रकार के नमूने पिरामिड के बाहर मेज पर रखे गए। हमने चार अंडे चुने, जिनमें से प्रत्येक का वजन 51 ग्राम था। दो अंडे छिलके सहित छोड़ दिए गए, एक पिरामिड के अंदर और एक बाहर, और दो अंडे छिलके से निकालकर एक जैसी प्लेटों में रखे गए, एक अंदर और एक बाहर। प्रयोग और नियंत्रण के लिए ताजे बछड़े के जिगर के नमूने लिए गए, साथ ही मछली के दो नमूने और सिरलॉइन स्टेक के दो नमूने भी लिए गए। सिरलॉइन स्टेक को इस प्रकार काटा गया कि प्रत्येक टुकड़े में वसा की मात्रा और बनावट लगभग एक जैसी हो।

100 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: पाई छोटे पिरामिड के लिए बहुत बड़े थे और उन्हें हमारे इनडोर छह फुट के पिरामिड के शीर्ष से नायलॉन की रस्सी से लटका दिया गया था।
पिरामिड के बाहर रखे सभी खाद्य पदार्थ पहले सप्ताह के भीतर ही खराब हो गए, उन पर फफूंदी लग गई या वे सड़ गए। बिना छिलके वाला अंडा सबसे अंत में खराब हुआ और उस पर फफूंदी लगी। पिरामिड के अंदर रखे किसी भी खाद्य पदार्थ में कोई खराबी नहीं आई; केवल सिकुड़न और वजन में कमी ही एकमात्र स्पष्ट परिवर्तन था। पिरामिड के अंदर रखे खाद्य पदार्थों का वजन इस प्रकार किया गया:
छिलके सहित ताजा अंडा, बिना छिलके वाला ताजा अंडा, ताजा बछड़े का जिगर, ताजा मछली, सिरलॉइन स्टेक
प्रारंभिक
वज़न
51 ग्राम
34 ग्राम 45 ग्राम 45 ग्राम
पिरामिड में दिनों की संख्या: 60 दिन
19 दिन
20 दिन 15 दिन
अंतिम वजन 19 ग्राम
18 ग्राम 16 ग्राम 14 ग्राम
245 ग्राम 40 दिन 97 ग्राम

एक अन्य परीक्षण में हमने एक ही आकार के दो पके टमाटर चुने, जिनमें से प्रत्येक का वजन सात औंस से थोड़ा अधिक था। एक टमाटर को छह फुट ऊंचे पिरामिड के राजा कक्ष क्षेत्र में रखा गया और दूसरे टमाटर को पिरामिड के किनारे पर एक स्टायरोफोम ब्लॉक पर रखा गया। पिरामिड के बाहर रखा टमाटर बारहवें दिन तक सड़ गया और उसे फेंकना पड़ा। पिरामिड के अंदर रखा टमाटर सूख गया लेकिन उसका लाल रंग बरकरार रहा और उसमें कोई खराबी नहीं दिखी। केवल एक ही बदलाव देखा गया, वह था उसकी त्वचा का अत्यधिक सिकुड़ना। इसे 60 दिनों के बाद निकाला गया और काटने पर पाया गया कि अंदर से यह ताजे टमाटर की तरह ही सख्त था। इसमें कोई खराबी नहीं पाई गई। इसका वजन तीन औंस से थोड़ा अधिक था।
कॉन्कॉर्ड अंगूरों के एक बड़े गुच्छे को तीन बराबर भागों में विभाजित किया गया। एक तिहाई भाग को विशाल पिरामिड के अंदर राजा के कक्ष के स्तर पर रखा गया; एक तिहाई भाग को पिरामिड के बाहर एक प्लेक्सीग्लास क्यूबिकल बॉक्स के अंदर रखा गया, और

शेष एक तिहाई अंगूरों को पिरामिड के पास एक शेल्फ पर रखा गया था। हालांकि डिब्बे के अंदर अंगूरों के लिए हवा आने-जाने की व्यवस्था थी, फिर भी दस दिनों के भीतर ही उनमें फफूंदी लग गई और डिब्बा लगभग पूरी तरह भर गया। शेल्फ पर रखे अंगूरों में चौदहवें दिन से फफूंदी लगनी शुरू हो गई। पिरामिड के अंदर रखे अंगूर दो सप्ताह में सूखने लगे। पांच सप्ताह के अंत तक उनका वजन मूल सात और तीन-चौथाई औंस से घटकर तीन और एक-चौथाई औंस रह गया था। सात सप्ताह के अंत में उनका न्यूनतम वजन दो और सात-आठवां औंस रह गया। वे सूखे, झुर्रीदार और किशमिश जैसे दिख रहे थे, लेकिन उनमें किसी भी तरह की खराबी या फफूंदी नहीं लगी थी।
अपनी किताब 'सुपरनेचर' में लेखक लायल वॉटसन बताते हैं कि उन्होंने पिरामिड और तीन चीज़ों - अंडे, भुना हुआ चूहा और मरे हुए चूहे - पर प्रयोग किए। नियंत्रण नमूनों को गत्ते के एक डिब्बे में रखा गया था। पिरामिड में रखे नमूने सुरक्षित रहे, जबकि डिब्बे में रखे नमूनों से जल्द ही बदबू आने लगी और उन्हें फेंकना पड़ा। उन्होंने टिप्पणी की, "मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए बाध्य हूँ कि चेओप्स पिरामिड की गत्ते की प्रतिकृति केवल कागज़ के टुकड़ों की एक साधारण व्यवस्था नहीं है, बल्कि इसमें कुछ विशेष गुण हैं।"
वाशिंगटन डी.सी. स्थित मैनकाइंड रिसर्च अनलिमिटेड, इंक. के पिरामिड रिसर्च प्रोजेक्ट के निदेशक डॉ. बोरिस वर्न ने दस इंच ऊंचे प्लास्टिक पिरामिड और समान आयतन वाले प्लास्टिक घनों के साथ कई प्रयोग किए। उन्होंने बताया कि पिरामिड में रखे कच्चे अंडे तीन सप्ताह से भी कम समय में सख्त और सूख गए। अंडों पर रखी फफूंद नहीं उगी। नियंत्रण समूह के अंडे नम रहे और उन पर फफूंद आसानी से उग गई।
कुछ साल पहले कैलिफोर्निया के एक शोधकर्ता, स्वर्गीय वर्न कैमरून ने अपने बाथरूम में एक छोटा पिरामिड बनाया था। बाथरूम उनके घर का सबसे गर्म और नम कमरा था, जो भोजन को संरक्षित करने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं थीं। उन्होंने पिरामिड के अंदर चर्बीदार सूअर का एक टुकड़ा रखा। तीन दिन बाद उन्हें हल्की गंध महसूस हुई, लेकिन छह दिन बाद गंध गायब हो गई और सूअर का मांस ममी की तरह संरक्षित हो गया। मांस का वह टुकड़ा कई दिनों तक बाथरूम में पिरामिड के अंदर ही पड़ा रहा।

कई महीनों तक, और कैमरून ने दावा किया कि यह पूरी तरह से खाने योग्य था।
भोजन संरक्षण, ममीकरण और बढ़ी हुई निर्जलीकरण दर से संकेत मिलता है कि पिरामिड के अंदर का बल विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम के लघु छोर पर है। लेकिन इसमें चुंबकीय गुण भी हैं, जैसे कि रेज़र ब्लेड को तेज करने का प्रभाव, जिसमें एक ही ब्लेड से 200 से अधिक बार शेव करने की रिपोर्टें हैं। सफलता दर ब्लेड की गुणवत्ता पर निर्भर करती प्रतीत होती है, उच्च श्रेणी के स्टील से बने ब्लेड सर्वोत्तम परिणाम देते हैं। ऐसा लगता है कि ब्लेड में जितना अधिक अलौह पदार्थ होता है, धातु के अणुओं पर पिरामिड बल का प्रभाव उतना ही कम होता है। यदि बल विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम का है, जैसा कि प्रतीत होता है, तो यह संभव है कि बल स्पेक्ट्रम के कुछ ज्ञात भागों, जैसे दृश्य प्रकाश, के समान कार्य करे। दृश्य प्रकाश अभी भी विज्ञान के लिए एक पहेली है; ऐसे सिद्धांत हैं जो प्रकाश की प्रेक्षणीय क्रियाओं के अनुरूप अधिकांश गुणों का उत्तर देते प्रतीत होते हैं, लेकिन ये अभी भी सिद्धांत ही हैं। वर्तमान में यह माना जाता है कि प्रकाश एक विद्युत चुम्बकीय तरंग है, या फोटॉनों का एक समूह है—ऐसे कण जिनका कोई द्रव्यमान नहीं होता लेकिन उनमें ऊर्जा होती है। प्रकाश के इस गुण के कारण, जब यह एक माध्यम से दूसरे माध्यम में जाता है तो यह मुड़ जाता है या अपवर्तित हो जाता है। उदाहरण के लिए, जब कोई किरण किसी कांच की सतह से किसी कोण पर टकराती है, तो वह मुड़ जाती है। मान लीजिए कि किरण पिरामिड के कोण वाले किनारे से होकर गुजरती है और ऐसा करने पर वह मुड़ जाती है, शायद किरण में मौजूद ऊर्जा कणों के अनुपात में। यह मानते हुए कि किरण पश्चिम से आ रही है, तो बल पिरामिड के अंदर परावर्तन द्वारा प्रवाहित होगा, और पिरामिड के शीर्ष के नीचे स्थित केंद्रीय बिंदु से समय-समय पर गुजरेगा। यहीं पर सारी क्रिया होती है।
रेज़र ब्लेड के किनारे की संरचना क्रिस्टलीय होती है, और क्रिस्टल स्वयं को पुनरुत्पादित करके बढ़ते हैं। ब्लेड के कुंद होने पर, किनारे पर मौजूद कुछ क्रिस्टल घिस जाते हैं। सैद्धांतिक रूप से, क्रिस्टलों को

स्वयं को प्रतिस्थापित करते हैं। यह ज्ञात है कि सूर्य के प्रकाश का क्षेत्र सभी दिशाओं में फैला होता है, फिर भी चंद्रमा जैसी वस्तु से परावर्तित सूर्य का प्रकाश आंशिक रूप से ध्रुवीकृत होता है और अधिकतर एक ही दिशा में कंपन करता है। चंद्रमा के प्रकाश में छोड़ने पर ब्लेड की धार संभवतः नष्ट हो सकती है, और वास्तव में ऐसा होता भी प्रतीत होता है। हालाँकि, यह पिरामिड की धार तेज करने की क्रिया को स्पष्ट नहीं करता है। केवल यही अनुमान लगाया जा सकता है कि पिरामिड ऊर्जा को केंद्रित करने वाले लेंस के रूप में कार्य करते हैं, या ऊर्जा को एकत्रित करने वाले अनुनादकों के रूप में, जिससे क्रिस्टल के विकास को प्रोत्साहन मिलता है।
यह दिलचस्प बात है कि क्रिस्टल को जिस दिशा में रखा जाता है, उससे उसकी कंपन गतिविधि की मात्रा निर्धारित होती है। जॉन सी. पिएराकोस ने अपने शोध पत्र "मनुष्य और प्रकृति में ऊर्जा क्षेत्र" में कहा है कि क्रिस्टल भौगोलिक दिशाओं के सापेक्ष अपनी स्थिति के आधार पर अलग-अलग दरों पर स्पंदित होते हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा, "जब क्वार्ट्ज क्रिस्टल का अगला सिरा दक्षिण की ओर होता है, तो स्पंदन दर लगभग 9 प्रति मिनट होती है; पश्चिम की ओर होने पर यह दर 6 प्रति मिनट होती है। उत्तर की ओर होने पर यह 4 प्रति मिनट होती है और पूर्व की ओर होने पर बढ़कर 14 प्रति मिनट हो जाती है।"
इस बात को और गहराई से समझने के लिए, यह ज्ञात है कि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, और बल की एक पश्चिमी धारा पृथ्वी के वायुमंडल के संपर्क में आने पर संभवतः उसका अनुसरण कर सकती है, जिससे ऊर्जा का प्रवाह पश्चिम से पूर्व की ओर हो सकता है।

कई वर्षों से विज्ञान को यह ज्ञात है कि पृथ्वी के चारों ओर की हवा थोड़ी आयनित होती है। पहले यह माना जाता था कि यह आयनीकरण अत्यधिक भेदनशील विकिरण के कारण होता है। यह पाया गया कि महासागर में जितनी गहराई तक इकाई को उतारा जाता था, आयनित कणों की संख्या उतनी ही कम होती जाती थी। ऐसा प्रतीत हुआ कि जल का द्रव्यमान कुछ विकिरण को अवशोषित कर लेता है। पहले यह माना जाता था कि विकिरण पृथ्वी में ही मौजूद रेडियोधर्मिता से उत्पन्न होते हैं। लेकिन जब आयन संवेदन इकाइयों को ऊपरी वायुमंडल में भेजा गया, तो यह पाया गया कि इकाइयों को जितनी ऊँचाई पर भेजा जाता था, आयनीकरण उतना ही अधिक होता था। इससे संकेत मिलता है कि विकिरण...

104 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

यह ऊर्जा अंतरिक्ष से आई थी, इसलिए इस बल को "ब्रह्मांडीय किरणें" नाम दिया गया।
इस विकिरण का स्रोत अज्ञात है, सिवाय इसके कि यह सौर मंडल के बाहर से आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह बल आकाश के सभी भागों से आ रहा है। पृथ्वी के विभिन्न अक्षांशों पर तीव्रता का वितरण दर्शाता है कि किरणें पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र द्वारा विक्षेपित होती हैं। ब्रह्मांड से पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने वाले विकिरण को प्राथमिक विकिरण कहा जाता है, जो इसे वायुमंडलीय आवरण के भीतर उत्पन्न होने वाले विकिरण से अलग करता है, जैसे कि रेडियम द्वारा उत्सर्जित विकिरण।
आगे के अध्ययनों से पता चलता है कि यह विकिरण, हालांकि सभी दिशाओं से आ रहा है, पश्चिम दिशा से अन्य किसी भी दिशा की तुलना में अधिक आता प्रतीत होता है। सिद्धांत यह है कि किरणें पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में फंस जाती हैं और पूर्व की ओर मुड़ जाती हैं। इससे यह समझने में मदद मिल सकती है कि पिरामिड के अंदर हमारे पौधे पश्चिम से पूर्व की ओर क्यों बढ़ते हैं, दक्षिण की ओर झुकते हैं और इस पैटर्न को दोहराते हैं, जैसा कि "पिरामिड और पौधों की शक्ति" अध्याय में वर्णित है। इससे यह समझने में भी मदद मिल सकती है कि रेजर ब्लेड को पिरामिड के अंदर केवल उत्तर-दक्षिण अक्ष पर रखकर ही क्यों तेज किया जाता है। इससे दोधारी ब्लेड का एक किनारा पश्चिम की ओर और दूसरा पूर्व की ओर हो जाता है। हमने पाया है, और अन्य लोगों ने भी बताया है, कि कुछ दिनों में रेजर ब्लेड अन्य दिनों की तुलना में अधिक तेज लगता है। क्या ऐसा हो सकता है कि हम पिरामिड में एक दिन पूर्व की ओर वाले किनारे का उपयोग कर रहे हों और संभवतः दूसरे दिन पश्चिम की ओर वाले किनारे का?
यदि पानी आयनित कणों को अवशोषित करने की प्रवृत्ति रखता है, जैसा कि ऊपर वर्णित है, तो पिरामिड का निर्जलीकरण प्रभाव यह समझाने में भी मदद कर सकता है कि रेजर ब्लेड पिरामिड के अंदर की जगह में तेज क्यों रहते हैं।
यह ज्ञात है कि पानी स्टील की मजबूती को 20 प्रतिशत से अधिक कम कर सकता है। कैरल ड्रबल ने बताया है कि पिरामिड—या कोई अन्य उपयुक्त अनुनादी गुहा—ही एकमात्र ऐसा उपकरण प्रतीत होता है जो द्विध्रुव पर अनुनादी क्रिया द्वारा द्विध्रुवीय जल अणुओं को बाहर निकालकर रेजर ब्लेड के किनारे में क्रिस्टल अंतराल को भरने में मदद कर सकता है।

ठोस पदार्थों पर प्रभाव 105

चेकोस्लोवाकिया के रेडियो इंजीनियर ने पिरामिडों की रेजर की धार तेज करने की क्षमता का पता लगाया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पिरामिड रेजर की धार को सुखा देता है। जर्मन वैज्ञानिकों बोर्न और लेर्टेस ने यह प्रदर्शित किया कि पिरामिड जैसी अनुनादी गुहा में

उपयुक्त माइक्रोवेव ऊर्जा प्रवाहित करने पर जल के द्विध्रुवीय अणुओं पर उपरोक्त क्रिया संभव है। बोर्न और लेर्टेस ने पाया कि सेंटीमीटर-तरंगदैर्ध्य की माइक्रोवेव और उनके हार्मोनिक्स जल के द्विध्रुवीय अणुओं के त्वरित घूर्णन को उत्पन्न कर सकते हैं। इससे वास्तव में निर्जलीकरण की प्रक्रिया होती है, या जल के द्विध्रुवीय अणुओं का निष्कासन होता है। यह विद्युत चुम्बकीय निर्जलीकरण की प्रक्रिया प्रतीत होती है।
तो फिर ऐसा क्यों है कि परावैद्युत या अचालक पदार्थ से निर्मित पिरामिड, चालक पदार्थ से निर्मित पिरामिडों की तुलना में बेहतर कार्य करते प्रतीत होते हैं? इसका उत्तर संभवतः इस तथ्य में निहित है कि माइक्रोवेव पदार्थ में प्रवेश कर सकते हैं और पिरामिड की अनुनादी गुहा को ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं।
एल्युमीनियम स्क्रीन या पन्नी से ढके पिरामिड प्लास्टिक, लकड़ी, कैनवास आदि से ढके पिरामिडों के समान गुण प्रदर्शित नहीं करते हैं। पिरामिड के अंदर और पौधे के पश्चिम में रखी एल्युमीनियम पन्नी या स्क्रीन की एक शीट पौधे के घूर्णन को रोकती है; वास्तव में, हमारे टाइम-लैप्स फोटोग्राफी के अनुसार, पौधे पूरी तरह से स्थिर हो जाते हैं। पौधों पर अध्याय में हमने धातुओं और पौधों के साथ अपने प्रयोगों का वर्णन किया है, लेकिन यहां यह दोहराना उचित होगा कि एल्युमीनियम एकमात्र ऐसी सामग्री है जो अवरोधक गुण प्रदर्शित करती प्रतीत होती है। एल्युमीनियम एक विद्युत प्रक्रिया द्वारा निर्मित मिश्र धातु है और हमने शुरू में अनुमान लगाया था कि यह पिरामिड में बाहर से प्रवेश करने वाले ऊर्जा क्षेत्र के लिए नकारात्मक या अवरोधक तरीके से कार्य करता है। हालांकि, हमने सोचा कि कहीं यह एक अतिरिक्त आवेश तो नहीं प्रदान कर रहा है जो अन्य विद्युत चुम्बकीय बलों के साथ मिलकर अतिभार का कारण बन रहा है। पिरामिड के अंदर रखे चुम्बकों ने भी पौधों के घूर्णन को रोका।

बाद वाले सिद्धांत का समर्थन करने की प्रवृत्ति थी। हालाँकि, हमारी समस्या और बढ़ गई क्योंकि एल्युमीनियम फ़ॉइल पर रखे बीज अंकुरित नहीं हुए या अन्य सामग्रियों पर रखे बीजों की तुलना में धीमी गति से अंकुरित हुए। इसका उत्तर इस प्रमाण में निहित प्रतीत हुआ कि एल्युमीनियम एंजाइम गतिविधि को बाधित करता है। जिन चिकित्सकों ने अपने हाथों से निकलने वाली ऊर्जा से बीजों के अंकुरण में सुधार और पौधों की वृद्धि में वृद्धि की है, वे एंजाइम गतिविधि को भी बढ़ाने में सक्षम हैं। हमारे एक मित्र, चार्ल्स रोड्स, एक सफल चिकित्सक रहे हैं। रेज़र ब्लेड के साथ हमारे प्रयोगों के बारे में जानकर, उन्होंने हमें चुनौती देते हुए अपने हाथों से रेज़र ब्लेड को "उपचारित" करके उन्हें तेज करने का प्रस्ताव रखा। लगभग 700 बार शेव करने के बाद भी वे उसी रेज़र ब्लेड का उपयोग कर रहे हैं जिससे उन्होंने प्रयोग शुरू किया था। स्पष्ट रूप से, यह योग्य चिकित्सक अपने हाथों से लगभग वैसी ही ऊर्जा विकीर्ण करने में सक्षम है जैसी पिरामिडों में पाई जाती है। हमने तर्क दिया कि यदि यह ऊर्जा किसी प्रकार एल्युमीनियम द्वारा अवरुद्ध हो जाती है और एंजाइम गतिविधि को बाधित करती है, तो यह स्वाभाविक है कि यह पौधों पर भी वैसा ही प्रभाव डालती है। यदि ऐसा होता, तो पौधों पर एल्युमीनियम और चुम्बकों के प्रभावों के बीच कोई समानता नहीं हो पाती। एल्युमीनियम एक अवरोधक के रूप में कार्य करता प्रतीत होता है, जबकि चुम्बक अधिक मात्रा में पौधों पर प्रभाव डालते हैं।
फिर हमने पाया कि एल्युमीनियम का स्पष्ट अवरोधक प्रभाव तब समाप्त हो जाता है जब उसे पिरामिड के अंदर पर्याप्त समय तक रखा जाता है ताकि वह पिरामिड की ऊर्जा से संतृप्त हो जाए। हमने पाया कि दो सप्ताह तक पिरामिड के अंदर रखे एल्युमीनियम का पौधों पर कोई

अवरोधक प्रभाव नहीं रह जाता। वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानो एल्युमीनियम मौजूद ही न हो। और इस प्रकार उपचारित पन्नी ने पिरामिड के विकल्प के रूप में काम किया। एल्युमीनियम के परमाणु अनुनाद द्वारा ऊर्जा अवशोषित करते हैं। जब पन्नी को पिरामिड से हटाया गया, तो परमाणुओं को बाहरी ऊर्जा मिलना बंद हो गया और इलेक्ट्रॉन की कक्षाएँ धीरे-धीरे क्षय होने लगीं। ऐसा होने पर, इसने ऊर्जा मुक्त की और इसे पिरामिड की तरह ही उपयोग किया जा सकता था।
उपचारित एल्युमीनियम पर रखे बीज अंकुरित हो गए।

ठोस पदार्थों पर प्रभाव 107
पिरामिड के अंदर रखे पौधों की तरह ही, ये पौधे भी तेजी से घूमने लगे और अपने अंदर बंद साथियों की तरह ही चक्कर लगाने लगे। हमने बीफ़ रोस्ट पर एक प्रयोग किया। हमने एक ही तरह के रोस्ट के दो टुकड़ों को उपचारित और अनुपचारित एल्युमीनियम फ़ॉइल में लपेटा। उपचारित फ़ॉइल में पका हुआ रोस्ट अनुपचारित फ़ॉइल में लिपटे रोस्ट की तुलना में एक तिहाई समय में पक गया।
अंततः, हमने यह निष्कर्ष निकाला कि एल्युमीनियम के साथ जो हो रहा है, वह यह है कि इसके विद्युत गुण ऐसे हैं कि यह पिरामिड ऊर्जा को अवरुद्ध करने वाले तंत्र के रूप में कार्य करने के बजाय, जैसा कि पहली नज़र में प्रतीत होता है, पिरामिड के भीतर ऊर्जा को अवशोषित करता है और ऊर्जा को पौधों, एंजाइमों आदि पर कार्य करने से रोकता है। एक बार ऊर्जा से संतृप्त हो जाने पर, यह क्षेत्र को क्षीण नहीं करता है और फिर स्वयं ऊर्जा क्षेत्र के अनुनादक के रूप में कार्य कर सकता है।
इस अध्याय की शुरुआत में हमने सोने के प्रति मनुष्य के लगाव और इस सबसे कीमती वस्तु की मांग को पूरा करने के लिए कीमियागरों के प्रयासों का उल्लेख किया था। यह आकर्षण केवल धन-दौलत तक ही सीमित नहीं था, बल्कि अपनी प्रकृति और रचना में यह मनुष्य की सबसे मूल्यवान अवस्थाओं—अमरता और आध्यात्मिक ज्ञान—का प्रतीक था। प्राचीन मिथकों में लोहे और चांदी जैसी विभिन्न धातुओं से बने मनुष्यों का वर्णन मिलता है, और स्वर्ण पुरुष बनना सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त करना और जीवन के सच्चे उद्देश्य को समझना था। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक, कुछ लोगों का मानना रहा है कि कुछ धातुएँ और रत्न अपने धारकों को असाधारण शारीरिक या आध्यात्मिक वरदान प्रदान करते हैं। कई संस्कृतियों के वैद्य सोने के जादुई गुणों में विश्वास रखते हुए उसके कंगन और पायल पहनते आए हैं। अपने मूल अर्थ में, सोने के मुकुट न केवल संप्रभुता का प्रतीक थे, बल्कि अपने धारकों को शक्ति और ज्ञान भी प्रदान कर सकते थे।
शायद सोने के प्रति मनुष्य का आकर्षण उसके अवचेतन मन में गहराई से दबा हुआ है, एक लंबे समय से भुला दिया गया सहज संबंध। हम अभी-अभी जैव रसायनविदों से यह सीखना शुरू कर रहे हैं कि हमारे शरीर में कुछ धातुओं की थोड़ी मात्रा आवश्यक है। लोहे और तांबे की आवश्यकता तो सर्वविदित है।

108 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
ज्ञात और वर्तमान शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क के सही कामकाज के लिए जस्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है। शायद भविष्य में हमें पता चले कि सोने की भूमिका इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। एडगर केसी ने चालीस से अधिक चिकित्सा मामलों में सोने की अनुशंसा की थी। इनमें से

अधिकांश मामले ग्रंथियों के असंतुलन से संबंधित थे।
जीवन के कोशिकीय स्तर पर सोने की आवश्यकता हो सकती है, क्योंकि पौधों पर आधारित अध्याय में वर्णित है कि एक पौधे ने पिरामिड के भीतर अपने पास रखी सोने की पन्नी को लपेटने के लिए लगभग क्षैतिज रूप से खुद को फैलाया। हालांकि, कई दिनों तक पिरामिड में रखी सोने की पन्नी का कुछ तो प्रभाव होता है। पौधा बिना उपचारित सोने की पन्नी की ओर आकर्षित नहीं हुआ। पिरामिड में बिना उपचारित सोने की पन्नी को पौधे के बगल में रखने पर भी पौधे ने अपनी सामान्य गति और वृद्धि जारी रखी। लेकिन जब सोने की पन्नी को कई दिनों तक पिरामिड के अंदर उपचारित किया गया और फिर पौधे के साथ पिरामिड में रखा गया, तो पौधे ने उसे सहर्ष ग्रहण कर लिया।
सोने के प्रयोग से जुड़ा एक दिलचस्प पहलू पौधे की गति से संबंधित एक अनुभव है। जब सूरजमुखी का पौधा कुछ इंच लंबा था, तो हमने उसे एक पिरामिड के अंदर रख दिया। उसने पश्चिम-पूर्व दिशा में वैसी ही गति शुरू कर दी जैसी हम पौधों से उम्मीद करते हैं। फिर पिरामिड के अंदर बिना उपचारित सोने की पन्नी रख दी गई और जब उसे कुछ समय बाद हटाया गया, तो पौधा तुरंत उत्तर और दक्षिण दिशा में बढ़ने लगा। पौधे ने अचानक दिशा क्यों बदली, इसका हमारे पास कोई जवाब नहीं है, लेकिन हम आगे और प्रयोग करने की योजना बना रहे हैं।
एक और अनुभव जिसे हम दोहराने में असफल रहे, वह पीतल से संबंधित था। हम पीतल की एक पतली पट्टी के साथ प्रयोग कर रहे थे और उसे एक पिरामिड के केंद्र में एक नुकीले बिंदु पर रखा था। हमने अचानक देखा कि जब भी हम अपना हाथ उसके पास लाते थे, पीतल की पट्टी प्रतिकर्षित हो रही थी। यह मानकर कि यह किसी प्रकार का स्थैतिक आवेश है, हमने कुछ देर तक इसके साथ प्रयोग किया। मैंने (पेटिट) सोचा, "अब शायद मेरे शरीर पर भी ऋणात्मक आवेश है और पीतल पर भी ऋणात्मक आवेश है," और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे मैं स्वयं दोनों की ध्रुवीयता बदल सकूँ।

या फिर पीतल की पट्टी। और जैसे ही मैंने यह सोचा, पीतल की पट्टी मेरी उंगली की ओर खिंची चली आई। मैं उससे खेलता रहा और वह मेरी उंगली की ओर आकर्षित होती रही। लेकिन अगली सुबह पीतल की पट्टी फिर से मुझसे दूर हट गई और लाख कोशिश करने के बावजूद मैं उसकी ध्रुवता को बदल नहीं सका।
ऐसा माना जाता है कि ग्रेट पिरामिड के राजा के कक्ष को विशेष रूप से असामान्य ऊर्जा क्षेत्रों के निर्माण के लिए बनाया गया था। राजा के कक्ष की छत उत्तर और दक्षिण दिशा में फैली ग्रेनाइट की नौ बीमों से बनी है। राजा के कक्ष के ऊपर कुल पाँच कक्ष हैं, जिनमें से प्रत्येक कई फीट के खाली स्थान से अलग है और इनमें ग्रेनाइट की नौ और फिर आठ बीमों की परतें बारी-बारी से लगी हैं। सबसे ऊपरी छत विशाल चूना पत्थर के ब्लॉकों से बनी है, जो एक गैबल छत की तरह ढलानदार हैं। माना जाता है कि प्रत्येक तैंतालीस ग्रेनाइट बीम का वजन लगभग सत्तर टन है। राजा का कक्ष स्वयं पूरी तरह से ग्रेनाइट से बना है, जिसमें फर्श, चारों दीवारें और छत शामिल हैं। ग्रेनाइट क्वार्ट्ज़ क्रिस्टल, अभ्रक और फेल्डस्पार से बना होता है और यह विशेष रूप से दबाव में होने पर पीजो-इलेक्ट्रिक क्षेत्र उत्पन्न करने के लिए जाना जाता है। इस मामले में, ग्रेनाइट अपने ऊपर 200 फीट ठोस चूना पत्थर के दबाव में है। मिस्रवासी ग्रेनाइट को "आध्यात्मिक चट्टान" कहते थे, कथित तौर पर इसके विद्युत क्षेत्र के कारण। यह माना जाता है कि मिस्रवासियों ने राजा के कक्ष का निर्माण इसी प्रकार किया था क्योंकि अत्यधिक दबाव में ग्रेनाइट कक्ष में एक उच्च आवेशित क्षेत्र उत्सर्जित करता था, और ग्रेनाइट और वायु कक्षों की विभिन्न परतें स्थायी आवेश

का एक संधारित्र बनाती थीं।
कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि ग्रेट पिरामिड न केवल ऊर्जाओं का संचायक है, बल्कि इन ऊर्जाओं को परिवर्तित करने का कार्य भी करता है। वैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध हो चुका है कि कोई भी वस्तु जिसमें ऊर्जा कंपन करती है, एक अनुनादी गुहा के रूप में कार्य करती है, और वस्तु के भीतर की ऊर्जा एक निश्चित बिंदु पर केंद्रित होती है। यह ठोस और खोखली दोनों प्रकार की वस्तुओं पर लागू होता है। इसलिए, कुछ लोगों का मानना है कि ग्रेट पिरामिड एक विशाल अनुनादी गुहा के रूप में कार्य कर सकता है जो ऊर्जाओं को केंद्रित करने में सक्षम है।

110 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: ब्रह्मांडीय ऊर्जा एक विशाल लेंस की तरह काम करती है। अत्यधिक केंद्रित ऊर्जा केंद्रित किरण के मार्ग में आने वाली किसी भी वस्तु के क्रिस्टल या अणुओं को प्रभावित करती है।
टॉथ और नीलसन बताते हैं कि रेडीस्थीसिया या डॉविंग रॉड के उपयोग से प्रयोगकर्ताओं ने यह प्रदर्शित किया है कि पिरामिड के शीर्ष से ऊर्जा का एक भंवर निकलता है, जिसका व्यास ऊपर उठने के साथ बढ़ता जाता है। डॉवर्स ने दावा किया कि उन्होंने केवल चार इंच ऊंचे कार्डबोर्ड पिरामिड के ऊपर लगभग आठ फीट ऊंचे और छह फीट व्यास वाले एक भंवर को मापा है। एक प्रयोग में, एक छोटे पिरामिड को एक बॉक्स के नीचे रखा गया और उसके बगल में तीन समान बॉक्स रखे गए। डॉवर को यह नहीं पता था कि कौन सा बॉक्स पिरामिड को ढके हुए है, उसने अपनी रॉड से प्रत्येक बॉक्स का परीक्षण किया और रॉड ने केवल पिरामिड वाले बॉक्स के ऊपर ही प्रतिक्रिया दी।
दिवंगत वर्न कैमरून ने एक ऐसे उपकरण का आविष्कार किया जिसे उन्होंने 'ऑरामीटर' कहा था। उनका दावा था कि यह उपकरण व्यक्तियों और वस्तुओं के बल क्षेत्र को मापता था। उन्होंने दावा किया कि एक छोटे पिरामिड से उन्होंने ऊर्जा के एक भंवर को मापा जो छत तक पहुँचता था। कैमरून ने यह भी दावा किया कि यदि किसी पिरामिड को उस स्थान से हटा दिया जाए जहाँ वह खड़ा था, तो वह एक मापने योग्य आवेश छोड़ जाता है जो कई दिनों तक बना रहता है।
यदि लघु पिरामिडों के शीर्ष से ऊर्जा का भंवर निकलता है, तो हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि महान पिरामिड का शीर्ष वास्तव में कैसा था। इतिहास में महान पिरामिड के किसी शीर्ष का उल्लेख नहीं है और न ही कभी इसके कोई संकेत मिले हैं। मैनली पामर हॉल ने अपनी पुस्तक "द सीक्रेट टीचिंग ऑफ ऑल एजेस" में दावा किया है कि ऐसा कोई शीर्ष जानबूझकर नहीं बनाया गया था।
"ग्रेट पिरामिड के शीर्षशिला का आकार सटीक रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता, क्योंकि अधिकांश शोधकर्ताओं का मानना है कि यह कभी वहां मौजूद थी, लेकिन अब इसका कोई अवशेष नहीं बचा है। महान धार्मिक इमारतों के निर्माताओं में अपनी रचनाओं को अधूरा छोड़ने की एक विचित्र प्रवृत्ति है, जिससे यह संकेत मिलता है कि केवल ईश्वर ही पूर्ण है। यदि वह शीर्षशिला अस्तित्व में थी, तो वह स्वयं एक लघु रूप थी।"

ठोस पदार्थों पर प्रभाव 111
पिरामिड, जिसका शीर्ष उसी आकार के एक छोटे ब्लॉक से ढका होता है, और यह प्रक्रिया अनंत तक चलती रहती है। इसलिए शीर्ष स्तंभ संपूर्ण संरचना का सार है। इस प्रकार, पिरामिड की तुलना ब्रह्मांड से और शीर्ष स्तंभ की तुलना मनुष्य से की जा सकती है। इसी उपमा के क्रम में, मन मनुष्य का शीर्ष स्तंभ है, आत्मा मन का शीर्ष स्तंभ है, और ईश्वर—संपूर्ण का सार—आत्मा

का शीर्ष स्तंभ है। एक खुरदुरे और अधूरे ब्लॉक की तरह, मनुष्य को खदान से निकाला जाता है और रहस्यों की गुप्त साधना द्वारा धीरे-धीरे एक सच्चे और परिपूर्ण पिरामिडनुमा शीर्ष स्तंभ में रूपांतरित किया जाता है। मंदिर तभी पूर्ण होता है जब दीक्षित स्वयं जीवित शीर्ष स्तंभ बन जाता है जिसके माध्यम से दिव्य शक्ति नीचे की ओर फैलती संरचना में केंद्रित होती है।
कुछ लोग इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हैं कि ग्रेट पिरामिड पर कोई शिखर नहीं था। केसी ने कहा था कि पिरामिड के शीर्ष पर एक विशेष क्रिस्टल का पत्थर लगा था जो जबरदस्त ऊर्जा क्षेत्र उत्सर्जित करता था। कुछ लोगों का मानना है कि यह पत्थर विभिन्न सामग्रियों से बना था, जिसकी शुरुआत निचले स्तर पर सोने से होती थी और ऊपर की ओर क्रिस्टल से होते हुए अंत में सबसे ऊपरी सिरे पर हीरा या माणिक लगा होता था। जॉर्ज डब्ल्यू. वैन टैसल, कैलिफोर्निया के आविष्कारक और युक्का वैली स्थित कॉलेज ऑफ यूनिवर्सल विजडम के निदेशक, का दावा है कि उनके प्रयोगों से पता चलता है कि पिरामिड के मॉडल पर क्वार्ट्ज क्रिस्टल का शिखर पिरामिड के ऊर्जा क्षेत्र को बढ़ाता है। उन्होंने सुझाव दिया कि स्तरित क्वार्ट्ज से बना एक शिखर, जिसमें क्वार्ट्ज की परतों को जर्मेनियम से अलग किया गया हो, पिरामिड के भीतर ऊर्जा क्षेत्रों को बढ़ाएगा। ऐसी अटकलें भी हैं कि ग्रेट पिरामिड के शीर्ष पर क्रिस्टल शिखर का उपयोग प्रकाश किरणों की गति को धीमा करने और इस प्रकार ऊर्जा क्षेत्रों के चुंबकीय गुणों को निकालने के लिए किया जाता था। केसी ने कहा था कि जब प्रकाश की गति धीमी हो जाती है तो व्यक्ति को नई ऊर्जा मिल सकती है।
महान पिरामिड के निर्माताओं को इसके निर्माण से क्या लाभ हुआ, यह शायद कभी पूरी तरह से ज्ञात न हो पाए। हालांकि, इसके छोटे वंशजों पर किए गए प्रयोग इतने सफल रहे हैं कि भविष्य में कई संभावित भूमिकाओं के लिए रास्ता खुल गया है।

लघुचित्रों के लिए। इनमें से कुछ का उल्लेख अन्यत्र नहीं किया गया है, जैसे कि पिरामिड के आकार में निर्मित घर; अटारी में वायु शोधक, पिरामिड की छत के नीचे बने ऊंचे स्विमिंग पूल, जिससे एक बड़ा बपतिस्मा कुंड बनता है; जैविक पदार्थों पर पिरामिड की निर्जलीकरण क्रिया और हानिकारक जीवाणुओं के विनाश द्वारा संभव बनाए गए कचरा निपटान; औषधीय आपूर्ति के लिए भंडारण; पिरामिड के आकार में निर्मित सुपरमार्केट के खंड या यहां तक कि पूरे सुपरमार्केट; लंबी उड़ानों पर अंतरिक्ष यात्रियों की चयापचय दर को धीमा करने के लिए अंतरिक्ष यान में पिरामिड के आकार के रहने के क्वार्टर; सौर ऊर्जा के लिए भंडारण इकाइयां; हाई स्कूल और कॉलेजों में अध्ययन कक्ष; और शारीरिक और मानसिक चिकित्सा के लिए कक्ष, कुछ उदाहरण मात्र हैं।
पिरामिड निर्माण का नया युग जल्द ही शुरू हो सकता है।

0) ओ) (0 0)
क्या
(डी 0-
«?
"डी सी सी (1)
ओ <

ˆ और
यू) ई डब्ल्यू सीओ
(बी क्या ए) क्या
यह क्या है?
75 <5 ओ.ई.
■£ S> क्या ? =
एन ओ ओ ओ ˆ
S o § g ˆ
oi2 § एस 2
जेड ऊह
£ c
और एक>

° £

o 0J
सीसी के.

■= £

CO 2
< CO O Q UJ It
सीडी
— "9 येन
O 8-Sˆ

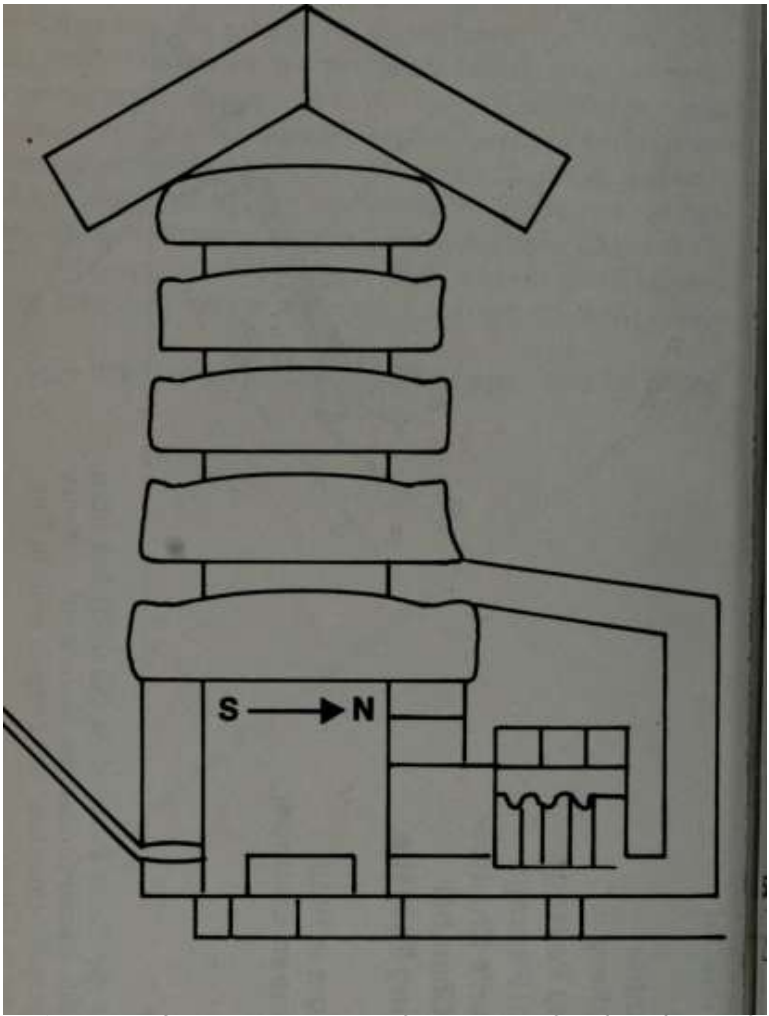

राजा के कक्ष का विवरण। यह कमरा 34 फीट लंबा, 17 फीट चौड़ा और 19 फीट ऊंचा है। इसकी दीवारें, फर्श और छत पॉलिश किए हुए लाल ग्रेनाइट से बने हैं, जो विद्युतीय गुण उत्पन्न कर सकते हैं।

58 सी

60 सी

78 सी

यह आरेख दर्शाता है कि उदाहरण के लिए, पिरामिड के ऊपरी दाहिने हिस्से में प्रवेश करने वाली प्रकाश की किरण राजा के कक्ष के क्षेत्र में कैसे आगे-पीछे परावर्तित होती है।

' <u
ओह ■ ओह
का *w
एस °
यू <डी . वी आरजेजे <डी
° ~ 5 टी-आई सी सीए
o c3 g ° c S
b0O.fi c ^
•£ e u
2 *o *-• ^ ° >^
« ओएस

8 सी 2
एस2 > >]
II 1

दो प्लेक्सीग्लास बॉक्स, जिनमें से एक को दूसरे के ऊपर उल्टा रखा गया है, और पिरामिड के अंदर रखे छोटे पीएम स्पीकर से निरंतर स्थिर आवृत्ति की ध्वनियाँ उत्पन्न करने का प्रयोग किया गया। पौधे पर इसके प्रभाव का अवलोकन करें।

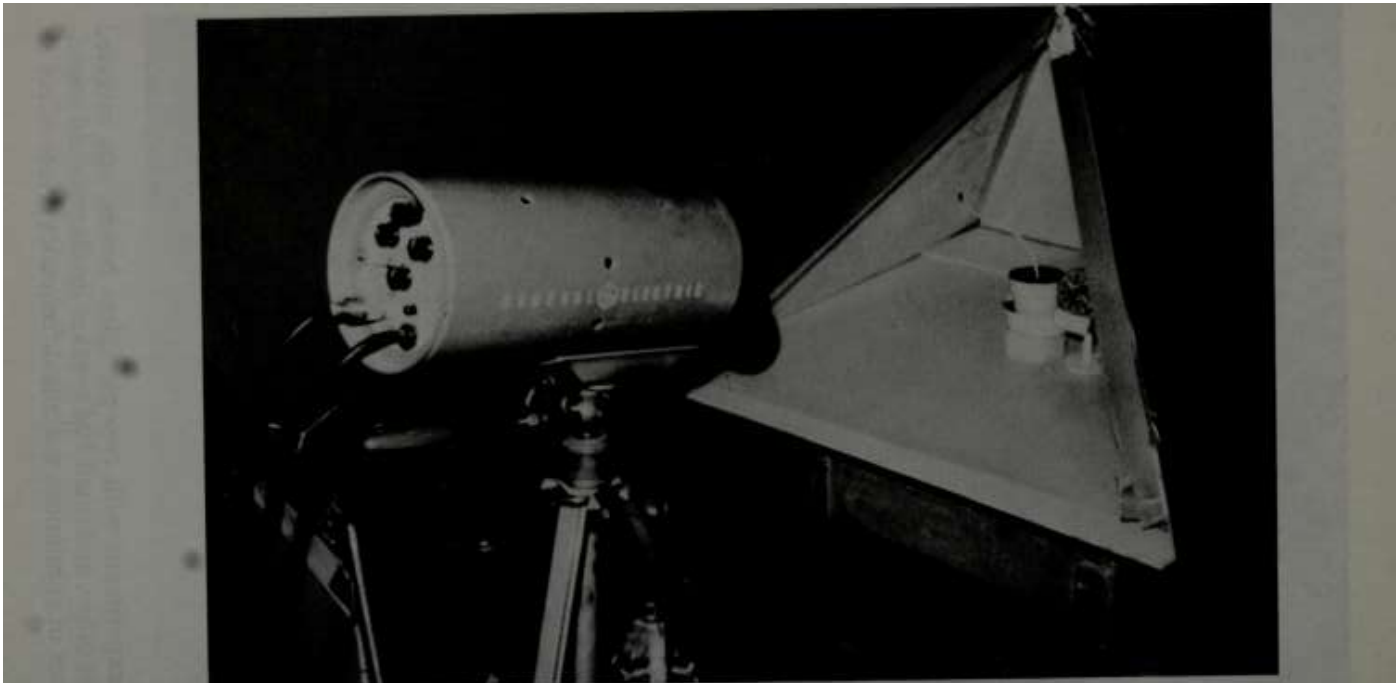

Closed-circuit TV monitoring sunflower in pyramid. Note unusual direction of growth.

Sunflower plant inside pyramid. Vertical piece to the rear of the plant is 23K gold leaf. Plant tended to "embrace" the leaf.

एफ ए 18"
टी बी
18"
टी सी
24"
एच

वृद्धि दर संबंधी प्रयोगों के लिए पौधों की स्थिति दर्शाने वाला आरेख। (देखें "पिरामिड और पौधों की शक्ति")

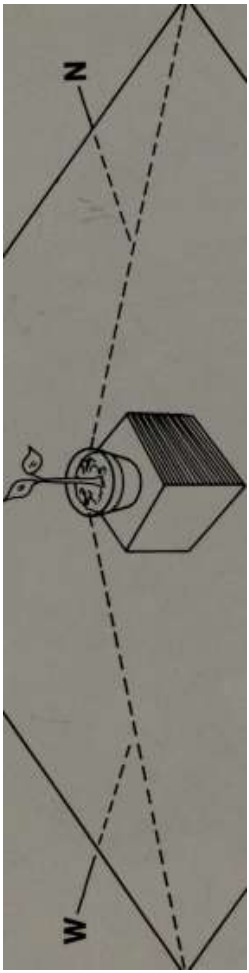

लू
(/>
■s
हे
सी
6
एस
एक।
हे
सी 3
सीआई*
सी ओ

पिरामिड के अंदर अंकुरित सूरजमुखी के पौधे में पिरामिड के बाहर अंकुरित नियंत्रण पौधे की तुलना में जड़ों का अधिक विकास दिखाई दिया।
पी

सूरजमुखी का अंकुरण पिरामिड के बाहर हुआ।

पिरामिड के अंदर दही में तब्दील हो चुका दूध का नमूना।

दूध का नमूना जो परतदार हो गया है और पिरामिड के बाहर (नीचे) फफूंदी में बदल रहा है।

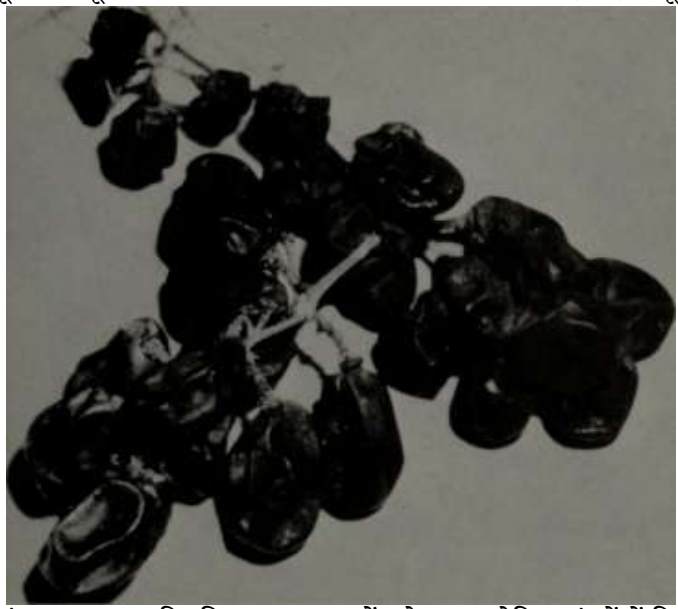

पांच सप्ताह तक पिरामिडनुमा आकार में रखे गए प्रायोगिक अंगूरों में निर्जलीकरण के लक्षण दिखाई दिए, लेकिन उनमें फफूंद नहीं लगी।

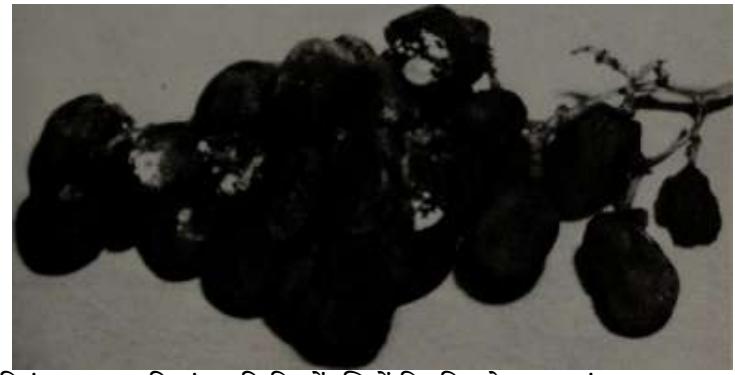

नियंत्रण समूह की अंगूर की किस्में, जिन्हें पिरामिड के बाहर पांच सप्ताह तक रखा गया था, उनमें फफूंदी और क्षय दिखाई दे रहा था।

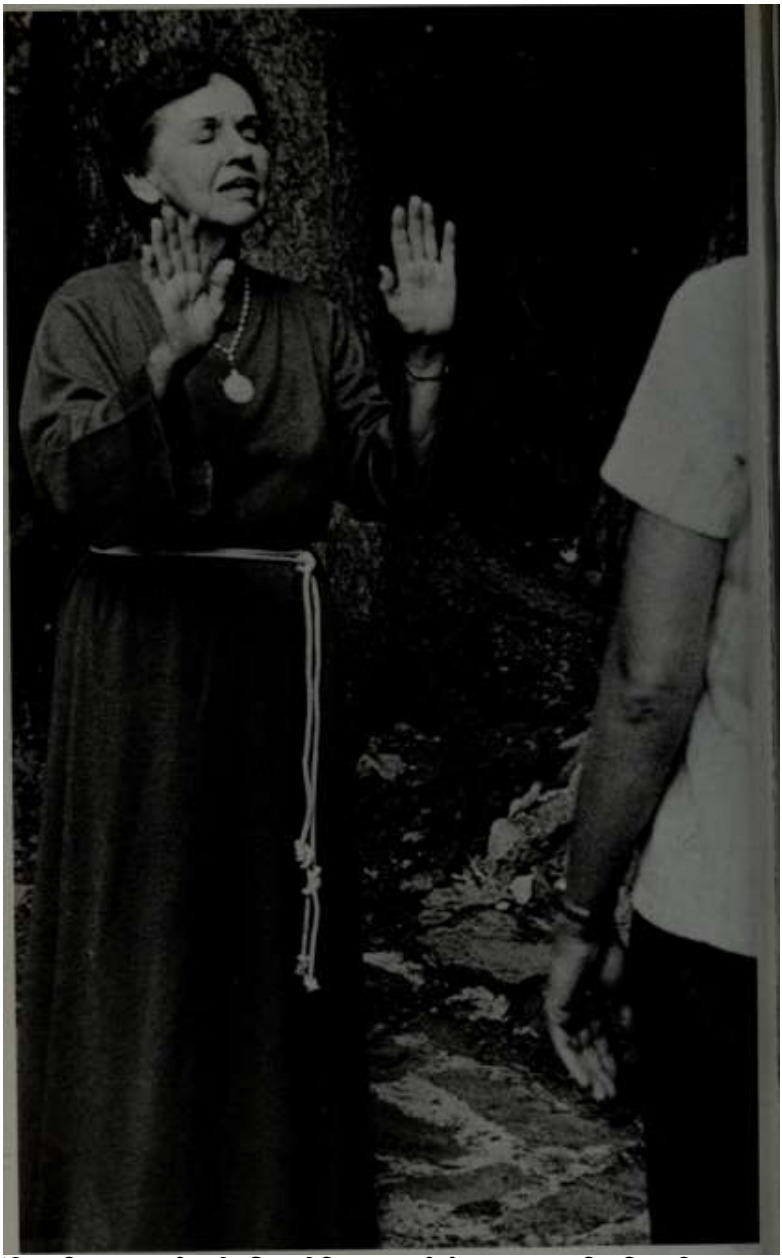

लॉरेल कीज़ एक मरीज़ के लिए टोनिंग कर रही हैं। (अध्याय "पिरामिड की आवाज़" देखें)

Sherry Fennell, daughter of Ed Pettit, meditating in outdoor plastic pyramid. People have reported increased sense of awareness and great relaxation from such exercises.

; fe^*^r

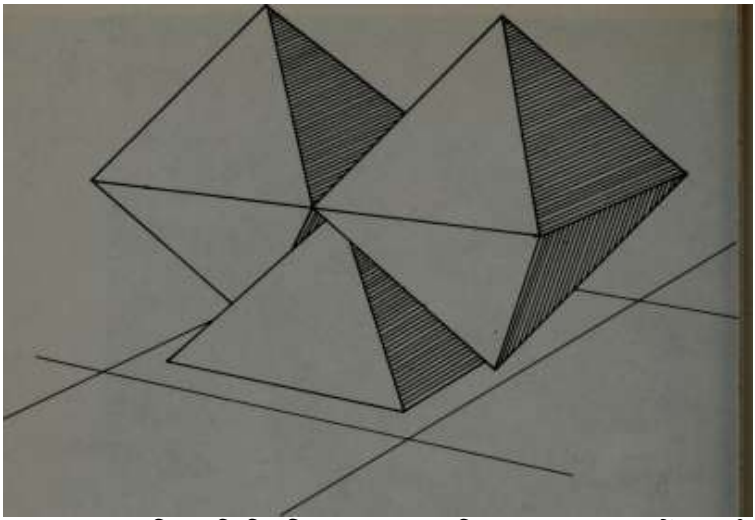

कलाकार द्वारा भविष्य की पिरामिडनुमा संरचना की कल्पना। अस्पतालों, कार्यालय भवनों और स्कूलों को इस प्रकार की संरचना से लाभ हो सकता है।

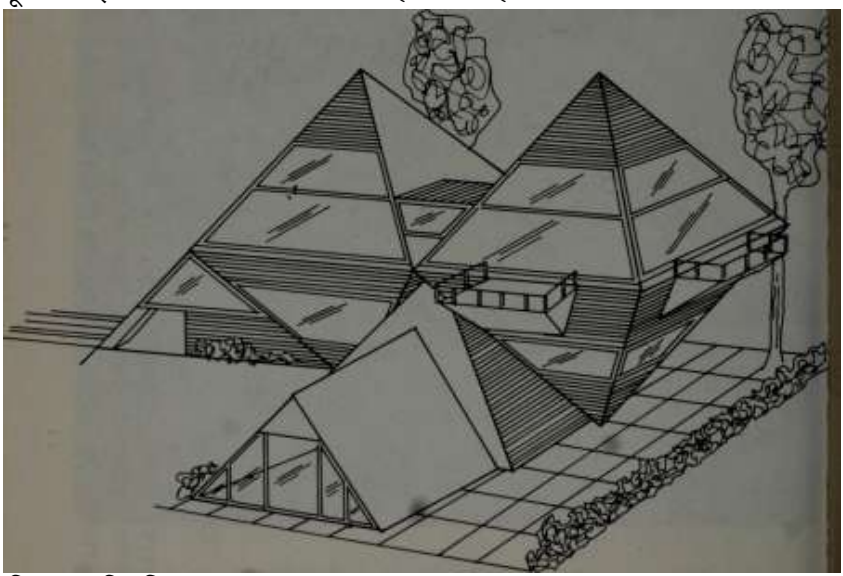

भविष्य का पिरामिडनुमा घर।

7. उपचार शक्तियाँ

दांत में मवाद पड़ गया था और बहुत दर्द हो रहा था। चूंकि रविवार की सुबह थी, इसलिए कोई दंत चिकित्सक उपलब्ध नहीं था। सामान्य दर्द निवारक दवाओं से भी कोई फायदा नहीं हुआ। अंततः, हताशा में, इनेज़ पेटिट एक लकड़ी के पिरामिड मॉडल के अंदर गईं और बैठ गईं, चमत्कार की प्रार्थना करने लगीं।

उन्हें ठीक से याद नहीं कि क्या हुआ था, लेकिन दस मिनट बाद दर्द अपने आप गायब हो गया। आज तक दर्द दोबारा नहीं हुआ है। बाद में श्रीमती पेटिट के दंत चिकित्सक द्वारा जांच करने पर दांत में कोई खराबी नहीं पाई गई।

हमारे पिरामिड का उपयोग करने वाले या स्वयं के पिरामिड का उपयोग करने वाले कई लोगों ने विभिन्न प्रकार की बीमारियों से राहत मिलने का दावा किया है। मोच, कट, चोट, खिंचाव, संक्रमण आदि के मामलों में, आश्चर्यजनक रूप से कम समय में ही उपचार हो गया है।

एक दिन मेरी दोस्त जूडी फुलर ने फोन किया और कहा कि उसकी दांतों की सर्जरी होने वाली है, वह बहुत घबराई हुई है, और उसने पूछा कि क्या वह खुद को शांत करने के लिए कुछ देर के लिए पिरामिड में बैठ सकती है।

वह आधे घंटे तक पिरामिडनुमा आसन पर बैठी रही और फिर सीधे दंत चिकित्सक के पास गई। दंत चिकित्सक ने उसके मसूड़ों में इंजेक्शन लगाकर ऊतकों को सुन्न कर दिया, लेकिन दवा का कोई असर नहीं हुआ। पाँचवें इंजेक्शन के बाद, उन्होंने उसकी नब्ज़ जाँचनी शुरू की। अंततः नौ इंजेक्शन लगाने के बाद ही उन्हें परिणाम मिला। दंत चिकित्सक ने जूडी के पति जेरी को बताया कि वह उसकी नब्ज़ को समझ नहीं पा रहे हैं, क्योंकि उसमें उतार-चढ़ाव होना चाहिए था, लेकिन उसमें बिल्कुल भी हलचल नहीं थी। चीरा लगाया गया, जबड़े की हड्डी की सर्जरी की गई और टांके लगा दिए गए।
अगले दिन जब जूडी चेकअप के लिए लौटी, तो दंत चिकित्सक ने पाया कि उसके मसूड़े स्वस्थ गुलाबी थे और घाव भरने की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से चल रही थी। इस बार और तीन दिन बाद हुए चेकअप में भी दंत चिकित्सक को यह समझ नहीं आया कि घाव इतनी तेजी से कैसे भर रहे थे। उपचार प्रक्रिया की इस कम अवधि की समझ चिकित्सकों के ज्ञान से परे प्रतीत होती है। हालांकि चिकित्सा पत्रिकाओं में इसके स्पष्टीकरण नहीं मिलते, फिर भी विद्युत चुम्बकीय तरंगें उत्पन्न करने वाले बहुतरंग दोलक या अन्य उपकरणों पर आधारित रिपोर्टों और आध्यात्मिक उपचार संबंधी साहित्य में इस घटना का उल्लेख मिलता है। स्पष्ट रूप से, यहाँ किसी प्रकार की ऊर्जा का प्रयोग हो रहा है जो प्रकृति की उपचार प्रक्रिया को बढ़ाती है।
रहस्यवादियों का लंबे समय से यह दावा रहा है कि रोग सबसे पहले शरीर के ईथर या विद्युत आवरण के भीतर प्रकट होते हैं और वहाँ से भौतिक शरीर पर स्थानांतरित हो जाते हैं। इस अवधारणा को अन्य जीव रूपों के साथ सिद्ध किया जा चुका है। संयुक्त राज्य अमेरिका का वन विभाग अब वृक्षों में कुछ प्रकार के रोगों का पता लगाने के लिए अवरक्त फोटोग्राफी का उपयोग करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि रोग वास्तव में वृक्षों के भौतिक पदार्थ में प्रवेश करने से पहले ही वृक्षों को घेर लेता है। अवरक्त रोग के प्रवेश से पहले ही उसके क्षेत्र को प्रकट कर देता है और प्रारंभिक अवस्था में ही उपाय किए जा सकते हैं। इसी शोध के क्रम में, किरलियन फोटोग्राफी पर काम करने वाले लोग - एक उच्च आवृत्ति प्रक्रिया जो पौधों, जानवरों और अन्य जीवों के आसपास के विद्युत क्षेत्र की तस्वीरें लेती है - भी इस दिशा में काम कर रहे हैं।

लोगों को उम्मीद है कि इस प्रक्रिया से बीमारियों की शुरुआती अवस्था में ही निगरानी संभव हो सकेगी।
डॉ. स्टेनली क्रिपनर द्वारा संपादित पुस्तक 'द किरलियन ऑरा' में कहा गया है: "एक किशोर लड़के की जन्मजात दोषपूर्ण टिबिया हड्डी को प्रत्यक्ष विद्युत धारा द्वारा ठीक करने के लिए उत्तेजित किया गया, और विद्युत उपचार के दो महीनों के भीतर उस क्षेत्र में नई हड्डी का निर्माण हुआ। ... हड्डी के ठीक होने की यह विद्युतीय प्रक्रिया एक्यूपंक्चर उपचार के कुछ प्रकारों से मिलती-जुलती है और इसमें शामिल क्रियाविधि के बारे में सुराग प्रदान कर सकती है।" साथ ही: "इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों चुंबकीय क्षेत्र जीवित जीवों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।"

पिरामिड के अंदर पौधों की हलचल दर्शाने वाली हमारी टाइम-लैप्स फिल्मों से यह प्रमाण मिलता है कि पिरामिड के आकार के अंदर चुंबकीय क्षेत्र मौजूदा बलों को बदल सकता है। चूंकि यह सर्वविदित तथ्य है कि एक चुंबकीय क्षेत्र इलेक्ट्रॉन प्रवाह को बाधित कर सकता है या मौजूदा चुंबकीय क्षेत्र को बदल सकता है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि हम पिरामिड के साथ किसी प्रकार के विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र से निपट रहे हैं।
"पिरामिड और पौधों की शक्ति" नामक अध्याय में उल्लेख किया गया है कि चिकित्सक ऑस्कर एस्टेबानी ने वैज्ञानिक सिस्टर जस्टा स्मिथ की देखरेख में 13,000 गॉस के समतुल्य चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करने की क्षमता का प्रदर्शन किया। एस्टेबानी द्वारा उत्पन्न ऊर्जा क्षेत्र ने बीजों के अंकुरण, पौधों की वृद्धि और एंजाइम गतिविधि को बढ़ाया - यही वह क्षेत्र है, जो एस्टेबानी के सफल उपचार को संभव बनाता है।
कुशल चिकित्सकों द्वारा उत्पन्न असाधारण ऊर्जा का एक रोमांचक प्रदर्शन 1974 में किया गया था, जिसे विज्ञान द्वारा चिकित्सक की शक्ति के अस्तित्व का वस्तुनिष्ठ प्रमाण प्रस्तुत करने में एक बड़ी सफलता के रूप में सराहा जा रहा है।
एक प्रयोगशाला उपकरण, क्लाउड चैंबर का उपयोग करते हुए, जो गैस के माध्यम से उप-परमाणु कणों के पथ का पता लगाता है, जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में 15 वर्षों तक रासायनिक इंजीनियरिंग के प्रोफेसर रहे और अब निजी उद्योग में कार्यरत डॉ. रॉबर्ट मिलर और अटलांटा के एग्नेस स्कॉट कॉलेज में भौतिकी विभाग के प्रमुख डॉ. फिलिप बी. रेनहार्ट ने एक तकनीक विकसित की है।

116 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
एक परियोजना जिसका उद्देश्य यह निर्धारित करना है कि क्या चिकित्सकों द्वारा लगाया गया बल उच्च-ऊर्जा परमाणु कणों के मार्ग को प्रभावित कर सकता है।
बाल्टीमोर में आध्यात्मिक उपचार सेवाएं प्रदान करने वाली प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. ओल्गा वोरल को एग्नेस स्कॉट कॉलेज में आयोजित प्रयोग में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। डॉ. वोरल के शामिल होने से पहले, डॉ. मिलर और डॉ. रेनहार्ट तथा कई अन्य लोगों ने सात इंच के कक्ष के चारों ओर अपने हाथ रखे। कुछ नहीं हुआ। फिर डॉ. वोरल ने कक्ष के चारों ओर अपने हाथ रखे, लेकिन उसे छुआ नहीं। उन्होंने अपनी उपचार सेवाओं के दौरान जिस प्रकार एकाग्रता बरती, उसी प्रकार ध्यान केंद्रित किया और अचानक कक्ष में एक गहरे रंग की तरंग जैसी आकृति विकसित हो गई। डॉ. मिलर ने बताया, "हम उनके हाथों के बीच ऊर्जा का प्रवाह देख रहे थे। कुछ मिनटों के बाद, उन्होंने कक्ष के चारों ओर अपनी स्थिति बदल दी। अंदर की आकृति भी बदल गई।" कई प्रोफेसरों और स्नातकोत्तर छात्रों ने प्रयोग को देखा और इस बात पर सहमति जताई कि उन्होंने चिकित्सक की ऊर्जा के वास्तविक प्रकटीकरण का प्रदर्शन देखा है।
दोनों वैज्ञानिकों ने आगे परीक्षण करने का निर्णय लिया। 12 मार्च को, अटलांटा से 600 मील दूर बाल्टीमोर स्थित अपने घर से, डॉ. वोरल ने क्लाउड चैंबर पर ध्यान केंद्रित किया और एक बार फिर असामान्य पैटर्न दिखाई दिया। अपने निष्कर्षों की पुष्टि करने के लिए, वैज्ञानिकों ने डॉ. वोरल को फोन किया और उनसे अपने प्रयासों को दोहराने के लिए कहा। परिणाम वही रहा।
डॉ. वॉरल ने कहा, "दोनों बार, मैं अपने अंदर से ऊर्जा का प्रवाह महसूस कर सका। मैं परीक्षण के परिणामों को लेकर बहुत उत्साहित हूं।"
डॉ. रेनहार्ट ने टिप्पणी की, "सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि उन्होंने 600 मील दूर से भी वही प्रभाव उत्पन्न किया। ऐसा करने के लिए उनके पास मानसिक रूप से अपनी ऊर्जा स्थानांतरित

करने के अलावा और कोई तरीका नहीं था।"
यूसीएलए में डॉ. थेल्मा मॉस ने डॉ. वोरल के हाथों और उंगलियों से निकलने वाली ऊर्जा को प्रदर्शित करने के लिए किरलियन फोटोग्राफिक प्रक्रिया का उपयोग किया है। डॉ. वोरल ने हमें ली गई कई तस्वीरें दिखाईं और यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था कि उनमें काफी अंतर था।

जब वह सामान्य अवस्था में थी और जब वह उपचार पर ध्यान केंद्रित कर रही थी, तब ऊर्जा क्षेत्र की चमक और तीव्रता में अंतर देखा गया।
हमने डॉ. वोरल से उनकी उपचार क्षमता के बारे में बात की और उन्होंने बताया कि उन्हें अपनी क्षमताओं पर कभी संदेह नहीं हुआ, लेकिन उनका मानना है कि आध्यात्मिक उपचार को व्यापक स्वीकृति दिलाने के लिए विज्ञान को संतुष्ट करने हेतु इस शक्ति का प्रदर्शन करना महत्वपूर्ण है। डॉ. वोरल द्वारा अपने कुछ मामलों का वर्णन करते समय, आध्यात्मिक उपचार और पिरामिड चिकित्सा के मामलों के इतिहास में स्पष्ट समानताएँ देखकर हम एक बार फिर आश्चर्यचकित रह गए।
इसी से संबंधित एक अवलोकन यह है कि एक उपचारक के हाथों में रखे पानी का इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के तहत अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि हाइड्रोजन अणु एक दूसरे से दूर चले गए थे... इस प्रकार की घटनाएँ पिरामिड के अंदर होने वाले तीव्र वाष्पीकरण और निर्जलीकरण की व्याख्या कर सकती हैं।
एक साल पहले मुझे (पेटिट) पूरा यकीन था कि मुझे प्रोस्टेट की समस्या के सारे लक्षण हैं और सर्जरी तो बस समय की बात है। फिर मैंने हफ्ते में दो-तीन रात पिरामिडनुमा आसन में सोना शुरू किया और नियमित रूप से पिरामिडनुमा पानी पीने लगा। छह महीने बीत गए और एक दिन अचानक मुझे एहसास हुआ कि मुझे काफी समय से प्रोस्टेट की कोई समस्या नहीं हुई है। हाल ही में हुई जांच में पता चला कि मेरा प्रोस्टेट पूरी तरह से ठीक है।
पिरामिड पावर नामक पुस्तक में मैक्स टोथ और ग्रेग नीलसन बताते हैं कि उन्हें ऐसे लोगों की रिपोर्ट मिली हैं जिन्हें पिरामिड के मॉडल के पास रहने से भी बेहतर महसूस हुआ है। वे कहते हैं: "अन्य रिपोर्टें, जिनकी पुष्टि करना और भी कठिन है, उन लोगों से आती हैं जो दावा करते हैं कि जब उन्होंने पिरामिड का मॉडल अपने बिस्तर या कुर्सी के पास रखा, तो कई रातों की नींद या कई दिनों तक पिरामिड के पास बैठने के बाद, उनका कोई विशेष दर्द या बीमारी का लक्षण या तो गायब हो गया या उसमें काफी राहत मिली।"
यदि पिरामिड के भीतर का ऊर्जा क्षेत्र बाहर के ऊर्जा क्षेत्र से अधिक है और यह क्षेत्र स्वस्थ या उपचार संबंधी अवस्थाओं को उत्पन्न करता है, तो यह माना जा सकता है कि आवृत्तियाँ

उत्पन्न होने से कोशिकाओं, ऊतकों, अंगों का अनुनाद स्तर बढ़ जाता है।
इत्यादि, उनके इष्टतम कार्य स्तर के करीब।
स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के पदार्थ विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. डब्ल्यू. ए. टिलर ने अमेरिकन एकेडमी ऑफ पैरासाइकोलॉजी एंड मेडिसिन द्वारा प्रायोजित उपचार के विभिन्न रूपों पर संगोष्ठी में प्रस्तुत एक शोधपत्र में कहा, "रेडियोनिक्स का एक मूल विचार यह है कि प्रत्येक जीव या पदार्थ एक विशिष्ट तरंग क्षेत्र के माध्यम से ऊर्जा का विकिरण और अवशोषण करता है, जिसमें कुछ ज्यामितीय, आवृत्ति और विकिरण-प्रकार की विशेषताएं होती हैं।" डॉ. टिलर ने आगे कहा,

"यह एक विस्तारित बल क्षेत्र है जो सभी प्रकार के पदार्थों के चारों ओर मौजूद होता है, चाहे वे सजीव हों या निर्जीव।" उन्होंने कहा, "यहाँ एक उपयोगी उदाहरण भौतिक परमाणु का है जो अपने दोलनशील विद्युत विकास और तापीय कंपन के कारण तरंगों के रूप में लगातार विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा का विकिरण करता है। पदार्थ जितने जटिल होते हैं, तरंग रूप उतना ही जटिल होता है..."
ऐसा माना जाता है कि मूल वाहक तरंग एक घूर्णनशील ध्रुवीकरण सदिश के साथ ध्रुवीकृत होती है। . . . ग्रंथियों, शरीर प्रणालियों आदि से संबंधित जानकारी वाहक तरंग को प्रभावित करती है और ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी विशिष्ट ग्रंथि के लिए तरंग के एक विशिष्ट चरण मॉड्यूलेशन से जुड़ी होती है। तरंग के एक दिए गए चरण कोण से जुड़े अंतरिक्ष के क्षेत्र अंतरिक्ष में फैले बिंदुओं का एक त्रि-आयामी नेटवर्क बनाते हैं। इनमें से किसी भी बिंदु के साथ अनुनाद में होना, उस इकाई की विशेष ग्रंथि के साथ अनुनाद में होना है। ग्रंथि की तरंगरूप को स्कैन करने की क्षमता किसी भी असामान्यता का पता लगाने के लिए मौजूद है। इसी प्रकार, यदि ग्रंथि की सामान्य या स्वस्थ तरंगरूप वाली ऊर्जा को इनमें से किसी विशिष्ट नेटवर्क बिंदु में प्रवाहित किया जाता है, तो ग्रंथि सामान्य या स्वस्थ अवस्था में आ जाएगी। इससे इसकी संरचना में सामान्य संरचना के साथ निकट संरेखण में स्वयं को पुनर्गठित करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है, अर्थात् ग्रंथि का उपचार होता है। इस ध्रुवीकरण क्षेत्र की उपस्थिति में उत्पन्न कोशिकाएं एक स्वस्थ विन्यास में विकसित होती हैं, जो ग्रंथि की संवेदनशीलता को कम करती है।

 असामान्य या रोगग्रस्त संरचना के मूल क्षेत्र को ठीक करती है और सामान्य या स्वस्थ संरचना के क्षेत्र को मजबूत करती है। निरंतर उपचार से अंततः स्वस्थ अंग की संरचना में सुधार होता है और रोग ठीक हो जाता है।
सभी बीमारियों की उत्पत्ति व्यक्ति के मन और आत्मा के स्तर तथा उस व्यक्ति के लिए निर्धारित सार्वभौमिक प्रतिरूप के बीच असामंजस्य से होती है। यह असामंजस्य क्रमिक रूप से शारीरिक स्तर तक पहुँचता है। स्थायी उपचार और पूर्णता के लिए मन और आत्मा के स्तर पर सार्वभौमिक प्रतिरूप के साथ सामंजस्य होना आवश्यक है। इसलिए, यदि मन और आत्मा के स्तर पर मूलभूत प्रतिरूप अपरिवर्तित रहता है, तो शारीरिक या यहाँ तक कि सूक्ष्म स्तर पर उपचार केवल अस्थायी होता है।
जीवन रूपों की विद्युतीय आयामों पर निर्भरता पर प्रख्यात खगोलशास्त्री गुस्ताफ स्ट्रोमबर्ग ने अपनी पुस्तक 'स्पिरिचुअल हीलिंग' में चर्चा की है। वे कहते हैं: "हमारे शरीर के किसी अंग को 'शरीर का रूप धारण करने' या 'अवतारित होने' के लिए कुछ रासायनिक पदार्थों का उपस्थित होना आवश्यक है, और उन्हें उस अमूर्त विद्युत सूक्ष्म संरचना में समाहित होना चाहिए, जो अब सभी जीवित संरचनाओं में विद्यमान मानी जाती है। ये 'जीवित क्षेत्र' विशेष प्रकार के अणुओं की गति को इस प्रकार निर्देशित करते हैं कि अंततः एक पूर्ण अंग का निर्माण होता है, जो स्वयं एक उच्च कोटि की जीवित प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा है।"
भौतिक शरीर के रासायनिक और विद्युत गुणों के बीच का सेतु कोलाइडल प्रणाली में निहित हो सकता है। "कोलाइड" शब्द ग्रीक भाषा के "गोंद" शब्द से आया है। परमाणु से अणु और फिर कोलाइड तक, हम ऊर्जा के भंवरों से निपट रहे हैं। सूक्ष्मदर्शी से देखने पर एक छोटा सा कण कोलाइड से कई गुना बड़ा होता है, जो परमाणु की तरह ही, एक "वस्तु" नहीं बल्कि ऊर्जा की एक इकाई है। शरीर को एक साथ रखने वाले लाखों-करोड़ों संवेदनशील कोलाइड सबसे छोटे कंपन से भी हिल सकते हैं। लेकिन जबकि कोलाइड एक ऊर्जा प्रणाली है, जब परिस्थितियाँ उन्हें

संघनित करती हैं, तो वे क्रिस्टलीय अवस्था में परिवर्तित हो जाते हैं जो आकार ले लेती है। दूसरे शब्दों में, ऊर्जा पैटर्न को भौतिक पदार्थ में स्थानांतरित किया जा सकता है, और यह संभव है।

120 पिरामिडों की गुप्त शक्ति यह है कि यह कोलाइडल स्तर पर है - कंपन और पदार्थ के बीच की अवस्था - कि विद्युत चुम्बकीय बल जैसे कि पिरामिड द्वारा संवर्धित या उत्पन्न बल पदार्थ को प्रभावित करते हैं।
शरीर के उपचार में चुंबकत्व का उपयोग बहुत प्राचीन काल से होता आ रहा है; यह कितना पुराना है यह तो ज्ञात नहीं है, लेकिन प्रारंभिक यूनानियों ने चिकित्सा में चुंबकत्व के उपयोग के बारे में इस प्रकार बात की मानो यह ज्ञान बहुत लंबे समय से मौजूद था।
लगभग सन् 1000 ईस्वी में अरब के चिकित्सक एविसेना ने जिगर की बीमारी के इलाज के लिए चुम्बकों का इस्तेमाल किया था। 10वीं शताब्दी के प्रसिद्ध फारसी चिकित्सक अली अब्बास ने अपनी पुस्तक 'परफेक्ट बुक ऑफ द आर्ट ऑफ मेडिसिन' में लिखा है कि चुंबकत्व से गठिया और ऐंठन ठीक हो सकती है। 1500 के दशक के आरंभ में स्विस चिकित्सक और रसायनशास्त्री पैरासेल्सस ने जलोदर, पीलिया और कई अन्य बीमारियों के इलाज में चुम्बकों का उपयोग किया। 16वीं शताब्दी में एम्ब्रोइस पारे ने बताया कि कुछ चिकित्सक शल्य चिकित्सा के घावों को भरने में मदद के लिए धातु और लोहे के बुरादे का उपयोग करते थे। महारानी एलिजाबेथ के निजी चिकित्सक विलियम गिलबर्ट ने चिकित्सा में चुंबकत्व की प्रभावशीलता को नकार दिया। दूसरी ओर, अमेरिकी चिकित्सक एलिसा पर्किन्स ने 1776 में बीमारी और दर्द के इलाज के लिए पर्किन्स के धातु के ट्रैक्टरों का पेटेंट कराया। कहा जाता है कि जॉर्ज वाशिंगटन उनके ग्राहकों में से एक थे। बाद में गेलॉर्ड विल्शायर ने अपने आयोनिको का पेटेंट कराया, जो एक चुंबकीय कॉलर था जिसके बारे में कहा जाता था कि यह रक्त को चुम्बकित करता है और कई बीमारियों को ठीक करता है।
पिछले सौ वर्षों में दिए गए कुछ पेटेंटों पर एक नज़र डालने से चिकित्सा उपकरण के रूप में चुंबकत्व की निरंतर भूमिका का प्रमाण मिलता है। 1869 में एक ऐसे उपकरण के लिए पेटेंट दिया गया जिसमें मानव शरीर में चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करने के लिए एक अंडाकार कुंडली शामिल थी। इसके तुरंत बाद उपचारात्मक चुंबकों से युक्त वस्त्रों के लिए कई पेटेंट दिए गए। डॉ. ई. एच. फ्री, बेंजामिन अब्राम्स प्रोफेसर ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स और वीज़मैन इंस्टीट्यूट के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग के प्रमुख, ने अपने लेख "चुंबकत्व के चिकित्सा अनुप्रयोग" में, जो अक्टूबर 1972 के बुलेटिन में प्रकाशित हुआ था, इस विषय पर चर्चा की है।

परमाणु वैज्ञानिकों ने चुंबकीय कोर्सेट के लिए जारी किए गए पेटेंट के विवरण का हवाला दिया है: लंबे समय तक चले प्रयोगों और शारीरिक अध्ययन के परिणामस्वरूप हुए इस आविष्कार का उद्देश्य चुंबकीय और विद्युत उपचारात्मक उपकरणों को मानव शरीर पर आसानी से लागू करना है, जिनकी प्रभावकारिता अब छाती, हृदय और मस्तिष्क संबंधी बीमारियों में स्वीकार की जा चुकी है, जो विशेष रूप से घबराहट वाले स्वभाव और गतिहीन जीवनशैली वाले व्यक्तियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
19वीं शताब्दी के अंत तक चिकित्सा उपचार के लिए कई तरह की वस्तुओं का पेटेंट कराया गया, जिनमें चुंबकीय कुर्सी, टोपी का पट्टा, सोफा और पदक शामिल थे। 1904 में चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करके तंत्रिका संबंधी विकारों से पीड़ित रोगियों के उपचार के लिए दो मशीनों का पेटेंट

कराया गया। इसके बाद कई अन्य चुंबकीय चिकित्सा उपकरणों का भी पेटेंट कराया गया।
टोक्यो के एस. माएशिमा को एक उपकरण के लिए अमेरिकी पेटेंट प्राप्त हुआ...
"...मानव शरीर में चुंबकत्व संचारित करने के लिए, जो तंत्रिका परिधि और ऊतक कोशिकाओं को हल्का सा उत्तेजना देकर रक्त परिसंचरण और त्वचा स्राव को तेज करता है और चयापचय को नियंत्रित करता है, जिससे स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है और बीमारियों को दूर रखा जाता है या उनसे उबरने में सहायता मिलती है।"
डॉ. फ्रेई के अनुसार, यह पेटेंट 1922 में जारी किया गया था। उन्होंने यह भी बताया कि कई देशों ने एक चुंबकीय ढाल के लिए पेटेंट जारी किए हैं जो चिकित्सक के हाथ को चुंबकीय क्षेत्र से बचाने के लिए होता है जब वह अपने रोगियों के हृदय पर एक छोटा एल्निको चुंबक लगाता है।
1967 में चिकित्सा उद्देश्यों के लिए नियंत्रणीय चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करने वाली एक मशीन के लिए पेटेंट प्रदान किया गया था। इस पेटेंट में दावा किया गया है कि यह मशीन इस क्षेत्र में पहले किए गए कार्यों पर आधारित है और इसमें उन कार्यों का भी हवाला दिया गया है जिनमें दावा किया गया है कि चुंबकीय क्षेत्र बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमा करने में सक्षम हैं।

122 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
सन् 1892 में थॉमस एडिसन की प्रयोगशाला में चुंबकीय क्षेत्रों के प्रभाव पर कई वैज्ञानिक प्रयोग किए गए। कुत्तों और स्वयं प्रयोगकर्ताओं को कई हजार गॉस के चुंबकीय क्षेत्र में रखा गया, लेकिन उन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। हालांकि, कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि एक गॉस से अधिक तीव्रता वाले न होने वाले कमजोर भूचुंबकीय क्षेत्र की भी जैविक क्रियाओं में भूमिका होती है। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि पक्षी और समुद्री कछुए दिशा-निर्देश और घर लौटने के लिए भूचुंबकीय क्षेत्र का उपयोग करते हैं, और समय के साथ क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों का मानसिक अस्पतालों में भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या से कुछ हद तक संबंध पाया गया है।
डॉ. फ्रेई का मानना है कि अंतिम उत्पादों की अलग-अलग संवेदनशीलता के कारण चुंबकीय क्षेत्र में रासायनिक प्रक्रियाओं का संतुलन बदल सकता है। उन्होंने कहा, "आयनों की गति से जुड़ी कोई भी प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है क्योंकि चुंबकीय क्षेत्र में आयन का मार्ग बदल जाता है, और यह एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता है क्योंकि आयन जैविक झिल्लियों से गुजरते हैं।"
इससे पहले सिस्टर जस्टा स्मिथ के एंजाइम गतिविधि पर चुंबकीय क्षेत्रों के प्रभाव से संबंधित कार्य का उल्लेख किया गया था और डॉ. फ्रेई ने कहा, "ऐसे संकेत हैं कि क्षेत्र में एंजाइमों की क्रिया में बदलाव होता है। इन चुंबकीय प्रभावों को समझाने के लिए कोई पुख्ता सिद्धांत मौजूद नहीं हैं, हालांकि मोटे तौर पर किए गए विश्लेषणों से पता चलता है कि कुछ हजार गॉस तक के क्षेत्रों में ये प्रभाव बहुत कम होने चाहिए। हालांकि, यह माना जा सकता है कि जैविक प्रणालियों में बहुत छोटे प्रभाव भी जमा होकर महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।"
रूस से मिली रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि चुंबकत्व का उपयोग घावों को भरने (एस्टेबानी, जिनका सिस्टर जस्टा स्मिथ द्वारा कई हजार गॉस का चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करने के लिए परीक्षण किया गया था, ने अपनी उपचार शक्तियों का पहली बार तब पता लगाया जब उन्होंने पाया कि वह घायल सैनिकों का इलाज कर सकते हैं) और ट्यूमर के विकास में किया गया है, जबकि एक अन्य शोध में बताया गया है कि चुंबकीय क्षेत्र रक्त के थक्के जमने के समय को प्रभावित कर सकते हैं।
यह ज्ञात है* कि समय के साथ बदलने वाले चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न करते हैं

विद्युत विभव और ज्ञात घटनाओं को इन विभवों से उत्पन्न धाराओं के संदर्भ में समझा जा सकता है। इसमें तथाकथित चुंबकीय फॉस्फेन भी शामिल हैं। इनका अध्ययन किया गया है और इस प्रभाव की तुलना अन्य प्रकाश उत्पन्न करने वाले उद्दीपनों, जैसे दबाव और विद्युत आवेगों से की गई है। (ग्रेट पिरामिड में राजा के कक्ष के चारों ओर ग्रेनाइट की शिलाएं ऊपर के पत्थर के अत्यधिक दबाव के कारण पीजोइलेक्ट्रिक प्रभाव उत्पन्न कर सकती हैं।) चुंबकीय फॉस्फेन को कभी-कभी दृश्य क्षेत्रों की सीमाओं में दिखाई देने वाली हल्की नीली झिलमिलाती रोशनी कहा जाता है, जो मानव सिर पर 10 से 100 हर्ट्ज के प्रत्यावर्ती क्षेत्र लगाने से उत्पन्न होती हैं। कुछ वैज्ञानिक इस घटना को बदलते चुंबकीय क्षेत्रों के परिणामस्वरूप विद्युत चुम्बकीय प्रेरण के माध्यम से समझाते हैं। फिर भी, यह सिद्धांत अंतर्निहित घटना को ध्यान में नहीं रखता है और यह नहीं बताता है कि प्रकाश भौतिक रूप से कैसे उत्पन्न होता है। जबकि अधिकांश शोधकर्ताओं का मानना है कि यह प्रभाव केवल प्रकाश में ही देखा जाता है, अन्य प्रमाण बताते हैं कि इसे अंधेरे में भी घटित होते देखा गया है। किसी विशिष्ट वस्तु को घूरने से यह प्रभाव बढ़ जाता है। यह दिलचस्प है कि आभा पढ़ने की क्षमता विकसित करने के लिए किए जाने वाले आध्यात्मिक अभ्यासों में से एक परिधीय दृष्टि का विकास है। सजीव और निर्जीव वस्तुओं, विशेषकर मनुष्यों के चारों ओर मौजूद यह विद्युत आवरण कभी-कभी एक पतली नीली रोशनी के रूप में दिखाई देता है। डॉ. पिएराकोस, जिनके कार्य का वर्णन इस पुस्तक में अन्यत्र किया गया है, ने पौधों, जानवरों और मनुष्यों के चारों ओर की आभा या ईथर क्षेत्र को बेहतर ढंग से देखने के लिए एक प्रकार का नीला कांच विकसित किया। इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए, यह रिपोर्ट कि कभी-कभी ग्रेट पिरामिड से हल्की नीली रोशनी निकलती है, इसके चुंबकीय गुणों के सिद्धांतों का समर्थन करती है।
बैरन रीचेनबैक द्वारा विकसित ओडिक बल की प्रकृति से संबंधित कुछ अवधारणाओं का परीक्षण करते समय, वियना के प्रोफेसर डी. एनलिचर ने देखा कि विद्युत चुम्बकीय ज्वालाएं कभी-कभी 40 इंच तक पहुंच जाती हैं और रंगों का एक समृद्ध खेल प्रदर्शित करती हैं जो हल्के नीले रंग के चमकदार धुएं में समाप्त होती है।

124 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

इसी संदर्भ में, 1959 में प्रकाशित इलेक्ट्रॉनिक मेडिकल डाइजेस्ट के द्वितीय तिमाही अंक में "क्या प्रत्यावर्ती निम्न आवृत्ति चुंबकीय ऊर्जा जीवित ऊतकों को प्रभावित करती है?" शीर्षक से प्रकाशित ग्रंथसूची पर ध्यान देना आवश्यक है। यह ग्रंथसूची इस प्रश्न का उत्तर खोजने के प्रयास में किए गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों को समाहित करती है। कैलिफोर्निया के बेलमोंट स्थित अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ रेडिएशन में किए गए दो वर्षीय अध्ययन के अनुसार, इसका उत्तर हाँ है। ग्रंथसूची में 27 लेखकों के नाम और अनेक तकनीकी पत्रिकाओं के संदर्भ दिए गए हैं। ये लेख केवल प्रत्यावर्ती निम्न आवृत्ति क्षेत्रों के प्रभाव तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि कई मामलों में ऊतकों, कोशिकीय वृद्धि, दर्द निवारण, तंत्रिका संबंधी समस्याओं, ट्यूमर, पौधों में वृद्धि प्रतिक्रियाओं आदि पर स्थायी चुम्बकों के चिकित्सीय प्रभावों से संबंधित हैं। रेडिएस्थेसिस के विकास, विशेष रूप से यूरोप में, आभा और ईथर शरीर की प्रकृति के बढ़ते अध्ययनों और चिकित्सा इलेक्ट्रॉनिक्स के संपूर्ण क्षेत्र में इस ग्रंथसूची में बहुत सी प्रासंगिक सामग्री देखने को मिलती है।
पिरामिडों में बैठने या ध्यान करने वाले लोग कभी-कभी नीले रंग के प्रकट होने का ज़िक्र करते

हैं। विल्हेम रीच का दावा था कि द्रव्यमान रहित ब्रह्मांडीय जीवन ऊर्जा, ऑर्गेन ऊर्जा का रंग नीला होता है। ऑर्गेन ऊर्जा संचायक एक छह-पहलू वाला डिब्बा होता है जिसे "ओराकु" कहा जाता है। इसकी भुजाएँ कार्बनिक और अकार्बनिक पदार्थों की बारी-बारी से परतों से बनी होती हैं। भीतरी दीवार लोहे की पतली चादर से ढकी होती है। ऐसा माना जाता है कि इस व्यवस्था से वायुमंडलीय ऑर्गेन ऊर्जा का सामान्य से कहीं अधिक संकेंद्रण संभव हो पाता है।
ओरैकस में थोड़े समय के लिए परीक्षण किए गए विषयों के रक्त के नमूनों से लाल रक्त कोशिकाओं का ऑर्गेनोटिक चार्ज पता चलता है। विल्हेम रीच ने 'द कैंसर बायोपैथी' में कहा, "ऑटोक्लेवेशन के बाद, यह चार्ज नीले बायोन्स में प्रकट होता है।" उन्होंने आगे कहा, "ऑटोक्लेवेशन के बाद, ऑर्गेनोटिक चार्ज की कमी नीले बायोन्स की अनुपस्थिति और टी-बैसिलस की उपस्थिति में प्रकट होती है, जो लाल रक्त कोशिकाओं के अपघटन (टी-प्रतिक्रिया) के परिणामस्वरूप होती है।"

उपचार शक्तियाँ 125
"टी-प्रतिक्रिया उन्नत कैंसर के उन क्षेत्रों में विशिष्ट होती है जहां शरीर द्वारा व्यवस्थित रोग (कैंसर की जैविक विकृति) और स्थानीय ट्यूमर के खिलाफ संघर्ष में रक्त में मौजूद ऑर्गेन की मात्रा पूरी तरह से समाप्त हो जाती है। यह टी-प्रतिक्रिया आमतौर पर एनीमिया के किसी भी लक्षण से पहले मौजूद होती है और अक्सर स्पष्ट ट्यूमर बनने से बहुत पहले ही कैंसर की प्रक्रिया को प्रकट कर देती है। ... दूसरी ओर, ऑर्गेन ऊर्जा में कमजोर लाल रक्त कोशिकाएं ऑर्गेन संचायक द्वारा शरीर को आपूर्ति की जाने पर इसे लालचपूर्वक अवशोषित कर लेती हैं। बाद के ऑटोक्लेवन परीक्षणों से टी-प्रतिक्रिया से बी-प्रतिक्रिया में परिवर्तन दिखाई देता है, अर्थात् लाल रक्त कोशिकाएं ऑटोक्लेवन के प्रति अधिक प्रतिरोधी हो जाती हैं; उनमें अधिक ऑर्गेन होता है। ... लाल रक्त कोशिका को वायुमंडलीय ऑर्गेन ऊर्जा द्वारा आवेशित किया जा सकता है।"
भारतीय वैज्ञानिक दिनशाह पी. घड़ियाली, जो डॉ. जगदीश बोस के शोध से बहुत प्रभावित थे (जिनके कार्यों पर पौधों से संबंधित अध्याय में चर्चा की गई है), ने रंगीन प्रकाश के उपयोग से उपचार की एक प्रणाली की स्थापना की, जिसे उन्होंने "स्पेक्ट्रो-क्रोम मेट्री" नाम दिया। घड़ियाली के अनुसार, नीले प्रकाश का विकिरण सूजन को शांत करता है, संक्रमण को दूर करता है और शरीर के विद्युत रासायनिक गुणों को संतुलित करके उपचार में सहायक होता है।
दीनशाह ग़ाडियाली के अनुसार, नीली रोशनी लाल रंग के हाइड्रोजन को बेअसर कर देती है, और "हाइड्रोजन की आत्मीयता के कारण, यह अनुकूलित रंग तरंग ऑक्सीजन का प्रतिनिधित्व करती है। पानी, H_2O, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के रासायनिक संयोजन का परिणाम है और स्पेक्ट्रोक्रोम के निर्माण में प्रयुक्त गणितीय सटीकता का एक और प्रमाण है। यह सबसे उदासीन यौगिक है। ... पसीना लाने वाला प्रभाव बुखार और सूजन संबंधी प्रक्रियाओं में हाइड्रोजन पर ऑक्सीजन की विजय का परिणाम है। इसलिए, वास्तव में नीले रंग का शीतलक प्रभाव पसीने के उत्पादन पर निर्भर करता है, क्योंकि रसायन विज्ञान के एक नियम के अनुसार, वाष्पीकरण हमेशा संघटक अणुओं के विस्तार के कारण ठंड उत्पन्न करता है, जिससे ऊष्मा निकलती है," वे अपने स्पेक्ट्रो-क्रोम मेट्री विश्वकोश के खंड 3 में बताते हैं।

126 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
इस घटना पर रीच ने अपनी पुस्तक "द कैंसर बायोपैथी" में और प्रकाश डाला है: "लाल रक्त कणिका एक लघु रूपी ऑर्गेनोटिक तंत्र है, जिसकी झिल्लियों के भीतर थोड़ी मात्रा में ऑर्गेन

ऊर्जा होती है। 4000 गुना आवर्धन पर, लाल रक्त कणिकाएं गहरे नीले रंग की झिलमिलाहट और अपने भीतर के पदार्थों का जीवंत कंपन दिखाती हैं। वे फैलती और सिकुड़ती हैं, इसलिए कठोर नहीं होतीं, जैसा कि आमतौर पर माना जाता है। वे फेफड़ों से ऊतकों तक वायुमंडलीय ऑर्गेन ऊर्जा का परिवहन करती हैं। वायुमंडलीय ऑक्सीजन और ऑर्गेन ऊर्जा के बीच संबंध की प्रकृति का अभी केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। क्या ऑर्गेन हवा के रासायनिक कणों के समान है या उनसे मौलिक रूप से भिन्न है, यह अज्ञात है। ... ऑर्गेनोटिक आवेश लाल रक्त कणिकाओं के आकार और संरचना में भी प्रकट होता है। कमजोर आवेश वाली कोशिकाएं कमोबेश सिकुड़ी हुई होती हैं और उनमें एक संकीर्ण नीला किनारा होता है जो मंद रूप से झिलमिलाता है। एक बार जीव आवेशित हो जाने पर, लाल रक्त कोशिकाएं फूल जाती हैं, जबकि नीला किनारा तीव्र और चौड़ा हो जाता है, कभी-कभी पूरी कोशिका को भी ढक लेता है। कोई रोगजनक सूक्ष्मजीव इन जैविक रूप से अत्यधिक आवेशित लाल रक्त कोशिकाओं के आसपास जीवित रह सकते हैं।"

रीच और घड़ियाली के शोध से संकेत मिलता है कि वायुमंडल में एक प्रकार का ऊर्जा क्षेत्र मौजूद है जिसे एकत्रित करके भौतिक शरीर के विद्युत रासायनिक गुणों की ओर लाभकारी ढंग से निर्देशित किया जा सकता है। नीले प्रकाश या आभा के संदर्भ ऊर्जा क्षेत्र में विद्युत चुम्बकीय गुणों की उपस्थिति की ओर इशारा करते प्रतीत होते हैं। पिरामिड के आसपास नीले प्रकाश का अवलोकन या पिरामिड के भीतर बैठकर ध्यान करने वाले व्यक्तियों द्वारा इसका अनुभव इस बात का प्रमाण देता है कि पिरामिड भी समान या मिलते-जुलते विद्युत चुम्बकीय बल उत्पन्न करने की घटना में भागीदार है। ये अवलोकन, साथ ही नीले प्रकाश, ऑर्गेन ऊर्जा और विभिन्न प्रकार की विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा द्वारा रोगों और पीड़ाओं के उपचार के वर्णन और पिरामिड द्वारा कथित रूप से उत्पन्न उपचारों के बीच समानताएं, कुछ सामान्य कारकों की ओर इशारा करती हैं।

बहरहाल, हमारे और अन्य लोगों के प्रयोगों से पिरामिड शक्ति के परिणामस्वरूप होने वाली कुछ उपचार संबंधी घटनाओं के सभी संकेत मिले हैं। हमने बार-बार अपेक्षित समय से कम समय में घाव, चोटें, मोच आदि ठीक किए हैं, और उपचार संबंधी प्रयोगों के संबंध में हमें प्राप्त कई लोगों के कुछ प्रतिनिधि बयान निम्नलिखित हैं:

फ्लोरेंस हिल: "मेरे कई दांतों में दर्द हो रहा था और पिरामिड आसन में कुछ देर रहने के बाद दर्द कम हो गया, लेकिन मुझे अभी भी अपने दांतों पर कोई दबाव महसूस हो रहा था। मुझे अपने पूरे हाथ-पैरों में झुनझुनी सी महसूस हो रही थी। मुझे लगता है कि मेरी हृदय गति धीमी हो गई थी और मुझे चारों ओर नीला रंग दिखाई दे रहा था।"

एफी जोर्गेनसन का पिरामिड ध्यान तम्बू में अनुभव: "मुझे नाक बंद थी और पूरे शरीर में दर्द था। एक घंटे के अंदर ही मुझे सिर में काफी आराम मिला। पहले 30 मिनट तक मुझे झुनझुनी सी महसूस हुई। साइनस से गंदगी अच्छे से निकल गई; एक घंटे बाद जोड़ों का दर्द भी ठीक हो गया।"

मैरी स्टॉल्ट: "मेरे पति को लंबे समय से पीठ दर्द था और अब उन्हें आराम मिल गया है।" और एक अन्य अवसर पर: "बहुत तेज सिरदर्द था। केवल 20 मिनट बैठने से ही आराम मिल गया।"

डेव विलकॉक्स: "मेरे बेडरूम में एक बड़ा पिरामिड है जिसके नीचे मैं सोता हूँ। मेरी ऊर्जा का स्तर पहले से अधिक है और मैं पहले से कहीं अधिक स्वस्थ महसूस करता हूँ।"

जे.एम.: "मेरा एक एक्सीडेंट हो गया था और पिरामिड में बैठने से मुझे अपने अंगों की गतिशीलता में काफी सुधार करने में मदद मिली है।"

एक महिला के अंगूठे पर ग्यारह साल से मस्से जैसी गांठ थी और वह उसे जितना ज्यादा खुजलाती थी, वह उतनी ही बड़ी होती जाती थी। उसने एक ही दिन में दो बार 15-15 मिनट के लिए अंगूठे को एक छोटे पिरामिड के नीचे रखा और अगले दिन मस्सा गायब हो गया।
एक व्यक्ति ने हमें बताया कि वह कई दिनों से पॉइज़न आइवी संक्रमण से पीड़ित था, लेकिन पिरामिडनुमा आसन में बैठने के बाद अगले ही दिन संक्रमण पूरी तरह से ठीक हो गया। एक अन्य व्यक्ति ने बताया कि काम करने के बाद

कुछ समय के लिए पिरामिडों के साथ रहने के कारण उसकी नब्ज धीमी हो गई।
80 के दशक से 60 के दशक तक।
हमने एक जरबेल को एक छोटे पिरामिड के अंदर रखा। जब तक वह पिरामिड के अंदर रही, उसका घर साफ-सुथरा और घोंसला व्यवस्थित था। जब उसके पिंजरे को पिरामिड से बाहर निकाला गया, तो उसने हर जगह गंदगी बिखेर दी। एक बार उसका चेहरा पिंजरे से बुरी तरह कट गया और हमें लगा कि उसकी एक आंख खराब हो जाएगी। घाव या आंख पर कोई दवा नहीं लगाई गई, लेकिन पिरामिड के नीचे वापस रखे जाने के बाद उसकी आंख पूरी तरह ठीक हो गई, निशान गायब हो गया और उसके बाल पहले की तरह उग आए।
विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों के चिकित्सीय उपयोग के संबंध में, डॉ. फ्रेई ने पहले उल्लेखित लेख में कहा है कि मांसपेशियों की उत्तेजना एक ऐसा क्षेत्र है जहां हाल ही में कुछ शोध किए गए हैं और परिणामों से पता चलता है कि चुंबकीय क्षेत्र में परिवर्तन होने पर लगभग सभी मांसपेशियां सिकुड़ती हैं। वे कहते हैं, "यह व्यापक रूप से माना जाता है कि उत्तेजना विद्युतीय प्रकृति की होती है जो विद्युत चुम्बकीय प्रेरण के कारण होती है। बदलते चुंबकीय क्षेत्र द्वारा उत्पन्न विद्युत क्षेत्र कोशिका के माध्यम से धारा प्रवाहित कर सकता है और इस प्रकार सभी प्रकार की मांसपेशियों को उत्तेजित कर सकता है। ... मांसपेशियों के अध्ययन का महत्व हृदय की मांसपेशियों को उत्तेजित करने की संभावना में निहित है, जो आंतरिक रूप से इलेक्ट्रोड डालने से पहले आपातकालीन पेसमेकिंग में अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है।"
चिकित्सा क्षेत्र में अन्य अनुप्रयोगों के संदर्भ में, फ्रेई बताते हैं: "इस प्रकार के उद्दीपन का एक और अनुप्रयोग मस्तिष्क के प्रांतस्था (कोर्टेक्स) के संभावित उद्दीपन में निहित हो सकता है। ऐसी आशा है कि उचित रूप से डिज़ाइन किए गए समय-परिवर्ती चुंबकीय क्षेत्रों का उपयोग करके मस्तिष्क में ऐसी घटनाओं को उत्तेजित किया जा सकता है जिन्हें अन्यथा केवल खोपड़ी के नीचे इलेक्ट्रोड डालकर ही उत्पन्न किया जा सकता है।"
एक जाने-माने और बेहद सफल कायरोप्रैक्टर ने हमें बताया कि वे एक छोटी धातु की प्लेट को लघु पिरामिडों की एक श्रृंखला के ऊपर रखकर उसे आवेशित करते थे। धातु के पिरामिड आयताकार आकार में अपने आधारों पर जुड़े होते हैं, पाँच इकाइयाँ।

तीन इकाइयों द्वारा, कुल पंद्रह। वह शरीर के प्रभावित हिस्सों के बायोरिदम को बढ़ाने के लिए चार्ज्ड प्लेट का उपयोग करता है और दावा करता है कि यह काफी सफल है।
कुछ साल पहले फेट पत्रिका में जोसेफ एफ. गुडवेज द्वारा लिखे गए एक लेख के अनुसार, न्यूयॉर्क शहर के स्त्री रोग विशेषज्ञ और कोशिका विज्ञानी डॉ. के. ई. मैक्लीन ने कैंसर के उन्नत मामलों के उपचार में एक विद्युत चुम्बकीय सक्रियक का उपयोग किया था। गुडवेज ने मैक्लीन के

हवाले से कहा, "कैंसर एक मजबूत चुंबकीय क्षेत्र में जीवित नहीं रह सकता।"
गुडवेज के अनुसार, उपचार का एक दुष्प्रभाव बालों में पिगमेंटेशन की बहाली थी, "ज्यादातर मामलों में चांदी जैसे सफेद रंग से बालों का रंग उनके पहले के प्राकृतिक रंग में वापस आ गया। डॉ. मैक्लीन के पूरे सिर के बाल गहरे भूरे रंग के हैं; वे लगभग पांच वर्षों से प्रतिदिन 3600 गॉस के चुंबकीय क्षेत्र के संपर्क में आ रहे हैं। वे लंबे और एथलेटिक दिखते हैं और लगभग 45 वर्ष के प्रतीत होते हैं। उनकी उम्र 64 वर्ष है।"
हमारे प्रयोगों से पता चला है कि उत्तर-दक्षिण अक्ष पर स्थित पिरामिड की विशिष्ट आकृति ही असामान्य ऊर्जा क्षेत्र उत्पन्न करती है। यद्यपि पारंपरिक पिरामिड आकृति ही ऊर्जा क्षेत्र उत्पन्न करने या बढ़ाने वाली एकमात्र आकृति नहीं हो सकती है—जैसा कि हमने पौधों पर शंकु आकृति का परीक्षण करते समय पाया—लेकिन हमारे शोध से पता चला है कि घन समान परिणाम नहीं देते हैं।
फिर भी हम अपना अधिकांश जीवन घनाकार संरचनाओं के भीतर ही व्यतीत करते हैं। वैज्ञानिक, गणितज्ञ, लेखक, वास्तुकार और जियोडेसिक डोम के आविष्कारक बकमिनस्टर फुलर के अनुसार, यह अनुचित है। फुलर का मानना है कि घर, कार्यालय भवन, गिरजाघर या किसी भी प्रकार की इमारत घनाकार नहीं होनी चाहिए, और वे बताते हैं कि यह बात विशेष रूप से अस्पतालों या अन्य चिकित्सा केंद्रों के लिए सत्य है।
शायद जिन "घनों" में हम रहते हैं, वे ऊर्जा क्षेत्रों को इस तरह विकृत या बाधित करते हैं कि हम या तो उनके लाभकारी प्रभाव से वंचित हो जाते हैं या परिवर्तित तरंग रूपों से नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। ऐसा संभव है।

130 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
भविष्य में निवारक चिकित्सा का अभ्यास इंजीनियरों और वास्तुकारों द्वारा किया जाएगा। तब घरों को उनके चिकित्सीय गुणों के आधार पर बढ़ावा दिया जा सकेगा।

8. कायाकल्प
आजकल जवानी बनाए रखने के लिए विटामिन ई, जिंक की गोलियां और गुलाब के फल जैसे नुस्खे खूब प्रचारित किए जा रहे हैं, लेकिन आज का नुस्खा कल तक पुराना पड़ सकता है। खोज अभी भी जारी है, खीरे के तेल या आड़ू के साबुन के नए-नए फॉर्मूले से लेकर फॉर्मूला एक्स, फेस लिफ्ट, नमक के झरनों में स्नान, नवीनतम आइसोमेट्रिक्स, पैंटोथेनिक एसिड और मधुमक्खी के पराग की खुराक और योग श्वास तक, सब कुछ आजमाया जा रहा है।
बेशक, सभी तरीके एक जैसे नहीं हैं, और ऊपर बताए गए कुछ तरीकों के अपने-अपने फायदे हैं। विटामिनों के यौवन प्रदान करने वाले गुणों के बारे में ठोस तर्क दिए जा सकते हैं और सही साँस लेने और उचित व्यायाम के महत्व पर शायद ही कोई सवाल उठाएगा। फिर भी, मनुष्य इन परिणामों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं है; उसे लगता है कि वह और बेहतर कर सकता है।
कुछ लोगों का मानना है कि इस धरती पर सत्तर वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहने के उदाहरण मौजूद हैं। वे पुराने नियम के उन व्यक्तियों का हवाला देते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे कई सौ वर्ष तक जीवित रहे, और अटलांटिस से जुड़ी किंवदंतियों का भी।

जहां के निवासियों ने भी उतना ही अच्छा प्रदर्शन किया। जो लोग अधिक समसामयिक सामग्री की तलाश में हैं, उनके लिए भारत और तिब्बत के कुछ धर्मगुरुओं का उल्लेख किया गया है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे अपने समय को दूसरी शताब्दी या उससे भी आगे तक ले जाते हैं।

कई साल पहले, हमारे गुरु स्वामी एच. एच. रामा, जो एक उच्च प्रशिक्षित भारतीय वैज्ञानिक हैं, ने हमें बताया कि उनके गुरु लगभग 150 वर्ष के थे और इसे सिद्ध किया जा सकता है। जब हमने उनसे पूछा कि वे इतने लंबे समय तक कैसे जीवित रह पाए, तो उन्होंने कहा, "क्योंकि उन्होंने इसके लिए विशेष ऊर्जा क्षेत्रों का उपयोग करना सीख लिया है।" हमारे पास उनकी बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है, खासकर इसलिए कि ऐसी कहानियां आम हैं। हमारे एक मित्र ने हिमालय में कुछ समय बिताया और दावा किया कि उनका कई एकांतवासी संतों से संपर्क हुआ था, जिनकी यादें उन्नीसवीं शताब्दी तक फैली हुई थीं।

जैक पार, एक अंग्रेज, 175 वर्ष की आयु तक जीवित रहे। वे काफी प्रसिद्ध हुए और शाही दरबार में उनके लिए आयोजित एक पार्टी के दौरान अत्यधिक भोग-विलास के कारण उनकी मृत्यु हो गई। पोस्टमार्टम से पता चला कि शराब, भोजन और संगीत के अत्यधिक सेवन के अलावा उनमें कोई विशेष बीमारी नहीं थी।

हाल ही में पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में रूस के शत वर्ष से अधिक आयु के लोगों पर कई लेख प्रकाशित हुए हैं, जिनमें से कुछ 130 और 140 वर्ष की आयु में भी काम कर रहे हैं। तो... हमारे बुजुर्ग नागरिक शायद असंभव सपना नहीं देख रहे हैं। शायद कहीं न कहीं कुछ रहस्य छिपे हुए हैं। लेकिन कहाँ? यही तो असली समस्या है। लेकिन प्रतिष्ठित और प्रतिबद्ध वैज्ञानिक अब युवावस्था को बनाए रखने वाले महत्वपूर्ण घटकों को अलग करने का प्रयास कर रहे हैं। आहार, पर्यावरण, जीवनशैली जैसे अधिक दृश्यमान कारकों को इसमें योगदान देने वाला माना जाता है। हालांकि, गहराई से जांच करने पर, यह आम सहमति प्रतीत होती है कि स्वास्थ्य और युवावस्था को बनाए रखने का अध्ययन कोशिकीय स्तर पर किया जाना चाहिए, जहाँ सारी क्रियाएँ होती हैं। इस संदर्भ में, यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि कोशिकाएँ क्यों कमजोर होती हैं और मर जाती हैं, और कोशिका निर्माण और कोशिका मृत्यु की दर में अंतर क्यों होता है।

कायाकल्प 133

कई प्रमुख वैज्ञानिकों के अनुसार, चिकित्सा का सबसे नया और आशाजनक क्षेत्र जैवविद्युत विज्ञान है, जो शरीर की विद्युतचुंबकीय प्रकृति का अध्ययन है। जैवविद्युत विज्ञान शारीरिक संरचना को बनाए रखने में यांत्रिक और रासायनिक कारकों के महत्व को नकारता नहीं है। हालांकि, उनका तर्क है कि विद्युतचुंबकीय या अन्य ऊर्जा क्षेत्रों द्वारा निभाई गई भूमिका को अनदेखा करना एक अधूरा और विकृत दृष्टिकोण अपनाना है।

शरीर का ऊर्जा क्षेत्र स्पष्ट रूप से केवल भौतिक संरचना तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके भीतर और कुछ हद तक इससे परे भी फैलता है। यह ऊर्जा क्षेत्र वही प्रतीत होता है जिसे रहस्यवादी और दिव्यदर्शी लोग आभा कहते हैं, और उनके अनुसार, कोशिकाओं, ऊतकों, अंगों आदि का क्षय सबसे पहले आभा के भीतर होता है। इसके बाद यह भौतिक शरीर में प्रकट हो सकता है, या संभवतः जैवविद्युत स्तर पर इसका उपचार या नियंत्रण किया जा सकता है।

एक ऊर्जा क्षेत्र सिद्धांत का दावा है कि प्रजनन में सक्षम सभी कोशिकाओं के नाभिक में उच्च चालकता वाले पदार्थ के तंतु होते हैं जो कुचालक माध्यमों से घिरे होते हैं। यह तंतु, जिसे कुछ लोग डीएनए-आरएनए कॉम्प्लेक्स मानते हैं, हमेशा सर्पिल या कुंडलित रूप में होता है; दूसरे

शब्दों में, एक कॉइल के रूप में। इसलिए, प्रत्येक कोशिका और उसका तंतु एक ट्यून्ड सर्किट की तरह प्रतिक्रिया कर सकता है यदि उसकी अनुनाद आवृत्ति को एक बाहरी दोलन स्रोत द्वारा अनुमानित किया जा सके। मल्टीवेव ऑसिलेटर के विकासकर्ता लखोवस्की और अन्य लोगों ने यह प्रस्तावित किया है कि नाभिक को विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा से उत्तेजित करके विद्युत चुम्बकीय प्रेरण के दीर्घकालिक सिद्धांत द्वारा परिवर्तन प्रेरित किया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि इससे प्रत्येक कोशिका का ऊर्जा स्तर और संभवतः जीवन शक्ति एक साथ बढ़ जाती है।
अब, दिलचस्प बात यह है कि पिरामिडों पर अब तक हुए शोध के अनुसार, कुछ संकेत मिले हैं कि ये विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, और अतिरिक्त अज्ञात ऊर्जा क्षेत्र, जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार की इलेक्ट्रोथेरेपी में किया जाता है, पिरामिडों में भी उत्पन्न हो रहे हैं।

134 पिरामिड संरचनाओं की गुप्त शक्ति। यह संभव है कि पिरामिड के आकार द्वारा उत्पन्न या संवर्धित विद्युत प्रेरक बल विद्युत अपघटन द्वारा कोशिका की चयापचय दर को बढ़ा सकते हैं, और संभवतः डीएनए-आरएनए "स्मृति" और प्रजनन क्षमताओं को उनकी पहले की, कम उम्र के स्तर तक वापस ला सकते हैं, जिससे कायाकल्प हो सकता है।
रूस के सौ वर्ष से अधिक आयु के लोगों की दीर्घायु में योगदान देने वाले कारकों में से एक विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा का उपयोग प्रतीत होता है। इस विशेष घटक के बारे में हमने इस देश में बहुत कम सुना है क्योंकि अधिकांश चिकित्सा जगत में इसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन यूरोप और एशिया के कुछ हिस्सों में, जहाँ मेस्मर, रीच, रीचेनबैक आदि के कार्यों का नए सिरे से अध्ययन किया जा रहा है, नई तकनीकों के ढांचे के भीतर जैवविद्युत चिकित्सा में अग्रणी भूमिका निभाई जा रही है। इन क्षेत्रों में शोध कर रहे वैज्ञानिक हमें बता रहे हैं कि हमें सिद्ध परिणामों के साथ रोमांचक अन्वेषण के एक बिल्कुल नए क्षेत्र के प्रति जागरूक होना चाहिए।
डॉ. आरोन एच. स्टाइनबर्ग ने ऐसा ही एक मिशन शुरू किया और जर्नल ऑफ बॉर्डरलैंड रिसर्च के लिए "विद्युतचुंबकत्व के साथ सेलुलर गतिविधि को उन्नत करना" शीर्षक से एक विचारोत्तेजक लेख लिखा।
स्टाइनबर्ग लिखते हैं, "कई वर्षों से विद्युतचुंबकीय विज्ञान और कोशिका जीवन पर इसके सकारात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक ज्ञान अज्ञानता की अलमारियों पर धूल और मकड़ी के जाले जमा करता रहा है, जिसका कारण सत्य से भयभीत होने वाले विशेष स्वार्थ हैं। अब हम एक तरह से पुनर्जन्म देख रहे हैं, जिसमें पेशेवर और शौकिया दोनों तरह के वैज्ञानिक अपने पूर्ववर्तियों के कार्यों की समीक्षा कर रहे हैं और चुंबकीय क्षेत्रों के यांत्रिक अनुप्रयोग में सुधार कर रहे हैं।"
वे 1969 में रूस गए ताकि वहाँ विद्युतचुंबकत्व के क्षेत्र में हो रहे कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकें। उन्होंने कहा, "सेवानिवृत्त लोगों के लिए बने कई ग्रामीण घरों में, मुझे यह देखकर अत्यंत सुखद आश्चर्य हुआ कि अधिकांश वृद्ध लोगों पर प्रतिदिन विद्युतचुंबकत्व का उपयोग किया जा रहा था। मुझे कहना चाहिए कि युवा लोगों पर, क्योंकि कई ऐसे लोग जो 100 वर्ष से अधिक उम्र के होने का दावा करते थे, वे दिखने और व्यवहार में लगभग 50 वर्ष के लोगों जैसे थे!
विद्युतचुंबकत्व का मुख्य उद्देश्य..."

कायाकल्प 135
विद्युत चुंबकत्व (ई-एम) का उद्देश्य कोशिका संरचना में परिवर्तन करके बुढ़ापे की प्रक्रिया को उलटना था। मैं उपकरण खरीदने के लिए बहुत उत्सुक था, लेकिन अफसोस, बिक्री नहीं हो रही थी।

"खोजो और पाओगे, यह हमेशा से मेरी प्रमुख विशेषताओं में से एक रही है। इसलिए जब मुझे पता चला कि जापान इस क्षेत्र में वास्तव में उन्नत है और 1936 से ही ऐसे उपकरणों का उपयोग कर रहा है, तो मैंने 1970 में वहां जाने का फैसला किया। मैंने उस कंपनी को खोजा जो इस क्षेत्र में सबसे अधिक उत्पादक रही थी। वे बहुत दयालु और सहयोगी थे। मुझे कई वैज्ञानिकों से मिलवाया गया जिन्होंने बहुत उपयोगी शोध किया था। उनके दावे वैज्ञानिक तथ्यों द्वारा समर्थित थे और मुझे विश्वास हो गया कि उनके पास एक सुव्यवस्थित उपकरण है, जिसे इच्छुक कोई भी आसानी से उपयोग कर सकता है। उन्होंने अपने उपकरण का नाम 'मैग्नेटाइज़र' रखा।"
स्टाइनबर्ग ने एक चुंबकक खरीदा और उसे संयुक्त राज्य अमेरिका ले आए, जहाँ उन्होंने तुरंत उस उपकरण पर शोध शुरू किया। उन्होंने कहा, "नौ महीने के प्रयोग के बाद, मैं यह बता सकता हूँ कि अब तक प्राप्त परिणाम अत्यंत अनुकूल रहे हैं। कुंडलियों द्वारा उत्पन्न चुंबकीय प्रवाह को शरीर के किसी भी भाग पर सटीक रूप से मापा जा सकता है, जिससे उन क्षेत्रों का पता लगाया जा सकता है जहाँ प्रवाह प्रभावी है और साथ ही उन क्षेत्रों का भी जहाँ यह कमजोर है।"
रसायन और प्रदूषण निस्संदेह हमारी कोशिकीय गतिविधि और मानव चुंबकीय क्षेत्र में अस्वास्थ्यकर परिवर्तन ला रहे हैं। इस गड़बड़ी को ठीक करने और नियंत्रित करने में कई साल लग जाएंगे, शायद कभी सुधार हो ही न पाए। लेकिन इस बीच, जो लोग जागरूक हैं और खतरे के संकेतों को पहचानते हैं, वे सफाई का इंतजार नहीं करेंगे, जो शायद कभी न हो। इसके बजाय वे अपनी कोशिकीय गतिविधि को उन्नत करने का प्रयास करेंगे ताकि शरीर की प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता उच्चतम स्तर पर पहुंच सके। कुछ संकेत मिलते हैं कि चक्र या भंवर के रूप में जाने जाने वाले आभा बल केंद्र विद्युत चुंबकत्व से उत्तेजित होते हैं।
स्टाइनबर्ग के अनुसार, उन्होंने जापानी वैज्ञानिकों के साथ सिद्धांत पर चर्चा करने में कुछ समय बिताया और जाना कि चुंबकीय प्रवाह सामान्य विद्युत धारा से भिन्न होता है, जो केवल भौतिक पदार्थ की सतह के अनुदिश प्रवाहित होती है।

यह एक्स-रे से भी अलग है जो हड्डियों को भेद नहीं पाते। दूसरी ओर, चुंबक द्वारा उत्पन्न अति-लंबी तरंगों का चुंबकीय प्रवाह मांसपेशियों, वसा और हड्डियों में गहराई तक प्रवेश करता है और तंत्रिकाओं पर गहन प्रभाव डालता है।
स्टाइनबर्ग का दावा है, "चुंबकीय प्रवाह शरीर में दर्द या झटके जैसी अप्रिय संवेदनाएँ कभी उत्पन्न नहीं करता, बल्कि सुखद गर्माहट का एहसास कराता है। इन संवेदनाओं को जूल की ऊष्मा भी कहा जाता है, जो कोशिका के कार्य को मजबूत करती है, ऐंठन और सूजन को ठीक करती है। जब चुंबकीय प्रवाह ऊतकों से गुजरता है, तो ऊतक कोशिकाओं में चुंबकीय बल रेखाओं के चारों ओर एक द्वितीयक विद्युत धारा उत्पन्न होती है जिसे एड़ी धारा कहते हैं। यह प्रोटोप्लाज्म को आयनित करती है और चयापचय को सक्रिय करके ऊतकों को पुनर्जीवित करती है। इसके अलावा, ऊतकों में प्रवेश करने की प्रक्रिया में चुंबकीय प्रवाह हार्मोन स्राव को बढ़ाता है। ये हार्मोन आंतरिक अंगों के कार्य को सामान्य करके ऊर्जा प्रदान करते हैं और युवावस्था बनाए रखते हैं। ... चुंबकीय प्रवाह रक्त में मौजूद लोहे जैसे चुंबकीय पदार्थों को प्रबल रूप से उत्तेजित करता है। इसके अनुसार, जब चुंबक यंत्र चालू किया जाता है, तो रक्त वाहिकाओं में हीमोग्लोबिन लसीका परिसंचरण के साथ सक्रिय रूप से गति करता है। इसका चिकित्सीय प्रभाव एकल नहीं बल्कि सामूहिक होता है, जिससे शारीरिक कमजोरी दूर होती है।"
इस क्षेत्र के शोधकर्ताओं का मानना है कि विद्युत चुम्बकीय बल ऊतकों की कंपन दर को

"अवश्य" प्रभावित करते हैं। डॉ. अब्राम्स और डॉ. ड्राउन ने यह परिकल्पना की थी कि जब ऊतक और अंग अपनी इष्टतम कंपन दर पर होते हैं, तो वे स्वस्थ होते हैं। यदि कंपन दर कम हो जाती है, तो रोग उत्पन्न होता है। अब्राम्स और ड्राउन का मानना था कि यदि विद्युत चुम्बकीय कंपन की सही दर से "बीम इन" किया जा सके, तो रोगग्रस्त ऊतक या अंग उस बल का उपयोग अपनी कंपन दर बढ़ाने के लिए करेंगे और पुनर्जनन हो सकता है। हालांकि, आज कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि अब्राम्स और ड्राउन की अवधारणा बहुत संकीर्ण थी, क्योंकि उनके मॉडल में उपचार से पहले व्यक्ति की कंपन दर, या किसी अंग की कंपन दर का पता लगाना आवश्यक था।

उपचार संभव हो सकता है। दूसरी ओर, यदि कंपन की एक विस्तृत श्रृंखला का उपयोग किया जाता है, जैसे कि मल्टीवेव ऑसिलेटर के साथ, तो उत्पन्न होने वाली तरंगों में से एक ऊतक या अंग की तरंग के अनुरूप होगी और उपचार शुरू हो सकता है। यह सिद्धांत है, और बढ़ते हुए केस स्टडी इसकी पुष्टि करते हैं।
जैवविद्युत विज्ञान के क्षेत्र में पिरामिड के महत्व के बारे में कोई निष्कर्ष निकालने से पहले काफी शोध की आवश्यकता होगी। हम इससे अन्यथा संकेत नहीं देना चाहेंगे। फिर भी, पिरामिड बलों के अब तक के सतही और अनौपचारिक अध्ययन से हमें यह मानने का कुछ कारण मिलता है कि हम एक ऐसी संरचना से निपट रहे हैं जो अन्य विद्युत चुम्बकीय उपकरणों द्वारा उत्पन्न ऊर्जा क्षेत्रों के समान या समरूप ऊर्जा क्षेत्र उत्पन्न करती है; कार्बनिक पदार्थों का क्षरण; पिरामिड जल से उपचारित त्वचा का युवा दिखना; उपचार गुण, जागरूकता की असामान्य व्यक्तिपरक अवस्थाएँ, आदि। हमारी परिकल्पना यह है कि ऊर्जा क्षेत्रों के बारे में हम जितना अधिक जानेंगे, उतना ही हम पिरामिडों को समझेंगे, और पिरामिड के भीतर काम करने वाली शक्तियों के बारे में हमारी समझ जितनी अधिक होगी, उतना ही हम ऊर्जा क्षेत्र सिद्धांतों में योगदान दे सकेंगे।
पचास वर्ष से भी अधिक समय पहले, एक अंग्रेज वैज्ञानिक, ए. ई. बैनेस ने "जीवन की उत्पत्ति और समस्या" नामक एक शोधपत्र में कहा था कि कम से कम तीन ऐसी चीजें हैं जो लंबे समय तक स्वस्थ और ऊर्जावान जीवन को बनाए रखने में बाधा डालती हैं। एक है शारीरिक क्षय; दूसरी है तंत्रिका शक्ति के उत्पादन में धीरे-धीरे कमी आना; और तीसरी है शरीर और मस्तिष्क को ऊर्जा प्रदान करने वाली कुछ ग्रंथियों के उत्पादन में गिरावट आना।
"हमें कमियों से निपटना होगा, जैसे कि तंत्रिका बल की कमी और संभवतः इन्सुलेशन की कमी, बाद वाला विशेष रूप से कुछ ग्रंथियों के प्रभावी कामकाज के संदर्भ में है, जिन्हें ऊर्जा की सामान्य आपूर्ति तो मिल सकती है, लेकिन दोषपूर्ण इन्सुलेशन के कारण वे इसे बनाए रखने या पूरी तरह से उपयोग करने में विफल रहती हैं," बैनेस ने कहा, और आगे बताया, "इतना ही नहीं। हमारी ग्रंथियों को उत्तेजित और सक्रिय करने वाले आवेग मस्तिष्क से स्रावी ग्रंथियों के माध्यम से गुजरते हैं और यदि वे

जो जानकारी संग्रहीत या उपयोग में नहीं लाई जाती, उसकी भरपाई के लिए मस्तिष्क पर नई मांगें रखी जाती हैं।
सबसे पहले, हमें तंत्रिका शक्ति उत्पन्न करने का एक साधन चाहिए ताकि हम इसकी आपूर्ति कर सकें। वर्षों से हमने सार्जेंट फॉक्स और सर विलियम क्रूक्स द्वारा क्रमशः ओडिक और साइकिक नामक एक नई शक्ति के बारे में सुना है। अधिकांश लोगों के मन में यह शक्ति तंत्र-

मंत्र से जुड़ी हुई है, शायद इसलिए कि अभी तक कोई भी इसकी प्रकृति, मानवता के लिए इसके महत्व या इसे विकसित करने को संतोषजनक ढंग से सिद्ध नहीं कर पाया है। यह मानने का कारण है कि प्राचीन मिस्रवासी ऐसा कर सकते थे और अलेक्जेंड्रिया के पुस्तकालय के जलने की घटना न होती तो शायद ईसाई युग से पहले ही इसका खुलासा हो जाता। इस नई शक्ति, जिसे मैंने विटिक नाम दिया है, के बारे में मेरा ज्ञान एक विचित्र तरीके से प्राप्त हुआ। मिस्र में वर्षों तक रहने से मिस्र विज्ञान में मेरी रुचि उत्पन्न हुई, और इंग्लैंड लौटने पर इसी रुचि ने मुझे अक्सर ब्रिटिश संग्रहालय की दीर्घाओं में जाने के लिए प्रेरित किया।

मिस्र के गौरवशाली काल में, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ पुरोहित समुदायों तक ही सीमित थीं, और उन्होंने इन्हें जटिल प्रतीकात्मकता के आवरण में बाहरी और अनपढ़ दुनिया से छिपाकर रखा था। तब भी ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन के अमृत की खोज शुरू हो चुकी थी। इसलिए, जब मैंने देखा कि एक पुजारी की मूर्ति में उसे एक हाथ में सिलेंडर पकड़े हुए दिखाया गया है, तो मेरी जिज्ञासा जागृत हुई और मैंने इसकी जाँच करने का निश्चय किया। तत्कालीन फ़राओ के पास भी इसी प्रकार का उपकरण होना पुरोहितों की ओर से उचित स्वीकृति का संकेत मात्र था, और इससे इस धारणा का खंडन नहीं होता कि सिलेंडरों या छोटी छड़ियों का कोई महत्वपूर्ण उद्देश्य या कार्य था, जिसका वे विधिक में प्रतीक थे।

सबसे प्रमुख मूर्ति, चूना पत्थर से बना एक चित्रित चित्र, लगभग 3700 ईसा पूर्व का है, और यह अन-खेफ्ट-का नामक एक शाही व्यक्ति का है, जिसे प्रत्येक हाथ में एक छड़ी पकड़े हुए दिखाया गया है, ठीक उसी तरह जैसे कोई धावक कॉर्क पकड़ता है। जैसा कि मैंने कहा है, मेरा मानना है कि ये छड़ें प्रतीकात्मक थीं; लेकिन किस चीज़ का? निश्चित रूप से शक्ति का नहीं; क्योंकि उस पर

पुरोहित समुदायों के लिए यह एक ईर्ष्यालु और क्रोधित फिरौन के हाथों विपत्ति को न्योता देना होता। प्राचीन मिस्र के चरित्र की प्रमुख विशेषता क्या थी? शायद कामुकता; और अधिक संभावना पौरुषता की; क्योंकि कामुकता इतनी खुलकर प्रकट नहीं होती। यही वह निष्कर्ष था जिस पर मैं अंततः पहुँचा। संग्रहालय के अधिकारियों से गहन पूछताछ करने पर यह आश्चर्यजनक तथ्य सामने आया कि छड़ियों के उद्देश्य या अर्थ के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं था। उनके पास कोई जानकारी नहीं थी।

"कई वर्षों तक ऐसे प्रयोग किए गए, जिनसे ऐसी वस्तु की खोज की जा सके जिसे हाथ में पकड़ने पर तंत्रिका तंत्र पर लाभकारी प्रभाव पड़े। अंततः, संयोगवश, यह कार्बन में पाई गई। आर्क लैंप में प्रयुक्त कठोर कार्बन एक निश्चित मात्रा में बल उत्पन्न करता है, जिसे अनुभव से हमने सीखा है कि यह तंत्रिका बल से भिन्न नहीं है। लेकिन यदि कार्बन को इस प्रकार से संसाधित किया जाए कि उसके अणुओं में तीव्र विक्षोभ उत्पन्न हो और फिर उसे विशेष रूप से कठोर बनाया जाए, तो उससे उत्पन्न बल में अत्यधिक वृद्धि होती है, और छड़ शक्ति का एक वास्तविक स्रोत बन जाती है। यह शक्ति एकध्रुवीय गैंग्लियन कोशिकाओं द्वारा इतनी आसानी से अवशोषित और संग्रहित हो जाती है कि पाँच मिनट का आवेश कम से कम बारह घंटे तक प्रभावी रहता है।"

बेन्स की इस परिकल्पना के बारे में लिखते हुए कि विद्युत तरंग सरल नहीं बल्कि यौगिक होती है, डॉ. व्हाइट रॉबर्टसन ने अपनी पुस्तक, इलेक्ट्रो-पैथोलॉजी, जो 1918 में प्रकाशित हुई थी, में कहा: "यह कि दूसरा विकल्प निराधार नहीं है, बेन्स की हालिया खोज से पता चलता है कि

साधारण आर्क-कार्बन पर लागू एक विशेष सख्त करने की प्रक्रिया द्वारा, परिवर्तित कार्बन में एक 'नया बल' पाया गया है जो केवल इन्हें हाथ में रखने से शरीर में स्थानांतरित और कई घंटों तक संग्रहित हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप सामान्य से कम गैल्वेनोमेट्रिक विक्षेपण में अत्यधिक वृद्धि होती है; और हम पहले ही तंत्रिका क्षति के मामलों में संतोषजनक परिवर्तन देखने में सक्षम हुए हैं, जो स्पष्ट रूप से इन कार्बनों के माध्यम से तंत्रिका आवेश को बढ़ाकर होता है। यह बल क्या है, यह हम अभी तक नहीं जानते हैं, न ही यह प्रख्यात भौतिकविदों और शरीर क्रिया विज्ञानियों को ज्ञात है।"

140 पिरामिडों की गुप्त शक्ति, जिसे हमने प्रदर्शित किया है। यह चुंबकीय नहीं है। और यदि यह विद्युत आवेश से इस मायने में भिन्न है कि यह आसानी से विसरित नहीं होता, बल्कि बारह घंटे की अवधि में गैल्वेनोमीटर द्वारा दर्ज किए जाने के अनुसार, संभवतः तंत्रिका तंत्र के एकध्रुवीय गैंग्लिया में संग्रहित होता है।
जून 1914 में द प्रैक्टिशनर में प्रकाशित एक लेख में, डॉ. जे. होम विल्सन ने बैनेस की खोज के बारे में लिखा, "इस संदर्भ में (तंत्रिका बहरापन), मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि कार्बन की एक छड़, जिसकी आणविक स्थिति लोहे के समान ही चुंबक में परिवर्तित होने पर बदल जाती है, शरीर के विक्षेपों पर एक अत्यंत उल्लेखनीय प्रभाव डालती है। यदि इसे दाहिने हाथ में पकड़ा जाए, तो यह गैल्वेनोमीटर पर असामान्य रूप से धनात्मक विक्षेप उत्पन्न करती है, और यदि बाएं हाथ में पकड़ा जाए, तो असामान्य रूप से ऋणात्मक विक्षेप उत्पन्न करती है। यदि इसे शरीर के दाहिने हिस्से के संपर्क में पांच या दस मिनट तक रखा जाए, तो यह हाथ से हाथ के विक्षेपों को प्रबल धनात्मक बना देती है, और यदि शरीर के बाएं हिस्से पर रखा जाए, तो इसका ठीक विपरीत प्रभाव होता है। यह बल क्या है, यह मैं अभी नहीं बता सकता, लेकिन इसका शरीर की विद्युत स्थितियों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है, हालांकि गैल्वेनोमीटर के टर्मिनलों पर इसका कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्पष्ट रूप से शरीर को तंत्रिका ऊर्जा के समान बल से आवेशित करता है, क्योंकि यह विद्युत की तुलना में कहीं अधिक समय तक बना रहता है।"
विल्सन ने 25 जुलाई, 1914 के 'द मेडिकल टाइम्स' अंक में लिखा: "ऊर्जा का यह रूप तंत्रिका प्रवाह को सामान्य स्तर पर ले आएगा। दाहिने हाथ में पकड़ी गई छड़ उत्तेजक के रूप में कार्य करती है, जिसका कोई अवसादक दुष्प्रभाव नहीं होता, और बाएं हाथ में यह शामक के रूप में कार्य करती है। इसके उत्तेजक प्रभाव से तंत्रिका तंत्र को आमतौर पर लाभ होता है; मानसिक थकान शीघ्र ही दूर हो जाती है, और तंत्रिका क्षति, अनिद्रा और हृदय की दुर्बलता जैसी रोग संबंधी स्थितियां इससे आसानी से ठीक हो जाती हैं।"
"अन-खेफ़्ट-का के बाएँ हाथ में दिखाया गया दूसरा सिलेंडर संभवतः कम महत्व का था और कार्बन का नहीं था, क्योंकि कार्बन होने से आवेश निष्क्रिय हो जाता। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह बना था..."

रिजुवेनेशन 14T
चुंबकीय लौह अयस्क का एक टुकड़ा। शरीर के बाएँ भाग पर चुंबकत्व लगाने से हृदय की क्रिया उत्तेजित होती है, लेकिन केवल तब तक जब तक शरीर चुंबकीय क्षेत्र के भीतर रहता है। चुंबकीय लौह अयस्क के गुण—और संभवतः ये गुण—प्राचीन काल में चीनियों को ज्ञात थे, और साथ ही पूर्व के यूनानियों को भी, जिन्होंने संभवतः मिस्रियों से यह ज्ञान प्राप्त किया था।
"यदि दो छड़ों को एक साथ रखा जाए, कार्बन को दाहिने हाथ में और स्थायी चुंबक को बाएं हाथ

में, तो प्रभाव बढ़ जाता है; लेकिन कार्बन द्वारा दिया गया आवेश लगभग बारह घंटे तक बना रहता है, जबकि चुंबक द्वारा लगाया गया आवेश छड़ को छोड़ने पर समाप्त हो जाता है।"
ए. ई. बैंस का विवरण अधूरा है। यह जानना उपयोगी होगा कि उनके "वर्षों के प्रयोग" विशेष रूप से किस उद्देश्य पर केंद्रित थे, कार्बन में यह बल किस "संयोगवश" पाया गया, और उन्होंने यह कैसे निर्धारित किया कि आर्क-कार्बन "एक निश्चित मात्रा में बल उत्पन्न करता है जिसे तंत्रिका बल से भिन्न नहीं किया जा सकता"। यह जानना भी सहायक होगा कि कार्बन का प्रारंभिक उपचार क्या होना चाहिए, और "विशेष सख्त करने" की प्रक्रिया का क्या अर्थ है। हमें इस बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है कि उन्हें कैसे पता चला कि यह बल बहुत बढ़ जाता है और एकध्रुवीय गैंग्लियन कोशिकाओं द्वारा संग्रहित किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ. रॉबर्टसन ने इन कथनों को तथ्यात्मक मान लिया, हालांकि उन्होंने कोई और जानकारी नहीं दी। हालांकि, उन्होंने अपने स्वयं के शोध से प्राप्त कई निष्कर्ष प्रस्तुत किए। डॉ. विल्सन द्वारा अपने दो लेखों में दी गई जानकारी स्पष्ट रूप से उनके स्वयं के अध्ययन और शोध पर आधारित है। वस्तुनिष्ठ प्रमाण गैल्वेनोमीटर पर प्राप्त रीडिंग तक ही सीमित प्रतीत होते हैं। बॉर्डरलाइन साइंसेज रिसर्च फाउंडेशन द्वारा वर्षों से इन छड़ों के उपयोग से प्राप्त लाभकारी परिणामों की कई रिपोर्टें एकत्र की गई हैं। फिर भी, हम इस संभावना को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते कि सुझाव भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अधिकांश प्रयोगों में गैल्वेनोमीटर के उपयोग को कम करने या उससे भी अधिक करने के प्रयास किए गए हैं।

सुझाव के प्रभाव को खारिज करना आवश्यक है, लेकिन सामान्य ज्ञान कहता है कि निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते। यह पुष्टि करना आवश्यक प्रतीत होता है कि कार्बन की छड़ों के उपयोग से सामान्य और असामान्य दोनों प्रकार के गैल्वेनोमेट्रिक विक्षेपों में वृद्धि होती है। साथ ही, यह निर्धारित करना भी आवश्यक है कि क्या ये प्रभाव केवल कार्बन से ही उत्पन्न होते हैं या क्या अन्य धातुओं से बनी छड़ों का उपयोग करके, चुंबक के साथ और बिना चुंबक के भी, समान परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, इस दावे की पुष्टि करना भी आवश्यक है कि छड़ों के उपयोग के बाद बल या ऊर्जा कई घंटों तक शरीर में संग्रहित रह सकती है।
यदि इन प्रयोगों की पुष्टि हो जाती है और यह सिद्ध हो जाता है कि छड़ों के प्रयोग से मानव शरीर में कुछ ऊर्जा क्षेत्र प्रवेश करता है और संग्रहित होता है, तो भी हमें दोनों क्षेत्रों में प्राप्त परिणामों की समानता के आधार पर इस संबंध को सिद्ध करना होगा। इन दिलचस्प समानताओं में से एक विभिन्न व्यक्तियों द्वारा प्राप्त परिणामों में भिन्नता से संबंधित है। चाहे कार्बन की छड़ का प्रयोग किया गया हो या पिरामिड का, अधिकांश प्रतिभागियों ने लाभकारी परिणाम बताए हैं। कुछ ने दावा किया है कि कार्बन की छड़ उन्हें इतना उत्तेजित कर देती है कि वे सो नहीं पाते। और कुछ प्रतिभागियों ने दावा किया है कि वे पिरामिड में बहुत कम समय तक रह सकते हैं बिना सिरदर्द या किसी प्रकार की बेचैनी महसूस किए। दोनों ही मामलों में, "ऊर्जा" उनके लिए स्पष्ट रूप से बहुत अधिक है।
दूसरी ओर, काफी संख्या में लोगों ने हमें बताया है कि पिरामिड के अंदर कुछ समय बिताने के बाद वे ऊर्जावान और अधिक जीवंत महसूस करते हैं। न केवल उनकी धारणाएं तेज होती हैं बल्कि उनकी संवेदनाएं भी अधिक जीवंत हो उठती हैं।
एक दिलचस्प कहानी हमें एक आदमी की पत्नी ने सुनाई। पचास वर्ष की आयु के आसपास, उन्होंने हमारे एक व्याख्यान को सुनने के बाद एक पिरामिड बनाया और उसमें पानी को शुद्ध

करना शुरू कर दिया। वे उस पानी का उपयोग अपने घर के पौधों पर करते थे, लेकिन साथ ही नियमित रूप से उसे पीने भी लगे। कुछ हफ्तों बाद, उनकी पत्नी ने हमसे कहा, "मुझे लगता है कि मुझे हेनरी का पानी बंद करना होगा या उनके साथ पीना शुरू करना होगा।" जब हमने उनसे पूछा, तो उन्होंने स्वीकार किया,

"खैर, मुझे लगता है कि वह अपने बीस या तीस के दशक में वापस जा रहा है। वह इतने सालों से यौन रूप से इतना उत्तेजित नहीं हुआ है!"
लॉस एंजिल्स स्थित ईएसपी प्रयोगशाला के निदेशक अल मैनिंग बताते हैं कि लेखक डेविड सिंक्लेयर ने कुछ मिनट पिरामिड के अंदर बिताए और चक्कर आने पर उन्हें बाहर निकलना पड़ा। घर लौटने के बाद भी उन्हें वह अजीब सा एहसास होता रहा। उन्होंने एक पार्टी में जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया और उसकी जगह झपकी ले ली। लेकिन मैनिंग के अनुसार, जब वे तीन घंटे बाद जागे, तो सिंक्लेयर को ऐसा लगा जैसे वे कई दिनों से सो रहे हों।
यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अंकुरण और पौधों की वृद्धि पर किए गए हमारे प्रयोगों के अनुसार, पिरामिड के भीतर ऊर्जा क्षेत्र हमेशा एक जैसा नहीं था। कार्बन की छड़ों वाले प्रयोगों में, चुंबक कथित तौर पर शरीर की कोशिकाओं पर क्रियाशील बल है और कार्बन को आकर्षित करता है। पौधों के पास रखे चुंबकों से उनकी वृद्धि में वृद्धि देखी गई, जबकि पिरामिड के अंदर रखे चुंबकों से वृद्धि धीमी होती प्रतीत हुई—यह फिर से अत्यधिक आवेश का मामला हो सकता है, या शायद, एक ऊर्जा क्षेत्र द्वारा दूसरे ऊर्जा क्षेत्र का प्रतिकार।
एक अन्य स्रोत जो प्राचीन मिस्रवासियों को ऊर्जा क्षेत्रों और मानव शरीर के कायाकल्प पर उनके प्रभावों के ज्ञान का श्रेय देता है, वह काउंट स्टीफन कोलोना वालेव्स्की की विचित्र डायरी, 'ए सिस्टम ऑफ कॉकेशियन योगा' है। यह काउंट की डायरी का पहला और संभवतः एकमात्र संस्करण था और इसे 1955 में फाल्कन्स विंग प्रेस द्वारा प्रकाशित किया गया था।
पत्रिका के संपादक की प्रस्तावना में लिखा है: "काउंट स्टीफ़न कोलोना वालेव्स्की का बाहरी जीवन प्राच्य कला और पुरावशेषों तथा मानवशास्त्रीय दुर्लभ वस्तुओं के एक प्रसिद्ध संग्राहक और व्यापारी के रूप में था। उनकी दुकान, एसोटेरिक, न केवल न्यूयॉर्क के एक प्रसिद्ध कला पारखी की पहचान थी, बल्कि एक दूसरी दुनिया का द्वार भी थी, जहाँ जादू, राक्षस और ताबीज़ मेट्रो और नियॉन साइन की तरह ही वास्तविक थे। काउंट का दृढ़ विश्वास था कि वे एक प्रकार के उच्च चुंबकत्व द्वारा इन विचित्र वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करते थे, जिसका उन्हें स्वयं अनुभव था।"

उन्हें इसकी कार्यप्रणाली का ज्ञान था; और उनका अद्वितीय संग्रह उनकी बात को साबित करता प्रतीत होता था।
"हालांकि, बहुत कम लोग जानते थे कि काउंट वालेव्स्की की अपने साथी मनुष्यों के प्रति निरंतर दयालुता और उनके विशेषज्ञ ज्ञान—जो उनके बाहरी जीवन के दो मुख्य पहलू थे—के पीछे एक गहन आंतरिक जीवन और जीवन के छिपे रहस्यों की खोज छिपी थी। बहुत कम लोग जानते थे कि 1920 के दशक से पहले, काकेशस पर्वतमाला (काला सागर और कैस्पियन सागर के बीच, तुर्की और रूस की सीमा पर) में, उन्हें एक दुर्लभ गुप्त समाज के दो सदस्यों द्वारा कुछ रहस्य प्रदान किए गए थे, जो स्वदेशी सिद्धांतों और योग के सिद्धांतों को प्राचीन पारसी धर्म की एक

रहस्यमय परंपरा से उत्पन्न शिक्षाओं के साथ जोड़ता था। वालेव्स्की ने अपने शिक्षकों को फिर कभी नहीं देखा, और उन्होंने स्वयं उनकी शिक्षाओं का कोई श्रेय नहीं लिया, जो उन्हें केवल स्रोत का खुलासा न करने की शपथ के साथ सौंपी गई थीं। फारसी और रूसी में प्राप्त उनके निर्देशों को काउंट ने अपनी नोटबुक से एक हस्तलिखित नोटबुक में लिख लिया, जब वे बाद में एक पोलिश राजनयिक आयोग के साथ अमेरिका पहुंचे। प्रतिलेखन की अंग्रेजी अटपटी है और वर्तनी अक्सर गलत है क्योंकि काउंट वालेव्स्की को अंग्रेजी का अपूर्ण ज्ञान था। उस समय।"
इस पत्रिका में निम्नलिखित लिखा है: "IX एल आर्केन। तंत्रिका ऊर्जा को पुनः सक्रिय करना। प्राचीन मिस्र में शरीर के भीतर ऊर्जा के प्रवाह को मजबूत करने के लिए प्रयुक्त एक विधि। इसे चित्रों में दूसरे मास्टर आर्केन अभ्यास का उपयोग करके दिखाया गया है। खड़ी आकृतियों के हाथों में पकड़ी गई दो छड़ें, बिजली (द्वितीयक बिजली) के समान, अपार शक्ति की पकड़ थीं, जो हाथों में पकड़े रहने पर इस ऊर्जा को शरीर में छोड़ती थीं, जिसे एकध्रुवीय गैंग्लिया और रीढ़ की हड्डी के तरल पदार्थ में संग्रहित किया जाता था, जिससे ऊर्जा की क्षमता 100% बढ़ जाती थी और यह एक दिन और एक रात, 24 घंटे तक बनी रहती थी।"
एक बार फिर, पिरामिड अनुसंधान के लिए इस जानकारी का महत्व इस प्रश्न पर निर्भर करता है कि प्राचीन मिस्रवासी ऊर्जा की प्रकृति को किस हद तक समझते थे।

कायाकल्प 14जे
यदि वे इन शक्तियों को उत्पन्न करने और उनका उपयोग करने का तरीका जानते थे, तो यह मानना अनुचित नहीं होगा कि अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि - ग्रेट पिरामिड - में उन्होंने इस ज्ञान का उपयोग किया होगा।

9. पिरामिड की आवाज
ब्रिटिश आविष्कारक सर डब्ल्यू. सीमेंस, गीज़ा के महान पिरामिड के शिखर पर खड़े होकर अपने अरब गाइड की उठी हुई उंगलियों से निकलती चिंगारियों को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने दावा किया कि इस घटना से एक विशिष्ट गूंजती हुई ध्वनि उत्पन्न हुई। 200 वर्ष से भी अधिक समय पहले, अल्जीरिया में ब्रिटिश महावाणिज्यदूत नथानिएल डेविडसन, महान पिरामिड की ग्रैंड गैलरी में खड़े थे और उन्होंने अपनी आवाज से गूंजती हुई प्रतिध्वनि में उस विचित्र प्रतिध्वनि को महसूस किया।
ऐसा प्रतीत होता है कि ध्वनि की उपस्थिति केवल विशाल पत्थर के पिरामिड तक ही सीमित नहीं है। कई लोगों ने हमें बताया है कि उन्होंने पिरामिड के मॉडल के अंदर असामान्य ध्वनियाँ सुनीं। ये अनुभव अलग-अलग व्यक्तियों पर अलग-अलग प्रभाव डालते हैं, इसलिए रिपोर्टें भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन अधिकांश ने "दूर से आती हुई एक तरह की झनझनाहट" या "गूंज" का उल्लेख किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि यह ध्वनि "झुनझुनी" या "अंदर से कंपन" की अनुभूति से मेल खाती है। हमने पाया कि अन्य पिरामिड प्रयोगकर्ताओं को भी इसी तरह के अनुभव हुए थे।
इस बात के प्रमाण कि पिरामिड का आकार ध्वनि प्रतिध्वनि के रूप में कार्य करता है-

पिरामिड की आवाज 147
ध्वनि तरंगों से लाभकारी कंपन उत्पन्न होते हैं, यह निष्कर्ष ध्वनि और पिरामिड की प्रतिकृतियों

पर किए गए प्रयोगों के समानांतर प्रभावों से निकाला जा सकता है। संगीत की ध्वनियों का उपयोग उपचार, भौतिक पदार्थों में परिवर्तन और पौधों की वृद्धि को प्रभावित करने के लिए किया जाता रहा है, और पिरामिड की शक्ति के संपर्क में आने वाले विषयों और वस्तुओं में समान परिवर्तन देखे जाते हैं। ध्वनि तरंगें ऊर्जा का एक रूप हैं और ऊर्जा कोशिकाओं को प्रभावित करती है।

प्राचीन काल में, मिस्रवासियों सहित, ध्वनि को उपचार का प्रमुख साधन माना जाता था। वे मंत्रों और वाद्य यंत्रों का उपयोग ऊर्जा क्षेत्रों को नियंत्रित करने और शरीर में संतुलन लाने के लिए करते थे। पाइथागोरस का मानना था कि ध्वनि एक सृजनात्मक शक्ति है और संगीत शरीर के लिए चिकित्सीय लाभ प्रदान करता है। उनका दावा था कि उन्होंने यह ज्ञान मिस्र के रहस्यमयी विद्यालयों में प्राप्त किया था। यदि मिस्रवासी ध्वनि को इतना महत्व देते थे, तो यह मानना तर्कसंगत प्रतीत होता है कि उन्होंने इस सिद्धांत को अपनी सबसे प्रभावशाली संरचना, महान पिरामिड में शामिल किया होगा।

ध्वनि कंपन को सृष्टि से जोड़ा जाता था, चाहे वह संसार की सृष्टि हो या व्यक्तिगत जीवन के स्वरूपों की। "आदि में शब्द था।" "लोगोस" शब्द का अनुवाद कई तरह से किया गया है, जैसे नियम, मूल स्वरूप आदि। फिलो ने लिखा: "उसकी छवि शब्द है, जो अग्नि से भी अधिक तेजस्वी रूप है। ... लोगोस वह माध्यम है जिसके द्वारा ईश्वर ब्रह्मांड पर कार्य करता है, और इसकी तुलना मनुष्य की वाणी से की जा सकती है।" ये अनुवाद शब्दों के अर्थ के बजाय कंपन के महत्व को दर्शाते प्रतीत होते हैं।

प्राचीन संस्कृतियों के अध्ययन से पता चलता है कि चीनी चिकित्सक अपने अनुष्ठानों में "गायन पत्थरों" का उपयोग करते थे। ये जेड की पतली, चपटी प्लेटें होती थीं, जिन्हें टकराने पर संगीतमय स्वर निकलते थे। वे प्रकृति के इस महान स्वर को "कुंग" कहते थे, जो हमारे संगीत के F स्वर के समान है। सूफी धर्म में "हू" को सृजनात्मक ध्वनि माना जाता है। तिब्बती धर्म में A, F शार्प और G स्वरों को शक्तिशाली पवित्र ध्वनियाँ माना जाता है। ध्यान में प्रयुक्त मंत्रों से परिचित लोगों के लिए "ॐ" की ध्वनि भी उतनी ही सुबोध है। ईसाई धर्म में भी इसका उपयोग होता है।

"आमीन" शब्द पुराने "औम" से लिया गया है, जो उन सभी ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें मानव आवाज व्यक्त करने में सक्षम है और इसलिए, ब्रह्मांड के रचनात्मक सिद्धांत से जुड़ा हुआ है।

प्राचीन रहस्यवादी विद्याओं में लय को शरीर से, धुन को भावनाओं से और सामंजस्य को चेतना को आध्यात्मिक स्तर तक ले जाने से जोड़ा जाता था। यह रोचक तथ्य है कि पिरामिड के अंदर किसी ध्वनि को सुनने या कंपन महसूस करने वाले व्यक्ति ऐसा चेतना को उन्नत करने के प्रयास में अपना ध्यान भीतर की ओर केंद्रित करने के बाद ही करते हैं।

जिस महिला ने कई साल पहले मुझे (शुल को) आध्यात्मिक विद्याओं से परिचित कराया था, वह चिकित्सा के लिए ध्वनि के उपयोग की अग्रणी समर्थक बन गई हैं। डेनवर की लेखिका और व्याख्याता लॉरेल एलिजाबेथ कीज़ ने शरीर में संतुलन लाने के लिए आवाज़ों के उपयोग की एक प्रणाली विकसित की है। इसे "टोनिंग" कहा जाता है और वह इसे प्राचीन चिकित्सकों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला "लुप्त शब्द" बताती हैं।

हाल ही में जब हम कोलोराडो की पहाड़ियों में स्थित उनके आश्रम में गए थे, तब उन्होंने हमसे

कहा, "हम शब्दों और ध्वनियों से सृजन करते हैं। हमारे लगभग सभी कार्य और प्रतिक्रियाएँ शब्दों से ही उत्पन्न होती हैं। यह सर्वमान्य है कि हम शब्दों या प्रतीकों के बिना सोच नहीं सकते और हमारी सोच इन्हीं तक सीमित है। शब्द उपकरण हैं। हमारे पास अच्छे शब्दों का चयन होना महत्वपूर्ण है। इन शब्दों के भीतर उस स्वर की कंपन होती है जिस पर वे प्रवाहित होते हैं। स्वर ही हमारे जीवन में अंतर्निहित शक्ति है। इसे समझने से हमारी इच्छा के अनुसार सृजन करने और अपने मन के विचारों को आकार और सार देने की क्षमता बढ़ती है। मेरा मानना है कि ध्वनि अमूर्त और साकार विचार का मिलन स्थल है।"

श्रीमती कीज़ के लिए टोनिंग का अभ्यास एक दिन तब शुरू हुआ जब एक अध्ययन समूह के जाने के बाद वह कमरे में अकेली खड़ी थीं और ऐसी बैठक के बाद बची शांति का आनंद ले रही थीं। "मैंने अपने सीने और गले में एक सनसनी महसूस की, मानो कोई शक्ति उठ रही हो/ध्वनि के रूप में बाहर निकलना चाहती हो। यह वह भावना थी जो किसी को बिना किसी ज्ञात कारण के अचानक गाना गाने के लिए प्रेरित कर सकती है।" (यह दिलचस्प है कि...)

(ध्यान दें कि कई लोगों ने पिरामिड में बैठते समय इन्हीं संवेदनाओं का अनुभव होने की सूचना दी है।)

"यह भावना उठी और शांत हो गई, लेकिन मैं इसे उत्पन्न करने के लिए कुछ नहीं कर रही थी," श्रीमती कीज़ ने आगे कहा। "इसमें अपनी एक इच्छा थी और अभिव्यक्ति की स्पष्ट ललक थी। इसे बिना किसी प्रयास के देखना और महसूस करना एक अजीब अनुभव था। मैंने पाया कि मेरे होंठ खुल रहे थे, मेरा मुँह सहज और आराम से खुल रहा था। अचानक, एक ध्वनि उभरी और एक अक्षर निकला: 'रा'। मैं इससे ज़्यादा आश्चर्यचकित नहीं हो सकती थी। मैंने मिस्र के शब्दों का प्रयोग नहीं किया था और हम अपने अध्ययन समूह में उस संस्कृति पर चर्चा नहीं कर रहे थे। ध्वनि ने वह रूप क्यों लिया, यह मेरे लिए उतना ही हैरान करने वाला था मानो मेरे गले से कोई विदेशी भाषा निकल आई हो। मैं इसकी तुलना उस पक्षी से करूँगी जो जीवन भर पिंजरे में रहा हो और अचानक उसे पिंजरे का दरवाजा खुला मिल जाए।"

"एक गायिका होने के नाते मैंने गहरी सांस नहीं ली, लेकिन स्वर निरंतर बना रहा, मानो किसी असीम स्रोत से आ रहा हो। और यह इतनी ऊँचाई तक पहुँचा जहाँ तक मैं सामान्य रूप से नहीं पहुँच सकती थी क्योंकि मेरी आवाज़ अपेक्षाकृत धीमी है।"

"मैंने सोचा कि मैं शायद ध्यान की किसी अवस्था में था, इसलिए मैंने उस आवाज़ को रिकॉर्ड कर लिया ताकि बाद में शांत मन से उसका मूल्यांकन कर सकूँ। अगले दिन जब मैंने रिकॉर्डिंग सुनी, तो मैं दंग रह गया। वह मेरी आवाज़ नहीं थी। वह मेरे शरीर की आवाज़ थी, लेकिन मैंने पहले कभी इस तरह से उसका इस्तेमाल नहीं किया था।"

श्रीमती कीज़, जिन्होंने कई पूर्वी और पश्चिमी शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त की है, ने पाया कि व्यायाम से मानसिक अवरोध दूर होते हैं और तनाव कम होता है। हालांकि, उन्होंने जल्द ही पाया कि इससे और भी बहुत कुछ मिलता है। हर बार व्यायाम करने पर उनका शरीर ऊर्जावान महसूस करता था; उन्हें पूर्णता और अत्यधिक सुख का अनुभव होता था।

परिणामों के बारे में उत्सुक होकर, श्रीमती कीज़ ने अपनी एक ऐसी सहेली से संपर्क किया, जिसके पास भविष्य देखने की शक्ति थी और जिसने कई बीमारियों का सही निदान किया था। उन्होंने उससे कहा कि वह भाव-भंगिमा में शरीर और स्वर के संयोजन पर ध्यान दे। उस महिला ने स्वर को एक घूमती हुई शक्ति के रूप में देखा। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह किसी चीज को खींच रही हो।

पृथ्वी से चुंबकीय धाराएं पैरों और अंगों से होकर ऊपर की ओर बढ़ती हैं, और प्रकाश के एक सर्पिल रूप में गले के क्षेत्र तक पहुंचती हैं।
"जब मैंने ध्वनि को बिना नियंत्रित करने का प्रयास किए मुक्त होने दिया, तो ऐसा लगा जैसे इसने पूरे शरीर को शुद्ध कर दिया हो, जिससे अवरुद्ध क्षेत्रों में तनाव मुक्त हो गया हो। इसके बाद, शरीर में संतुलन का अहसास हुआ, जैसे किसी इंजन की मरम्मत हो गई हो या किसी वायलिन को ठीक से ट्यून किया गया हो। मेरे उस दिव्यदर्शी मित्र ने गौर किया कि यदि मैं ध्वनि के मुक्त होने से पहले ही उसे निर्देशित करने का प्रयास करता, तो वह बल वापस पेट के निचले हिस्से में सिमट जाता, जहाँ वह कस कर ऐसी भावनाएँ उत्पन्न करता जिन्हें मैं निराशा, चिंता और झुंझलाहट के रूप में समझ सकता था।"
श्रीमती कीज़ ने अपनी नव-खोजी गई ध्वनि-धारणा का अनुसरण करते हुए अन्य संस्कृतियों, जैसे कि ग्रीक, मिस्र, फारसी, भारतीय, अमेरिकी मूल निवासी और अन्य आदिम लोगों के माध्यम से पाया कि यह उपचार की सबसे पुरानी विधियों से संबंधित थी, जहां अधिकांश प्राचीन उपचार अनुष्ठानों में दो चीजें प्रचलित थीं: ध्वनि या मंत्रोच्चार, और लयबद्ध शारीरिक गतिविधियां, या तो नृत्य में या पैर पटकने में।
क्षेत्र सिद्धांत के आधार पर विकसित हालिया वैज्ञानिक सिद्धांतों ने श्रीमती कीज़ की इस अवधारणा को पुष्ट किया है कि प्रत्येक जीवित प्राणी में पूर्णता के स्वरूप को प्रकट करने वाला एक क्षेत्र होता है। फूल का स्वरूप बीज में होता है, पक्षी का स्वरूप अंडे में। इस क्षेत्र में हस्तक्षेप करने से स्वरूप बदल जाता है, और परिणामस्वरूप बीमारी या विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं।
वह समझाती हैं कि जब ध्वनि बाहर निकलती है, तो वह अपने आसपास की दुनिया से पदार्थ एकत्रित करती है, जिससे एक ठोस रूप धारण होता है, जैसे कि भट्टी या खिड़की से आने वाली हवा के झोंकों द्वारा निर्मित मकड़ी के जाले जैसे धूल के कणों का पैटर्न। जब किसी ड्रम के शीर्ष पर बारीक रेत या चीनी छिड़की जाती है और उसे वायलिन या पियानो से आने वाले कंपन के संपर्क में लाया जाता है, तो कण विभिन्न ज्यामितीय पैटर्न धारण कर लेते हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि ध्वनि पदार्थ को गति दे सकती है और कंपन आणविक संरचना में परिवर्तन ला सकते हैं।
श्रीमती कीज़ ने कहा, "आवाज कंपन है। इसलिए, जिस तरीके से हम अपनी आवाज का उपयोग करते हैं, वह शायद कंपन ही है।"

हमारे शरीर की आणविक संरचना को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। शिकायत भरी आवाज़ें नकारात्मक परिस्थितियों को आकर्षित करती हैं। मैंने पाया है कि इस तरह बोलने वाले लोग शायद ही कभी समस्याओं से मुक्त होते हैं। एक व्यक्ति जिसकी आवाज़ आक्रामक और निंदात्मक होती है, वह हिंसा, दुर्घटनाओं, स्ट्रोक और दिल के दौरे को आकर्षित करता प्रतीत होता है। किसी व्यक्ति को अपनी आवाज़ का लहजा बदलने के लिए प्रेरित करने से उसका जीवन बदलना शुरू हो जाता है। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यदि इच्छाशक्ति अवचेतन मन द्वारा नियंत्रित होती है, तो आवाज़ का सचेतन उपयोग उसके नियंत्रण को दरकिनार कर देता है और इच्छाशक्ति को मन के निर्देशानुसार उपयोग करने के लिए स्वतंत्र कर देता है।
श्रीमती कीज़ का कहना है कि शरीर में तनाव कम करके और रक्त संचार एवं तंत्रिका ऊर्जा को उत्तेजित करके, टोनिंग एक प्राकृतिक उपचार विधि है। यह प्रत्येक व्यक्ति के भीतर पूर्णता का

भाव उत्पन्न करती है। ये अवधारणाएँ रीच द्वारा प्रस्तावित ऑर्गेन ऊर्जा, मल्टीवेव ऑसिलेटर से संबंधित विचारों, ईमन स्क्रीन, एडगर केसी के वेट-सेल बैटरी विचारों, डॉ. जॉन पिएराकोस के सिद्धांतों और पिरामिड शक्ति के प्रभाव की रिपोर्टों से काफी मिलती-जुलती हैं।
यह बेहतर ढंग से समझने के लिए कि विचार और भावनाएँ शरीर को कैसे प्रभावित करती हैं, श्रीमती कीज़ कोलाइडल संरचना* (जिसका वर्णन उपचार संबंधी अध्याय में किया गया है) का संदर्भ देती हैं। परमाणु से अणु और फिर कोलाइड तक, वह बताती हैं कि हम ऊर्जा के एक ऐसे रूप से निपट रहे हैं जो कंपन से आसानी से प्रभावित होता है। उनका मानना है कि टोनिंग, मंत्रोच्चार, मौखिक प्रार्थना, इलेक्ट्रोथेरेपी और शांत और आत्मविश्वासपूर्ण तरीके से आवाज का सचेत उपयोग व्यक्ति के शरीर में फैली कोलाइडल सतह को आवश्यक सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।
टोनिंग की प्रभावशीलता का एक उल्लेखनीय उदाहरण एक ऐसी महिला से संबंधित है जो मोनोन्यूक्लियोसिस से पीड़ित थी और अपने विश्वास के आधार पर घर लौट आई थी। श्रीमती कीज़ ने बताया, "वह बिस्तर पर पड़ी थी और इतनी कमजोर थी कि उसके लिए टेलीफोन पर बात करना भी मुश्किल था।" उन्होंने महिला को टोनिंग का तरीका समझाया और उससे कुछ सरल वाक्य दोहराने को कहा, जैसे "मैं बिस्तर से उठकर वो काम करने जा रही हूँ जो मैं करना चाहती हूँ।"

"और ज़ोर लगाओ," श्रीमती कीज़ ने उससे कहा और अंत में, कुछ नाराज़गी के साथ, महिला ने जवाब दिया, "मैं अपने शब्दों को ज़ोर से बाहर निकाल रही हूँ।"
श्रीमती कीज़ याद करती हैं कि उस क्षण से ऐसा लगा जैसे नकारात्मक ध्रुवता से सकारात्मक ध्रुवता की ओर बदलाव आ गया हो। अगले दिन, वह महिला न केवल बिस्तर से उठीं, बल्कि घर का काम भी करने लगीं, और तीसरे दिन पास के एक कस्बे में व्याख्यान सुनने के लिए गाड़ी चलाकर गईं। बीमारी दोबारा नहीं लौटी। जाहिर है, उनकी आवाज़ के लहजे में बदलाव से ही उनके स्वास्थ्य में सुधार शुरू हुआ।
लेकिन समस्या हमेशा दर्द से संबंधित नहीं होती। श्रीमती कीज़ को एक उदाहरण याद है, जिसमें एक व्यक्ति ने सिरदर्द से राहत पाने के लिए स्वेच्छा से भाग लिया था। वे याद करती हैं, "उन्हें लगातार बढ़ता हुआ सिरदर्द हो रहा था। मैंने उनके पैरों पर टोनिंग शुरू की, और जैसे-जैसे ध्वनि ऊपर की ओर बढ़ती गई, मैंने उसे उनके पैर के अंदरूनी हिस्से, कूल्हे के चारों ओर और पीठ तक, पीठ से होते हुए उनकी गर्दन तक, और अंत में उनके सिर तक पहुँचाया। लेकिन मैं सिर के क्षेत्र में ध्वनि को रोक नहीं पाई क्योंकि यह उनके पैर में एक 'चिपचिपी' जगह से आगे नहीं बढ़ पा रही थी।"
मैंने उससे कहा, "मुझे खेद है, लेकिन लगता है कि समस्या आपके बाएं पैर में है।"
"मेरे पैरों में कुछ भी खराबी नहीं है," उसने जोर देकर कहा।
"क्या आप कृपया बैठ कर अपने पैर के तलवे के अंदरूनी हिस्से को दबाएंगे? यह बात मुझे बहुत परेशान कर रही है।"
"वह बैठ गया। उसने सपाट, सख्त तले वाली सैंडल पहनी हुई थी। उसने पैर के तलवे के हिस्से को टटोलना शुरू किया और चिल्ला उठा, 'वाह! बहुत दर्द हो रहा है।'"
"वह एक भारी-भरकम आदमी थे और उस तरह की सैंडल पहनने से उनके पैर के तलवे को सहारा नहीं मिल रहा था। दर्द का स्रोत पता चलने के बाद, हमने पूरी तरह से ऊपर तक मालिश

की, और उन्होंने पाया कि उनका सिरदर्द कम हो गया और कुछ ही समय में पूरी तरह से ठीक हो गया।"
श्रीमती कीज़ ने आगे कहा, "जब मैं इस तकनीक का प्रदर्शन करती हूं, तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि मैं एक वैद्य हूं। इसका उद्देश्य केवल लोगों को यह विश्वास दिलाना है कि उनके द्वारा उत्पन्न ध्वनि उनके शरीर पर प्रभाव डाल सकती है।"
श्रीमती कीज़ के पहले प्रदर्शनों में से एक एक के लिए था

द वॉइस ऑफ द पिरामिड 153,
एक युवती जो न्यूयॉर्क जाने वाली अपनी उड़ान जारी रखने के लिए बहुत अस्वस्थ महसूस कर रही थी, डेनवर में रुक गई। श्रीमती कीज़ के अनुसार, उन्हें फ्लू था, गर्दन में बहुत अकड़न थी, और वे बहुत कमजोर थीं और कई दिनों तक कुछ खा नहीं पा रही थीं। उन्हें तेज सिरदर्द भी था।
"हम दोनों ने लगभग पंद्रह मिनट तक उसके लिए प्रार्थना की। मैं प्रार्थना की मुद्रा में, ठुड्डी के ठीक नीचे, हाथ जोड़कर खड़ी थी। प्रार्थना करते समय मुझे अपने हाथों में शक्ति का संचार होता हुआ महसूस हुआ, और मैंने उस महिला से कहा, 'जो चाहो मांगो, लेकिन यह सुनिश्चित करो कि तुम उसे चाहती हो। मुझे लगता है कि वह तुम्हें मिल जाएगी।'
महिला ने अपनी आँखें नहीं खोलीं। वह धीरे से बोली, 'मैं इस बीमारी और इसके कारण से छुटकारा पाना चाहती हूँ।' मैंने अपने हाथ खोले और हथेलियाँ उसकी ओर फैला दीं। वह कुर्सी पर ऐसे काँप उठी जैसे उसे बिजली का झटका लगा हो। वह उठकर बैठी और बोली, 'क्या हुआ?'
हम जवाब नहीं दे सके। हम सब अचंभित होकर मुँह खोले खड़े रहे, कुछ बोल नहीं पा रहे थे। मुझे एक बात सिखाई गई थी कि चाहे कुछ भी कर रहे हो, डर को कभी हावी नहीं होने देना चाहिए। अगर हम डर सकते, तो ज़रूर डरते, लेकिन हम बस देखते रहे। वह महिला सीधी होकर बैठ गई, अपना सिर अगल-बगल घुमाने लगी, आश्चर्य से बोली, 'यह तो ठीक है; कोई दर्द नहीं। क्या हुआ? मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।' फिर वह खड़ी हुई, कमरे में इधर-उधर घूमने लगी और कहती रही, 'मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा! मैं चमत्कारों में विश्वास नहीं करती। ऐसा हो ही नहीं सकता, लेकिन मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, मैंने पहले कभी इतना अच्छा महसूस नहीं किया। और मुझे भूख भी लग रही है।'
"उस युवती ने कहा कि उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह हवा में उड़ रही हो। हम उसे हवाई अड्डे तक ले गए और जब हम उसके विमान का इंतज़ार कर रहे थे, उसने भरपेट खाना मंगवाया और बड़े चाव से खाया। उसने बाद में बताया कि उसे वह सुखद अनुभूति पूरे दिन और अगले दिन भी बनी रही, जब अपने कार्यालय में काम करने के बाद वह फिर से सामान्य महसूस करने लगी। बीमारी के सारे लक्षण गायब हो गए थे।"
कुछ लोगों का मानना है कि यदि ध्वनि को मस्तिष्क के उस विशेष भाग में प्रतिध्वनित किया जाए जो शरीर के प्रभावित हिस्से को नियंत्रित करता है, तो समस्या का समाधान संभव हो सकता है।

154 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
उस माध्यम से किया गया, एक प्रकार का मस्तिष्क का सोना-एक्यूपंक्चर।
श्रीमती कीज़ का मानना है कि जब किसी को शरीर में दर्द होता है, तो वह अपनी आवाज़ को जितना हो सके उतना धीमा करना शुरू कर देता है, और धीरे-धीरे स्वर को बढ़ाता है, जैसे सायरन की आवाज़ बढ़ती है।

श्रीमती कीज़ ने कहा, "आपको एक ऐसी ध्वनि मिलेगी जो दर्द से मेल खाती है और तनाव को कम करती है। यह सब संवेदनशीलता से किया जाता है। इसे समझने के लिए, अपनी उंगली नाक पर रखें और उस जगह पर गुनगुनाएं। उस अनुभूति पर ध्यान दें। शरीर के अन्य हिस्सों में यह अनुभूति उतनी स्पष्ट नहीं होती, लेकिन इसे पहचाना जा सकता है, और यही वह ध्वनि है जो दर्द को कम करती है। हर दर्द की एक साथी ध्वनि होती है और उस ध्वनि को कुछ देर तक धीरे-धीरे दोहराने से दर्द कम हो जाता है या पूरी तरह खत्म हो जाता है। यह दर्द के लिए एक राहत का द्वार है क्योंकि यह उस तनाव को तोड़ता है जिसे हम 'दर्द' कहते हैं और उस जगह पर नई ऊर्जा लाता है। यह एक आंतरिक संदेश है।"

"कई बार सार्वजनिक व्याख्यानों के दौरान मैंने श्रोताओं में से किसी दर्द से पीड़ित व्यक्ति को आगे आने और इस तकनीक का प्रदर्शन देखने के लिए कहा है। मैं उस व्यक्ति के सामने खड़ा होकर, आँखें बंद करके और ध्वनि की अनुभूति पर ध्यान केंद्रित करते हुए, बहुत धीमी और कम स्वर में ध्वनि उत्पन्न करना शुरू करता हूँ, जिससे ध्वनि पूरे शरीर में फैलती है। जब ध्वनि प्रभावित क्षेत्र से वापस आती है, तो मैं उसे पहचान लेता हूँ। यह एक अवर्णनीय अनुभूति होती है —चिपचिपी और गाढ़ी। इसके लिए कोई सटीक शब्द नहीं है, लेकिन यह महसूस की जा सकती है। उस व्यक्ति को पीड़ा के सटीक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करने के लिए, मैं उससे पूछता हूँ कि क्या ध्वनि थोड़ी ऊँची या नीची होने पर अधिक आरामदायक लगेगी। फिर मैं लयबद्ध तरीके से ध्वनि को तब तक स्पंदित करता हूँ जब तक मेरा शरीर आह न भर दे। फिर मैं उस व्यक्ति के ऊर्जा स्रोत को सक्रिय करने की अनुभूति के साथ एक उच्च स्वर तक पहुँचता हूँ और ध्वनि को नीचे की ओर बहने देता हूँ, जिससे वह शायद दो या तीन बार पूरे शरीर में प्रवाहित होती है।"

मांसपेशियों को टोन करने का अभ्यास करने के लिए, श्रीमती कीज़ सलाह देती हैं कि सीधे खड़े हों, पैरों को कुछ इंच की दूरी पर रखें। बाहों को ऊपर की ओर फैलाएं और फिर उन्हें पीछे की ओर गिरने दें, कंधे रीढ़ की हड्डी पर पूर्ण संतुलन में झूलते रहें। आंखें बंद रखें। फिर देखना शुरू करें।

पिरामिड की आवाज 155 -

अंदर की ओर झुकें और महसूस करें। आगे की ओर झुकने की सामान्य प्रवृत्ति को रोकने के लिए, धड़ को श्रोणि संरचना पर टिकाना चाहिए, जिसमें कूल्हे की हड्डियाँ थोड़ी उभरी हुई हों। सीधे खड़े होने से कोई तनाव नहीं होना चाहिए, बल्कि सहज और आरामदायक अनुभूति होनी चाहिए।

श्रीमती कीज़ ने कहा, "शरीर का कठोर अवस्था में रहना स्वाभाविक है। इसे थोड़ा हिलने-डुलने दें ताकि इसके भीतर जीवन की स्पंदनों का अनुभव हो सके।"

"अपने भीतर और आसपास जीवंतता की इस जादुई प्रक्रिया को महसूस करते हुए, अपने शरीर को बोलने दें," वे डेवोर्स एंड कंपनी द्वारा प्रकाशित अपनी टोनिंग संबंधी पुस्तक, टोनिंग - द क्रिएटिव पावर ऑफ द वॉइस में लिखती हैं। "जबड़ों को शिथिल करें ताकि दांत थोड़े खुले रहें। ध्वनि को ऊपर उठने दें; नीचे की ओर नहीं, बल्कि ऊपर, अपने पैरों से। शरीर को कराहने दें। इसे मुखर होने के लिए प्रोत्साहित करें। हमेशा धीमी कराहों से शुरुआत करें।"

शरीर को जितनी देर चाहे कराहने दो। तुम्हें शायद लगे कि कराहने की कोई वजह नहीं है, पर तुम्हें हैरानी होगी। तुम्हें जो भी तकलीफें मिली हैं, वे तुम्हारे अवचेतन मन में दबी हुई हैं, और कराहने से उन्हें मुक्ति मिलती है। एक बार दरवाजा खुल जाए, तो दबी हुई भावनाएं बाहर निकलने लगती

हैं। कराह विरोध में फूट सकती है, या आवाज पक्षी के मधुर गीत में बदल सकती है, या फिर आराधना या प्रार्थना के सहज भाव में बदल सकती है।
"जो भी हो, मन को उस पर हावी मत होने दो," श्रीमती कीज़ चेतावनी देती हैं। "ध्वनि को शांत रखो; स्थिर रहो। देखो, इस शरीर के बारे में कुछ सीखो जिसमें तुम, चेतना के रूप में, केवल एक अतिथि हो।"
"यह सत्र भले ही केवल दस मिनट का हो, लेकिन जब शरीर शुद्ध महसूस करेगा, तो एक आह निकलेगी और आपको पता चल जाएगा कि शरीर की आंतरिक आवाज़ संतुष्ट हो गई है। अनैच्छिक आह ही इसका संकेत है। आपको अच्छा महसूस होगा, जैसे कुछ हासिल हो गया हो और आपने स्वयं को एक सामंजस्यपूर्ण संपूर्णता में समेट लिया हो।"
जैसे ही आह निकल जाए और उस समय की शुद्धि पूरी हो जाए, खाली प्याले को भरने के लिए कुछ अर्पित करना चाहिए। यदि संभव हो, तो कुछ क्षणों के लिए बैठ जाएं और

 - प्रेरणा की एक पुस्तक का आनंद लें। इसके बाद आप जो भी करें, आपको यह एहसास होगा कि आपने अपने भीतर दिनभर के लिए 'प्रकाश को स्थिर' कर लिया है।
लॉरेल कीज़ का "जीवन की स्पंदनों को महसूस करने के लिए" झूलने का सुझाव विभिन्न जीवन रूपों की एक स्वाभाविक गति हो सकती है जो ऊर्जा कंपन या जिसे कुछ वैज्ञानिकों ने "गोलार्धों का संगीत" कहा है, के प्रति प्रतिक्रिया करती है।
हमने पिरामिड के अंदर पौधों पर संगीत की ध्वनियों के प्रभाव का प्रयोग किया। श्रीमती कीज़ ने बताया कि ध्वनि रचनात्मक या विनाशकारी हो सकती है। यह अवधारणा ऊर्जा क्षेत्र की तीव्रताओं से संबंधित प्रयोगों के अनुरूप है, जहाँ—जैसा कि इस पुस्तक में अन्यत्र वर्णित है—बल तीव्रता के आधार पर लाभकारी या हानिकारक हो सकते हैं। ऐसा तब हुआ जब हमने एक पिरामिड के अंदर एक ऑसिलेटर रखा, जिसका संधारित्र प्लेट एक पौधे के पास था। 7,000 चक्र प्रति सेकंड की गति उत्पन्न करने पर, प्लेट के पास वाला पौधा हिलना बंद कर दिया। एक अन्य पौधा, जो संधारित्र प्लेट के साथ संरेखित नहीं था, लेकिन फिर भी पिरामिड के अंदर था, घूमता रहा, लेकिन कम गति से। जब ध्वनि की गति को 500 चक्र प्रति सेकंड तक कम किया गया, तो प्लेट के पास वाला पौधा स्थिर रहा, लेकिन दूसरा पौधा ध्वनि उत्पन्न होने से पहले की तुलना में दोगुनी गति से घूमने लगा। फिर गति को 1,000 चक्र प्रति सेकंड तक बढ़ाया गया और जबकि पहला पौधा अभी भी स्थिर अवस्था में था, दूसरा पौधा हमारी टाइम-लैप्स फिल्मों के अनुसार अपनी इष्टतम गति तक पहुँच गया। स्पष्टतः, 1,000 चक्रों की दर दूसरे पौधे के लिए "सही" थी। हालाँकि, जैसा कि हमने पहले अनुमान लगाया था कि संगीत की ध्वनि स्थिर पौधे के लिए बहुत तीव्र थी, बाद के प्रयोगों से हमें यह विश्वास हुआ कि अवरोधक कारक संधारित्र प्लेट में एल्यूमीनियम और संभवतः स्पीकर में स्थायी चुंबक थे। जो लोग इस प्रयोग को करने में रुचि रखते हैं, हम उन्हें सुझाव देंगे कि वे स्पीकर को पिरामिड के बाहर लेकिन किनारे से सटाकर रखें ताकि पिरामिड में कंपन उत्पन्न हो सके।

ऊर्जा क्षेत्र को बाधित या अतिभारित करने के लिए अंदर मौजूद एल्यूमीनियम, चुंबक या विद्युत परिपथ को हटा दें।
जीवन रूपों पर ध्वनि के प्रभाव से संबंधित सबसे रोमांचक प्रयोगों में से एक श्रीमती डोरोथी

रेटालैक द्वारा किया गया था, जो एक पेशेवर मेज़ो-सोप्रानो गायिका और डेनवर के एक चिकित्सक की पत्नी थीं। डेनवर के टेम्पल ब्यूएल कॉलेज में अपनी पढ़ाई पूरी करते समय, श्रीमती रेटालैक अपने इस सिद्धांत का परीक्षण करना चाहती थीं कि संगीत का जीवन रूपों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उन्होंने अध्ययन के लिए पौधों को माध्यम के रूप में चुना और जीवविज्ञान के प्रोफेसर फ्रांसिस एफ. ब्रोमैन के साथ मिलकर, श्रीमती रेटालैक ने कुछ पौधों को एक स्थानीय रेडियो स्टेशन द्वारा बजाए गए रॉक संगीत के संपर्क में रखा और प्रायोगिक पौधों के एक अन्य समूह को दूसरे स्टेशन द्वारा बजाए गए शास्त्रीय संगीत के संपर्क में रखा।
पौधे रॉक संगीत से दूर झुक गए, कुछ तो 80 डिग्री के कोण पर। उनकी जड़ें उथली थीं और संगीत से दूर ही बढ़ रही थीं। पौधों के तने और पत्तियाँ छोटी और नाज़ुक थीं, और कुछ तो "उपचार" शुरू होने के कुछ ही दिनों में मुरझा गईं। पेटूनिया के फूल नहीं खिले। दूसरी ओर, कद्दू की बेलें रेडियो पर बज रहे सुरीले शास्त्रीय और धार्मिक संगीत के चारों ओर लिपट गईं। पेटूनिया के पौधों पर छह सुंदर फूल खिले। सभी पौधों की जड़ें मज़बूत थीं और पौधे बड़े और तगड़े थे। परिणामों से उत्साहित होकर, श्रीमती रेटालैक ने एक और वर्ष के लिए अपने प्रयोग जारी रखे। उन्होंने अपने शोध का दायरा बढ़ाया और प्रायोगिक तथा नियंत्रण पौधों के बीच सभी संभावित कारकों की सावधानीपूर्वक जाँच की। परिणाम समान रहे। डेनवर पोस्ट की एम्पायर पत्रिका के फोटोग्राफरों ने पौधों की वृद्धि की तस्वीरें लीं और निष्कर्षों की पुष्टि की।
डेनवर की यात्रा के दौरान हमारी मुलाकात श्रीमती रेटालैक से हुई। उन्होंने हमसे कहा, "मैं इस बात पर पूरी तरह से यकीन करती हूँ कि मेरे प्रयोगों का महत्व केवल पौधों की वृद्धि के अध्ययन से कहीं अधिक है। यह सभी जीवन रूपों के अंतर्संबंधों की ओर इशारा करने वाला एक और प्रमाण है। जो हो रहा है..."

पौधों तक सीमित प्रभाव को अलग नहीं किया जा सकता और मेरा मानना है कि यह घटना सभी जीव-जंतुओं पर लागू होती है। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य के शोधों से यह पता चलेगा कि सामंजस्यपूर्ण ध्वनियों का कोई संयोजन मानव विकास में सुधार कर सकता है और बीमारियों को ठीक कर सकता है। मेरा शोध ऊर्जा क्षेत्रों के वर्तमान शोधों में अपना स्थान पाएगा। हमारे पास यह मानने का कारण है कि प्राचीन लोगों को यह ज्ञान था; हमारा काम इसे पुनः खोजना है।
ओहियो कृषि प्रायोगिक केंद्र में बागवानी के प्रोफेसर डॉ. डेल क्रेटचमैन, श्रीमती रेटालैक जैसे शोधों की व्याख्या करते हुए बताते हैं कि उच्च आवृत्ति वाली ध्वनियाँ वृद्धि नियामकों की कोशिकाओं को प्रभावित करती हैं। सेवानिवृत्त दंत चिकित्सक और वनस्पति विज्ञान के व्याख्याता डॉ. जॉर्ज मिलस्टीन ने प्रयोगशाला में डॉ. क्रेटचमैन के सिद्धांत का परीक्षण किया और पाया कि संगीत से उपचारित पौधे सामान्य पौधों की तुलना में तेज़ी से बढ़ते हैं। पिकविक इंटरनेशनल द्वारा जारी अपने रिकॉर्ड एल्बम "म्यूजिक टू ग्रो प्लांट्स बाय" का उपयोग करते हुए, डॉ. मिलस्टीन ने बताया कि एक पौधा छह महीने में खिल गया, जबकि आमतौर पर इसमें दो साल लगते हैं।
भारतीय साहित्य में पौधों की संगीत से प्रतिक्रिया के कई संदर्भ मिलते हैं। इन मिथकों की सच्चाई जानने के लिए दक्षिण भारत के अन्नामलाई विश्वविद्यालय के डॉ. टी.सी.एन. सिंह ने 1950 के दशक में प्रयोगों की एक श्रृंखला शुरू की। उन्होंने पाया कि बीज सामान्य समय के एक तिहाई समय में अंकुरित हो जाते हैं। पौधों की वृद्धि बढ़ाने के तरीकों की खोज में, डॉ. सिंह ने पाया कि ध्वनि तरंगों की अधिकता से पौधे मुरझा जाते हैं, लेकिन यदि प्रतिदिन एक निश्चित समय पर एक विशेष धुन बजाई जाए, तो पौधे तेजी से और स्वस्थ रूप से बढ़ते हैं; साथ ही उपज

भी अधिक होती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत बजाने वाली बांसुरी या वायलिन सबसे प्रभावी साबित हुई, और यह भी पाया गया कि प्रत्येक पौधे की अपनी पसंदीदा धुनें होती हैं।
डॉ. सिंह का यह दावा था कि संगीत ऑक्सीजन के उत्पादन को 60 से 100 प्रतिशत तक बढ़ा देता है। चूंकि पौधे द्वारा उत्पादित ऑक्सीजन की मात्रा पौधे द्वारा उत्पादित भोजन के सीधे समानुपाती होती है, इसलिए उत्तेजित पौधे अधिक मात्रा में पोषक तत्व संश्लेषित करने में सक्षम होते हैं।

नियंत्रण पौधों की तुलना में, डॉ. सिंह ने कई वर्षों के प्रयोगों के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि बार-बार संगीत की उत्तेजना से कुछ पौधों की कोशिकाओं की गुणसूत्र व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।
ब्रेट एल. बोल्टन ने अपनी पुस्तक "द सीक्रेट पावर ऑफ प्लांट्स" में डॉ. सिंह के हवाले से कहा है, "आखिरकार, ध्वनि कोई मिथक नहीं है; यह एक निश्चित, मापने योग्य, भौतिक घटना है जो ऊर्जा से भरपूर है, ठीक उसी तरह जैसे प्रकाश और गर्मी जो पौधों के चयापचय और विकास को प्रचुर मात्रा में प्रभावित करती है।"
भारत के पुडुचेरी राज्य के कृषि विभाग ने फसलों में सुधार लाने के उद्देश्य से 1958 में डॉ. सिंह की अवधारणाओं पर प्रयोग शुरू किए। चावल, चीनी और टैपिओका के परीक्षणों से पता चला कि प्रायोगिक फसलों की पैदावार नियंत्रण फसलों की तुलना में आश्चर्यजनक रूप से 28 से 61 प्रतिशत तक बढ़ गई। भूसे की पैदावार में 75 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।
डॉ. सिंह के काम के बारे में सुनकर, सेंट लुइस की मैंगल्सडॉर्फ सीड कंपनी के शोध वैज्ञानिक जॉर्ज ई. स्मिथ ने अपनी कंपनी के ग्रीनहाउस में भारतीय वैज्ञानिकों के सिद्धांतों का परीक्षण करने का निर्णय लिया। उन्होंने मक्का और सोयाबीन की कई क्यारियों में पौधे लगाए। नियंत्रण समूह के पौधों को बिना संगीत के एक ग्रीनहाउस में रखा गया, जबकि प्रयोग समूह के पौधों को एक अलग ग्रीनहाउस में रखा गया, जिसमें एक फोनोग्राफ पर 20 दिनों तक चौबीसों घंटे गेर्शविन का "रैप्सोडी इन ब्लू" बजाया गया। गेर्शविन के पौधे नियंत्रण समूह के पौधों की तुलना में जल्दी अंकुरित हुए और बड़े हुए। अगला प्रयोग स्मिथ ने खेतों में किया। प्रयोग समूह के पौधों को एक ऊंचे खंभे पर लगे लाउडस्पीकर के माध्यम से "रैप्सोडी इन ब्लू" और कई अन्य गाने सुनाए गए। एक बार फिर, अंकुरण जल्दी हुआ, पौधों की वृद्धि अधिक हुई और उपचारित मक्का ने नियंत्रण समूह के मक्के की तुलना में प्रति एकड़ 20 बुशेल अधिक उपज दी। बाद के प्रयोगों ने परिणामों की पुष्टि की।

बोल्टन ने स्मिथ के हवाले से कहा, "प्रयोगों से पता चला है कि प्रकाश ऊर्जा का एक छोटा सा विस्फोट पौधे को 'जगा' सकता है और उसे अंधेरे में भी बढ़ने में मदद कर सकता है।" उन्होंने आगे कहा, "बेशक, इसका मेरे प्रयोगों से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन

इससे यह संकेत मिलता है कि विभिन्न रूपों में ऊर्जा के विस्फोट ऐसे अनूठे प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं जिनके बारे में हम अनजान हैं।"
ध्वनि, निश्चित रूप से, ऊर्जा के ज्ञात स्पेक्ट्रम का एक भाग है, जिसके भीतर अनगिनत स्पेक्ट्रम अभी भी अनदेखे हो सकते हैं। बाइबल और अन्य प्राचीन साहित्य में ध्वनि के उपयोग का उल्लेख मिलता है, और प्राचीन यूनानियों ने अपने व्यायामशालाओं में मन और आत्मा को संतुलित और संयमित करने के लिए संगीत को आवश्यक समझा था। लेकिन सदियों बीत गईं और ध्वनि को केवल आनंद और मौखिक संचार के माध्यम से ही गंभीरता से लिया गया। भारतीय फकीर आज भी अपने पकड़े गए कोबरा को वश में करने के लिए धुन बजाते हैं, भारोत्तोलक भार उठाने से पहले गुर्राते हैं, मंत्र योग का अभ्यासी बार-बार अपने मंत्र का जाप करता है, और कराटे विशेषज्ञ प्रहार करने से पहले तेज आवाज निकालते हैं, ये सभी ऊर्जा शक्ति को मुक्त करते हैं और उसे दिशा देते हैं। संभवतः वे ध्वनि का उपयोग किसी सिद्धांत के आधार पर नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने पाया है कि यह उनके लिए कारगर है। शायद हम सभी, अपने पौधों और पिरामिडों के माध्यम से यह सिद्ध करते हुए कि ध्वनि कारगर है, लंबे समय तक यह प्रश्न पूछते रहेंगे कि एक दिन हम उस कारण को समझ पाएंगे कि मिस्र में प्रशिक्षित पाइथागोरस ने अपने विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के लिए विभिन्न प्रकार के संगीत का उपयोग करने पर जोर क्यों दिया था। इस पहेली के और भी टुकड़े हर दिन इकट्ठा किए जा रहे हैं।

10. पिरामिड और चेतना की परिवर्तित अवस्थाएँ
सन्नाटे ने मेरे चारों ओर भयावह दीवारें खड़ी कर दीं; मैं (शुल) कट गया, अपनी वास्तविकता से अलग हो गया, और मैंने खुद को अंतरिक्ष में संभलने के लिए अपने चेहरे, अपने पैरों, जिस फर्श पर मैं बैठा था, उसे छुआ। सन्नाटा छटता और फिर लौटकर मुझ पर दबाव बनाने लगा। सन्नाटा बढ़ता गया, भारी होता गया, और अंत में अपने ध्वनि-विरोध से मुझ पर चिल्ला उठा। मैंने सुना। मेरा पूरा अस्तित्व 'सुनना' क्रिया बन गया। और फिर मैं नहीं रहा।
मैं कितनी देर तक वहाँ अँधेरे में योगासन मुद्रा में बैठी रही, यह मुझे नहीं पता। सब कुछ रुका हुआ था, लेकिन कहीं से समय का एक टुकड़ा और अंतरिक्ष में एक छोटा सा दरार आ गया और मैं फिर से प्रकट हो गई। यह मैं ही थी, मुझे पता था, याद था, और मैंने खुद को फिर से बनाया... मैं एक कंक्रीट के फर्श पर, एक प्लास्टिक के पिरामिड के अंदर, एक लकड़ी की इमारत के अंदर, एक बगीचे के अंदर, एक ब्रह्मांड के अंदर। बाहर सड़क पर एक कार गुजरी और थोड़ी दूर पर दो कुत्ते एक-दूसरे को अपने इलाके के अधिकारों के बारे में बता रहे थे। मैंने बाहर से वास्तविकता की वस्तुएँ इकट्ठा कीं, कार और फिर एक और,

कुत्ते, हवा के झोंके जो एल्म के पत्तों से होकर भारी साँसें ले रहे थे।
एक बार जब मैंने सब कुछ इकट्ठा कर लिया, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं उन वस्तुओं को छोड़ सकता हूँ और अपने भीतर फिर से शांति पा सकता हूँ। शांति लौट आई, लेकिन इस बार माँगने के बजाय साझा करने के लिए, और एक गहरी, व्याप्त संतुष्टि की भावना ने मुझे घेर लिया। मैं वही था और वही रहूँगा; इस शांति का एकमात्र स्रोत यही है।
कुछ देर बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं हिल गया हूँ। मैं खड़ा था और ठीक मेरे सामने, मेरे पैर आधार को छू रहे थे, गीज़ा का विशाल पिरामिड था। यह अहसास मुझे अजीब नहीं लगा, लेकिन पर्वत की विशालता देखकर मैं लगभग अभिभूत हो गया। मैं कुछ देर तक विस्मय में खड़ा रहा, उसकी चोटी को देखता रहा। अचानक, मैं पिरामिड के अंदर था। मैं किसी कमरे या गलियारे में नहीं था, फिर भी मुझे ऐसा नहीं लग रहा था कि मैं पत्थर में जकड़ा हुआ हूँ और संरचना के भीतर होते हुए भी मैं ऊपर देखकर उसकी चोटी को देख सकता था। उतनी ही तेज़ी से, दृश्य बदल गया और मैं राजा के कक्ष में था। मैं पत्थर के ताबूत की ओर बढ़ा और उसमें लेट गया, मानो स्वाभाविक रूप से, अपनी आँखें बंद कर लीं, गहरी साँस ली और प्रतीक्षा की। आँखें खोले बिना ही, मुझे एहसास हुआ कि वहाँ कई सत्ताएँ उपस्थित थीं। वे मुझे मौन संदेश भेज रही थीं। मैं अपने शरीर से बाहर निकला और कक्ष में मंडराया और ताबूत में अपने शरीर को देखा, लेकिन उसमें मेरी कोई रुचि नहीं थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं कक्ष से निकलकर पिरामिड के दूसरे हिस्से की ओर बढ़ रहा हूँ, लेकिन ठीक पहले की तरह अचानक ही दृश्य बदल गया। अब वह महान पिरामिड नहीं था; बल्कि नौ फुट का प्लास्टिक का मॉडल था। इस बदलाव ने मुझे चौंका दिया; पहले वाला तो बिल्कुल असली लग रहा था।
मैं अपनी निराशा से जूझता रहा। चूंकि मैंने पिरामिड के अंदर रात बिताने की योजना बनाई थी, इसलिए मैं पलंग पर लेट गया। फिर भी मुझे नींद नहीं आ रही थी क्योंकि मैं यह समझने की कोशिश कर रहा था कि मेरे साथ क्या हुआ है। स्पष्ट रूप से, मैं सो नहीं रहा था और न ही सपना देख रहा था, क्योंकि शारीरिक लक्षण स्पष्ट थे।

नींद में प्रवेश करने और नींद से जागने की अनुभूति नहीं हो रही थी। मुझे पूरा यकीन था कि यह कोई कल्पना नहीं थी, क्योंकि मैंने सामान्य मानसिक प्रक्रियाओं का अनुभव नहीं किया था। मैं उस समय ध्यान कर रहा था और सबसे संभावित स्पष्टीकरण मानसिक प्रक्षेपण का अनुभव प्रतीत होता था। यदि यह शरीर से बाहर का अनुभव था, तो एक स्तर पर यह उतना ही वास्तविक था जितना कि एक वास्तविक शारीरिक अनुभव।
पॉल ब्रंटन का ग्रेट पिरामिड में अकेले बिताई रात का वृत्तांत मुझे बार-बार याद आ रहा था। 1930 के दशक की शुरुआत में लेखक-दार्शनिक डॉ. पॉल ब्रंटन को पिरामिड के अंदर रात बिताने का अत्यंत अभूतपूर्व सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन्होंने अपने इस अनुभव का वर्णन अपनी पुस्तक 'ए सर्च इन सीक्रेट इजिप्ट' में किया है। जहाँ तक ज्ञात है, सौ वर्षों से कोई भी पिरामिड में रात नहीं बिता पाया था, और न ही ब्रंटन के बाद कोई ऐसा कर पाया है। उन्हें बताया गया था कि इसकी अनुमति नहीं है और बड़ी ज़िद के बाद ही उन्हें अनुमति मिली। इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों के साथ-साथ कई अन्य लोगों में भी यह आम धारणा है कि पिरामिड में प्रेतवाधित आत्माएँ रहती हैं। सदियों से ऐसी विचित्र कहानियाँ प्रचलित हैं कि रात में पिरामिड के अंदर कुछ प्राणी जीवित हो उठते हैं और गलियारों में घूमते हैं। सूर्यास्त के बाद वहाँ रुकने का साहस करने वाले लोग फिरौन के श्राप को आमंत्रित करते हैं और यदि वे किसी तरह बच भी जाते हैं, तो वे पूरी तरह से

पागल हो जाते हैं।
सूर्यास्त के समय प्रवेश द्वार का लोहे का फाटक बंद करने का रिवाज था और ब्रंटन को बताया गया कि इसमें कोई अपवाद नहीं किया जा सकता। अंदर प्रवेश करने के बाद, वह अंधेरे के घंटों के दौरान लगभग एक कैदी की तरह था। वह संकरे रास्तों से गुजरा, जहाँ उसे बड़े-बड़े चमगादड़ दिखाई दिए और उसकी टॉर्च की रोशनी से उसकी ही परछाईं उभरती हुई दिखाई दी। वह राजा के कक्ष में पहुँचा, ताबूत जैसे सरकोफैगस के पास बैठ गया, बत्ती बंद कर दी और प्रतीक्षा करने लगा।
उन्होंने मन की एक निष्क्रिय, ग्रहणशील अवस्था प्राप्त कर ली और पूरी रात उस चिंतनशील अवस्था को बनाए रखने का दृढ़ निश्चय किया।
कमरे का वातावरण उसके लिए बहुत वास्तविक हो गया, और यह एहसास बढ़ता गया कि वह अकेला नहीं है, "कि कोई-

सजीव और जीवंत वस्तु अस्तित्व में आने लगी... जल्दी ही मैंने पाया कि मेरे चारों ओर अदृश्य जीवन की अनुभूति तेजी से पूर्ण निश्चितता में तब्दील हो गई।
ब्रंटन अपने भय और उस "अज्ञात भय" से जूझ रहे थे जो उनके हृदय में हलचल मचा रहा था, और उन्होंने फर्श पर अपनी ध्यानमग्न मुद्रा बनाए रखने का प्रयास किया। "परछाईं रहित कमरे में परछाइयाँ इधर-उधर मंडराने लगीं; धीरे-धीरे इनका आकार स्पष्ट होता गया, और अचानक मेरे चेहरे के बिल्कुल करीब भयावह चेहरे दिखाई दिए। भयावह छवियाँ मेरे मन में स्पष्ट रूप से उभर आईं। फिर एक काला साया आगे बढ़ा, उसने मुझे एकटक भयावह निगाहों से देखा और धमकी भरे अंदाज़ में अपने हाथ उठाए, मानो मुझे भयभीत करना चाहता हो..."
उसे उसकी निगरानी से हटाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा था। "अंततः चरमोत्कर्ष आ गया। भयानक मौलिक रचनाएँ, पाताल लोक के भयानक राक्षस, विकृत, पागल, असभ्य और शैतानी रूप वाले जीव मेरे चारों ओर जमा हो गए और मुझे अकल्पनीय घृणा से भर दिया। कुछ ही मिनटों में मैंने एक ऐसा अनुभव किया जो हमेशा के लिए एक अविस्मरणीय छाप छोड़ जाएगा। वह अविश्वसनीय दृश्य मेरी स्मृति में स्पष्ट रूप से अंकित है..."
लेकिन अंत "अचानक और चौंकाने वाली" गति से आया। पत्थर के तहखाने में सन्नाटा छा गया। तभी एक नई उपस्थिति प्रकट हुई। वातावरण भय और बुराई से बदलकर पवित्रता और विवेक से भर गया। ब्रंटन ने एक मित्रवत और दयालु प्राणी के प्रवेश का अनुभव किया, और फिर दूसरे का। वे उसके पास आए और लंबे, सफेद वस्त्रधारी आकृतियों के रूप में दिखाई दिए। "वास्तव में, वे मनुष्य से कहीं अधिक लग रहे थे, जैसे अर्ध-देवताओं का तेजस्वी रूप धारण किए हुए हों; क्योंकि उनके चेहरे पर एक अद्वितीय शांत भाव था।"
कुछ समय तक निगरानी में रहने के बाद, ब्रंटन को बताया गया कि उसे यहाँ नहीं आना चाहिए था, उसे "मनुष्यों के लिए निर्धारित मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।" जब उसने कहा कि उसे अपने चुने हुए मार्ग का अनुसरण करना ही है और उसे छोड़ने के लिए राजी नहीं किया जा सकता, तो एक ऐसे प्राणी ने, जिसकी तुलना उसने एक मिस्र के महायाजक से की, उससे बात की। "ऐसा ही हो। तूने..."

चुना हुआ। अपने इस चुनाव पर कायम रहो, क्योंकि अब इसे वापस नहीं लिया जा सकता।

अलविदा।
जब पहली आकृति चली गई, तो दूसरी आकृति पास आई। "मेरे पुत्र," उसने कहा, "गुप्त शक्तियों के शक्तिशाली स्वामियों ने तुझे अपने वश में कर लिया है। तुझे आज रात विद्यागृह में ले जाया जाएगा।" उसे पत्थर के ताबूत पर लेटने को कहा गया; उसका शरीर सुन्न हो गया और पैरों से लेकर पूरे शरीर में ठंडक सी दौड़ गई। जब सारी चेतना उसके सिर में सिमट गई, तो उसे लगा जैसे वह किसी बवंडर में फंस गया हो, और एक संकरे छेद से ऊपर की ओर जाते हुए, "मैं अज्ञात में छलांग लगा गया - मैं मुक्त हो गया!"
अपने शरीर से बाहर, एक "प्रेत... जो कोमल चाँदनी जैसी रोशनी में दीवार के पत्थरों को दिखा रहा था," ब्रंटन को कथित तौर पर पिरामिड के अन्य हिस्सों में ले जाया गया जहाँ उनके मेज़बान ने उन्हें निर्देश दिए। यद्यपि शिक्षाओं के कुछ अंश पाठक को दिए गए हैं, फिर भी यह स्पष्ट आभास होता है कि कई गुप्त अंतर्दृष्टियाँ थीं जिन्हें ब्रंटन ने या तो प्रकट न करने का विकल्प चुना या उन्हें ऐसा करने का निर्देश दिया गया था। ब्रंटन की बाद की पुस्तकों, विशेष रूप से 'द विजडम ऑफ द ओवर-सेल्फ' को पढ़ने पर, उनके संदेश की गहनता से कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। तब मन में यह सवाल उठता है कि क्या उस रहस्यमयी रात के संदेश दिए जा रहे हैं। ब्रंटन कभी कुछ नहीं कहते। फिर भी, उन्हें दिए गए निर्देशों में से एक, जिसे वे साझा करते हैं, वास्तव में सभी निर्देशों का सार हो सकता है: "...महान पिरामिड का रहस्य तुम्हारे स्वयं के अस्तित्व का रहस्य है। गुप्त कक्ष और प्राचीन अभिलेख सभी तुम्हारे अपने स्वभाव में समाहित हैं..."
अपने छोटे से अंधेरे में बैठे हुए, जो ब्रंटन के माहौल से कहीं कम रोमांटिक था, मैं खुद से कहता रहा कि मैं किसी भव्य भ्रम में जी रहा हूँ, कि अपने अनुभव की तुलना उनके अनुभव से करना मेरे लिए नाटकीयता थी। लेकिन बात यही थी। उस समय जो मुझे पूरी तरह से वास्तविक लगा था, उसकी जीवंतता को मैं मिटा नहीं सका। मैं भी अपने भीतर चला गया था और मैंने पूछा, क्या कोई अनुभव अपने भीतर के अलावा कहीं और होता है? ब्रंटन का अनुभव पत्थर को नहीं हुआ।

लेकिन अपने भीतर; क्या मेरे उस अनुभव को नकारा जा सकता है क्योंकि वह पृथ्वी पर किसी अन्य स्थान पर और विभिन्न सामग्रियों से बनी संरचना के भीतर घटित हुआ था?
ग्रेट पिरामिड में राजा के कक्ष के ठीक ऊपर स्थित अंधकारमय तहखाने में हाल के इतिहास में एक व्यक्ति सचमुच रहता था। कैप्टन जी. बी. कैविग्लिया एक रहस्यमय व्यक्ति थे। 1830 के दशक में कैविग्लिया ने गीज़ा के मैदान में पिरामिड देखे और उनके रहस्य से मोहित हो गए। माल्टा के एक व्यापारी जहाज के कप्तान, उन्होंने समुद्री जीवन त्याग दिया और ग्रेट पिरामिड उनकी नई प्रेमिका बन गई। उन्होंने डेविसन के कक्ष (जिसका नाम नथानिएल डेविसन के नाम पर रखा गया था, जिन्होंने लगभग 1765 में इस कमरे की खोज की थी) से चमगादड़ों की बीट साफ की और तीन फुट ऊंचे उस कमरे में अपना घर बसा लिया।
अलेक्जेंडर विलियम क्रॉफर्ड (लॉर्ड लिंडसे), जो काहिरा में कैविग्लिया को जानते थे, ने इस इतालवी व्यक्ति को अत्यंत धार्मिक लेकिन एक विलक्षण व्यक्ति बताया। क्रॉफर्ड ने लिखा: "कैविग्लिया ने मुझे बताया कि उन्होंने जादू, पशु चुंबकत्व आदि के अध्ययन को इस हद तक आगे बढ़ाया था कि वे लगभग मर ही गए थे... उन्होंने कहा कि वे उस सीमा तक पहुँच गए थे जिसे मनुष्य को जानना वर्जित है, और केवल उनके इरादों की पवित्रता ने ही उन्हें बचाया।"

क्रॉफर्ड ने इस बारे में और कोई जानकारी नहीं दी है, और कैविग्लिया, जिनकी कई साल बाद पेरिस में मृत्यु हो गई, ने अपने अनुभवों का कोई लिखित रिकॉर्ड नहीं छोड़ा।
राजा के कक्ष के मन को झकझोर देने वाले गुणों से जुड़े एक अन्य अनुभव का उल्लेख करना आवश्यक है। यह अनुभव संक्षिप्त था, लेकिन इसने इतिहास को बदल दिया होगा; क्योंकि इसका उस व्यक्ति के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था जिसने कुछ समय के लिए कई राष्ट्रों पर शासन किया था। 1798 में नेपोलियन बोनापार्ट ने मिस्र पर विजय प्राप्त की। उन्होंने महान पिरामिड का दौरा किया और राजा के कक्ष में प्रवेश करते ही कुछ समय के लिए अकेले रहने का अनुरोध किया।
पीटर टॉम्पकिंस ने अपनी पुस्तक 'सीक्रेट्स ऑफ द ग्रेट पिरामिड' में इस घटना का वर्णन किया है। "बाहर आने पर, जनरल का चेहरा पीला पड़ गया था और वे काफी प्रभावित थे। जब एक सहायक ने उनसे मज़ाकिया लहजे में पूछा कि क्या उन्होंने कुछ रहस्यमय देखा है, तो बोनापार्ट ने अचानक जवाब दिया कि उनके पास इस पर कोई टिप्पणी नहीं है।"

उसने नरम स्वर में कहा कि वह नहीं चाहता कि उस घटना का जिक्र फिर कभी हो।
कई वर्षों बाद, जब वह सम्राट बन गए, तब भी नेपोलियन ने पिरामिड में घटी इस विचित्र घटना के बारे में बोलने से इनकार कर दिया, केवल इतना संकेत दिया कि उन्हें अपने भाग्य का कुछ पूर्वाभास मिला था। सेंट हेलेना में, अंत से ठीक पहले, ऐसा लगता है कि वह लास केसेस को यह बात बताने ही वाले थे, लेकिन इसके बजाय उन्होंने अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'नहीं। क्या फायदा। तुम कभी मुझ पर विश्वास नहीं करोगे।'
ग्रेट पिरामिड के भीतर के अनुभवों की और भी कई विचित्र कहानियाँ हैं। लेकिन हममें से अधिकांश के लिए उन लोगों के व्यक्तिगत वृत्तांत कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने पिरामिड की प्रतिकृतियों के भीतर कुछ अलग या असामान्य अनुभव किया है। ये अनुभव उन सभी को आसानी से प्राप्त हो सकते हैं जो बैठने, खड़े होने या लेटने के लिए पर्याप्त बड़ा पिरामिड बनाने या उधार लेने को तैयार हों। ये अनुभव, निश्चित रूप से, व्यक्तिपरक प्रकृति के होंगे। इनके स्रोत को समझने का प्रयास करते हुए, यह कहा जा सकता है कि प्रेक्षक कल्पना कर रहा है, भ्रम में है, मतिभ्रम कर रहा है या अनुभव गढ़ रहा है। यह सत्य है, और यही बात ब्रंटन के अनुभव या किसी भी व्यक्तिगत अनुभव के लिए कही जा सकती है। हम वास्तविकता और असाधारण वास्तविकताओं की प्रकृति पर दार्शनिक चर्चाओं में गहराई से उतर सकते हैं। लेकिन, अंततः, जिन अनुभवों पर हम सबसे अधिक विश्वास करते हैं, वे वे अनुभव होते हैं जिन्हें हम किसी न किसी रूप में दूसरों के साथ साझा करते हैं।
पिरामिडनुमा संरचनाओं में थोड़े-थोड़े समय और लंबे समय तक रहे लोगों के अनुभवों को जानने पर हमें ऐसे कई समान अनुभव मिलते हैं। हमने इनमें से कई लोगों से मुलाकात की और पाया कि उनके अनुभव आपस में मिलते-जुलते थे, जबकि उन्हें दूसरों के अनुभवों की कोई पूर्व जानकारी नहीं थी। कई ऐसे लोगों से, जिन्हें पिरामिड के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, पिरामिड के अंदर ध्यान करने या कुछ समय के लिए बैठने के लिए कहा गया और उनसे पूछा गया कि उन्हें बाद में कैसा महसूस हुआ या उन्होंने क्या सोचा।

इनमें समान लक्षण थे एकांत, शांति और दुनिया से अधिक अलगाव की भावना, और भौतिक

मामलों की चिंता में कमी। इन भावनाओं के कारण, ध्यान से परिचित लोगों ने बताया कि वे कम विचलित, अधिक एकांतप्रिय और अधिक आसानी से आत्म-केंद्रित महसूस करते हैं। हालांकि कुछ लोगों ने कहा कि उन्हें पिरामिड के अंदर और बाहर कोई अंतर महसूस नहीं हुआ, लेकिन वे अपवाद थे। अधिकांश लोगों ने कुछ न कुछ अनुभव किया, भले ही वह शांति या हल्का उत्साह ही क्यों न हो। विश्राम एक आम अनुभव था, साथ ही नई ऊर्जा या ऊर्जावान महसूस करना भी।
"पिरामिड के अंदर ध्यान करते समय, मैंने अपने शरीर में एक भार या बल का अनुभव किया, जो सिर के ऊपरी भाग से शुरू होकर कंधों, शरीर और पैरों तक नीचे की ओर बढ़ता गया," कार्ल वाल्डन ने हमें बताया। "अगले दिन मेरे विचारों में विशेष स्पष्टता थी, बहुत अधिक ऊर्जा थी, और जानने और समझने की क्षमता थी।"
"मुझे दिल की तेज़ धड़कन का एहसास हो रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे मेरे अंदर कुछ हलचल हो रही हो। मेरा सिर मानो ऊपर की ओर खिंचा चला जा रहा था और प्रार्थना की मुद्रा में हाथ जोड़ने की इच्छा हो रही थी," लोरा ली कैंप ने बताया।
कैंप की प्रतिक्रिया से अनभिज्ञ अन्ना मे इंग्राम ने हमें बताया, "पहला अनुभव तो शांति और सन्नाटे का था। कुछ मिनटों बाद ऐसा लगा जैसे मेरे चारों ओर एक भारी दबाव हो, जो मुझे कुर्सी में गहराई तक जकड़ रहा हो या धकेल रहा हो। ऐसा लगा जैसे मेरा दिल बड़ा हो गया हो और मुझे अपने दिल की धड़कन का पूरा एहसास हो रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई शक्ति दिल तक जा रही हो या दिल से आ रही हो। पूरा शरीर कंपन करने लगा—एक झनझनाहट—जैसे कोई बहुत तेज़ी से कंपन करने वाली मशीन को पकड़े हुए हो।"
फिल्म अभिनेत्री ग्लोरिया स्वानसन ने बताया है कि जब वह अपने बिस्तर के नीचे एक छोटा पिरामिड रखकर सोती हैं तो उन्हें "झुनझुनी" महसूस होती है। पिरामिड पावर नामक पुस्तक में मैक्स टोथ और ग्रेग नीलसन लिखते हैं: "इन प्रयोगों में भाग लेने वाले कई लोगों द्वारा किया गया एक और दिलचस्प अवलोकन यह था कि जब उन्होंने अपने हाथों को पिरामिड के शीर्ष पर उठाया, तो उन्हें एक झुनझुनी का अनुभव हुआ।"

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे शरीर के बाहरी हिस्से में छोटी-छोटी सुइयां चुभाई जा रही हों। झुनझुनी जैसी ये अनुभूतियाँ उन लोगों के बयानों की याद दिलाती हैं जो मल्टीवेव ऑसिलेटर या रीच ऑर्गेन एक्यूमुलेटर की ऊर्जा शक्ति के संपर्क में आते हैं। कभी-कभी किसी को एक्यूपंक्चर के बारे में भी इसी तरह की टिप्पणी करते हुए सुना जाता है।
हृदय में असामान्य संवेदनाओं की रिपोर्टों के संबंध में, टोथ और नीलसन टिप्पणी करते हैं:
"कथित तौर पर, पिरामिड के भीतर सबसे लाभकारी ऊर्जाएं तथाकथित हृदय केंद्र में केंद्रित होती हैं। यह वह स्थान है जो संभवतः विचार-रूपों के विकास के लिए सबसे 'सुरक्षित' है। हालांकि, यह सुझाव दिया गया है कि विभिन्न विचार-रूपों को अलग-अलग स्थानों पर विकसित करना सबसे अच्छा हो सकता है ताकि पिरामिड के भीतर मौजूद व्यक्ति को विशिष्ट विचार-रूप को पूरा करने के लिए सबसे लाभकारी ऊर्जा प्राप्त हो सके।"
पिरामिडनुमा संरचनाओं में नियमित रूप से ध्यान करने वाले व्यक्तियों ने दावा किया है कि उन्हें शांति और ब्रह्मांडीय शक्तियों के साथ एकात्मता का अनुभव होता है। कई लोगों ने बताया है कि पिरामिड के अंदर रहते हुए उन्हें आध्यात्मिक अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं और बाहर निकलने पर उनकी चेतना में मानसिक अनुभूतियाँ उमड़ पड़ती हैं।
ओरेगन की रहने वाली टेनी हेल, जो मानसिक रूप से संवेदनशील हैं, का दावा है कि सात दिनों के उपवास और गहन ध्यान के दौरान जब उनकी जागरूकता बढ़ी, तो उन्हें चेतना की लाभकारी

परिवर्तित अवस्थाओं को प्राप्त करने और अपनी पहले से मौजूद अलौकिक बोध क्षमताओं को बेहतर बनाने के लिए एक पिरामिड का उपयोग करने का निर्देश दिया गया। ध्यान अभ्यास के बाद पिरामिड से बाहर निकलते ही, उनका दावा है कि उनके मन में मानसिक छापें भर जाती हैं। एक बार उन्होंने अपने टाइपराइटर पर जाकर 100 अलग-अलग भविष्यवाणियां टाइप कीं। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की रिपोर्टों के अनुसार, श्रीमती हेल की कई मानसिक भविष्यवाणियां सटीक साबित हुई हैं।
दो मानसिक शोधकर्ता कुछ समय के लिए फ्लोरिडा में एक विशाल लकड़ी के पिरामिड में रहे। रेवरेंड रॉन ओस्टरब्रो और श्रीमती रोज़ स्टीफेंस मुख्य रूप से फलों के रस पर निर्भर थे।

उन्होंने ध्यान में काफी समय बिताया। एक महीने बाद दंपति ने शारीरिक बीमारियों के इलाज, मनुष्य की उत्पत्ति और उद्देश्य, और भविष्यवाणी से संबंधित जानकारी प्राप्त होने की सूचना दी। पिछले एक साल से मैं (पेटिट) सप्ताह में दो रातें हमारे किसी पिरामिड में सोता हूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस अनुभव ने मेरे अच्छे स्वास्थ्य और ऊर्जा में वृद्धि में योगदान दिया है। मुझे पिरामिड में सोने का बेसब्री से इंतज़ार रहता है क्योंकि वहाँ मुझे शांति और सुकून भरा एकांत मिलता है। पिरामिड के अंदर तनावग्रस्त रहना बहुत मुश्किल है, और यह सुकून का एहसास दिनभर बना रहता है।
सपने देखना, बेशक, जागरूकता की एक अवस्था है, और मैंने गौर किया है कि हाल के महीनों में मेरे सपने ज़्यादा स्पष्ट और जीवंत हो गए हैं। कई सपनों में जागृत अवस्था की वास्तविकता झलकने लगी है। हाल ही में एक सपना आया जिसमें एक छोटा बच्चा हंस रहा था, मानो उसमें मानव विकास का पूरा दृश्य समाहित हो गया हो। हंसता हुआ शिशु इस ग्रह पर मनुष्य के जीवन की प्रकृति को दर्शाने का एक सजीव तरीका प्रतीत हुआ; वह शिशु अपने आप में एक प्राचीन आत्मा था, लेकिन एक बार फिर बच्चे के रूप में प्रकट हुआ था।
एक और मौके पर, पिरामिडनुमा इमारत में पलंग पर लेटे हुए, नींद और जागने के बीच की धुंधली अवस्था में, मैंने देखा कि हरे-भरे खेतों के बीच से गुजरती हुई एक चौड़ी, सफेद सड़क के किनारे ऊंचे-ऊंचे पेड़ लगे हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी नीले और सफेद रंग के वाहन को चला रहा हूँ। वह वाहन एक ऐसे स्थान पर आकर रुका जिसे मैं स्वच्छता विभाग का कूड़ा-कचरा क्षेत्र जानता था, लेकिन वह जगह बेहद खूबसूरत ढंग से बनाई गई थी, लगभग आधा मील चौड़ी और एक मील लंबी।
मेरे सामने आठ चमकते हुए पिरामिड थे, जिनमें से प्रत्येक को अलग-अलग हल्के रंगों से रंगा गया था। मुझे ऐसा लग रहा था कि ये पिरामिड लगभग 250 फीट ऊंचे और 375 फीट चौकोर आधार वाले थे।
मुख्य सड़क से संकरी सड़कें निकलती थीं जो पिरामिड तक पहुँचने के रास्ते का काम करती थीं। प्रत्येक सड़क रंगीन कंक्रीट की बनी थी जिसका रंग पिरामिड के रंग से मेल खाता था।

जिसका नेतृत्व वे कर रहे थे। उस समय उपयोग में आने वाला पिरामिड पूर्व दिशा से गिनने पर 'तीसरा' था। मैं सैल्मन रंग की सड़क पर मुड़ा और उसी रंग के पिरामिड की ओर गाड़ी चलाने लगा। मुझे सड़क के किनारे उगते पौधों और फूलों की मनमोहक खुशबू आ रही थी, लेकिन कूड़े-कचरे की कोई दुर्गंध नहीं थी।

मैंने गाड़ी को पिरामिड के आधार तक ले जाकर खड़ा किया और अपना सारा कचरा एक लंबी कन्वेयर बेल्ट पर डाल दिया, जो कचरे को पिरामिड के अंदर ले जाती थी। कचरे को पिरामिड के अंदर 160 फुट के एक वर्गाकार क्षेत्र में ढेर किया जाता था और सात सप्ताह तक वहीं रखा जाता था ताकि वह सूख जाए और हानिकारक बैक्टीरिया से मुक्त हो जाए। इसके बाद इसे एक भूमिगत कन्वेयर बेल्ट प्रणाली द्वारा अंतिम प्रसंस्करण के लिए पास के संयंत्रों में ले जाया जाता था, जहाँ विभिन्न सामग्रियों को अलग किया जाता था, कुछ का उपयोग भवन निर्माण में, कुछ का सड़क निर्माण में और जैविक पदार्थों का उपयोग उर्वरक के लिए किया जाता था।
वह दृश्य मेरे लिए बहुत वास्तविक था, और मैं अब भी उसे कुछ विस्तार से देख सकता हूँ। मुझे जो स्पष्ट दृश्य कल्पनाएं दिखाई देती हैं, वे उन लोगों के लिए असामान्य नहीं हैं जिन्होंने पिरामिड के अंदर कुछ समय बिताया है। उन्होंने स्मृति में वृद्धि और कथित तौर पर पिछले जन्मों के दर्शन होने की बात कही है।
इनेज़ पेटिट ने एक पिरामिड के अंदर काफी समय बिताया है, जहाँ वे एक से दो घंटे तक आराम करती हैं। वहाँ वे मानो अर्ध-नींद की अवस्था में चली जाती हैं, अपने आसपास की दुनिया से सचेत रहते हुए भी उनके भीतर की व्यक्तिपरक दुनिया अपनी अलग वास्तविकता का रूप ले लेती है।
एक बार उसने खुद को एक विशाल शहर के ऊपर तैरते हुए पाया। उसने कहा कि वह शहर खूबसूरती से बसाया गया था और इंद्रधनुषी रोशनी से जगमगा रहा था। शहर के चारों ओर पॉलिश किए हुए पत्थरों के विशाल पिरामिड बने हुए थे। पिरामिडों के ऊपरी पत्थर क्रिस्टल के प्रतीत होते थे, जिनसे एक कोमल लेकिन चमकदार रोशनी निकल रही थी। उसने कहा कि वह जानती थी कि ये पिरामिड शहर के लिए ऊर्जा उत्पादन का काम करते थे।
शहर के लोग कफ्तान जैसे लंबे वस्त्र पहनते थे;

 ठोस और धारीदार वस्त्रों में पुरुष और फूलों से सजे वस्त्रों में महिलाएं। वे काफी लंबे दिखाई दे रहे थे, लगभग 10 से 15 फीट। सभी विशेष रूप से जीवंत, हंसमुख और हंसते हुए लग रहे थे।
"मुझे ज़मीन पर कोई वाहन नज़र नहीं आया। इसके बजाय, पूरे शहर में चौड़े-चौड़े चलते हुए रास्ते बने हुए थे," इनेज़ ने कहा। "ये रास्ते हरे रंग के थे और घास की तरह मुलायम थे। ये धीरे-धीरे चलते थे ताकि लोग नज़ारों का आनंद ले सकें, और शहर के ब्लॉक जितने बड़े कई बगीचे थे। इन चलते हुए रास्तों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पत्थर की बेंचें लगी हुई थीं।"
"मैं बातचीत सुन सकता था, जो आजकल अधिकांश समूहों में आम बात है, बच्चों, घरों, विभिन्न रुचियों और शौक के बारे में बातें हो रही थीं। मैंने एक महिला को दूसरी से यह कहते सुना कि आज उसका जन्मदिन है और 492 साल की उम्र में वह अधेड़ होने से ज़्यादा खुश नहीं है। दूसरी महिला ने कहा, 'बस 900 साल की उम्र तक इंतज़ार करो, तब तुम्हें बुढ़ापा महसूस होने लगेगा।'
"सभी घर एक ही आकार के थे, किसी पारदर्शी पदार्थ से बने चौकोर कमरों जैसे दिखते थे। घरों के अलावा भी इमारतें थीं, लेकिन उनमें से कोई भी बहुत ऊंची नहीं थी, तीन या चार मंज़िल से ज़्यादा ऊंची नहीं। मैं एक घर में गया। मैंने देखा कि वहाँ एक बहुत बड़ा कमरा था जिसमें पत्थर के गद्दीदार सोफे और बेंचें रखी थीं। कमरे की एक दीवार मनोरंजन और संचार केंद्र थी। जब उन्हें फिल्में देखनी होती थीं, तो वे किसी तरह पूरी दीवार को अपारदर्शी बना देते थे और मनोरंजन शुरू हो जाता था, या अगर उन्हें किसी से बात करनी होती थी, तो वह व्यक्ति दीवार पर प्रकट होकर उनसे बात करता था। मुझे सच में नहीं पता कि वे ये सब कैसे करते थे। मुझे वहाँ कोई बटन या

घुंडी नहीं दिखी जिसे दबाया या घुमाया जा सके। शायद वे सिर्फ अपनी इच्छाशक्ति से ही ये सब करते थे।"
मुझे इस बात की चिंता सता रही थी कि कोई काम करता हुआ नहीं दिख रहा था। कुछ इमारतें कला और शिल्प के शौक केंद्रों जैसी रही होंगी। एक और बात, मुझे वहां कोई वॉशर या ड्रायर या किसी भी तरह का वॉशरूम नहीं दिखा; न रसोई, न स्नानघर, न मेज और कुर्सियां, न ही ऐसा कुछ। मैंने किसी को खाते हुए भी नहीं देखा।

कुछ भी नहीं। वे सभी एकदम साफ-सुथरे थे और उनके कपड़े भी बेदाग थे। मेरे मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे जिनके जवाब मुझे नहीं मिल रहे थे।
शहर में वाहनों का एक अनोखा आवागमन होता था, जो पूरी तरह से हवा में चलता था। आंसू के आकार के पारदर्शी जहाज अविश्वसनीय गति से शहर के ऊपर मंडराते थे। उतरते ही वे सीधे नीचे आकर छतों पर बैठ जाते थे। ऐसा लगता था कि जहाजों में चलने का कोई प्रत्यक्ष साधन नहीं था और वे कोई आवाज नहीं करते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि जब वे शहर में होते थे, तो उन्हें पिरामिडों से स्वतः ही ऊर्जा प्राप्त हो जाती थी। हालांकि, कई बार उन्हें ऊर्जा पुनः प्राप्त करने की आवश्यकता होती थी। ऐसा तब होता था जब उन्हें किसी दूसरे शहर या अंतरिक्ष में जाना होता था। तब जहाज अपनी यात्रा के लिए अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त करने के लिए कुछ समय के लिए पिरामिडों में से किसी एक के शिखर पर मंडराते थे। ऊर्जा पुनः प्राप्त करने का समय उनके द्वारा तय की जाने वाली दूरी पर निर्भर करता था।
"कई जहाजों को पिरामिड के शक्ति क्षेत्रों से निकलते और अंतरिक्ष में तेजी से जाते हुए देखकर, मैं धीरे-धीरे अपनी आधी नींद से जागा। वह दृश्य विशेष रूप से स्पष्ट था और मुझे पूरा विश्वास है कि मैं उसे लंबे समय तक याद रखूंगा। हालांकि मैं तब से कई बार पिरामिड में लौट चुका हूं और कई अन्य रोचक अनुभव भी हुए हैं, लेकिन मैं कभी भी इंद्रधनुषी शहर में वापस नहीं गया।"
सपनों के संदर्भ में, यह दिलचस्प है कि मार्क लेनर ने ए.आर.ई. जर्नल के हालिया अंक में लिखे एक लेख, "मिस्र - एक यात्रा पर विचार" में एक बहुत बूढ़े अरब गाइड से अपनी मुलाकात का वर्णन किया है। गाइड ने बताया कि वह सपने देखने के लिए कई बार स्फिंक्स के सिर में बने एक छेद में गया था। जब लेनर ने उससे पूछा कि उसने क्या सपना देखा, तो गाइड ने उत्तर दिया, "मैं बूढ़े लोगों के सपने देखता हूँ।"
"बुजुर्ग लोग?" लेनर ने पूछा। "आप उन्हें क्या करते हुए देखते हैं?"
"इधर-उधर भागना, काम करना, निर्माण करना," और उसने हथौड़ा और छेनी से काम करने वाले लोगों की नकल की। "सपनों के लिए स्फिंक्स सबसे अच्छी जगह है।"
लोगों ने बताया है कि पिरामिड की दैनिक खुराक

ध्यान लगाने से एकाग्रता बढ़ती है। कम से कम एक मामले में तो यह कारगर साबित हुआ। हमारे एक परिचित कॉलेज छात्र को पढ़ाई में ध्यान लगाने में कठिनाई हो रही थी। हमने उसके कमरे के लिए एक पिरामिड बनाया जो उसके बैठने के लिए काफी बड़ा था। उसने हर शाम उसमें बैठकर ध्यान करना शुरू किया और हमें बताया कि उसके अंकों में बहुत सुधार हुआ है। छात्र, डेव विलकॉक्स ने कहा कि उसे अपने आप में एक नई सुरक्षा और आत्मविश्वास मिला है। उसने कहा, "पिरामिड के अंदर अद्भुत सामंजस्य है। मुझे स्रोत के साथ एकात्मता और निकटता का अनुभव होता है। मेरे योग शिक्षक ने भी पिरामिड में ध्यान लगाकर देखा है और उन्हें बहुत कम

समय में ही परमानंद का अनुभव होता है।"
नेशनल एनक्वायरर, 13 जनवरी, 1974, ने हॉलीवुड स्टार जेम्स कोबर्न के हवाले से कहा: "मैं पिरामिड शक्ति में दृढ़ विश्वास रखता हूँ। मैं अपने पिरामिड टेंट के अंदर जाता हूँ, योगासन में बैठता हूँ, और यह वाकई कारगर है! इससे एक निश्चित अनुभूति और अनुभूति होती है। यह एक ऐसा वातावरण बनाता है... जिससे ध्यान करना आसान हो जाता है। यह सभी बाधाओं को दूर करता है। मैं वहाँ हर दिन पंद्रह मिनट से एक घंटे तक ध्यान करता हूँ।"
चेतना की परिवर्तित अवस्था प्राप्त करने के लिए पिरामिडनुमा टोपियाँ पहनने का सुझाव कारेल ड्रबल ने दिया था। ड्रबल चेकोस्लोवाकिया के रेडियो इंजीनियर थे, जिन्होंने पिरामिडनुमा टोपी पहनने की नई अवधारणा को तब जन्म दिया जब उनके पिरामिड मॉडल पर किए गए शोध पर श्रोएडर और ओस्ट्रैंडर की बेस्टसेलर पुस्तक, "साइचिक डिस्कवरीज़ बिहाइंड द आयरन कर्टन" में चर्चा की गई थी।
ड्रबल को आश्चर्य हुआ कि जादूगरों और चुड़ैलों की टोपियाँ शंकु के आकार की क्यों होती हैं, और उन्होंने पिरामिड के आकार की टोपियों के साथ कुछ प्रयोग किए। उनके कई विषयों ने टोपी के शीर्ष से नीचे की ओर सर्पिल ऊर्जा का प्रवाह महसूस करने की सूचना दी। ड्रबल के हवाले से कहा गया है, "जाहिर तौर पर, पिरामिड एक प्रकार के ब्रह्मांडीय एंटीना की तरह काम करता है जो अत्यधिक तीव्रता वाले ऊर्जा स्रोतों को ग्रहण करता है और फिर उसे अपने केंद्र में केंद्रित करता है।"
टॉथ और नीलसन का सुझाव है कि प्राचीन मिस्र के पुजारी अपने सूर्य देवता रा की पूजा करते समय पिरामिड के आकार की टोपियाँ पहनते होंगे, क्योंकि ये टोपियाँ सूर्य या पृथ्वी से आने वाली विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा को केंद्रित करती होंगी।

कुछ उच्चतर आध्यात्मिक स्तर। जे. फर्लोंग ने अपनी पुस्तक 'रिवर्स ऑफ लाइफ' में भी ऐसी संभावना का सुझाव दिया है।
शायद, पढ़ाई में पिछड़ रहे छात्र को मूर्ख की टोपी पहनाने की पुरानी प्रथा का उद्देश्य उसे उपहास का पात्र बनाना नहीं था, बल्कि उसे मानसिक ऊर्जा प्रदान करना था। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस प्रथा को बच्चे को फिर से ध्यान केंद्रित करने, एकाग्रता बढ़ाने और मूल स्रोत से जुड़ने में मदद करने के साधन के रूप में देखा जाता था।
सेठ श्रृंखला की लेखिका जेन रॉबर्ट्स किसी भौतिक वस्तु से बनी मूर्खतापूर्ण टोपी का प्रयोग नहीं करतीं, लेकिन वह लिखती हैं कि कुछ विशेष परिस्थितियों में, "मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सिर के ठीक ऊपर एक शंकु आ गिरा हो। मुझे यह नहीं लगा कि वास्तव में कोई शंकु था, लेकिन आकृति का आभास निश्चित था। उसका चौड़ा सिरा मेरे सिर के आकार का था, और ऊपर का संकरा हिस्सा पिरामिड जैसा था।"
लॉस एंजिल्स स्थित ईएसपी प्रयोगशाला, पिरामिड के आकार को विचार-रूपों के लिए एक इनक्यूबेटर के रूप में उपयोग करके प्रयोग कर रही है। यह परिकल्पना की गई है कि पिरामिड का आकार एक ज्यामितीय प्रवर्धक के रूप में कार्य करता है जो विचार-रूप बनाने वाले व्यक्ति के अनुरोध या इच्छा को मजबूत करता है।
प्रयोगशाला के निदेशक अल मैनिंग के अनुसार, एक छोटे पिरामिड के साथ त्रिभुजाकार कागज़ के टुकड़ों का उपयोग किया जाता है। कागज़ की शीट चार रंगों की होती हैं: पीला रंग अंतर्ज्ञान के लिए; नारंगी रंग मानसिक स्पष्टता के लिए; नीला रंग उपचार के लिए; और हरा रंग प्रेम के लिए। प्रयोगकर्ता अपनी योजना के अनुसार उपयुक्त रंग चुनता है और त्रिभुजाकार शीट पर एक विशिष्ट

अनुरोध या लक्ष्य लिखता है।
फिर कागज को हाथों के बीच में पकड़कर एक मंत्रोच्चार (स्वयं का या संगठन द्वारा दिया गया) दो बार दोहराया जाता है। इसके बाद शीर्ष को आधार तक मोड़ा जाता है और नीचे वाले भाग को मोड़कर त्रिभुज बनाया जाता है। फिर हाथों को त्रिभुज के ऊपर रखा जाता है और मंत्रोच्चार को दोबारा दोहराया जाता है। यह अंतिम चरण कागज को पिरामिड के आधार पर रखकर किया जाना चाहिए। इसके बाद पिरामिड को वापस उसके आधार पर रखा जाता है—हमेशा उत्तर-दक्षिण अक्ष पर संरेखित रखते हुए—और

ऊष्मायन अवधि शुरू हो चुकी है। मैनिंग का सुझाव है कि विचार-रूप को अपनी "गर्भाधान अवधि" पूरी करने में तीन से नौ दिन लगते हैं। इस अवधि के दौरान, जप करने और विचार-रूप को मानसिक रूप से धारण करने से प्रक्रिया मजबूत होती है। मैनिंग के अनुसार, व्यक्ति को दिन में एक बार पिरामिड के उत्तरी भाग से विचार-रूप पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
प्रयोगकर्ता ऊष्मायन अवधि पूरी होने पर पिरामिड को उसके आधार से हटाता है और त्रिभुजाकार कागज़ निकालता है। कागज़ को खोला जाता है; कागज़ के निचले कोने को पकड़ा जाता है और त्रिभुज में आग लगा दी जाती है। पूरी तरह से जलकर राख हो जाने पर उसे प्रक्रिया के दौरान पास में रखे अग्निरोधी पात्र में रख दिया जाता है।
ऐसा माना जाता है कि कागज जलाने की प्रक्रिया का उद्देश्य विचार-रूप को मुक्त करना है ताकि वह अपना कार्य पूरा कर सके। विचार-रूप के मुक्त हो जाने पर, प्रयोगकर्ता परिणामों की प्रतीक्षा करता है, यह मानते हुए कि अग्नि ने एक पूर्णतः आवेशित विचार-रूप को मुक्त किया है जो प्रकट होगा।
यह प्रक्रिया जादुई और विचित्र लगती है, लेकिन दुनिया भर में संगठन के सदस्य दावा करते हैं कि उनकी प्रार्थनाएं पूरी हो चुकी हैं।
ईएसपी प्रयोगशाला ने मानव शरीर में ऊर्जा केंद्रों पर पिरामिड ऊर्जा के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए कई विशाल पिरामिडों का निर्माण किया है। वे पिरामिड संरचना में ऊर्जा केंद्रों की स्थिति और शरीर में उनकी स्थिति के बीच समानताएं स्थापित करते हैं। उनके शोध से पता चलता है कि पिरामिड के ऊपरी हिस्सों में ऊर्जा की आवृत्ति अधिक होती है, जबकि निचले हिस्से गर्म और कुछ हद तक सुखदायक अनुभूति उत्पन्न करते हैं।
इन प्रयोगकर्ताओं ने बताया है कि पिरामिड के भीतर कुछ ऐसे स्थान हैं जो लाभकारी नहीं हैं, और उन विशेष स्थानों पर बैठने या लेटने से सिरदर्द हो सकता है। जाहिर है, ऐसे अनुभवों को उन व्यक्तियों द्वारा दर्ज किया गया है जो अन्य प्रयोगकर्ताओं की प्रतिक्रियाओं से अनभिज्ञ थे।
गू3 स्पॉट्स और बैड स्पॉट्स की बात सुनकर कार की याद आ जाती है।

डॉन जुआन ने लॉस कास्टानेडा को सलाह दी। उन्हें बताया गया कि व्यक्तिगत शक्ति के स्थान होते हैं, एक व्यक्ति का अपना विशेष स्थान जहाँ वह मजबूत और सुरक्षित रह सकता है। वहीं, कुछ ऐसे स्थान भी होते हैं जो विनाश कर सकते हैं।
ऐसा लगता है कि जानवर इन खास जगहों से वाकिफ होते हैं। वे तब तक खोजते रहते हैं जब तक उन्हें ये जगह मिल न जाए और बार-बार लौटते हैं। उदाहरण के लिए, चाहे आप कुत्ते को कितना भी आराम देने की कोशिश करें, अगर जगह सही नहीं है, तो वह वहां आराम नहीं करेगा।

वह बिस्तर या जो भी सामान होगा, उसे खींचकर दूसरी जगह ले जाएगा।
पौधों पर किए गए हमारे प्रयोगों से ऐसा प्रतीत होता है कि पिरामिड के सभी स्थान समान नहीं हैं। हमने पाया है कि पिरामिड के भीतर विश्राम या ध्यान करने के लिए कहे गए व्यक्ति आमतौर पर तब तक थोड़ा इधर-उधर हिलते रहते हैं जब तक उन्हें सहज महसूस न हो। ऐसा लगता है कि पिरामिड के भीतर का वातावरण या क्षेत्र बाहर की तुलना में अधिक तीव्र होता है। जब "सही स्थान" मिल जाता है, तो यह कहीं अधिक सुखद, शांत और लाभदायक होता है, लेकिन जब यह गलत होता है, तो यह वास्तव में बहुत बुरा होता है।
हमें बताया गया है कि पृथ्वी पर विशेष ऊर्जा के भंवर मौजूद हैं, जिन्हें प्राचीन काल से ही जाना और उपयोग किया जाता रहा है। इनमें से कुछ उपचार स्थल थे, कुछ पवित्र स्थान। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या इन विशेष ऊर्जा क्षेत्रों को एकत्रित या प्रवर्धित करने के लिए डिज़ाइन किया गया कोई उपकरण या संरचना अपने भीतर एक लघु ब्रह्मांड का निर्माण नहीं कर देगी? यदि ऐसा है, तो शायद पिरामिड हमें उन सवालों के जवाब दे रहे हैं जिनका हमें अब तक अनुमान भी नहीं था।

11. गूढ़ ज्यामिति और ऊर्जा ग्रिड

प्राचीन विश्व का विज्ञान और दर्शन संख्याओं और ज्यामिति पर आधारित था, और यह मानना कठिन है कि युगों का सबसे महान स्मारक, जिसका डिज़ाइन सबसे सावधानीपूर्वक निष्पादित और सबसे ज्यामितीय रूप से परिकल्पित है, अपने युग के सर्वोच्च ज्ञान को प्रदर्शित नहीं करेगा। यह अनुमान लगाना रोमांचक है कि महान पिरामिड का निर्माण एक अत्यंत परिष्कृत वैज्ञानिक उपकरण के रूप में, विश्व के सटीक पैमाने के मॉडल के रूप में, एक ऐसी मिस्र संस्कृति द्वारा किया गया था - या संभवतः मिस्र-पूर्व सभ्यता द्वारा - जो आम तौर पर माने जाने वाले समय से कहीं अधिक उन्नत थी। यह सिद्धांत दर्शाता है कि पिरामिड में ब्रह्मांड का मूल सूत्र समाहित था और इसे मनुष्य को ब्रह्मांड में स्वयं को दिशा देने और समय और स्थान के निश्चित मापन को लागू करने में सहायता करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।
डॉ. लिवियो सी. स्टेचिनी, मापन और मात्रात्मक विज्ञान के इतिहास के विशेषज्ञ हैं और वर्तमान में विलियम पैटरसन विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास के प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं।

न्यू जर्सी के एक कॉलेज ने यह सिद्ध किया है कि कम से कम 2800 ईसा पूर्व से ही मिस्रवासी अक्षांश और देशांतर को काफी सटीकता से माप सकते थे, जो क्षमता हमारे युग में अठारहवीं शताब्दी तक नहीं देखी गई। इन प्राचीन वैज्ञानिकों को पृथ्वी की परिधि और अपने देश की लंबाई का सटीक माप पता था, साथ ही भूमध्य सागर से भूमध्य रेखा तक अपने राज्य के सभी प्रमुख बिंदुओं के भौगोलिक निर्देशांक भी ज्ञात थे। स्टेचिनी के अनुसार, यह सब करने के लिए मिस्रवासी आधुनिक दूरबीन और कालमापी जैसी सटीकता के साथ खगोलीय अवलोकन करने में सक्षम थे।
स्टेचिनी ने टॉम्पकिंस की पुस्तक "सीक्रेट्स ऑफ द ग्रेट पिरामिड" के लिए "प्राचीन मापों का महान पिरामिड से संबंध" शीर्षक से एक विस्तृत और जानकारीपूर्ण परिशिष्ट लिखा। उन्होंने प्राचीन सुमेरियन और बेबीलोनियों की कीलाकार लिपि में निहित गणितीय और खगोलीय आंकड़ों

का बीस वर्षों तक अध्ययन किया। मध्य पूर्व के सीढ़ीदार ज़िगुरेट्स और पिरामिडों के अपने अध्ययन के परिणामस्वरूप, वे यह प्रदर्शित करने में सक्षम हुए कि इन संरचनाओं में आकाश की संरचना और डिज़ाइन तथा पृथ्वी के गोलार्ध का मानचित्रण करने की मूलभूत तकनीकें समाहित थीं। स्टेचिनी के अनुसार, ये संरचनाएं उच्च स्तर के गणित को भी दर्शाती हैं, जो त्रिकोणमिति की समस्याओं को हल करने में सक्षम है।
ग्रेट पिरामिड का शीर्ष ध्रुव के अनुरूप है, और परिधि भूमध्य रेखा के अनुरूप है, दोनों का मापन सटीक पैमाने पर किया गया है। यह स्पष्ट है कि पिरामिड की प्रत्येक भुजा को उत्तरी गोलार्ध के एक वक्र चौथाई भाग, या 90 डिग्री के एक गोलाकार चतुर्थांश के अनुरूप बनाया गया था। किसी गोलाकार चतुर्थांश को समतल त्रिभुज पर सही ढंग से प्रक्षेपित करने के लिए, चतुर्थांश के चाप की लंबाई त्रिभुज के आधार के बराबर होनी चाहिए और दोनों की ऊँचाई भी समान होनी चाहिए। टॉम्पकिंस बताते हैं कि ऐसा केवल ग्रेट पिरामिड के अनुप्रस्थ काट या मध्याह्न रेखा के द्विभाजन के मामले में ही होता है। इसका ढलान कोण पाई संबंध देता है।

180 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: ऊँचाई और आधार के बीच का अंतर। जब इसे किनारे से देखा जाता है, तो पिरामिड का प्रक्षेपण इस प्रकार होता है कि परिप्रेक्ष्य के नियम किसी भी फलक के वास्तविक क्षेत्रफल को प्रक्षेपण के लिए सही आकार में कम कर देते हैं। यह पिरामिड का अनुप्रस्थ काट है। वास्तव में जो दिखाई देता है वह सही त्रिभुज होता है।
यूनानी इतिहासकार मेरोडोटस को मिस्र के पुजारियों ने बताया था कि पिरामिड की योजना इस प्रकार बनाई गई थी कि इसके प्रत्येक फलक का क्षेत्रफल इसकी ऊँचाई के वर्ग के बराबर था। अब यह स्पष्ट है कि यही पिरामिड के ज्यामितीय और गणितीय रहस्य की कुंजी थी। इस जानकारी से पता चलता है कि पिरामिड को न केवल पाई अनुपात को ध्यान में रखकर बनाया गया था, बल्कि पुनर्जागरण काल में स्वर्ण खंड, या फाई, या 1.618 के रूप में ज्ञात स्थिर अनुपात को भी ध्यान में रखकर बनाया गया था।
फाई एक अनंत अनुपात है। यह रहस्यमय सूत्र इतिहास जितना ही पुराना है और संख्याओं की एक आकर्षक प्रणाली है। यह एक योग श्रृंखला है और इसे फिबोनाची श्रृंखला भी कहा जाता है। एक से शुरू होने वाले क्रमिक पद पिछले दो पदों को जोड़कर प्राप्त किए जाते हैं, जैसे: 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21, 34, 55, 89, 144, 233, इत्यादि। फाई, या 1.618, योग श्रृंखला के किसी भी पद को उसके पूर्ववर्ती पद से भाग देने पर प्राप्त होता है। संख्याएँ बड़ी होने पर पद फाई के निकट आते जाते हैं। इस प्रकार, तीन को दो से भाग देने पर 1.5 आता है; तेरह को आठ से भाग देने पर 1.625 आता है; 233 को 144 से भाग देने पर 1.618555 आता है। फाई को पवित्र विभाजन रेखा भी कहा जाता है क्योंकि यह वह सटीक अनुपात है जिससे रेखा AC को B द्वारा इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है कि AC/AB का मान 1.618 हो और AB/BC का मान भी 1.618 हो। पुनर्जागरण काल के कलाकारों ने इस अनुपात का उपयोग किया क्योंकि इसे सबसे सौंदर्यपूर्ण अनुपात माना जाता था। कहा जाता है कि ये अनुपात प्रकृति में हर जगह पाए जाते हैं। मनुष्य के शरीर को इसी अनुपात से विभाजित किया गया है, और पवित्र पंचकोणीय तारे के विकर्ण भी एक दूसरे को इसी अनुपात से विभाजित करते हैं। स्वर्ण विभाजन विधि का उपयोग करते हुए, महान पिरामिड गोलाकार क्षेत्रों को समतल क्षेत्रों में परिवर्तित करने की एक प्रभावी प्रणाली बन जाता है।
मिस्रवासी क्यूबिट नामक एक माप इकाई का उपयोग करते थे।

स्पष्टतः, मिस्र के क्यूबिट की गणना भूमध्य रेखा पर पृथ्वी द्वारा एक सेकंड में तय की गई दूरी के एक हजारवें भाग को लेकर की गई थी। ग्रेट पिरामिड के डिज़ाइनरों ने आधार की लंबाई पृथ्वी द्वारा आधे सेकंड में तय की गई दूरी के बराबर रखी। क्यूबिट समय के एक हजारवें सेकंड के बराबर था, और फुट चाप के एक हजारवें सेकंड के बराबर था।
अब यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राचीन वैज्ञानिकों ने सूर्य और ओबिलिस्क द्वारा डाली गई छायाओं का उपयोग करके पृथ्वी की ध्रुवीय परिधि की गणना की थी। भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की परिधि निर्धारित करने के लिए, निर्माताओं ने ओबिलिस्क के निश्चित बिंदुओं के ऊपर से तारों के गुजरने का अवलोकन किया। ध्रुवीय परिधि ज्ञात करने के लिए उन्हें केवल कुछ मील की दूरी पर स्थित दो ओबिलिस्क के बीच की दूरी और उनके द्वारा डाली गई छायाओं के अंतर को मापना था। विशाल दूरियों को मापने की कोई आवश्यकता नहीं थी। किसी भी दो मध्याह्न स्तंभों को अलग करने वाले चाप का अंश, और इस प्रकार अक्षांश में अंतर, संक्रांति या विषुव के क्षण में मापी गई स्तंभ की छाया और उसकी ऊंचाई की तुलना करके निर्धारित किया जा सकता था।
भूमध्य रेखा पर पृथ्वी की परिधि निर्धारित करने के लिए, टॉम्पकिंस बताते हैं कि तीसवें अक्षांश पर स्थित एक ओबिलिस्क के आधार पर खड़ा एक प्रेक्षक पूर्वी क्षितिज पर एक शीर्ष तारे के प्रकट होने का संकेत एक निश्चित दूरी पर स्थित दूसरे प्रेक्षक को दे सकता है, जहाँ क्षितिज पर ओबिलिस्क का शीर्ष स्थित होगा। दोनों प्रेक्षकों को तारे के प्रकट होने के बीच के समय अंतराल को निर्धारित करके, और यह जानते हुए कि पृथ्वी 86,400 सेकंड (24 घंटे) में 1,296,000 चाप सेकंड की परिक्रमा करती है, पृथ्वी की भूमध्यरेखीय परिधि की गणना की जा सकती है।
इस बात के प्रमाण कि ग्रेट पिरामिड का निर्माण इस प्रकार किया गया था कि वह वृत्त को वर्ग में बदलने और गोले को घन में बदलने का संकेत देता है, यह दर्शाता है कि निर्माता यह कहना चाह रहे थे कि कोणों की स्थिर ज्यामिति को वक्रों की गतिशील ज्यामिति में बदला जा सकता है। पिरामिड को

पिरामिड को शंकु के रूप में देखा जा सकता है और घन को गोले के रूप में। हेनरी मोंटेथ, जिन्होंने पिरामिड पावर पत्रिका में "ग्रेट पिरामिड की ज्यामिति" शीर्षक से एक निबंध लिखा था, के अनुसार, शंकु ऊर्जा के गतिशील संकेंद्रण का एक आदर्श प्रतिनिधित्व है। इससे यह प्रतीत होता है कि शंकु का आकार किसी न किसी रूप में सृष्टि से जुड़ा हुआ है।
पिरामिड के अंदर पौधों पर किए गए हमारे प्रयोगों का वर्णन करने वाले अध्याय में, विभिन्न ज्यामितीय संरचनाओं के अंदर पौधों की वृद्धि के परीक्षण का उल्लेख किया गया है। हमने पाया कि पिरामिड की तुलना में शंकु के आकार के कंटेनरों के अंदर पौधे तेजी से बढ़ते हैं। पिरामिड के शीर्ष पर पौधे राजा के कक्ष के स्तर की तुलना में अधिक तेजी से बढ़े, जो आधार से शीर्ष तक की दूरी का एक तिहाई है।
न्यूटन ने समझाया कि प्रत्येक क्रिया की एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। जैसा कि माना जाता है कि ब्रह्मांड हमेशा पूर्ण संतुलन में रहता है, यह भी माना जा सकता है कि सभी प्रत्यक्ष बलों और पिंडों की कोई न कोई प्रतिक्रिया या प्रतिरूप अवश्य होता है। उपरोक्त लेख में, मोंटेथ बताते हैं कि भौतिकी में यह समझा जाता है कि यदि जमीन से कुछ दूरी ऊपर एक धनात्मक आवेश स्थित है, तो जमीन से समान दूरी पर नीचे एक और ऋणात्मक आवेश की उपस्थिति मानकर आवेश और जमीन के बीच के क्षेत्र का निर्धारण किया जा सकता है। दूसरे

शब्दों में, मोंटेथ के अनुसार, जब एक धनात्मक आवेश उपस्थित होता है, तो एक ऋणात्मक आवेश भी अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होता है, भले ही वह भौतिक रूप से उपस्थित न हो। वे अनुमान लगाते हैं कि ग्रेट पिरामिड के लिए अप्रत्यक्ष रूप से दो या अधिक प्रतिपिरामिड मौजूद हैं।
यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ग्रेट पिरामिड सममित नहीं है। इसकी भुजाएँ समबाहु त्रिभुज नहीं बनातीं। इसके अलावा, पत्थर की संरचना की भुजाएँ थोड़ी धँसी हुई हैं। विलियम फ्लिंडर्स पेट्रिक ने अपने मापन में इस बात को नोट किया था, हालाँकि यह धँसाव मानव आँख से दिखाई नहीं देता। ब्रिटिश ब्रिगेडियर पी.आर.सी. ग्रोव्स द्वारा ली गई एक हवाई तस्वीर ने इसकी पुष्टि की।

गूढ़ ज्यामिति <£ ऊर्जा ग्रिड 183
किनारों का हल्का खोखलापन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मिस्रवासियों द्वारा गणितीय और ज्यामितीय निर्धारणों में हुई छोटी-मोटी त्रुटियों का कारण बनता है। हालांकि, शायद इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ऊर्जा क्षेत्र के अनुनादक या जनरेटर के रूप में कार्य करने के लिए महान पिरामिड के किनारों का खोखलापन आवश्यक रहा होगा। दर्पणयुक्त किनारों वाले पिरामिड मॉडलों सहित हमारे प्रयोगों से पता चलता है कि यदि किनारों को थोड़ा सा धंसा दिया जाए ताकि प्रवेश करने वाला ऊर्जा क्षेत्र विपरीत किनारे से टकराने पर सीधी रेखा से हट जाए और इस प्रकार परावर्तित हो जाए, तो बल की रेखाएं पिरामिड के केंद्र की ओर निर्देशित होती हैं। हमारे प्रयोगों में दृश्य प्रकाश किरणों के व्यवहार को एक मॉडल के रूप में उपयोग किया गया था। पिरामिड की असममित संरचना से ऐसा प्रतीत होता है कि विचार दो दिशाओं में फैलते हैं: एक शीर्ष की ओर, जिसे मोंटेथ भौतिक सृजन का प्रतीक मानते हैं, और दूसरी आधार की ओर, जो विनाश का प्रतीक है। निर्माण-विरोधी पिरामिड भौतिक पिरामिड के शीर्ष के ऊपर स्थित एक अंतर्निहित पिरामिड है जो सृजन को जन्म देता है। विनाश-विरोधी पिरामिड आधार से आधार तक फैला हुआ है, भौतिक पिरामिड से जुड़ा हुआ है और जमीन के नीचे स्थित है। यह सृजन के विस्तार और विनाश को प्रभावित करता है। मोंटेथ के अनुसार, सृजन और विनाश एक दूसरे के साथ चक्रीय रूप से परस्पर क्रिया करते हैं।
ऐसा माना जाता है कि प्रकृति में विषमता का एक प्राथमिक उद्देश्य गति शुरू करने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ स्थापित करना है। "समय के गुणों के प्रायोगिक अध्ययन की संभावना" शीर्षक वाले एक शोध पत्र में, निकोलाई कोज़िरेव प्रस्ताव करते हैं कि समय में किसी प्रणाली की एन्ट्रापी को कम करने की क्षमता होती है, हालाँकि यह परिवर्तन आमतौर पर किसी का ध्यान नहीं जाता। हालाँकि, ग्रेट पिरामिड में इसकी आकृति के कारण समय का प्रभाव बढ़ गया है, और इसी कारण यह कार्बनिक पदार्थों को संरक्षित कर पाता है। कोज़िरेव कहते हैं, "समय-प्रवाह और बायोप्लाज्मा एक ही रहस्यमय शक्ति का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले अलग-अलग शब्द हैं जो सभी भौतिक प्रणालियों के निर्माण और रखरखाव के लिए जिम्मेदार है।" वे आगे कहते हैं, "बायोप्लाज्मा में एन्ट्रापी को बढ़ाने की क्षमता होती है।"

184 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
यह किसी प्रणाली की ऊर्जा को प्रभावित नहीं कर सकता, लेकिन संवेग को प्रभावित करने में असमर्थ है।
किसी प्रणाली का।"
ऐसा माना जाता है कि जैवप्लाज्मा में परमाणु ऊर्जा के विपरीत गुण हो सकते हैं। डॉ. विल्हेम

रीच ने इस अवधारणा पर प्रयोग किया और अपनी पुस्तक "कॉस्मिक सुपरइम्पोज़िशन" में इसे "ओरानुर प्रयोग" कहा है। उन्होंने पाया कि जैवप्लाज्मा ने रेडियोधर्मी पदार्थों के साथ तीव्र प्रतिक्रिया की और एक ऐसा उप-उत्पाद उत्पन्न किया जो थोड़े समय के लिए जीवन के लिए खतरनाक था। हालांकि, यह पता चला कि जैवप्लाज्मा की क्रिया से रेडियोधर्मिता कम हो गई। यह प्रयोग यह दर्शाता है कि जैवप्लाज्मा एक सृजनात्मक शक्ति है और परमाणु बल के विपरीत कार्य करती है। कोज़िरेव कहते हैं, "यदि यांत्रिकी हमें किसी दिन जैविक जीवन से बाहर की महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं को रोकने और नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है, तो चलने वाली मशीनें दुनिया की संभावनाओं का नवीनीकरण करेंगी (न कि केवल उन्हें समाप्त करेंगी)। इस प्रकार, मनुष्य और प्रकृति के बीच एक वास्तविक सामंजस्य स्थापित हो सकता है। यह सपना भले ही अमूर्त लगे, लेकिन इसका एक यथार्थवादी आधार है।"
इन पहलुओं का विश्लेषण करते हुए, मोंटेथ का अनुमान है कि समय जैव-प्लाज्मा का केवल ज्यामितीय पहलू है और इसे स्थिर ज्यामिति के रूप में व्यक्त किया जाता है, जबकि ऊर्जा का संकेंद्रण या केंद्रीकरण इसका गतिशील पहलू है जिसे गतिशील ज्यामिति के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। मोंटेथ का मानना है कि स्थिर और गतिशील ज्यामिति के बीच पारस्परिक क्रिया निर्माण और जीवन की प्रक्रियाओं के साथ-साथ क्षय और मृत्यु की प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करती है। वे आगे कहते हैं कि ब्रह्मांड के सभी कारण स्थिर ज्यामिति में निहित हैं और उनके प्रभाव गतिशील ज्यामिति पर आधारित हैं।
"आधुनिक विज्ञान द्वारा इन विचारों को पूरी तरह से स्वीकार और उपयोग में लाने से पहले, इन्हें विस्तृत विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक है," मोंटेथ कहते हैं। "इसके लिए प्रकृति की सृजनात्मक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने वाले नियमों की गहरी समझ आवश्यक है। अब तक, मेरे जैसे जो लोग इस विषय की खोज कर रहे हैं, उन्हें आवश्यक समझ प्राप्त नहीं हुई है। मेरा मानना है कि विज्ञान में अगली क्रांति इसी दिशा में होगी और यह आवश्यक है।"

गूढ़ ज्यामिति 5सी ऊर्जा ग्रिड 185
ब्रह्मांड की रचना के लिए जिम्मेदार ऊर्जा को आधुनिक विज्ञान में शामिल किया जाना चाहिए, तभी विज्ञान के सामने मौजूद अनसुलझी समस्याओं का समाधान हो सकता है। उदाहरण के लिए, जैव-प्लाज्मा की प्रकृति को समझे बिना एकीकृत क्षेत्र सिद्धांत संभव नहीं है। जैव-प्लाज्मा को ध्यान में रखते हुए सक्षम वैज्ञानिकों द्वारा ग्रेट पिरामिड का संपूर्ण और विस्तृत अध्ययन हमारी अज्ञानता पर अधिक प्रकाश डालने में सहायक हो सकता है।
यह बात स्पष्ट प्रतीत होती है कि ग्रेट पिरामिड को भू-भौगोलिक और भौगोलिक कारणों से एक विशिष्ट स्थान पर बनाया गया था, और कई प्राचीन इमारतों का स्थान स्पष्ट रूप से तारों के संरेखण द्वारा निर्धारित किया गया था। अल्फ्रेड वाटकिंस ने अपनी पुस्तक "द ओल्ड स्ट्रेट ट्रैक" में बताया है कि इंग्लैंड में कई चर्च इसी प्रकार स्थापित किए गए थे। न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी, बफ़ेलो में खगोल विज्ञान और भौतिकी के प्रोफेसर, लायल बी. बोर्स्ट ने साइंस पत्रिका में एक लेख में उल्लेख किया है कि ब्रिटेन में कई प्रारंभिक ईसाई चर्चों की धुरी प्राचीन नींव पर रखी गई थी, जो मूल रूप से तारों के संरेखण द्वारा निर्धारित की गई थी।
हालाँकि, ग्रेट पिरामिड और दुनिया के अन्य हिस्सों में स्थित कई अन्य प्राचीन संरचनाओं, जिनमें पिरामिड भी शामिल हैं, के स्थान के पीछे भू-भौगोलिक और भू-भौतिकीय कारणों के अलावा अन्य कारण भी हो सकते हैं। जॉन मिशेल ने अपनी पुस्तक "द व्यू ओवर अटलांटिस" में यह प्रस्ताव रखा है कि पृथ्वी की पूरी सतह प्रागैतिहासिक इंजीनियरिंग के एक विशाल कार्य के निशानों से चिह्नित है, जो कभी प्राकृतिक जादू की एक सार्वभौमिक प्रणाली के अवशेष हैं,

जिसमें ध्रुवीय चुंबकत्व के साथ-साथ सौर ऊर्जा से संबंधित एक अन्य सकारात्मक बल का उपयोग शामिल था। मिशेल कहते हैं, "शायद हम सभी एक प्राचीन संरचना के खंडहरों के भीतर रहते हैं, जिसका विशाल आकार अब तक इसे अदृश्य बनाए हुए है।" दूसरे शब्दों में, ग्रेट पिरामिड आदि का निर्माण विशिष्ट स्थानों पर ऊर्जा बल-क्षेत्रों की प्रकृति के कारण किया गया था। मिशेल वाटकिंस के कार्य और इन प्राचीन स्थानों और पथों, जिन्हें लेज़ के नाम से जाना जाता है, के उनके अध्ययनों पर चर्चा करते हैं।
ऐसा लग रहा था मानो कोई धारा उस मार्ग का अनुसरण कर रही हो।

186 • पिरामिडों की गुप्त शक्ति: इन मानव निर्मित संरेखणों की। स्ट्रेट ट्रैक क्लब के सदस्यों ने पक्षियों और जानवरों के कुछ निश्चित रेखाओं के अनुदिश प्रवास के उदाहरण प्रस्तुत किए, हिमालय में हिरणों के बिल्कुल सीधे रास्तों का वर्णन किया, और नॉर्वे, फिलिस्तीन, अफ्रीका और अमेरिका में पटरियों और स्थलों की नियमित प्रणालियों पर शोध पत्र लिखे। स्वयं वाटकिंस, जो एक कुशल मधुमक्खी पालक और फोटोग्राफर थे, ने देखा कि कैसे मधुमक्खियाँ, जिन्हें उनके छत्तों से कुछ दूरी पर छोड़ा जाता है, पहले हवा में झिझकते हुए वृत्त बनाती हैं, और फिर, मानो किसी अदृश्य धारा से जुड़कर, सीधे अपने घर की ओर चल पड़ती हैं। चींटियों का अध्ययन करते समय, उन्हें इन कीड़ों द्वारा बनाई गई छोटी-छोटी पहाड़ियों में रुचि हुई। ग्रामीण इलाकों के प्रति उनके गहरे प्रेम और उसके तौर-तरीकों के ज्ञान ने, विशेष रूप से घास के मैदानों की खोज में इसकी छिपी हुई संरचना के प्रकट होने के बाद, उन्हें जीवन और विकास के सभी पहलुओं, चाहे वे बड़े हों या छोटे, की कुछ बुनियादी प्रतिरूपों के अनुरूपता की सच्ची समझ प्रदान की। एक प्राकृतिक दार्शनिक की दृष्टि से उन्होंने प्रकृति में व्याप्त समानताओं को समझा। उन्होंने देखा कि चींटियों के टीले कुछ निश्चित पैटर्न और विन्यास में बने होते हैं। घास के मैदानों पर मौजूद अवलोकन टीलों की तरह, ये शंकु के आकार के और ऊपर से चपटे होते हैं, और घास से ढके होते हैं।
"स्पष्टतः पत्थर के घेरे मूल रूप से किसी सिद्धांत के अनुसार बनाए गए थे, जिसे अभी तक हम फिर से खोज नहीं पाए हैं। किसी भविष्यवाणी के माध्यम से, शायद किसी अज्ञात शक्ति के आह्वान से, देश के सच्चे पवित्र केंद्रों का पता चला। इस प्रकार की किसी प्रणाली के पूर्व अस्तित्व की उल्लेखनीय पुष्टि ब्रिटिश द्वीपों में प्रचलित एक किंवदंती में मिलती है। इस किंवदंती के अनुसार, पवित्र स्थान, प्राचीन और पारंपरिक पवित्रता के स्थल, सबसे पहले किसी जादुई अनुष्ठान के प्रदर्शन के दौरान, किसी दैवीय संकेत के माध्यम से, सपनों या दर्शनों में प्रकट हुए थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रारंभिक ईसाई चर्च या गिरजाघर के निर्माण के स्थान तक पहुंचने के लिए स्वर्ग से एक संकेत की तलाश करते थे। यह तथ्य कि लगभग हर मामले में चुना गया स्थान पहले से ही पारंपरिक पवित्रता का था, यह दर्शाता है कि उनकी भविष्यवाणी की प्रथा उनके पूर्वजों से विरासत में मिली थी।

गूढ़ ज्यामिति और ऊर्जा ग्रिड 187
किसी गिरजाघर के लिए सही स्थान का पता लगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विधियाँ वही थीं जो हजारों साल पहले पत्थर के घेरों और खगोलीय टीलों के स्थानों का पता लगाने के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। स्पष्ट रूप से, उनमें आधुनिक जलमार्ग खोजकर्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों से बहुत कुछ समानता थी।
सभी परंपराओं के अनुसार, किसी पवित्र भवन के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण चरण उपयुक्त

स्थान का चयन होता है, ऐसा स्थान जहाँ उस क्षेत्र की आध्यात्मिक शक्तियाँ सर्वोत्तम रूप से संयोजित हों। जबकि आज किसी नए गिरजाघर के स्थान का निर्धारण विशुद्ध रूप से धर्मनिरपेक्ष विचारों के आधार पर करना किसी भी प्रकार से अनुचित नहीं माना जाता है, पूर्वकाल के पुजारी रेगिस्तान में पानी की चक्की बनाना उतना ही उचित समझते थे जितना कि उस स्थान पर गिरजाघर बनाना जहाँ पवित्र प्रभाव अनुपस्थित हों। भविष्यवाणी की प्रथा, जिसके द्वारा सच्चे पवित्र केंद्रों का पता लगाया जा सकता था, अब लुप्त हो चुकी है, इसलिए जहाँ हमारे पुराने गिरजाघर अभी भी आध्यात्मिक आह्वान के सटीक साधन के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं, वहीं आधुनिक समय में निर्मित कई गिरजाघर केवल खाली हॉल बनकर रह गए हैं।
"ऐसे कई वृत्तांतों से, जिनमें बताया गया है कि कुछ चर्चों के स्थल किसी न किसी प्रकार के जादू से खोजे गए थे, यह स्पष्ट है कि कुछ सौ साल पहले तक पूरे ब्रिटिश द्वीपों में भू-ज्योतिष की एक पारंपरिक प्रणाली प्रचलित थी। ऐसा कहा जाता है कि लगभग हर गिरजाघर और कई पल्ली चर्चों की स्थापना दिव्य मार्गदर्शन से हुई थी, जो स्वप्नों में प्रकट हुआ, शगुन के माध्यम से या किसी अलौकिक घटना द्वारा। ये कहानियां, जो ग्रामीण लोककथाओं की हर पुस्तक में पाई जा सकती हैं, इतनी असंख्य हैं कि केवल कुछ विशिष्ट उदाहरण ही दिए जा सकते हैं, लेकिन ये कुछ उदाहरण उन तरीकों को दर्शाते हैं जिनके द्वारा अंतर्निहित पवित्रता के केंद्रों को पूर्व में जाना जाता था, और यह भी कि क्यों इतने सारे चर्च आज भी प्रागैतिहासिक भू-आकृतियों पर सीधे खड़े हैं।"
"अस्थायी उपयोगितावादी कारणों से स्थापित ईंट और गारे के ढेर के पीछे, जिसने अब परिदृश्य के अधिकांश भाग को ढक लिया है, एक और परत दिखाई देती है, रेखाओं और केंद्रों का एक जाल, जो आज पूरी तरह से अज्ञात प्रणाली के अनुसार व्यवस्थित है। हमें बस इतना ही समझाना है..."

188 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: इस अद्भुत आकृति के अस्तित्व का रहस्य उस किंवदंती में निहित है कि प्राचीन काल में जादू के द्वारा शुभ स्थानों का पता लगाने का एक तरीका था। ये कहानियां किसी बाहरी प्रथा से संबंधित हैं जिसके द्वारा भविष्यवक्ता को सही स्थान तक पहुंचाया जाता था। ड्रुइडों के पास प्रकृति और आत्मा के साथ प्रत्यक्ष संवाद की परमानंद की अनुभूति प्राप्त करने के कुछ तरीके थे। हजारों साल बाद अल्फ्रेड वॉटकिंस की तरह, उन्होंने ग्रामीण इलाकों का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त किया। . . .
सौ साल पहले, चीनी भू-विज्ञान की प्रथा पश्चिम में यूरोपीय व्यापारियों की शिकायतों के माध्यम से पहली बार व्यापक रूप से जानी गई, जिन्हें देश के दोहन की अपनी तर्कसंगत योजनाओं के प्रति अकथनीय प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। उन्हें लगातार बताया जाता था कि उनकी रेलगाड़ियाँ और कारखाने कुछ निश्चित मार्गों पर नहीं चल सकते या कुछ निश्चित स्थानों पर स्थापित नहीं हो सकते। दिए गए कारण समझ से परे थे, क्योंकि औद्योगिक नेटवर्क स्थापित करने की समस्या से उनका कोई आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक संबंध नहीं था। यूरोपीय लोगों को बताया गया कि पहाड़ियों की एक विशेष श्रृंखला एक स्थलीय ड्रैगन है और उसकी पूंछ को काटकर रास्ता नहीं बनाया जा सकता। ड्रैगन पहाड़ियों से सुरंगें खोदना वर्जित था, और समतल निचले इलाकों से सीधी गुजरने वाली प्रस्तावित रेलवे लाइन को इस आधार पर अस्वीकार कर दिया गया कि यह पहाड़ियों से दिखने वाले दृश्य को खराब कर देगी। यह सब 'हवा और पानी' के विज्ञान के जानकारों द्वारा निर्धारित किया गया था, जिसे अस्पष्ट रूप से 'वह जो देखा नहीं जा सकता और समझा नहीं जा सकता' के रूप में समझाया गया था।
आधुनिक चीनी राष्ट्रवादी लेखकों ने यह सुझाव दिया है कि फेंग-शुई वास्तव में एक प्रकार का

नगर और ग्रामीण नियोजन उपाय था, जो ग्रामीण परिवेश की सामंजस्यता को संरक्षित करने का एक प्रयास था। निःसंदेह, फेंग-शुई के अभ्यास ने परिदृश्य को ऐसी सुंदरता और व्यवस्था प्रदान की जो किसी भी आधुनिक पश्चिमी योजनाकार की उपलब्धि से परे थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि यह केवल धर्मनिरपेक्ष विचारों पर आधारित नहीं था, बल्कि एक उदात्त आध्यात्मिक प्रणाली पर आधारित था जिसमें वैज्ञानिक और काव्यात्मक सत्य सामंजस्यपूर्ण रूप से एकजुट थे।
"फेंग-शुई के विशेषज्ञ, जियोमेंसेरा से परामर्श लिया गया।"

गूढ़ ज्यामिति <एस ऊर्जा ग्रिड 189
चीन में कहीं भी किसी भी इमारत या मकबरे के निर्माण और स्थान निर्धारण, और किसी भी पेड़, खंभे या पत्थर को लगाने पर विशेष ध्यान दिया जाता था जो ग्रामीण इलाकों के स्वरूप और प्रकृति को प्रभावित कर सकता था। यह माना जाता था कि कुछ शक्तिशाली चुंबकीय धाराएँ, यानी चुंबकत्व की रेखाएँ, पृथ्वी की पूरी सतह पर अदृश्य रूप से प्रवाहित होती हैं। भू-ज्योतिषी का कार्य इन धाराओं का पता लगाना और उस भूमि पर उनके प्रभाव की व्याख्या करना था जिस पर वे प्रवाहित होती थीं।
मिशेल के अनुसार, एक विशाल वैज्ञानिक यंत्र पूरी दुनिया में फैला हुआ है। वे कहते हैं, "कुछ समय पहले, शायद लगभग 4,000 साल पहले, दुनिया के लगभग हर कोने में पुरुषों का एक समूह गया था जो एक विशेष कार्य को पूरा करने के लिए आए थे।" किसी असाधारण शक्ति की सहायता से, जिससे वे पत्थर के विशालकाय ब्लॉकों को काट और उठा सकते थे, इन मनुष्यों ने विशाल खगोलीय उपकरण, सीधे खड़े स्तंभों के घेरे, पिरामिड, भूमिगत सुरंगें, साइक्लोपियन पत्थर के चबूतरे बनाए, जो सभी पटरियों और संरेखणों के एक जाल से जुड़े हुए थे, जिनका क्षितिज से क्षितिज तक का मार्ग पत्थरों, टीलों और मिट्टी के टीलों से चिह्नित था। डब्ल्यू. जे. पेरी ने अपनी पुस्तक 'चिल्ड्रन ऑफ द सन' में प्रशांत महासागर के पार इन लोगों की प्रगति का वर्णन किया है, और उनकी अद्भुत उपलब्धियों के उदाहरण के रूप में दूरस्थ, निर्जन द्वीपों की संख्या का उल्लेख किया है, जिन पर विशाल श्रमसाध्य पिरामिडों और विशालकाय पत्थर की संरचनाओं के खंडहर मौजूद हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि ऊर्जा का यह विशाल प्रवाह, जिसने कुछ सौ वर्षों के भीतर पूरी पृथ्वी को पत्थर के घेरों और मिट्टी के टीलों से ढक दिया, किसी एक समूह या जाति से उत्पन्न हुआ था, या यह सार्वभौमिक प्रेरणा की एक लहर के रूप में स्वतः प्रवाहित हुआ था। कुछ लोगों का मानना है कि उत्तरी यूरोप के पत्थर के घेरे मूल निवासियों द्वारा बनाए गए थे, जबकि पोलिनेशिया के पत्थर के घेरे प्रागैतिहासिक मिशनरियों का काम थे। फिर भी, ब्रिटेन में सबसे नया और सबसे परिपूर्ण घेरा, स्टोनहेंज, में बहुत कुछ समान है। क्रेते में स्थानीय परंपरा की तुलना में खगोलीय संरचनाओं के डिजाइन और संचालन में स्थानीय भिन्नताएं यह दर्शाती हैं कि प्रत्येक जाति ने एक सार्वभौमिक सभ्यता के निर्माण में अपना योगदान दिया।

190 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
"यह विश्वव्यापी कार्य कैसे पूरा हुआ, यह कोई नहीं जानता, और इसके पीछे का कारण तो और भी कम ही लोग जानते हैं। और यही सबसे अहम सवाल है। अगर हम यह जान लें कि लिखित इतिहास से परे इन लोगों ने अपनी सारी कुशलता और संसाधन एक ऐसे स्थलीय ढाँचे के निर्माण में क्यों लगाए जो पृथ्वी और आकाश दोनों को मापता था, तो हम उनकी सार्वभौमिक सभ्यता का रहस्य जान जाएँगे, एक ऐसी अवस्था जो अब पूरी तरह से पकड़ से बाहर लगती है।"

मिशेल को आश्चर्य होता है कि क्या प्रागैतिहासिक काल की कई संरचनाएं पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को मापने के लिए ही बनाई गई थीं। वे कहते हैं, "पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र को प्रभावित करने वाली सभी खगोलीय घटनाओं में सबसे नाटकीय घटना सूर्य या चंद्रमा का ग्रहण है। जब ऐसा होता है, तो ग्रहणग्रस्त पिंड द्वारा सामान्यतः उत्तेजित चुंबकीय गतिविधि बहुत कम हो जाती है, जिससे पृथ्वी की धारा के नियमित प्रवाह पर काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि ब्रिटेन और अन्य जगहों की कई प्रागैतिहासिक पत्थर की वेधशालाओं का अंतिम उद्देश्य चंद्र ग्रहण की सटीक भविष्यवाणी करना था। चंद्रमा के ग्रहण का पृथ्वी पर कोई प्रत्यक्ष भौतिक प्रभाव नहीं होता, सिवाय इसके कि यह पृथ्वी के चुंबकत्व के स्तर पर प्रभाव डालता है।"
बाद में पुस्तक में मीहेल लिखते हैं: "हवाई और पोलिनेशिया से कई कहानियां प्रचलित हैं जिनमें पहले ईसाई पुजारियों की मूर्खता का जिक्र है जिन्होंने उचित स्थानों के बजाय बेतरतीब ढंग से अपने चर्च बनाने पर जोर दिया और इस तरह खुद पर और अपने उद्देश्य पर दुर्भाग्य लाया। ड्रैगन करंट की रेखाएं पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र से संबंधित किसी प्राकृतिक बल प्रवाह को संदर्भित करती हैं, जिसे आधुनिक समय में दिवंगत विल्हेम रीच ने पुनः खोजा था और इसे ऑर्गेन ऊर्जा कहा था। ..."
यदि हम एक सार्वभौमिक सभ्यता के पूर्व अस्तित्व के प्रमाणों को स्वीकार करते हैं, तो यह मानना होगा कि उस सभ्यता को नष्ट करने वाली प्रलय, जो महाद्वीपों के आकार को अचानक बदल देने वाली आवर्ती घटनाओं में से एक है, ने चुंबकीय धारा के मौजूदा पैटर्न को बाधित किया और एक नया स्थलीय केंद्र बनाया। पूर्व राजधानी के साथ...

गूढ़ ज्यामिति और ऊर्जा ग्रिड 191
शायद पूरी तरह नष्ट हो जाने या जलमग्न हो जाने के बाद, आपदा से बचे लोगों ने सबसे पहले इस स्थान का पता लगाया होगा और पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र पर पुनः नियंत्रण स्थापित करने के पहले चरण के रूप में एक नया शक्तिशाली उपकरण बनाया होगा। और यहीं, दुनिया के सभी महाद्वीपों के ठीक केंद्र में, हमें महान पिरामिड मिलता है।
ग्रेट पिरामिड हमेशा से ही रहस्यमयी घटनाओं और विचित्र प्रसंगों का केंद्र रहा है। स्फिंक्स की तरह, जिसकी सुबह की चीख चेकोव के चेरी ऑर्चर्ड के अंत में धनुष की डोरी की झंकार की याद दिला सकती है, ग्रेट पिरामिड के बारे में भी कहा जाता है कि यह कभी-कभी एक अजीब ध्वनि के साथ कंपन करता है। पर्यटक गाइड दावा करते हैं कि वे राजा के कक्ष में रखे संदूक पर छड़ी से प्रहार करके इस ध्वनि को पुनः उत्पन्न कर सकते हैं। स्थानीय अरबों ने भी कई बार ग्रेट पिरामिड को एक विचित्र प्रकाश में नहाया हुआ देखने की सूचना दी है। कुछ साल पहले विलियम ग्रॉफ ने इंस्टीट्यूट इजिप्टियन के सदस्यों के साथ मिलकर पिरामिड से एक प्रकाश या जिसे उन्होंने लौ बताया, उसे उठते हुए देखने की सूचना दी थी। अन्य रिपोर्टों में पत्थर की संरचना के पास असामान्य गोलाकार रोशनी और हाल ही में शिखर के पास मंडराती हुई कुछ उड़ने वाली वस्तुओं का उल्लेख है। फिर भी, ग्रेट पिरामिड के अंदर और आसपास के ऊर्जा क्षेत्रों की प्रकृति चाहे जो भी हो, और प्रकृति और ब्रह्मांड की जिन शक्तियों को प्राचीन निर्माताओं ने इसके निर्माण के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास किया हो, ये शक्तियां अभी भी मौजूद हैं और जब हम उनके कार्य को पहचान लेते हैं तो उन्हें पुनः प्रकट किया जा सकता है।

12. घर पर किए जाने वाले प्रयोग

गीज़ा के महान पिरामिड के आकार पर निर्मित लघु पिरामिडों में असाधारण ऊर्जा क्षेत्र होने की खोज से उत्पन्न प्राचीन आश्चर्य के प्रति एक नया विस्मयकारी आकर्षण पैदा हो गया है। जीवन के हर क्षेत्र के लोग पिरामिडों की शक्ति की संभावना से मोहित प्रतीत होते हैं। जब भी हम कोई भाषण देते हैं या रेडियो या टेलीविजन पर आते हैं, तो हमें फोन कॉल और आगंतुकों की बाढ़ आ जाती है। वे अधिक जानकारी चाहते हैं; वे कुछ प्रयोग शुरू करना चाहते हैं। इस आकर्षण को समझना कठिन नहीं है, क्योंकि आज तक पिरामिड अनुसंधान हर अन्वेषक को तेल का कुआँ खोदने, सोने की खोज करने या प्राचीन कलाकृतियों की खुदाई करने जितना ही लुभावना वादा करता है। जोखिम अधिक होने की संभावना है, निवेश काफी कम है, और लक्ष्य कहीं अधिक दूरगामी है।

पिरामिड सिद्धांत पर किए गए शोध की सबसे आकर्षक बात यह है कि इससे अनेक क्षेत्रों में लाभ की संभावना रहती है। यह हमारे शारीरिक स्वास्थ्य, मन की अवस्था, पर्यावरण, भोजन, पानी और हवा, ऊर्जा आवश्यकताओं से संबंधित है;

घरेलू प्रयोग 193

यह रचना जीवन के लगभग सभी पहलुओं को छूती है। इस प्रकार की रचना वीरतापूर्ण साहसिक कारनामों का संकेत देती है।

यह अध्याय उन लोगों के लिए है जो पिरामिड और अन्य उपकरणों के साथ स्वयं प्रयोग करना चाहते हैं। जो लोग इस पुस्तक में उल्लिखित विषयों पर अधिक पढ़ना चाहते हैं, उनके लिए हमने पुस्तक के अंत में एक संदर्भ सूची शामिल की है। हालांकि, प्रयोग के क्षेत्र में ही सबसे बड़ा रोमांच छिपा है। पिरामिड अनुसंधान, या सामान्य रूप से ऊर्जा बल-क्षेत्रों का अनुसंधान, अभी प्रारंभिक अवस्था में है और घर पर प्रयोग करने वाला व्यक्ति नए क्षेत्रों की खोज के रोमांच का अनुभव कर सकता है। जब महत्वपूर्ण खोजें होंगी, और निश्चित रूप से होंगी, तो वह इस अग्रणी प्रयास का हिस्सा बन सकता है, और यह संभव है कि वह ज्ञान के बढ़ते भंडार में वास्तविक योगदान दे सके। इस समय आवश्यकता है ऐसे प्रयोगकर्ताओं की जिनकी सबसे बड़ी प्रतिभा निरंतर कार्य करने और अवलोकन करने के धैर्य में निहित है, जिनमें अदम्य जिज्ञासा है, और जो पुराने अवलोकनों को नए नजरिए से देखने के लिए अपनी रचनात्मकता का उपयोग करने को तैयार हैं। इन प्रयोगों के लिए धन की आवश्यकता नहीं है। इनमें से अधिकांश सामग्रियां आमतौर पर घरेलू कार्यशाला में मिल जाती हैं, या इन्हें स्थानीय लकड़ी के गोदामों और हार्डवेयर स्टोरों से कुछ डॉलर में खरीदा जा सकता है।

इस अध्याय में शामिल योजनाएँ और रेखाचित्र वे हैं जिनका हमने उपयोग किया है। कुछ हमने स्वयं डिज़ाइन किए हैं और कुछ हमें उन प्रयोगकर्ताओं द्वारा दिए गए हैं जिनका एकमात्र उद्देश्य अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करना था। हम भी इसी भावना से इन्हें पाठकों के साथ साझा कर रहे हैं। इस प्रकार के आदान-प्रदान को जारी रखना और विस्तारित करना आवश्यक है। प्रयोगकर्ताओं के बीच अच्छा संवाद इस क्षेत्र में ज्ञान के भंडार को बढ़ाने में बहुत सहायक होगा। इस तरह हम एक-दूसरे से सीख सकते हैं और अनावश्यक दोहराव से बच सकते हैं। इस क्षेत्र में किए गए किसी भी प्रयोग के परिणाम जानने में हमें प्रसन्नता होगी, जैसा कि इस पुस्तक में उल्लिखित विभिन्न शोध समूहों को भी होगी।

प्रयोगकर्ता को यह ध्यान रखना चाहिए कि हम संवेदनशील ऊर्जा क्षेत्रों के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। अब तक के प्रमाण बताते हैं कि ये ऊर्जा क्षेत्र सभी जीव-जंतुओं में पाए जाते हैं। इसलिए, न तो वस्तुओं को और न ही व्यक्तियों को एक-दूसरे से अलग माना जा सकता है। बैक्स्टर, वोगेल, टिलर, मिशेल आदि के शोध से हमने सीखा है कि विचार और भावनाएँ जैसी सूक्ष्म शक्तियाँ भी ऊर्जा से निर्मित होती हैं, जो एक-दूसरे से प्रभावित होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इस "एक-दूसरे" का दायरा अभी निर्धारित करना असंभव है। इसका स्पष्ट अर्थ है तात्कालिक वातावरण; यह कितना विस्तृत है और किन परिस्थितियों में है, यह ज्ञात नहीं है। इसका अर्थ प्रयोगकर्ता के लिए, चाहे वह घर पर कार्यशाला में हो या किसी बड़ी प्रयोगशाला में, यह है कि वह स्वयं को प्रयोग से अलग नहीं कर सकता। वह भी उन अज्ञातों में से एक है जिन्हें अभी खोजना बाकी है।

स्पष्ट है कि विभिन्न प्रभावों को रोकना या समाप्त करना संभव नहीं है। हम प्रयोग के आस-पास मौजूद उन कारकों पर विचार कर सकते हैं जो परिणामों को प्रभावित कर सकते हैं—जैसे विद्युत धाराएँ, पेड़-पौधों, जानवरों, मनुष्यों की उपस्थिति, रेडियो और टेलीविजन तरंगें, प्रकाश, धातु की छत, साइडिंग या इन्सुलेशन जो विद्युत चुम्बकीय क्षेत्रों को बाधित या बढ़ा सकते हैं, आदि। यदि प्रायोगिक और नियंत्रण वस्तुओं पर समान प्रभाव पड़ते हैं, तो कम से कम दोनों के परिणामों में अंतर सार्थक होगा। हमें चरों को यथासंभव समान रखना होगा।

प्रयोग के एक घटक के रूप में स्वयं को नियंत्रित करना अधिक कठिन है। हम निश्चित नहीं हो सकते कि हमारे ऊर्जा क्षेत्र, हमारी भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ और विचार किस हद तक प्रभाव डालेंगे। हम प्रयोग की वस्तु के साथ नियंत्रण वस्तु के समान ही व्यवहार कर सकते हैं, लेकिन हमारे दृष्टिकोण और भावनाएँ अनियंत्रित कारक बने रहते हैं। उदाहरण के लिए, हम शायद चाहेंगे कि पिरामिड के अंदर का पौधा बाहर वाले पौधे से अलग व्यवहार करे। क्या यह इच्छा पौधे तक पहुँचेगी और उसकी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करेगी? यह सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य अचेतन रूप से टेलीपैथिक संदेश भेजते हैं*। यदि ऐसा है, तो ये एक और अनियंत्रित कारक हैं।

घरेलू प्रयोग 195

यह एक कारक है। इसका उद्देश्य प्रयोगकर्ता को हतोत्साहित करना नहीं है। बल्कि इसके विपरीत, इससे हमें अपने बारे में भी कुछ सीखने को मिल सकता है। हालांकि, इसका मतलब यह है कि जहां संभव हो, हम डबल-ब्लाइंड दृष्टिकोण का उपयोग करें। पिरामिड के अंदर रखे पौधों के साथ यह मुश्किल होगा। यह उन प्रयोगों में कारगर होगा जिनमें पानी का उपचार करके उसे पौधों को सींचना शामिल है। हम कंटेनरों पर निशान लगा सकते हैं, उन्हें आपस में मिला सकते हैं और प्रयोग के अंत तक यह नहीं जान पाएंगे कि कौन सा कंटेनर किसका है। हम पिरामिड के अंदर उपचारित प्लेटों या पन्नी का उपयोग कर सकते हैं और फिर उन्हें चिह्नित करके और इस जानकारी को खुद से छिपाकर उपरोक्त तरीके से साइकोट्रॉनिक जनरेटर के रूप में उपयोग कर सकते हैं। उपचारित रेजर ब्लेडों पर हम स्वयं निशान लगा सकते हैं, फिर उन्हें इस तरह मिला सकते हैं कि हमें पता न चले कि कौन सा ब्लेड किसका है, और फिर परीक्षण के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को दे सकते हैं, जिसे भी यह नहीं पता होगा कि वह किस ब्लेड का उपयोग कर रहा है।

अपने परिणामों की पुष्टि करने में यह बहुत मददगार साबित होता है यदि हम सहयोगियों या मित्रों की रुचि जगा सकें और उनसे अपने प्रयोगों को दोहराने के लिए कह सकें। इससे हमें अपने परिणामों की जाँच करने का एक तरीका मिल जाता है। प्रयोगों में जितने अधिक लोग शामिल होंगे, उतना ही बेहतर होगा। साथ ही, प्रयासों को प्रमाणित करने के लिए, परिवार के सदस्यों,

मित्रों और पड़ोसियों को अपनी परियोजनाओं के अधिक से अधिक चरणों का साक्षी बनने के लिए आमंत्रित करें।
प्रयोग और नियंत्रण वस्तुओं को स्पष्ट रूप से चिह्नित करना बुद्धिमानी है ताकि उनकी पहचान को लेकर कोई संदेह न रहे। प्रयोगों का नियमित रिकॉर्ड रखना भी उपयोगी है, जिसमें तिथियां, माप, परिणाम आदि दैनिक या उपयुक्त समय सारणी के अनुसार दर्ज किए जाएं। अपने माप यथासंभव सटीक रखें और जहां आवश्यक हो, खाद्य पदार्थों और तरल पदार्थों जैसी सामग्रियों या वस्तुओं का सावधानीपूर्वक वजन करें। प्रयोग और नियंत्रण वस्तुओं को प्रभावित करने वाले नमी, वायु प्रवाह, प्रकाश आदि में किसी भी अंतर पर विशेष ध्यान दें।
उपरोक्त विचार सामान्यतः अनुसंधान परियोजनाओं पर लागू होते हैं। अब हम विभिन्न उपकरणों के निर्माण और उपयोग पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
अब तक के शोध से पता चलता है कि पिरामिड लगभग किसी भी प्रकार की सामग्री से बनाए जा सकते हैं, क्योंकि इससे प्राप्त होने वाले परिणाम काफी प्रभावी होते हैं।

196 पिरामिडों की गुप्त शक्ति

इसका प्रभाव निर्माण में प्रयुक्त सामग्री की बजाय आकार पर निर्भर करता है। धातु कुछ विद्युतचुंबकीय बलों को अवरुद्ध करती है (हालांकि सभी बलों को नहीं), लेकिन लकड़ी, प्लास्टिक, कैनवास और फाइबरग्लास भी समान रूप से प्रभावी प्रतीत होते हैं। हालांकि इसकी शायद आवश्यकता नहीं है, लेकिन यदि आप वास्तव में शुद्धतावादी बनना चाहते हैं, तो आप कीलों के स्थान पर लकड़ी के डंडे और गोंद का उपयोग करके अपने पिरामिड में किसी भी धातु का उपयोग करने से बच सकते हैं।
पिरामिड किसी भी आकार के हो सकते हैं, एक इंच ऊँचे से लेकर इमारत के आकार तक। इस समय, ह्यूस्टन, टेक्सास में यूनिटी चर्च ऑफ क्रिश्चियनिटी में ग्रेट पिरामिड के ठीक आकार का एक चर्च निर्माणाधीन है। यह विचार चर्च के पादरी जॉन डी. रैंकिन का था, लेकिन बताया जाता है कि इसने पूरी मंडली को आकर्षित कर लिया है। चर्च का आधार 89 फुट का वर्गाकार होगा, इसकी ऊँचाई 63 फुट से अधिक होगी और यह 9,206 वर्ग फुट के क्षेत्र में फैला होगा। ह्यूस्टन के बर्डे बेकर प्लैनेटेरियम के एक कर्मचारी ने इमारत को उत्तर-दक्षिण अक्ष पर संरेखित करने में मदद की। मेक्सिको में हमारे एक मित्र ने हमें बताया है कि वह अंडों के भंडारण के लिए पिरामिड के आकार का एक गोदाम बनाने की योजना बना रहा है, और हमें यह भी बताया गया है कि डेनवर में एक विशाल पिरामिड के आकार का रेस्तरां बनाने की योजना है।
पिरामिड का आकार काफी हद तक उसके उपयोग पर निर्भर करता है। चार इंच के पिरामिड में रेज़र ब्लेड को प्रभावी ढंग से तेज किया जा सकता है। हालांकि, यदि पिरामिड के किसी विशेष तल पर, जैसे कि राजा के कक्ष में, कोई वस्तु रखनी हो, तो पिरामिड इतना बड़ा होना चाहिए कि वह वस्तु उस तल पर आसानी से समा सके। यदि वस्तु पिरामिड के भीतरी स्थान का बहुत अधिक भाग घेर लेती है, तो प्रयोग कम प्रभावी होगा। उदाहरण के लिए, पौधों के अंकुरों पर प्रयोग के लिए पिरामिड लगभग 18 इंच ऊंचा होना चाहिए। एक गैलन पानी रखने के लिए पर्याप्त बड़े पिरामिड की ऊंचाई तीन से चार फीट होनी चाहिए। ध्यान के लिए हमने जिन पिरामिडों का उपयोग किया है, जहां व्यक्ति बैठता या लेटता है, उनकी ऊंचाई छह फीट रही है। पिरामिड के लिए आधार की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि, पिरामिड को स्थिर रखना और उसे टिकाए रखना कभी-कभी मुश्किल होता है।

घरेलू प्रयोग 197
बिना आधार के वर्गाकार पिरामिड, विशेषकर जब यह हल्के पदार्थ से बना हो। यदि आपको आधार आवश्यक लगे, तो इसे पिरामिड से स्थायी रूप से जोड़ना बेहतर है। इसके लिए वस्तुओं को रखने के लिए एक खुला स्थान या दरवाजा बनाना होगा। यह एक तरफ को खुले स्थान के रूप में उपयोग करके किया जा सकता है। एक किनारे को टेप से अच्छी तरह चिपका दें और दूसरे किनारे को बस इतना ही टेप लगाएं कि वह अपनी जगह पर टिका रहे। बड़े पिरामिडों के लिए, आप या तो एक तरफ को कब्जों से खुलने वाला बना सकते हैं या एक दरवाजा बना सकते हैं। यदि पिरामिड तख्तों या प्लाईवुड जैसी कठोर सामग्री से बनाया जाना है, तो आप एक तरफ से दरवाजा काटकर उसी हिस्से पर कब्जा लगा सकते हैं। यदि पिरामिड लकड़ी के फ्रेम से बना है और प्लास्टिक से ढका है, तो दरवाजे की ऊंचाई पर एक तरफ से दूसरी तरफ एक फ्रेम बोर्ड लगाना आवश्यक होगा, और दरवाजे के दोनों ओर ऊपर वाले फ्रेम बोर्ड से आधार तक दो फ्रेम बोर्ड लगाने होंगे। फिर आप दरवाजे के आकार का एक आयताकार फ्रेम बनाकर उसे प्लास्टिक से ढक सकते हैं।
पिरामिड के सही आयाम निर्धारित करने के कई तरीके हैं। एक तरीका यह है कि प्रत्येक एक फुट ऊंचाई के लिए 1.5708 फुट आधार और 1.4945 फुट भुजा (कोने से शीर्ष तक) की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, यदि आप छह फुट ऊंचा पिरामिड बनाना चाहते हैं, तो वर्गाकार आधार की प्रत्येक भुजा 9.4248 फुट होगी और त्रिभुजाकार आधार की प्रत्येक भुजा 8.9674 फुट होगी।
छोटे पिरामिडों के निर्माण में आपको निम्नलिखित पैमाना उपयोगी लग सकता है:

198 पिरामिडों की गुप्त शक्ति
आधार की लंबाई में से भुजाओं की लंबाई में से पाँच प्रतिशत घटाकर आयाम ज्ञात करने का एक और तरीका है, हालाँकि यह विधि ऊपर बताए गए पैमाने जितनी सटीक नहीं है। एक तीसरा तरीका यह है कि एक प्रोटेक्टर लेकर आधार से 61 डिग्री के कोण पर भुजाएँ खींची जाएँ। इस विधि का उपयोग किसी भी आकार के पिरामिड के लिए किया जा सकता है और इससे आयाम ज्ञात करने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
जब पिरामिड की भुजाएँ अपनी जगह पर लग जाएंगी, तो वे आधार के साथ 51 डिग्री और 51 मिनट का कोण बनाएंगी, जो कि ग्रेट पिरामिड की एक लघु प्रतिकृति होगी।
पिरामिड को रेडियो, टेलीविजन और अन्य बिजली के उपकरणों से दूर किसी कमरे में रखना सबसे अच्छा है। वास्तव में, पिरामिड को घर के बाहर या किसी धातु की चादर या बिजली के तारों से दूर किसी कमरे में रखना और भी बेहतर होगा, लेकिन ऐसा करना मुश्किल हो सकता है। पिरामिड को फर्श पर या किसी स्थिर चबूतरे या मेज पर रखना चाहिए ताकि वह हिलने-डुलने से सुरक्षित रहे।
पिरामिड को चारों दिशाओं - उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम - पर संरेखित करना आवश्यक है। इसका अर्थ है कि इसकी चारों भुजाएँ इनमें से किसी एक दिशा की ओर उन्मुख हों। आप पिरामिड के केंद्र से एक सीधी रेखा खींच सकते हैं या किसी एक भुजा को उत्तर-दक्षिण अक्ष के रूप में उपयोग कर सकते हैं। चुंबकीय उत्तर दिशा पर पिरामिड को संरेखित करने के लिए कंपास का उपयोग किया जा सकता है। वास्तविक उत्तर दिशा अधिक सटीक होगी, लेकिन सभी रिपोर्टों के अनुसार चुंबकीय उत्तर दिशा भी उतनी ही सटीक प्रतीत होती है। वास्तविक उत्तर दिशा और चुंबकीय उत्तर दिशा में अक्षांश के आधार पर कई डिग्री का अंतर होता है। अपने क्षेत्र के लिए

अक्षांश का पता लगाने के लिए आप स्थानीय पंचांग देख सकते हैं या स्थानीय हवाई अड्डे से संपर्क कर सकते हैं।
अब तक का अधिकांश शोध राजा के कक्ष क्षेत्र पर केंद्रित रहा है। इस स्थान पर शोध वस्तुओं को रखते समय, आधार से शीर्ष तक की दूरी के एक तिहाई भाग की दूरी को शीर्ष के ठीक नीचे मापें। वस्तुओं को इस स्तर पर गैर-चालक बक्सों, ब्लॉकों या चबूतरे पर रखा जा सकता है। हालांकि, चबूतरा आवश्यकता से अधिक बड़ा नहीं होना चाहिए।

घरेलू प्रयोग 199
पिरामिड में कोई वस्तु रखते समय, उसे इस प्रकार रखें कि उसका सबसे लंबा भाग उत्तर-दक्षिण अक्ष की दिशा में हो। प्रायोगिक और नियंत्रण वस्तुओं के साथ परीक्षण करते समय, आप नियंत्रण नमूने को पिरामिड के समान आयतन वाले एक बॉक्स के नीचे रख सकते हैं। पौधों के मामले में, पिरामिड और नियंत्रण बॉक्स के निचले भाग या किनारों में वेंटिलेशन की व्यवस्था की जानी चाहिए।
रेज़र ब्लेड को तेज़ करते समय, कई बार इस्तेमाल करने के बाद ब्लेड को पिरामिड के एक तिहाई तल पर रखें, धारें पूर्व और पश्चिम की ओर होनी चाहिए, और इसे कम से कम एक सप्ताह तक वहीं रहने दें। इसके बाद ब्लेड का इस्तेमाल शेविंग के लिए किया जा सकता है और इस्तेमाल के तुरंत बाद इसे वापस पिरामिड में रख दें। कुंद ब्लेड, चाकू और कैंची को भी पिरामिड में तेज़ किया जा सकता है, लेकिन उन्हें चार महीने तक वहीं स्थिर रखना होगा।
यदि आप पिरामिड के शीर्ष से उत्सर्जित होने वाली ऊर्जा की मात्रा का परीक्षण करना चाहते हैं, तो पेंडुलम या डॉविंग रॉड का उपयोग करें। पेंडुलम किसी भी छोटी, भारी वस्तु, जैसे रोलर बेयरिंग या धातु के नट को डोरी से बांधकर बनाया जा सकता है। पेंडुलम को हाथ में पकड़कर पिरामिड के शीर्ष से थोड़ा ऊपर लटकाते हुए धीरे-धीरे पिरामिड की ओर बढ़ें। जब आप पिरामिड के शीर्ष से आधा फुट की दूरी पर पहुंचेंगे, तो पेंडुलम हिलने लगेगा। पेंडुलम को सीधे शीर्ष के ऊपर लटकाकर देखें, और आप पाएंगे कि पेंडुलम का वजन थोड़ा इधर-उधर हिलता है या शीर्ष के चारों ओर धीरे-धीरे चक्कर लगाता है।
डॉविंग रॉड लगभग तीन फीट लंबी दो धातु की छड़ों से बनाई जा सकती हैं। कोट हैंगर को सीधा करके उनका उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक छड़ के लगभग सात इंच हिस्से को 90 डिग्री के कोण पर मोड़कर हैंडल बनाएं। छड़ों को इस प्रकार पकड़ें कि वे एक-दूसरे के समानांतर हों और आपसे दूर की ओर इशारा कर रही हों। पिरामिड की ओर इस प्रकार बढ़ें कि छड़ें शीर्ष के स्तर से ऊपर पिरामिड को घेर लें। जैसे ही छड़ों के सिरे शीर्ष के पास पहुँचते हैं, छड़ें एक-दूसरे को पार करेंगी या एक-दूसरे से दूर झूलेंगी।

200 पिरामिडों का रहस्य
पता चलता है कि शीर्ष से विकीर्ण होने वाला ऊर्जा क्षेत्र शंकु के आकार का होता है।
इसका आकार ऐसा है कि ऊपर उठने के साथ-साथ इसका व्यास बढ़ता जाता है।
हमने पाया है कि पिरामिड का उपयोग करके ध्यान करते समय, तकिए पर बैठकर उत्तर दिशा की ओर मुख करना अन्य दिशाओं की ओर मुख करने की तुलना में अधिक प्रभावी होता है। लेटते समय, हम खाट का उपयोग करते हैं और अपना सिर उत्तर दिशा की ओर रखते हैं। बायोफीडबैक उपकरण निर्माता हुमा-टेक इंडस्ट्रीज के गैरी प्लैप, पिरामेडिटेशन इंक. के अध्यक्ष जॉर्ज कूपर और पिरामिड गाइड के संपादक बिल कॉक्स द्वारा किए गए हालिया परीक्षणों में, पिरामिड के अंदर ध्यान कर रहे व्यक्तियों की मस्तिष्क तरंगों की गतिविधि में आयाम नियमितता और अल्फा और

थीटा मस्तिष्क तरंगों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। इसकी तुलना पिरामिड में प्रवेश करने से कुछ मिनट पहले पिरामिड के बाहर परीक्षण किए गए उन्हीं ध्यान करने वाले व्यक्तियों से की गई।
कई लोगों ने हमसे पिरामिड के आकार में घर बनाने के बारे में पूछा है। हमने उन्हें एल्युमीनियम साइडिंग या एल्युमीनियम-कोटेड इंसुलेशन के इस्तेमाल के बारे में आगाह किया है, क्योंकि ऐसा लगता है कि यह विद्युत चुम्बकीय बलों को रोकता या अवशोषित करता है। जैसा कि "ठोस पदार्थों पर प्रभाव" नामक अध्याय में बताया गया है, यह संभव है कि एल्युमीनियम पिरामिड ऊर्जा से संतृप्त हो जाने के बाद बल के लिए अवरोधक का काम करना बंद कर दे और यहां तक कि इसे साइकोट्रोनिक जनरेटर के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सके। हालांकि, यह याद रखना चाहिए कि एल्युमीनियम फॉयल ऊर्जा को अवशोषित तो करता है, लेकिन कुछ ही दिनों में उसे खो भी देता है। साथ ही, एल्युमीनियम का उपचार पिरामिड के अंदर किया गया था।
एल्युमीनियम साइडिंग पिरामिड के बाहर लगाई जाएगी और हमारे परीक्षण, हालांकि पूरी तरह से व्यापक नहीं हैं, यह संकेत नहीं देते कि एल्युमीनियम का उपचार पिरामिड के बाहर प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इस विषय पर और अधिक शोध होने तक हमारा सुझाव है कि पिरामिड के आकार की इमारत पर एल्युमीनियम साइडिंग लगाने की सोच रहे व्यक्ति को पहले संरचना का एक सटीक प्रोटोटाइप बनाना चाहिए और समय-समय पर कई परीक्षण करने चाहिए।
पिरामिड का आकार स्थान की बचत के लिए आसानी से उपयुक्त नहीं है, लेकिन दीवारों और डेक के मिलने वाले किनारों को c*i करें।

घरेलू प्रयोग 201
भंडारण स्थान उपलब्ध कराया जा सकता है। हमारा मानना है कि दरवाजों को इस प्रकार लगाया जाना चाहिए कि बंद होने पर वे आंतरिक पिरामिडनुमा आकृति में कोई बाधा न डालें। दूसरे शब्दों में, हमारा मानना है कि डॉर्मर-प्रकार की खिड़कियों का उपयोग तब तक नहीं किया जाना चाहिए जब तक कि दीवारों की ढलान के अनुरूप कांच न लगाया जाए, जहां डॉर्मर छत की ढलान के किनारे से मिलता है। संभवत: बिजली के तारों को आधार के पास लगाया जाना चाहिए, जिनके तार ऊपर की ओर दीवार के आउटलेट तक जाएं। इससे पिरामिडनुमा आकृति में बिजली का प्रवाह नहीं होगा।
हमने खुद देखा है और दूसरों ने भी इस बात पर टिप्पणी की है कि हमारी दुकान में, जहाँ कई पिरामिड रखे हैं, हवा बहुत ताज़ा और स्वच्छ है। ऐसा लगता है कि वहाँ कोई दुर्गंध भी नहीं है। शायद अगर पिरामिडों की एक श्रृंखला को घर के अटारी में उत्तर-दक्षिण दिशा में रखा जाए, तो वे वायु शोधक का काम कर सकते हैं। ये पिरामिड बासी हवा की दुर्गंध को कम कर सकते हैं और तंबाकू व खाना पकाने की गंध को भी दूर कर सकते हैं।
फोटो सेक्शन में कलाकारों द्वारा प्रस्तुत चित्र पिरामिडनुमा घर निर्माण की कुछ शानदार संभावनाओं को दर्शाते हैं।

13. पिरामिड:
ब्रह्मांड की खिड़की
"जैसा ऊपर, वैसा नीचे; जैसा नीचे, वैसा ऊपर" एक पुराना दार्शनिक कथन है, लेकिन अंतरिक्ष

की अनंतता और उपनाभिकीय कणों की परिमितता की खोज के साथ-साथ इसका वैज्ञानिक महत्व बढ़ता जा रहा है। ब्रह्मांड की परमाणु संरचना स्वयं को दोहराती हुई प्रतीत होती है, चाहे हम सौर मंडल को देखें या अपने नाभिक के चारों ओर घूमते इलेक्ट्रॉनों पर विचार करें। और अब अनगिनत आकाशगंगाओं से भरे विशाल अंतरिक्ष में स्थित हमारा सौर मंडल तुलना में इतना छोटा लगता है कि वह स्वयं एक घूमते हुए इलेक्ट्रॉन जैसा प्रतीत होता है। फिर भी, एक इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी से देखने पर, कोई भी इसे किसी शक्तिशाली दूरबीन से देखे गए दृश्य के समान आसानी से कल्पना कर सकता है। पैटर्न वही रहता है; केवल संदर्भ बिंदु बदल गया है।
यह तर्कसंगत रूप से अनुमान लगाया जा सकता है कि उपनाभिकीय कणों को मापने के हमारे स्तर से कहीं नीचे कोई जीव इन कणों में से किसी एक को अपना ग्रह मानता है, या अंतरिक्ष में कहीं कोई बुद्धि यह घोषणा करती है कि

पिरामिड: ब्रह्मांड की खिड़की 203
इसने अभी-अभी एक और भी सूक्ष्म परमाणु इकाई की खोज की है, इस बात से अनजान कि यह हमारी पृथ्वी की बात कर रहा है। वास्तव में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किस दिशा में यात्रा करते हैं, हम जल्द ही अपनी धारणाओं की सीमा को पार कर जाते हैं और अनंतता हमें घेर लेती है। अब हमने जान लिया है कि अंतरिक्ष और समय की वास्तविकता केवल संदर्भ बिंदुओं तक ही सीमित है। ठोस पदार्थ बहुत पहले ही लुप्त हो चुके हैं, उनकी जगह ऊर्जा के भंवरों ने ले ली है और ऊर्जा, बदले में, चेतना में अपनी पहचान तेजी से खो देती है।
रास्ता भटक जाने पर हम फिर से शुरुआत करते हैं, विचारों पर चाक के निशान बनाते हुए, इस उम्मीद में कि शायद हमें घर लौटने का रास्ता मिल जाए। जिन चट्टानों के नीचे हमने झाँका है और जिन पर नियम लिखे हैं, उनमें से एक ऐसी है जो हमारी जाँच से बच निकली है और हमें सत्य के भ्रम में नहीं फंसा पाई है। पिरामिड के बारे में जानना विशेष रूप से निराशाजनक रहा है क्योंकि यह मानव निर्मित है। ईश्वर के रहस्य होना एक बात है, लेकिन किसी मानव निर्मित कलाकृति को न समझ पाना बहुत शर्मनाक है। यह प्रतिभाशाली लोगों के लिए भी एक सबक है।
ग्रेट पिरामिड का जिक्र करते समय रहस्यमय लहजे में बात करना स्वाभाविक है, क्योंकि वहां सदियों से कुछ अनोखा घटित होता आ रहा है। इसके बारे में सब कुछ रहस्य में डूबा हुआ है: इसकी आयु, इसके डिज़ाइनर, इसके निर्माता, इसका निर्माण, इसका उद्देश्य। हमने अन्य चीजों का विश्लेषण किया है—अणु, प्रोटोप्लाज्म, रेडियो तरंगें—उनसे प्रयोग किए हैं और उनकी नकल भी की है। लेकिन ग्रेट पिरामिड ने इसकी अनुमति नहीं दी है। हर बार जब हम किसी उत्तर के करीब पहुंचते हैं, तो वह हमसे दूर हो जाता है। कोई चर बदल जाता है, दूसरी नज़र में एक अलग तस्वीर सामने आती है, डेटा गायब हो जाता है, या अचानक नई जानकारी सामने आ जाती है। तीन साल पहले कॉस्मिक किरणों के प्रवेश को मापने के प्रयासों के दौरान भी ऐसा ही हुआ था, और सब कुछ ठीक चल रहा था जब तक कि टेपों को दोबारा चलाने पर पता चला कि पैटर्न हर दिन एक जैसे नहीं थे। दिसंबर 1974 में भी ऐसा ही हुआ, जब स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट-ऐन शम्स यूनिवर्सिटी के अभियान ने अचानक अपना काम रोक दिया। अमेरिकी और मिस्र के वैज्ञानिकों ने पिरामिड के भीतर देखने की उम्मीद में अल्प-श्रेणी की रेडियो तरंगों का उपयोग किया था।

204 पिरामिडों की गुप्त शक्ति: पिरामिड की भुजाओं का अध्ययन करें और छिपे हुए कक्षों का पता लगाएं। यह मिशन आधे रास्ते तक पहुंचने से पहले ही छोड़ दिया गया, क्योंकि 30,000

वोल्ट के साउंडर द्वारा प्रेषित रडार सिग्नल पिरामिड में अप्रत्याशित रूप से अधिक नमी के कारण कुछ ही फीट की दूरी तय करने के बाद गायब हो गए। नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भौतिकविदों को नए सिरे से योजना बनानी पड़ी है। अगली बार क्या होगा? क्या असामान्य क्रिस्टल संरचनाएं अवरोधक तंत्र के रूप में कार्य करेंगी? क्या अनियमित विद्युत चुम्बकीय धाराएं उपकरण के रीडिंग को बदल देंगी?

लकड़ी और प्लास्टिक से बने पिरामिड के छोटे मॉडल्स से हमने कुछ बेहद दिलचस्प आंकड़े जुटाए हैं, लेकिन हमें भी कई रहस्यों, अप्रत्याशित घटनाओं और उलटफेरों का सामना करना पड़ा है। नियम के ये अपवाद सिद्धांतों को बखूबी साबित करते हैं: कोई पौधा अचानक अपना व्यवहार बदल देता है; धातु की ध्रुवीयता उलट जाती है; एक रेज़र ब्लेड तेज़ तो रहता है, लेकिन कुछ दिनों तक कुंद हो जाता है या दूसरे ब्लेड से अलग व्यवहार करता है; आवाज़ आती-जाती रहती है; दूध का एक नमूना दही बन जाता है और दूसरा सूख जाता है; पिरामिड के शीर्ष पर रखा कंपास एक दिन इधर-उधर झूलता है और अगले दिन स्थिर हो जाता है। हालांकि हम अपने पिरामिडों के बारे में हमेशा यह कह सकते हैं कि उनके अंदर कुछ ऐसा हो रहा है जो बाहर नहीं हो रहा है, लेकिन हम हमेशा यह निश्चित नहीं कह सकते कि वह क्या है। हालांकि, मॉडल्स के साथ काम करने का एक अलग ही फायदा है। हम कई पिरामिडों के साथ सुधार कर सकते हैं, उनका पुनर्मूल्यांकन कर सकते हैं, समायोजन कर सकते हैं और परीक्षण कर सकते हैं।

पिरामिडों की खोज के लंबे इतिहास में कहीं न कहीं एक महत्वपूर्ण मोड़, एक सीख छिपी है। मान लीजिए कि महान पिरामिड के निर्माताओं को पूरी जानकारी थी कि वे क्या कर रहे हैं, उनके पास कोई बहुमूल्य ज्ञान था और उन्होंने उस जानकारी को पिरामिड के भीतर समाहित कर लिया था। यदि ऐसा है, तो उन्होंने उस ज्ञान को छिपाने के लिए इतनी मेहनत क्यों की? क्या हम यह मान सकते हैं कि उन्होंने ऐसा उसी कारण से किया होगा जिस कारण से कोई भी व्यक्ति जानकारी देता है या छुपाता है—कि प्राप्तकर्ता उसे समझेगा या नहीं समझेगा और संभवतः उसका उपयोग करेगा।

क्या यह नासमझी थी? महान धार्मिक शिक्षकों ने हमेशा अपने संदेशों को बाह्य और आंतरिक दोनों स्तरों पर प्रस्तुत किया है। जिनके कान थे वे सुन सकते थे और जिनकी आँखें थीं वे देख सकते थे, यानी उनके पास अपने कुछ समकालीनों की तुलना में कहीं अधिक गहरी अंतर्दृष्टि थी। वास्तव में, उनकी शिक्षाएँ इतनी बहुआयामी थीं कि जैसे-जैसे विद्यार्थी की अंतर्दृष्टि बढ़ती जाती, वैसे-वैसे उनके सत्य प्रकट होते जाते। शिक्षाएँ विद्यार्थी को उसके बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर पर, चाहे वह किसी भी स्तर पर हो, सहारा दे सकती थीं। कम से कम प्राचीन रहस्यवादी विद्यालयों की यही प्रथा थी, और मिस्र के प्रारंभिक निवासी इस क्षेत्र में अग्रणी थे। यदि ज्ञान को सुरक्षित दर पर बाँटने का उनका यही तरीका था, तो यह मानना उचित प्रतीत होता है कि वे पिरामिड के संबंध में इस योजना को नहीं बदलेंगे। किसी न किसी तरह उन्हें यह पता रहा होगा कि पिरामिड में समाहित ज्ञान को समझने में मनुष्य को सदियाँ लगेंगी, इसलिए उन्होंने इसे सदियों तक टिके रहने के लिए बनाया, ताकि यह भूकंपों और समय की हवाओं से अप्रभावित रहे, छेनी और हथौड़े, रडार और भौतिकी के नियमों से अछूता रहे, और धैर्यपूर्वक तब तक प्रतीक्षा करता रहे जब तक मनुष्य स्वयं वह उपकरण न बन जाए जो इसके द्वार खोल सके। "खुल कर देने वाला रहस्य" आज भी छिपे हुए ज्ञान पर निर्भर है। ज्ञान के द्वारों के सामने रहस्यमय स्फिंक्स से बेहतर प्रहरी कौन हो सकता है—जानवर, मनुष्य और देवता का विचित्र मिश्रण—जो शायद मनुष्य की उस हैरानी पर हल्की सी मुस्कान लिए हुए है कि वह उन द्वारों को कैसे खोल पा रहा है

जिन्हें केवल उसी ने बंद किया है।
सत्य महान पिरामिड के गलियारों और सुरंगों में बिखरे पड़े हैं। इस माउंट ओलंपस ने अपने रहस्य अनिच्छा से नहीं, बल्कि इस प्रकार प्रकट किए हैं कि मनुष्य को उन्हें प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना पड़ा और ऐसा करने में उसे विकसित होना पड़ा, उसे आगे बढ़ना पड़ा, उसे अपनी इंद्रियों को अपनी छेनी से कहीं अधिक तेज करना पड़ा। यदि कार्य सरल होता, तो मनुष्य अपने शैशवावस्था और किशोरावस्था में कितनी मूर्खताएँ करता? क्या ज्ञान को अनदेखा कर दिया जाता, धूल में रौंद दिया जाता और भुला दिया जाता, उसका दुरुपयोग किया जाता? लिखित इतिहास के किस युग में उसमें निहित जानकारी का बुद्धिमानी से उपयोग किया जाता? क्या अब यह वह युग, वह मौसम, वह घड़ी है, जब इसका अनावरण किया जाना चाहिए? निश्चित रूप से, हम खड़े हैं

एक व्यापक ज्ञान की सख्त ज़रूरत है—दुनिया को पोषण देने का ज्ञान, ऊर्जा के नए स्रोत, आंतरिक जागरूकता और नियंत्रण। क्या केवल ज़रूरत ही कुंजी है? ऐसा लगता है कि समझ के बिना यह संभव नहीं है। शायद पिरामिडों में वर्तमान रुचि अधिक जानने के व्यापक प्रयास का प्रमाण है। पिरामिडों का अध्ययन अब केवल कुछ वैज्ञानिकों तक ही सीमित नहीं है जो पत्थर के पहाड़ों पर धावा बोलते हैं। "पिरामिड शक्ति" की जागरूकता ने तहखाने की प्रयोगशालाओं में अभियान चलाए हैं, और जो लोग गीज़ा की यात्रा नहीं कर सकते, वे इस्लामी सिद्धांत का अनुकरण कर रहे हैं कि यदि मोहम्मद पहाड़ी पर नहीं जा सकते, तो पहाड़ी को मोहम्मद के पास आना होगा।
आश्चर्य की बात यह है कि यदि पिरामिड से प्राप्त जानकारी अपने आप में पूर्ण होती, तो मनुष्य यह मान लेता कि उसने रहस्य उजागर कर दिया है और शायद खोज यहीं समाप्त हो जाती। लेकिन जानकारी के कुछ अंश ही मिले, जो कभी-कभी चौंकाने वाले थे, अक्सर विवादास्पद भी, लेकिन कभी भी पूर्ण नहीं थे। हमेशा जो भी जानकारी मिली, वह या तो अतिरिक्त डेटा पर निर्भर थी या अन्य ज्ञान की ओर इशारा करती थी। मनुष्य कभी भी यह नहीं कह पाया, "ठीक है, हम पिरामिड के बारे में सब कुछ जान चुके हैं और अब हम अन्य चीजों की ओर बढ़ सकते हैं।" सत्य के अंश एक प्रलोभन की तरह काम करते रहे हैं।
इन अवशेषों में से कुछ ने संकेत दिया है कि पिरामिड ब्रह्मांड का एक सूक्ष्म रूप है: इसकी रूपरेखा दुनिया और आकाश का नक्शा प्रस्तुत करती है; इसका आकार प्रकृति की ज्यामितीय संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करता है; इसके आंतरिक और बाहरी माप सार्वभौमिक सत्यों के गणितीय संबंधों को दर्शाते हैं; इसकी संरचना में मौलिक प्रतीक समाहित हैं; और इसका उद्देश्य न केवल मनुष्य और उसकी दुनिया का एक अविनाशी विश्वकोश प्रदान करना था, बल्कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा का एक पात्र या उत्पादक भी था। यह प्रस्तावित किया गया है कि पिरामिड के भीतर की ऊर्जा ज्ञात और अज्ञात, ऊर्जा क्षेत्रों के संपूर्ण स्पेक्ट्रम को समाहित करती है। इस ऊर्जा को संपूर्ण ऊर्जा परिसर के रूप में देखा जाता है, जिसे प्राचीन साहित्य में प्राण या ची और समकालीन अध्ययनों में जैव-ब्रह्मांडीय और मनो-ब्रह्मांडीय कहा जाता है।

अब रहस्यवादी कह रहे हैं कि विज्ञान एक विलक्षण ऊर्जा क्षेत्र और सभी चीजों की एकता के बारे में उनकी अवधारणाओं की पुष्टि करना शुरू कर रहा है।

निश्चित रूप से, पिरामिडनुमा अंतरिक्ष के भीतर ऊर्जा बल-क्षेत्र विलक्षण प्रतीत होता है, फिर भी सघन क्रिस्टलीकरण से लेकर अभौतिक चेतना तक विभिन्न पदार्थों या अवस्थाओं पर इसके प्रभाव और भागीदारी के संदर्भ में यह अनेक रूपों में प्रकट होता है। एक ऐसे माध्यम द्वारा भौतिक से अभौतिक तक का सेतु, जो स्पष्ट रूप से दोनों है, उन वैज्ञानिकों के लिए कोई दुविधा प्रस्तुत नहीं करता जो मन और पदार्थ को एक ही पदार्थ के चरम छोर मानते हैं। भारतीय ब्रह्मांडीय प्रणाली में ऐसी अवधारणा विरोधाभासी नहीं है, जिसमें वास्तव में इस बात से कोई खास फर्क नहीं पड़ता कि हम अस्तित्व को भौतिक मानते हैं जिसमें आत्मा इसका अधिक विरल रूप है या हम अस्तित्व को आध्यात्मिक मानते हैं जिसमें पदार्थ इसका सबसे सघन रूप है।
तिब्बती बौद्ध धर्म में पदार्थ की अवधारणा के अनुसार, खनिज मुख्यतः सघन भौतिक पदार्थ है जिसमें सूक्ष्म भौतिक पदार्थ का थोड़ा विस्तार होता है; पौधे सघन भौतिक, सूक्ष्म भौतिक पदार्थ हैं जिनमें सूक्ष्म भावनात्मक पदार्थ का थोड़ा विस्तार होता है; जानवर सघन भौतिक, सूक्ष्म भौतिक, भावनात्मक पदार्थ हैं जिनमें सूक्ष्म मानसिक पदार्थ का थोड़ा विस्तार होता है; और मनुष्य इन सभी को समाहित करता है और उसमें सूक्ष्म आध्यात्मिक पदार्थ का विस्तार होता है। इस प्रकार, सभी जीवन शुद्ध आत्मा की ओर एक विकासवादी गति में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। निश्चित रूप से, जब हम प्रत्येक के स्वरूप को अलग-अलग मानते हैं, तो मन की शक्ति को संतोषजनक ढंग से समझाना कठिन हो जाता है, और जब हम सभी जीवन रूपों, जिनमें विचार-रूप भी शामिल हैं, को एक ही निरंतरता में विद्यमान ऊर्जा के क्षेत्रों और भंवरों के रूप में देखते हैं, तो इसे समझना कहीं अधिक आसान हो जाता है। इस अवधारणा के अंतर्गत मानसिक घटनाओं का संपूर्ण क्षेत्र अधिक व्यावहारिक प्रतीत होता है। और इस ब्रह्मांडीय अवधारणा के अंतर्गत पिरामिड शक्ति द्वारा भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार के परिवर्तन लाने के बढ़ते प्रमाण अधिक ठोस प्रतीत होते हैं।
अंततः, शायद, ऊर्जा चेतना में विलीन हो जाती है और दुनिया एक विचार बन जाती है। और उसमें

पिरामिडनुमा सत्ता के कभी-कभी अनियमित व्यवहार का सुराग शायद इसी में छिपा हो। हम सभी कारकों—प्रकाश, ऊष्मा, वायु, नमी आदि—को नियंत्रित कर सकते हैं, लेकिन एक कारक ऐसा है जिसके बारे में हम बहुत कम जानते हैं और जिस पर हमारा नियंत्रण केवल सतही है: स्वयं हम। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हमारे प्रयोगों का एक अस्थिर घटक है। पूर्व अंतरिक्ष यात्री एडगर मिशेल ने हमें यही बताया था जब उन्होंने कहा था कि हम अज्ञात की खोज करने की अपनी क्षमता की चरम सीमा तक पहुँच रहे हैं। उन्होंने कहा कि अपने प्रेक्षणों को और आगे बढ़ाने के लिए हमें प्रेक्षक का अध्ययन करना होगा; अब प्रयोगकर्ता को प्रयोग से अलग नहीं किया जा सकता। मिशेल ने कहा कि मनुष्य अपने द्वारा अध्ययन की जाने वाली हर चीज में अभिन्न रूप से शामिल होता है।
अन्य सभी शोधों की तरह, हमारे पिरामिड संबंधी अध्ययनों में भी हमें परम अज्ञात का सामना करना पड़ता है—स्वयं मनुष्य। यदि सभी मार्ग चेतना की ओर ले जाते हैं, तो अंत में हमें इसे समझना ही होगा, अन्यथा लक्ष्य प्राप्त होने से पहले ही यात्रा समाप्त हो जाएगी।
क्या यह महान पिरामिड का आदेश है? क्या इसका सबसे बड़ा योगदान स्वयं को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण के रूप में है? यदि ऐसा है, तो यह डेल्फ़िक ओरेकल की सलाह "मनुष्य, स्वयं को जानो" से मेल खाता है। यदि यह संदेश प्राचीन लोगों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता रखता है,

तो क्या यह उनका सबसे गौरवपूर्ण स्मारक नहीं हो सकता?
महान पिरामिड और उसके वंशजों की भविष्य में क्या भूमिका होगी? क्या यह संरचना स्वयं ज्ञान के भंडार प्रकट करेगी? क्या हमारा शोध ऊर्जा के नए स्रोतों के बारे में जानकारी प्रदान करेगा? क्या पिरामिड का आकार हमारी चेतना को उन्नत करेगा ताकि हम नया ज्ञान प्राप्त कर सकें? शायद इन तीनों प्रश्नों का उत्तर सकारात्मक हो, लेकिन मार्ग स्पष्ट प्रतीत होता है: जैसा कि पॉल ब्रंटन के श्वेत वस्त्रधारी मेज़बान ने समझाया, हमें बाहरी पिरामिड को समझने के लिए अपने भीतर के पिरामिड को खोजना होगा।
यह प्रयास न केवल सार्थक बल्कि अनिवार्य भी प्रतीत होता है। हमें बताया जाता है कि आज मानवता के सामने सबसे गंभीर समस्याएं खाद्य संकट, प्रदूषण, ऊर्जा स्रोतों का क्षय और युद्ध हैं। और पिरामिड इनमें से कुछ समाधान प्रस्तुत करता है।

इन आवश्यकताओं की पूर्ति का वादा: 1) खाद्य पदार्थों की कमी—बीज अंकुरण, पौधों की वृद्धि और खाद्य संरक्षण के माध्यम से; 2) प्रदूषण—प्रारंभिक परीक्षणों से पता चलता है कि पिरामिड का स्थान जल, वायु और मिट्टी को शुद्ध कर सकता है; 3) ऊर्जा स्रोत—ज्ञात और अज्ञात ऊर्जा क्षेत्रों के सृजन या संवर्धन के माध्यम से; 4) युद्ध—इसका विकल्प निश्चित रूप से शांति है और विश्व विचारक हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि शांति मनुष्य की बेहतर समझ और चेतना के उत्थान पर निर्भर है। पिरामिड उच्च स्तर की जागरूकता के प्रवर्तक के रूप में कार्य करने का वादा करता है।
जीवन सचमुच रहस्यमय चक्रों में घूमता है, और अनुभव स्वयं को याद रखने का एक तरीका रखता है। शायद इतिहासकार हमेशा से सही रहे हैं कि अतीत को जानना वर्तमान को समझने और भविष्य की कल्पना करने के लिए अनिवार्य है। शायद पिरामिड अतीत और भविष्य दोनों की एक खिड़की है।

ग्रंथ सूची
ऐरोला, पी.ओ. यूरोप से स्वास्थ्य रहस्य। वेस्ट न्याक, एन.वाई.: पार्कर पब्लिशिंग कंपनी, 1970।
बैक्स्टर, सी. "पौधों के जीवन में प्राथमिक धारणा का साक्ष्य," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पैरासाइकोलॉजी, 10:4, 1968.
बेक, बी. "रूसी लखोवस्की कायाकल्प मशीन," बॉर्डरलैंड साइंसेज रिसर्च फाउंडेशन।
बेल, ए.एम. प्रैक्टिकल डाउजिंग — एक संगोष्ठी। लंदन: जी. बेल एंड संस, 1965।
बेनाविडेस, आर. ग्रेट पिरामिड की नाटकीय भविष्यवाणियाँ। मेक्सिको सिटी: एडिटोरेस मेक्सिओनोस यूनिडोस, 1970।
ब्लावत्स्की, एम.पी. गुप्त सिद्धांत। लॉस एंजिल्स: थियोसोफिकल सोसायटी, 1930।
बोल्टन, बी. पौधों की गुप्त शक्ति। न्यूयॉर्क: बर्कले मेडेलियन बुक्स, 1974।
बोस, जे.सी.बी. प्लांट रिस्पॉन्स. लंदन: लॉन्गराम्स, ग्रीन एंड कंपनी, 1906.

ब्राउन, जे. "मैंने अमर बी-सेल की खोज की," बॉर्डरलैंड साइंसेज रिसर्च फाउंडेशन प्रकाशन।
ब्रून्स, टी. प्राचीन ज्यामिति का रहस्य। कोपेनहेगन: क्रोन्स, 1967।
ब्रंटन, पी. पवित्र मिस्र में एक खोज। लंदन: राइडर, 1936।
अतिस्वयं का ज्ञान। न्यूयॉर्क: ई. पी.
डटन एंड कंपनी, 1943।
कास्टानेडा, सी. डॉन जुआन की शिक्षाएँ। बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1968।
चारौक्स, आर. मानव इतिहास के एक लाख वर्ष। न्यूयॉर्क: बर्कले, 1970।
क्लेमेंट, एम. द वेव्स दैट हील. ससेक्स, इंग्लैंड: हेल्थ साइंस प्रेस, 1949.
कॉक्स, डब्ल्यू.ई. "इलेक्ट्रोकेमिकल सिस्टम पर पीके का प्रभाव," जर्नल ऑफ पैरासाइकोलॉजी, 29:165, 1965।
डेविडसन, डी. द ग्रेट पिरामिड: इट्स डिवाइन मैसेज. लंदन: विलियम्स एंड नोरगेट, 1924.
एडवर्ड्स, आई.ई.एस. मिस्र के पिरामिड। मिडलसेक्स, इंग्लैंड: पेंगुइन, 1949।
ईमान, एल.ई. मानव विकिरणों के उपचारात्मक गुण। लंदन: फ्रेडरिक मुलर लिमिटेड, 1947।
आइज़ेनबुड, जे. द वर्ल्ड ऑफ़ टेड सेरियोस. लंदन: जोनाथन केप, 1968.
इवांस-वेंट्ज़, जे.डी. तिब्बती मृतकों की पुस्तक। ऑक्सफोर्ड: यूनिवर्सिटी प्रेस, 1949।
फ्लैनगन, जी.पी. "पिरामिड और इसका जैव-ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संबंध," ग्लेनडेल, कैलिफोर्निया: फ्लैनगन, 1972।

फ्रेजर, जे. द गोल्डन बॉघ. न्यूयॉर्क: मैकमिलन, 1925.
फ्रेई, ई. एच. "चुंबकत्व का चिकित्सा अनुप्रयोग," बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स, अक्टूबर 1972।
गैरेट, ई. एडवेंचर्स इन द सुपरनॉर्मल. न्यूयॉर्क: गैरेट पब्लिशर्स, 1959.
अनेक आवाजें। न्यूयॉर्क: जी. पी. पुटनाम संस।

गेडेस, पी. सर जगदीश सी. बोस का जीवन और कार्य। लंदन: गेडेस, लॉन्गमैन्स, ग्रीन एंड कंपनी, 1920।
गौकेलिन, एम. द कॉस्मिक क्लॉक्स. लंदन: पीटर ओवेन, 1969.
घडियाली, डी.पी. स्पेक्ट्रो-क्रोम मेट्री विश्वकोश। मालागा, न्यू जर्सी: स्पेक्ट्रो-क्रोम संस्थान, 1939।
ग्रेड, बी. "पौधे की वृद्धि पर एक टेलीकाइनेटिक प्रभाव," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पैरासाइकोलॉजी, 6:473, 1964.
हॉल, एम.पी. सभी युगों की गुप्त शिक्षाएँ। लॉस एंजिल्स: दार्शनिक अनुसंधान सोसायटी, 1969।
हिक्स, सी.बी. "संगीत के साथ मक्का उगाना," पॉपुलर मैकेनिक्स, मई 1963।
हिल्स, सी. परमाणु विकास। लंदन: सेंटर कम्युनिटी पब्लिकेशन्स, 1968।
जीन्स, जे. रहस्यमय ब्रह्मांड। न्यूयॉर्क: डोवर पब्लिकेशन्स, 1968।
केर्व्रान, एल. जैविक रूपांतरण। बिंघमटन, एन.वाई.: स्वान हाउस, 1972।
कीज़, एल.ई. टोनिंग — आवाज की रचनात्मक शक्ति। सांता मोनिका, कैलिफ़ोर्निया: डेवोर्स एंड कंपनी, 1973।
किरलियन, एस.डी. और किरलियन, वी. "उच्च आवृत्ति धाराओं के माध्यम से फोटोग्राफी और दृश्य अवलोकन," विदेशी प्रौद्योगिकी प्रभाग, संयुक्त राज्य वायु सेना प्रणाली कमान द्वारा अनुवादित, 1963।
क्रिपपनर, एस. और रुबिन, डी., संपादक। एक्यूपंक्चर और किरलियन फोटोग्राफी में मानव आभा।
लेयने, एन.एम. और क्रैब, आर.एच. "विटिक या चुंबकीय जीवन शक्ति," बॉर्डरलैंड साइंसेज रिसर्च फाउंडेशन प्रकाशन।
लेनर, एम. "मिस्र—एक यात्रा पर विचार," ए.आर.ई. जर्नल।
लिस्समैन, एच.डब्ल्यू. "मछलियों द्वारा विद्युत स्थान निर्धारण," साइंटिफिक अमेरिकन, मार्च 1963।
लोहर, एफ. पौधों पर प्रार्थना की शक्ति। न्यूयॉर्क: न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी, 1969।
मिशेल, जे. द व्यू ओवर अटलांटिस. न्यूयॉर्क: बैलनटाइन बुक्स, ^969.

मिचेल, ई.डी. साइकिक एक्सप्लोरेशन। न्यूयॉर्क: जी. पी. पुटनाम संस, 1974।
मोनरो, आर. ए. जर्नीज़ आउट ऑफ़ द बॉडी। न्यूयॉर्क: डबलडे, 1973।
मॉस, टी. और जॉनसन, के. "विकिरण क्षेत्र फोटोग्राफी," साइकिक पत्रिका, जुलाई 1972।
ओस्ट्रैंडर, एस. और श्रोएडर, एल. आयरन कर्टन के पीछे की मानसिक खोजें। एंगलवुड क्लिफ्स,

एन.जे.: प्रेन्टिस-हॉल, 1971।
पिएराकोस, जे. सी. "मनुष्य और प्रकृति में ऊर्जा क्षेत्र," जैव-ऊर्जा विश्लेषण संस्थान, न्यूयॉर्क।
प्रॉक्टर, आर.एच. द ग्रेट पिरामिड: ऑब्जर्वेटरी, टॉम्ब, एंड टेंपल। लंदन: चैटो एंड वेंडस, 1883।
रीच, डब्ल्यू. द कैंसर बायोपैथी, न्यूयॉर्क: नूनडे बुक्स, 1973।
ईथर, ईश्वर और शैतान/ब्रह्मांडीय अध्यारोपण।
न्यूयॉर्क: नूनडे बुक्स, 1972।
राइन, एल.ई. मन पदार्थ से ऊपर। लंदन: मैकमिलन, 1970।
रॉबर्ट्स, जे. सेठ स्पीक्स. एंगलवुड क्लिफ्स, एन.जे.: प्रेन्टिस-हॉल, 1972.
सीस, जे. ए. द ग्रेट पिरामिड: ए मिरेकल इन स्टोन। न्यूयॉर्क: रुडोल्फ स्टेनर पब्लिकेशन्स, 1973।
स्किनर, जे. आर. ग्रेट पिरामिड के वास्तविक माप। टोलेडो, ओहियो: ब्लोड, 1880।
स्मिथ, सी. पी. ग्रेट पिरामिड के नए माप। लंदन: आर. बैंक्स, 1884।
स्ट्रोमबर्ग, जी. "आध्यात्मिक उपचार और आधुनिक विज्ञान," आध्यात्मिक उपचार में। लॉस एंजिल्स: साइंस ऑफ माइंड पब्लिकेशन्स, 1973।
थॉमसन, डी. "फोर्स फील्ड डिटेक्टर," मैक्लीन पत्रिका, सितंबर 1968।
टिलर, डब्ल्यू. ए. "रेडियोनिक्स, रेडिएस्थेसिया और भौतिकी," अप्रकाशित पांडुलिपि।
टॉम्पकिंस, पीटर। ग्रेट पिरामिड के रहस्य। न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो, 1971।

टॉम्पकिंस, पी. और बर्ड, सी. पौधों का गुप्त जीवन। एवन पब्लिशिंग कंपनी, 1973।
टोथ, एम. और नीलसन, जी. पिरामिड पावर. न्यूयॉर्क: फ्रीवे प्रेस, 1974.
वैन टैसल, जी. डब्ल्यू. कॉलेज ऑफ यूनिवर्सल विजडम की कार्यवाही, 9:11, 1972.
वॉन डैनिकेन, ई. देवताओं के रथ। लंदन: सौवेनियर बुक्स, 1969।
वालेव्स्की, एस. सी. ए सिस्टम ऑफ कोकेशियाई योगा। न्यूयॉर्क: फाल्कन विंग प्रेस, 1955।
वाटकिंस, ए. द ओल्ड स्ट्रेट ट्रैक. लंदन: मेथुएन, 1925.
वॉटसन, एल. सुपर नेचर. न्यूयॉर्क: डबलडे, 1973.
वेबर, जे. "गुरुत्वाकर्षण तरंगों का पता लगाना," साइंटिफिक अमेरिकन, 224:22, 1971.
योगानंद, पी. एक योग की आत्मकथा। लॉस एंजिल्स: सेल्फ-रियलाइजेशन फेलोशिप, 1959।

अब्द-अल-लतीफ, 28 अबेहसेरा, मिशेल, 84-85 एक्यूपंक्चर, 48-49, 169 अल-मामून, अब्दुल्ला, 26-28 अल्वारेज़, डॉ. लुइस, 50-51, 87 "पशु चुंबकत्व," 66 आरोही मार्ग, 28, 37-39 असगियोलो, डॉ. रॉबर्ट, संस्थापक
मनोसंश्लेषण, 13 असवान बांध, 41-42 अटलांटिस, 40 आभा, 46, 77, 123 अरबिंदो, श्री, 44 योगी की आत्मकथा, द्वारा
परमहंस योगानंद, 61 वर्ष, अविसेना, अरब चिकित्सक,
एलीन गैरेट द्वारा लिखित 120 अवेयरनेस

बैक्स्टर, क्लीव, बैक्स्टर रिसर्च फाउंडेशन के, 49-50, 58-60, 73, 80, 194

बैंस, ए.ई., 137, 139-141; "जीवन की उत्पत्ति और समस्या" भी देखें।
बेन जोनाह ऑफ नवार्रे, रब्बी
बेंजामिन, 28 बायोएनर्जी, 44-45; ऊर्जा क्षेत्र भी देखें जैविक रूपांतरण, द्वारा
लुई सी. केर्व्रान, 83 बायोप्लाज्मा, गुणधर्म, 184—
85 बर्ड, क्रिस्टोफर, 75, 79 ब्लोंडॉट, 44 बोल्टन, ब्रेट एल., 159; यह भी देखें
पौधों की गुप्त शक्ति, बोनापार्ट, नेपोलियन बॉर्डरलाइन साइंसेज रिसर्च देखें
फाउंडेशन, 141 बोर्स्ट, प्रोफेसर लायल बी., के
न्यूयॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी,
बफ़ेलो, 185 बोस, डॉ. जगदीस चंद्र, 60-61, 125 बोविस, महाशय, 8, 16 पिरामिड में
मस्तिष्क तरंग गतिविधि
मॉडल, 200 ब्रंटन, पॉल, 13, 163-167,
208; यह भी देखें: बुद्धि
ओवरसीइफ

218 अनुक्रमणिका
कैमरून, वर्न एल., 70-73, 87, 101-102, 110
ऊर्जा स्रोतों के रूप में कार्बन छड़ें, 139-143
कैंप, लोरा ली, 168
कैंसर बायोपैथी, विल्हेम रीच द्वारा, 74, 124, 126
कैविग्लिया, कैप्टन जी.बी., 31, 166
केसी, एडगर, 39-40, 108, 111, 151
चक्र, ऊर्जा क्षेत्र और भंवर देखें
डब्ल्यू. जे. पेरी द्वारा रचित 'चिल्ड्रन ऑफ द सन', 189
कोबर्न, जेम्स, पिरामिडों पर, 174
कोलाइड्स ऊर्जा प्रणालियों के रूप में, 119-120, 151
चेतना उत्थान, 32, 35-36, 161-177
पिरामिड मॉडल का निर्माण, 15, 105, 195-198
खाना पकाने में सहायक उपकरण, 18
कूपर, जॉर्ज, पिरामेडी-टेशन, इंक., 200
ब्रह्मांडीय किरणें, 50-51, 87, 203
ब्रह्मांडीय अनुनादक, 19
विल्हेम रीच द्वारा रचित ब्रह्मांडीय अध्यारोपण, 184
कटलरी, कर्नल जीन मैरी जोसेफ, 31
कॉक्स, बिल, पिरामिड गाइड के संपादक, 200
क्रॉफर्ड, विलियम (लॉर्ड लिंडसे), 166
क्रेस्कोग्राफ, 60
क्रूक्स, सर विलियम, ओडिक फोर्स पर, 138
पिरामिड विधि से उपचारित जल की उपचारात्मक क्षमताएँ, 93-94
क्यूरी, मैडम ईव, 83, 97
डेविसन, नथानिएल, अल्जीयर्स में ब्रिटिश कौंसुल, 30-31, 166
डेविसन का कक्ष, 166

नेवार्क* कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के डीन, डॉ. डगलस, 49
डे ला वॉरे, जॉर्ज और मार्जोरी, 78
अवरोही मार्ग, 27-29, 31,
37-38 डिक्सन, जीन, 39 डाउजिंग रॉड्स, 199 ड्रबल, कारेल, 8, 16, 20, 45-46,
104, 174 ड्रीम लेबोरेटरी, मैमोनाइड्स
मेडिकल सेंटर, ब्रुकलिन, पिरामिड मॉडल में 44 सपने, 170 ड्यूड संस्कृति, 188
एडवर्ड्स, आई.ई.एस., 25; मिस्र के पिरामिड भी देखें
पिरामिडों के प्रभाव, 8, 12, 200; पनीर पर, 87-88; मृत जानवरों पर, 101; भोजन पर, 8,
17-18, 21, 99-101; बालों पर, 129; चोटों पर, 17-18, 93, 127; मांस पर, 8,
17-18, 21, 93, 99-101; दूध पर, 86-87; पौधों पर, 21-22, 57-80; रेजर ब्लेड पर,
8, 16, 22, 102-104, 199; बीजों पर, 21, 63, 68-69, 71-72; धूमिल आभूषणों पर,
17; दांतों पर, 114, 127; पानी पर, 17, 81-85, 88-89; वाइन और कॉफी पर, 90-91;
उपचारित पानी के साथ, 92
डॉ. अल्बर्ट आइंस्टीन, 14, 44
एल बल्खी, अबू ज़ैद, 41
विद्युतचुंबकीय ऊर्जा, 14, 133-136; उपचार में प्रयुक्त, 128-29; उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को
धीमा करने में प्रयुक्त, 134-135; पिरामिड के भीतर, 49, 53
इलेक्ट्रो-पैथोलॉजी, डॉ. व्हाइट रॉबर्टसन द्वारा, 139
ऊर्जा क्षेत्र और चक्र (चक्र), 18-20, 34, 43-55, 110, 177, 207; पिरामिड में,
117-118, 143; मनुष्यों में, 44-45, 133; पौधों में, 76-78
अर्नेस्ट होम्स रिसर्च फाउंडेशन, 59
एर्रेरा, जैक्स, "चिकित्सक" द्वारा मांस के उपचार पर, 48
गूढ़ ज्ञान के स्रोत, 13, 204-205

ई.एस.पी. प्रयोगशाला, लॉस एंजिल्स, 143, 175-176
एस्टेबानी, ऑस्कर, 62, 66-67, 115, 122
पिरामिडों पर किए गए प्रयोग: पीतल, 108; रंग, 175-76; ब्रह्मांडीय किरणें, 50-51; विद्युत
चुंबकत्व, 133-136; सोना, 107-108; रडार, 204; लघु तरंग रेडियो, 203; ध्वनि, 34;
पिरामिडों के प्रभाव भी देखें
पौधों पर प्रयोग, 21, 41, 57-80, 156-159; संचार, 74-76; एंजाइम गतिविधि, 67-68;
पिरामिड में गति, 63-66; पिरामिड में स्थान निर्धारण, 70-73; शंकुओं का उपयोग, 71-72;
पौधों पर प्रभाव भी देखें
बाह्य अंतरिक्षीय बुद्धिमत्ता, 13, 41
फिबोनासी श्रृंखला, 180; यह भी देखें
फाई अनुपात फ्लैनगन, जी. पैट्रिक 43, 54;
यह भी देखें: पिरामिड और इसका जैव-ब्रह्मांडीय संबंध
ऊर्जा से भरपूर उड़ने वाली वस्तुएं पास में देखी गईं
ग्रेट पिरामिड, 191 फॉक्स, सार्जेंट, ओडिक फोर्स पर,
138 फ्रेई, वीज़मैन के डॉ. ई. एच.
संस्थान, 92-93, 120-122 फुलर, बकमिनस्टर, 20, 129 फुलर, जूडी, 113-114
पिरामिडों द्वारा कचरा निपटान, 18; लेखक द्वारा स्वप्न, 170

गैरेट, एलीन, 47
गेद्दिस, पैट्रिक, 61
गेलर, उरी, मनोगतिज क्षमताएं, 20, 44
हेनरी मोंटेथ द्वारा लिखित "ग्रेट पिरामिड की ज्यामिति", 182
घडियाली, दिनशाह पी., 125-126
गुडवेज, जोसेफ, 129
अनुक्रमणिका 219 ^
स्नातक, डॉ. बर्नार्ड, मैकगिल विश्वविद्यालय, 48, 62
ग्रेट पिरामिड में ग्रैंड गैलरी, 28-30, 37-39, 146
गीज़ा का महान पिरामिड, खगोलीय वेधशाला के रूप में, 36-38; पृथ्वी की परिधि की गणना, 178-182; निर्माण संरेखण, 186-187; निर्माण की तिथि, 39-41; भूकंप द्वारा विनाश, 28; ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, 24-33; दीक्षा अनुष्ठान, 33; कैविग्लिया द्वारा जांच, 31, 166; डेविसन द्वारा जांच, 30-31, 166; ग्रीव्स द्वारा जांच, 29-30; ग्रीव्स द्वारा मापन, 29-30; निर्माण की सटीकता, 12, 25-26; भविष्यसूचक कैलेंडर, 38-39; भीतर के मानसिक प्रभाव, 8, 163-166; इससे संबंधित ध्वनियाँ, 146-147, 191
रिचर्ड एंथोनी प्रॉक्टर द्वारा रचित "ग्रेट पिरामिड, ऑब्जर्वेटरी, टॉम्ब एंड टेंपल" (पृष्ठ 32)
ग्रीव्स, जॉन, 29-30
ग्रीन, डॉ. एल्मर, मेनिंगर क्लिनिक की मनो-शारीरिक प्रयोगशाला, 44
ग्रॉफ, विलियम, 191
ग्रोव्स, पी. आर. सी., ग्रेट पिरामिड की हवाई तस्वीरें, 182
जॉर्ज इवानोविच गुरजिएफ, 41
हेल, श्रीमती टेनी, 68, 92, 169
हॉल, मैनली पामर, 34, 45, 110; यह भी देखें: सभी उम्र के लोगों के लिए गुप्त शिक्षा
टोपियाँ, पिरामिड के आकार के प्रभाव, 174
उपचारकर्ता, 48, 62; पौधों पर प्रभाव, 62, 66
ऊर्जा क्षेत्रों से उपचारात्मक प्रभाव, 118-120; चुंबकत्व से, 120-121, 129; पिरामिडों से, 113-114, 127-128; ध्वनियों से, 150-155;

220 अनुक्रमणिका
"टॉनिंग," 148-155; उपचार उपकरणों के लिए पेटेंट, 121
पावो ओ. ऐरोला द्वारा लिखित "यूरोप से स्वास्थ्य रहस्य", पृष्ठ 94
हर्सी, जॉन, 49
हिल, क्रिस्टोफर, 94
हिप्पार्कस, 32-33
जॉन हर्सी द्वारा रचित हिरोशिमा, पृष्ठ 49
हॉफर, डॉ. अब्राम, सस्केचेवान विश्वविद्यालय, 44
हॉवर्ड-वाइस, कर्नल, 31
पेड़ों में बीमारियों का पता लगाने के लिए इन्फ्रारेड फोटोग्राफी का उपयोग, 114 दीक्षा संस्कार, 33-34
जोमार्ड, एम. एडमे'-फ्रांकोइस, 32 जर्नी आउट ऑफ द बॉडी, रॉबर्ट ए. मोनरो द्वारा, 48

केकुले, 19वीं सदी के रसायनज्ञ, 13
केल्म, सस्केचेवान विश्वविद्यालय के डॉ. हेरोल्ड,
केर्व्रान, लुई सी, 83-85, 98
कीज़, लॉरेल एलिजाबेथ, 148-156
ग्रेट पिरामिड का राजा कक्ष, पृष्ठ 16, 38-39, 51, 54, 162-163; अल-मुमम द्वारा खोज, 820 ई.पू., पृष्ठ 28; कैविग्लिया और हॉवर्ड-वाइस द्वारा जांच, पृष्ठ 31; डेविसन द्वारा जांच, पृष्ठ 30-31; ग्रीव्स द्वारा जांच, पृष्ठ 29-30; परीक्षण वस्तुओं की स्थापना, पृष्ठ 198-99; ग्रेनाइट ब्लॉकों का स्रोत, पृष्ठ 41; दीक्षा अनुष्ठानों के लिए प्रयुक्त, पृष्ठ 33-34; नेपोलियन द्वारा दौरा, पृष्ठ 166-167
डॉ. स्टेनली क्रिपनर द्वारा रचित किरलियन ऑरा, पृष्ठ 114
किरलियन फोटोग्राफी, 46, 78, 113-114, 116
किरलियन, सेम्योन, 46
कोज़ीरेज़, निकोलाई, 183-184
क्रिपनर, डॉ. स्टेनली, ड्रेर्न प्रयोगशाला के निदेशक, ब्रुकलिन, 44, 115
Knlagina, Nelva, psychokinetic
क्षमताएं, 20 कुंडलिनी, 35 की शक्ति; यह भी देखें
योग
लाफोंटेन, चार्ल्स, 66; लैवोइसियर, एंटोनी, 83, 97; लेनर, मार्क, 173; लेमुरिया, 40; सर जगदिस का जीवन और कार्य
सी. बोस, पैट्रिक गेड्डिस द्वारा लिखित,
61 लोहर, फ्रैंकलिन, 61; यह भी देखें
प्रार्थना की शक्ति
पौधे
मैकलीन, डॉ. के. ई., 129
चुंबकीय क्षेत्र, 120-124; उपचार में प्रयुक्त, 120-122, 124, 141
मैनिंग, अल, ई.एस.पी. प्रयोगशाला के निदेशक, लॉस एंजिल्स, 143, 175-176
जॉर्ज इवानोविच गुरजिएफ द्वारा लिखित "उल्लेखनीय पुरुषों के साथ मुलाकातें" (पृष्ठ 41)
मेनिंगर क्लिनिक, 45, 47-48, 59; जागरूकता नियंत्रण पर सम्मेलन, 1971, 57
मेरोडोटस, 180
मेस्मर, एंटोन, 45, 66
मिशेल, जॉन, 185, 189; यह भी देखें: द व्यू ओवर अटलांटिस
मिलर, डॉ. रॉबर्ट, 115-116
मिलिकन, डॉ. रॉबर्ट ए., 53-54
मिलस्टीन, डॉ. जॉर्ज, 158
मिशेल, कैप्टन एडगर, 21-22, 44, 208; अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन का संबोधन, डलास, 1972, 21; इंस्टीट्यूट ऑफ नोएटिक साइंसेज के संस्थापक, 22
मोकाट्टम खदानें, महान पिरामिड में ग्रेनाइट के स्रोत के रूप में, 41
मोनरो, रॉबर्ट ए., 48; शरीर से बाहर की यात्रा भी देखें
मोंटेथ, हेनरी, न्यू मैक्सिको विश्वविद्यालय, 40, 182-184

46, 116 संगीत, पौधों पर प्रभाव, 156-59
नेपोलियन, 31 वर्ष; ग्रेट पिरामिड में अनुभव, 163-164
न्यूटन, सर आइजैक, 29, 44, 182
नील्सन, ग्रेग, 42, 67, 117, 168-169, 174
परमाणु विकास, क्रिस्टोफर हिल द्वारा, 94
ओडिक बल, 44, 123, 138
ओस्टरब्रो, रेव. रॉन, 169
अल्फ्रेड वॉटकिंस द्वारा रचित 'ओल्ड स्ट्रेट ट्रैक', 185
"ओराक्कू" उपकरण, 51-53, 124; विल्हेम रीच भी देखें
विल्हेम रीच द्वारा रचित "ओरानुर प्रयोग", 184
"ऑर्गन ऊर्जा," 51-52, 125-126, 151, 168; विल्हेम रीच भी देखें
ए. ई. बैनेस द्वारा लिखित "जीवन की उत्पत्ति और समस्या", पृष्ठ 137
ओस्ट्रैंडर, शीला, 20, 174; यह भी देखें: लौह पर्दे के पीछे की मानसिक खोजें
पैरासेल्सस, 66, 120
पार, जैक, 132
उपचार उपकरणों पर पेटेंट, 120-121
पावलिटा, रॉबर्ट, 46; पावलिटा जनरेटर, 46
पेनहेल्ड, डॉ. वाइल्डर, मैकगिल विश्वविद्यालय, 47
अली अब्बास द्वारा लिखित चिकित्सा कला की उत्तम पुस्तक
पर्किन्स, एलीशा, 120
पेरी, डब्ल्यू. जे., 189; चिल्ड्रन ऑफ द सन भी देखें
पेट्रिक, विलियम फ्लैंडर्स, 182
पेटिट, श्रीमती इनेज़, 18, 93, 113, 171-172
फाई अनुपात, 180; फिबोनाची श्रृंखला भी देखें
दार्शनिक अनुसंधान संघ, 45
अनुक्रमणिका 221
सर विलियम रैमसे द्वारा रचित भौतिक रसायन विज्ञान, 53
पाई, जिसका उपयोग ग्रेट पिरामिड में किया गया है, 32, 179-180
पिकार्डी, जॉर्जी, भौतिक रसायन विज्ञान संस्थान, फ्लोरेंस, 89-90
पियराकोस, डॉ. जॉन सी, 21, 76-77, 80, 103, 123, 151
पौधे, 21-22, 57-80; उपचारकों का प्रभाव, 62, 66; चुंबकीय प्रभाव, 64-65, 106; पिरामिडों में गति, 63-66; मल्टीवेव ऑसिलेटर का उपयोग, 60-70; पिरामिडों में स्थान निर्धारण, 71-73; ध्वनि का प्रभाव, 156-159; टाइम-लैप्स फोटोग्राफी का उपयोग, 64-65; शंकुओं का उपयोग, 71-72
प्लैप, गैरी, हुमा-टेक इंडस्ट्रीज, 200
पौधों पर किए गए प्रयोगों में प्रयुक्त पॉलीग्राफ, 49-50, 58-60, 78
पौधों पर प्रार्थना की शक्ति, फ्रैंकलिन लोहर द्वारा, पृष्ठ 61
प्राणिक ऊर्जा," 44-45, 74; जैव ऊर्जा भी देखें
प्रॉक्टर, रिचर्ड एंथोनी, 36-39; महान पिरामिड, वेधशाला, मकबरा और मंदिर भी देखें
शीला ओस्ट्रैंडर और लिन श्रोएडर द्वारा लिखित "लौह पर्दे के पीछे की मानसिक खोजें", 8,

16-17, 48, 174
पिरामिड मॉडलों में मानसिक प्रभाव, 8, 161-162; महान पिरामिड में, 163-166
मानसिक प्रयोग, 20-21, 45-46, 49-50
साइकोकाइनेसिस (पीके), 20, 44; प्रयोग, 46
पिरामिडों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव, 113-114, 127, 161-162, 164
जी. पैट्रिक फ्लैनगन द्वारा लिखित "पिरामिड और इसका जैव-ब्रह्मांडीय ऊर्जा से संबंध", पृष्ठ 43

222 अनुक्रमणिका
इरविन द्वारा लिखित पिरामिड गाइड
ट्रेंट, 87, 200 पिरामिड मॉडल, निर्माण
का, 15, 105, 195-198; प्रभाव
(देखें: पिरामिड के प्रभाव, मैक्स टोथ द्वारा लिखित पिरामिड शक्ति)
और ग्रेग नीलसन, 42, 67,
117, 169, 182 पिरामिड ध्यान, मिस्र के 200 पिरामिड, द्वारा
आई.ई.एस. एडवर्ड्स, विश्वभर में 24 पिरामिड,
25 पाइथागोरस, 32-33, 147
क्वीन्स चैंबर, 27, 38
रा, मिस्र के सूर्य देवता, 174 रबी, डॉ. आई. आई., 54 राम, स्वामी एच. एच., 47, 132
रैमसे, सर विलियम, 53 रैंकिन, रेव. जॉन डी., यूनिटी के
ईसाई धर्म का चर्च,
ह्यूस्टन, 196 रा-टा, रचनात्मकता के पुजारी
बल, 40 रीच, डॉ. विल्हेम, 51-52, 73—
74, 124, 126, 151, 184 रीनहार्ट, डॉ. फिलिप बी., के
एग्नेस स्कॉट कॉलेज, 115-116 रेजडक, ज़्डेनेक, 45-46 अनुनादी कार्डियोग्राफ, जैसा कि प्रयुक्त है
पौधों पर, 60-61 रेटालैक, श्रीमती डोरोथी, 157—
158 रोड्स, चार्ल्स, 106 रॉबर्ट्स, जेन, 175 रॉबर्टसन, डॉ. व्हाइट, 139, 141 रोलिंग थंडर, शोशोन
वैद्य, 56-57, 76
श्रोएडर, लिन, 20, 174; यह भी देखें: लौह पर्दे के पीछे की मानसिक खोजें
डॉ. पॉल ब्रंटन द्वारा लिखित 'सर्च इन सेक्रेड इजिप्ट', पृष्ठ 163
पीटर टॉमपकिंस और क्रिस्टोफर बर्ड द्वारा लिखित "पौधों का गुप्त जीवन", 75
पौधों की गुप्त शक्ति, द्वारा
ब्रेट एल. बोल्टन, 159 सर्वयुगों की गुप्त शिक्षाएँ, मैनली पामर हॉल द्वारा, 34, 110 महान पिरामिड के रहस्य, पीटर टॉमकिंस द्वारा, 29-30, 166-167 सेइस, जोसेफ, ए., 41 सर्गेयेव, डॉ. गेनाडी, 44 सेरियोस, टेड, 21, 49 शर्मन, हेरोल्ड, 48 सीमेंस, सर डब्ल्यू., 146
सिंक्लेयर, डेविड, 143 सिंह, डॉ. टी. सी. एन., अन्ना-
मलाई विश्वविद्यालय, 158-159 स्किनर, जे. राल्स्टन, 39; यह भी देखें
माप का स्रोत - स्मिथ, जॉर्ज ई., मेंगल्स के -
डॉर्फ सीड कंपनी, 159 स्मिथ, सिस्टर जस्टा, रोज़री हिल कॉलेज की, 49, 66-67, 115, 122 स्माइथ, पियाज़ी, उत्पत्ति पर

पिरामिड, 41 पिरामिड में ध्वनि अनुनाद,
146-147 पिरामिड से जुड़ी ध्वनियाँ, 148, 156, 191; पौधों पर प्रभाव, 156-159 माप का स्रोत, जे. द्वारा।
39 वर्षीय राल्स्टन स्किनर स्पार्क्स से उठते हुए दिखाई दिए।
ग्रेट पिरामिड, 146 स्फिंक्स, भू-मापक के रूप में, 30 आध्यात्मिक उपचार, जी. स्ट्रोमबर्ग द्वारा,
119 स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट— ऐन शम्स विश्वविद्यालय अभियान, 1974, 203-204
स्टेचिनी, डॉ. लिवियो सी, 32, 179 स्टाइनबर्ग, डॉ. आरोन एच., 134—
136 स्टीफेंस, श्रीमती रोज़, 169-170 स्टीवेन्सन, रॉबर्ट लुई, कथानक के स्रोत के रूप में "ब्राउनीज़" पर, 14 स्टोनहेंज, 189

स्ट्रेट ट्रैक क्लब, 186 स्ट्रोमबर्ग, गुस्ताफ, 119. सुपरनेचर, लायल वॉटसन द्वारा।
101 स्वानसन, ग्लोरिया, पिरामिडों पर,
168 सिएन, मिस्र, ग्रेनाइट का स्रोत
राजा के कक्ष के लिए, 41 कोकेशियाई योग प्रणाली, ए,
काउंट एस. सी. वालेव्स्की द्वारा, 143
टार्ट, डॉ. चार्ल्स, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस, 48
टेलीपैथी, 43-44; प्रयोग, 21-22
स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. डब्ल्यू. ए. टिलर, 118, 194
टॉम्पकिंस, पीटर, 29-30, 32-33, 75, 77, 166, 181; साथ ही देखें ग्रेट पिरामिड के रहस्य और पौधों का गुप्त जीवन
"टोनिंग," चिकित्सीय सहायता के रूप में, 148-155
टोनिंग — आवाज की रचनात्मक शक्ति, श्रीमती एल. ई. कीज़ द्वारा, पृष्ठ 155
टॉथ, मैक्स, 42, 67, 117, 168-169, 174; पिरामिड पावर भी देखें
ट्रेंट, इरविन, 87-88
ट्यूरेन्ने, एल., 19; कॉस्मिक रेजोनेटर भी देखें
यूएफओ, 13, 191
अनुक्रमणिका 223, वैन टैसल, जॉर्ज, 51, 111 वर्न, डॉ. बोरिस, निदेशक
पिरामिड अनुसंधान परियोजना के लिए
मानव जाति, अटलांटिस का 101 दृश्य, द्वारा
जॉन मिशेल, 185 विनोग्रावाडा, आलिया, साइकोकाइनेटिक—
आईसी शक्तियां, 20 वोगेल, डॉ. मार्सेल, आई.बी.एम. के,
50, 74-76, 79-80, 194 वॉन डेनिकेन, एरिच, 13, 41
वाल्डेन, कार्ल, 168
वालेवस्की, काउंट स्टीफ़न कोलोना, 143-144
वाटकिंस, अल्फ्रेड, 185, 188; द ओल्ड स्ट्रेट ट्रैक भी देखें
एल. ट्यूरेन द्वारा रचित 'वेव्स फ्रॉम फॉर्म्स', 19
विलकॉक्स, डेव, 174
विल्सन, डॉ. जे. होम, 140-141
पॉल ब्रंटन द्वारा रचित 'अतिस्वयं का ज्ञान', 13, 165
वोरल, डॉ. ओल्गा, 44, 62, 116-117

योग दर्शन, 34, 36, 48-49, 131; पौधों पर लागू, 75
Yogananda, Paramahansa, 61
पारसी धर्म, 144; काउंट एस. सी. वालेव्स्की भी देखें
फॉसेट गोल्ड मेडल से...
पढ़ने के शानदार रोमांच
रहस्य सस्पेंस
असाइनमेंट ब्लैक गोल्ड P3354 $1.25
एडवर्ड एस. आरोन्स द्वारा
आधी रात से ठीक पहले का घंटा (पृष्ठ 3355, 1.25 डॉलर) जैक हिगिंस द्वारा
रोमांस
पारिवारिक भावना M3357 95^
सुज़ैन एबेल द्वारा
ब्रिज ऑफ कोरवी एम3358 95टीएफ
जेन फ्रेजर द्वारा
कार्टून
बी.सी./ट्रेकिंग ऑन डाउन एम3359 95टीएफ
जॉनी हार्ट द्वारा
गैर-फिक्शन
अपनी जेब का इस्तेमाल करने के 100 तरीके
कैलकुलेटर X3356 $1.75
लेन बकवाल्टर द्वारा
कल्पना
अदृश्य आदमी P3460 $1.25
माइकल जॉन द्वारा
1FAWCETT]
जहां भी पेपरबैक बिकते हैं
यदि आपके पुस्तक विक्रेता के पास स्टॉक खत्म हो गया है, तो डाक और हैंडलिंग शुल्क के लिए प्रत्येक प्रति पर 35 पाउंड के अतिरिक्त कवर मूल्य सहित डाक आदेश विभाग, फॉसेट पब्लिकेशन्स, इंक., पी.ओ. बॉक्स 1014, ग्रीनविच, कनेक्टिकट 06830 को भेजें। कृपया क्रमांक और शीर्षक के अनुसार ऑर्डर करें। कैटलॉग अनुरोध पर उपलब्ध है।

A NEW WAY OF LIFE FOR YOU THROUGH THE PYRAMID

The Pyramid has always held a strange fascination for man. For centuries we have marveled at its tales, its mystery and intrigue,its history, its size, its engineering, and most important, its reason for being. But then came the discovery that the *shape of the Pyramid itself* had unusual powers. And a whole new adventure opened for all of us.

Here are amazing facts about:

- ☐ **How living plants thrive within the pyramid shape. . . .**
- ☐ **How water can be purified within the pyramid. . . .**
- ☐ **How certain foods are enriched by pyramids. . . .**
- ☐ **How the energy found within the pyramid space influences such things as razor blades, metal screens, aluminum foil. . . .**
- ☐ **How the possibility of rejuvenation through the pyramid has been established. . . .**
- ☐ **How the pyramid may improve your sex life. . . .**
- ☐ **How the pyramid helps to heal and control pain. . . .**

THE PYRAMID— THE SHAPE OF THE FUTURE

Fawcett World Library